शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों की वाक्य संरचना का अनुशीलन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की
पी-एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

2000

शोध निर्देशक :
डॉ. दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव
(एम.ए. अंग्रेजी, हिन्दी), पी.एच.डी., डी.लिट.
रीडर तथा अध्यक्ष हिन्दी विभाग
दयानन्द वैदिक महाविद्यालय, उरई

शोध कर्त्री :
कु. रेनु द्विवेदी
एम.ए. अंग्रेजी, हिन्दी/बी.एड.

शोध केन्द्र : दयानन्द वैदिक महाविद्यालय, उरई (उ.प्र.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कु. रेनु द्विवेदी ने 'शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों की वाक्य संरचना का अनुशीलन' शीर्षक गवेषणात्मक प्रबन्ध का प्रणयन मेरे निर्देशन में किया है। वे मेरे साथ दयानन्द वैदिक कालेज, उरई केन्द्र पर (विशेषकर हिन्दी विभाग में) दो सौ दिन उपस्थित रहीं। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध उन्हीं की सारस्वत साधना का परिणाम है। इस अनुसन्धानात्मक कृति की मौलिकता निर्विवाद है। इस कार्य से डॉ. शिवप्रसाद सिंह के कथात्मक साहित्य का विविध दृष्टियों से अध्ययन एवं आकलन करने में विशेष सहायता प्राप्त होने की सम्भावना है। इस ग्रन्थ से अन्य साहित्यकारों की वाक्य-रचना तथा अन्य भाषिक पक्षों के अनुशीलन की सहज प्रेरणा प्राप्त हो सकती है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि कु. रेनु द्विवेदी के लिये यह कीर्तिकारिणी कृति सिद्ध हो। वह हिन्दी शोध तथा समीक्षा को इससे भी अधिक मूल्यवान योगदान करे। उसे अपूर्व सफलता एवं समृद्धि उपलब्ध हो।

दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव

दिनांक : 28/10/2000

(डॉ. दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव)
डी.लिट.,
रीडर, हिन्दी विभाग,
दयानन्द वैदिक कालेज,
उरई
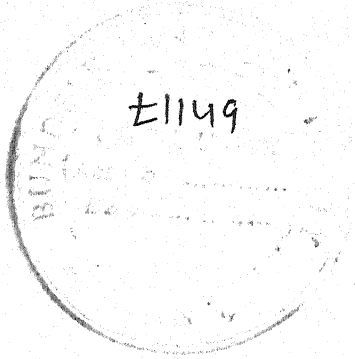
आभार

हिन्दी वाक्य संरचना हिन्दी गद्य के आदिकाल से चलती हुयी अब पर्याप्त पुष्ट और विविध मुखी हो चुकी है। हिन्दी गद्य में वाक्य के स्तर पर पर्याप्त निखार और परिष्कार आया है। वाक्य अर्थ की पूर्ण इकाई है। वाक्य से ही अर्थ की पूर्णता का बोध होता है। उपन्यास साहित्य में वाक्य का व्यंजनामूलक और लाक्षणिक प्रयोग होता है। हर लेखक की वाक्य-संरचना पर उसके व्यक्तित्व की छाप रहती है। हिन्दी उपन्यासकारों में शिव प्रसाद सिंह उपन्यास-शिल्प, शब्द-प्रयोग और वाक्य-संरचना की दृष्टि से एक सजग लेखक थे। इसलिये उनके उपन्यासों में वाक्य-संरचना के स्तर पर विशिष्ट और विलक्षण प्रयोग मिलते हैं। मैंने जिस समय 'शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों की वाक्य संरचना का अनुशीलन' विषय अपने अनुसंधान-कार्य के लिये चुना था उस समय इस कार्य की जटिलता को मैंने उतना नहीं समझा था। जैसे-जैसे मैं अपने कार्य की जटिलता में उतरती गयी इसकी गहराई और गम्भीरता का मुझे बोध होता गया।

मेरा कार्य सात प्रकरणों में विभाजित है। पहले प्रकरण विषय प्रवेश के दो भाग हैं। एक भाग में वाक्य की परिभाषा, उसके विभिन्न अवयवों और प्रकारों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। दूसरे भाग में शिव प्रसाद सिंह के भाषादर्श, वाक्य-संरचना के तेवर और उनकी उपन्यास-समष्टि से कुछ चुने हुये वाक्यों का प्रस्तुतीकरण किया गया है।

मूल कार्य का प्रारम्भ दूसरे प्रकरण से होता है। इसमें संश्लेषणात्मक दृष्टि से प्रतिपाद्य उपन्यासों की वाक्य-संरचना का पद-स्तरीय अनुशीलन किया गया है। इस प्रकरण में संज्ञा, सर्वनाम, कारक, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, सम्बन्ध-सूचक और समुच्चय-बोधक वाक्य-विन्यास का अनुशीलन किया गया है।

प्रकरण तीन में वाक्य स्तरीय संरचनाओं को अपने प्रतिपाद्य उपन्यासों में खोजती हुई मैं आगे बढ़ी हूँ। इसमें वाक्य, वाक्यांश, वाक् पद्धतियाँ, कहावत, मुहावरे मूलक वाक्य संरचनाओं की प्रायोगिक अवस्थाओं को जाँचा-परखा गया है। प्रकरण चार में विश्लेषणात्मक पद्धति का अनुगमन करते हुये वाक्य विन्यास के खंडीय तत्व- बीज वाक्य, पद विस्तार, क्रम और वाक्य के निकटस्थ अवयवों की विवेचना करते हुये प्रकरण पाँच में वाक्य के अति खंडीय तत्व-सुर और बलाघात-सम्पन्न वाक्य संरचनाओं को मैंने अपने प्रतिपाद्य उपन्यासों में खोजने का प्रयास किया है। व्यवस्था, मैत्री, पद सक्रियता मूलक वाक्य, रूपान्तरण, रूपान्तरण मूलक पद्धति, सुर, बलाघात, वाक्य और विराम मूलक संरचनाओं पर विचार भी इन्हीं अध्यायों में किया गया है। प्रकरण छह तथा सात में क्रमशः वाक्य संरचना के अर्थमूलक तत्त्व और प्रतिपाद्य उपन्यासों में वाक्य स्तरीय संरचनाओं को खोजा गया है।

इस अनुसंधान कार्य के दौरान पद-पद पर निराशा, अवरोध, विषम परिस्थितियों से संघर्ष झेलना पड़ा है। किन्तु, स्वजनों के प्रोत्साहन, आत्मीयतापूर्ण सहयोग से मे निराश नहीं हुई,

आगे ही बढ़ती गयी और आज मेरा काम पूर्णता की सीमा को छू रहा है।

आज हिन्दी अनुसन्धान पर सैकड़ों अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हैं। हिन्दी अनुसन्धान जहाँ आरोपों के भँवर में फसा हुआ है वहाँ उसके कुछ मौलिक और उज्ज्वल पक्ष भी है। अभी भी ऐसे मनीषी हैं जिनका मूल उद्देश्य अनुसंन्धान कार्य की मौलिकता और उसके प्रदेय को नवीन बनाये रखने की ओर अधिक रहता है। मुझे मेरे शोध निर्देशक डॉ. दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव ने समय-समय पर अपने स्नेहिल निर्देशन का सम्बल देकर प्रोत्साहित ही नहीं किया बल्कि मेरे कार्य को पूर्णता की सीमा तक पहुँचाया। इसमें समाविष्ट, सम्भावित त्रुटियाँ मेरी हैं किन्तु, विशेषताओं का श्रेय उनके मार्गदर्शन को है। इसके अलावा दयानन्द वैदिक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य तथा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. ब्रजवासी लाल श्रीवास्तव ने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया इसके लिये मैं उनकी अभारी हूँ।

परिवारिक झँझटों से मुक्त रहकर मैं अपना कार्य सम्पन्न कर सकी इसमें मेरे ससुर आदरणीय कृष्ण कुमार जी शुक्ल, मेरी सास श्रीमती पद्मा शुक्ला और मेरे पति श्री प्रशान्त शुक्ला और मेरे पुत्र मनु का विशेष सहयोग है।

अन्त में मैं अपने भाई श्री अरविन्द कुमार और अपने पिता डॉ. रामशंकर द्विवेदी की भी आभारी हूँ जिन्होंने इस कार्य के प्रति मेरी लगन को सदा अक्षुण्ण बनाये रखा। मेरी बहन कु. शची तथा ऋचा और भतीजी हिमानी तथा भतीजे प्रयांशु ने भी अपनी क्षमता के अनुसार मेरी मदद की है।

प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया ने भी अपने उरई प्रवास के समय मेरा मार्गदर्शन किया है एतदर्थ मैं उनकी आभारी हूँ।

इस कार्य को पूरा करने में मैंने इस तरह के शोध कार्य के अपने पूर्व सूरियों के ग्रन्थों से पर्याप्त लाभ उठाया है। इसके लिये मैं उनकी कृतज्ञ हूँ। मैंने जिस किसी से भी जो कुछ लिया है उसका यथा स्थान उल्लेख किया है।

आज इस शोध कार्य के सम्पन्न होने पर मुझे बड़ी शान्ति मिल रही है। अगर बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये मुझे एक वर्ष की अपेक्षित अवधि का विस्तार न करता तो मैं अभी इस कार्य को विश्वविद्यालय के समक्ष प्रस्तुत ही नहीं कर पाती। एतदर्थ मैं उसकी भी आभारी हूँ।

इस शोध प्रबन्ध में टंकण की अनेक त्रुटियाँ रह गयी हैं जिनके लिये मैं खेद प्रकाश ही कर सकती हूँ।

(रेनु द्विवेदी)

(एम.ए. अंग्रेजी, हिन्दी/बी.एड.)

अनुक्रम

* प्रकरण-1 *

-: विषय प्रवेश :-

1.1. **वाक्य- संरचना**

-वाक्य भाषा की अन्यतम इकाई

-वाक्य विभाजन

-वाक्य प्रसारण

-वाक्य संयोजन

-वाक्य विभाजन

1.2. **शिव प्रसाद सिंह: उपन्यास सृष्टि**

-अलग-अलग वैतरणी

-गली आगे मुड़ती है।

-नीला चाँद

-शैलूष

-मंजुशिमा

-कुहरे में युद्ध

-दिल्ली दूर है

-औरत

-वैश्वानर

1.3. शिव प्रसाद सिंह का उपन्यास शिल्प व भाषा-दर्श

1.3.1. शिव प्रसाद सिंह की रचना- प्रक्रिया व भाषा- संरचना

1.3.2. भाषा- संरचना व शैली

1.3.3. कुछ विशिष्ट वाक्य- संरचनाएँ

प्रकरण – 1

विषय प्रवेश

1.0.0. शिव प्रसाद सिंह : उपन्यास– सृष्टि और वाक्य संरचना

* वाक्य–संरचना *

1.0.1. (क). वाक्य भाषा की अन्यतम इकाई

वाक्य मनुष्य की भाषागत अभिव्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण उपादान है। मनुष्य वाक्यों में ही सोचता है। या यूँ कहा जाए कि चिंतन (थिंकिंग) मात्र भाषा में घटित होता है। यहाँ भाषा पदबंधों की उद्देश्य विधेये– नाम तथा आख्यात युक्त वाक्त– संरचना का ही पर्याय है। इसीलिए यह कथन युक्ति–युक्त है कि मनुष्य अपनी मानसिक प्रक्रिया को इच्छा और आवश्यकता के अनुसार वाक्य के रूप में ही अभिव्यक्त करता है।[1]

अब तक किए गए भाषा वैज्ञानिक अनुसंधानों ने यह पुष्ट कर दिया है कि भाषा की न्यूनतम सार्थक इकाई वाक्य ही है। पूर्ण अर्थ द्योतक अन्वय युक्त पदसमष्टि का नाम वाक्य है। [2] किसी भी भाषा में जिस उक्ति में सार्थकता है और विन्यास की दृष्टि से जो स्वतः पूर्ण है उसी कथन की इकाई को व्याकरण में वाक्य कहा जाता है। [3]

गुरू के अनुसार "एक पूर्ण विचार व्यक्त करने वाला शब्द समूह वाक्य कहलाता है", जैसे लड़के फूल बीन रहे हैं"। [4] वाक्य के प्रधान अंश दो हैं: उद्देश्य और विधेय। "राम घर जाता है" वाक्य में उद्देश्य "राम" है और "घर जाता है" विधेय है। उद्देश्य वाले भाग में एक विधेय अथवा सर्वनाम अथवा पद स्थानीय कुछ अवश्य रहता है।

विधेय अंश में एक क्रिया पद जरूर रहेगा। कहीं कहीं यह क्रियापद अनुक्त अथवा छिपा रहता है–. जैसे राम एक अच्छा लड़का। "है" यहाँ छिपा हुआ है।

1.0.2. गठन के अनुसार वाक्यों के तीन प्रकार :–

1. सरल अथवा साधारण वाक्य।

–वह रोज रात दस बजे भात खाता है।

2. मिश्र वाक्य।

इतने दिन तक जो कमाया था सभी चला गया है।

----

1. डा0 सुधा कालरा "हिन्दी "वाक्य–विन्यास", लोक भारती, 1971 पृष्ठ 11
2. संसद व्याकरण अभिधान पृष्ठ 154, अशोक मुखोपाध्याय, साहित्य संसद, कलकत्ता, 1995
3. वही पृष्ठ 154, सुनीति कुमार चट्टोपाध्याय चटर्जी।
4. हिन्दी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरू, पृष्ठ 49, 2049 वि0

3. संयुक्त वाक्य।

वह यहाँ आएगा और रात में इसी घर में रहेगा।

अर्थ की दृष्टि से वाक्यों को आठ भागों में बाँटा गया है : विधानार्थक, निषेधार्थक, आज्ञार्थक, प्रश्नार्थक, विस्मयादि बोधक, इच्छा बोधक, संदेह मूलक, संकेतार्थ अथवा कार्य कारण मूलक।

वाक्य कौन कह रहा है और किस तरह से कह रहा है इस दृष्टि से वाक्य के दो भेद - प्रत्यक्ष कथन तथा परोक्ष कथन।

क्रियात्मक दृष्टि से वाक्यों के प्रकार का रूपान्तरण, वाक्य प्रसारण, वाक्य विभाजन तथा वाक्य विश्लेषण किया जाता है।

1.0.2.1. वाक्य रूपान्तरण : वाक्य के मूल अर्थ में बदलाव किए बिना एक प्रकार के वाक्य का दूसरे वाक्य में परिवर्तन कर देने को वाक्य रूपान्तरण कहा जाता है। सरल वाक्य - मेरी जन्मभूमि का नाम भारत वर्ष है। इस वाक्य का जटिल रूप - जो देश मेरी जन्मभूमि है उसी देश का नाम भारत वर्ष है। संयुक्त वाक्य - भारत वर्ष एक देश है और वही देश मेरी जन्मभूमि है।

1.0.2.2. वाक्य विभाजन : बड़े वाक्य को छोटे-छोटे पृथक वाक्यों में विभाजित करने को वाक्य विभाजन कहते हैं।

जैसे - बहुत दिन पहले जब पृथिवी पर जीवन की सृष्टि नहीं हुई थी, प्रचण्ड अग्नि से उत्तप्त शिलाखण्डों और झाड़ियों से पूर्ण इस धरा पर आग उगलने वाले ज्वालामुखियों की अग्नि का प्रवाह चलता रहता था। इसी को यों विखंडित किया जा सकता है : बहुत दिन पहले की बात है। पृथिवी पर उस समय जीवन की सृष्टि नहीं हुई थी। धरातल गर्म शिलाखण्डों और झाड़ियों से परिपूर्ण था। धीरे-धीरे ज्वालामुखियों का अग्नि उगलना ही चलता रहता था।

1.0.2.3. वाक्य विश्लेषण : वाक्य के प्रधान अंशों को अलग कर वाक्य में आए पदों का अन्वय निश्चित करने को ही वाक्य विश्लेषण कहा जाता है। वाक्यों के प्रकार का निर्णय करना वाक्य विश्लेषण का प्रथम सोपान है। हर वाक्य का विश्लेषण अलग-अलग होता है।

1.0.2.4. वाक्य प्रसारण : मूल वक्तव्य में कोई परिवर्तन बिना किए वाक्य को अनेक पदयुक्त वाक्य में परिणत करने की क्रिया का नाम वाक्य प्रसारण अथवा वाक्य संप्रसारण है। वाक्य के प्रसारण में कोई सरल वाक्य जटिल अथवा संयुक्त हो सकता है। उसने मुझे आकाश में उड़ती हुई पतंग दिखायी। जो पतंग उड़ रही थी, उसकी तरफ उसने मेरी दृष्टि आकर्षित की।

1.0.2.5. <u>वाक्य संयोजन</u> : बिना अर्थ परिवर्तन के एक से अधिक वाक्यों को एक वाक्य में परिवर्तन करने को वाक्य संयोजन कहा जाता है। परिवर्तित वाक्य सरल, मिश्रित और संयुक्त हो सकते हैं।

<u>वाक्यांश</u> : वाक्य के एक से अधिक पद युक्त अंश को वाक्यांश कहा जाता है। जैसे – बहुत दिन पहले बंगाल के एक छाया भरे गॉव में साहबों ने एक प्रमोद कोठी बनवायी। इस वाक्य में "बुहत दिन पहले", बंगाल के एक छाया भरे गॉव में, "साहबों ने एक प्रमोद कोठी बनवायी" इन अंशों को वाक्यांश कहा जाएगा। ये वाक्यांश कर्ता, कर्म अथवा क्रिया हो सकते हैं। जैसे– पूर्ण भाव को व्यक्त करने वाला अगर कोई वाक्यांश कर्ता का काम करे तो उसे वाक्यांश कर्ता कहा जाएगा– उसके जीवन यापन की पद्धति ऐसी ही थी। इसमें जीवन यापन की पद्धति वाक्यांश कर्ता है। किसी वाक्य में कोई वाक्यांश यदि कर्म का काम करे तो उसे वाक्यांश कर्म कहा जाएगा। जैसे– जेब और हाथ की सारी चीजें उसने दे डालीं। यहाँ "जेब और हाथ की सारी चीजें" वाक्यांश कर्म हैं। वाक्यांश क्रिया– वाक्य की सारी यौगिक क्रियाएं वाक्यांश क्रिया कहलाती हैं। जैसे– कौन बैठ गया। वे कहने लगे। उसने दौड़ना शुरू किया। वाक्य में सुर या बलाघात– वाक्य के विभिन्न पदों के उच्चारण के समय कंठ ध्वनि में आरोह–अवरोह या उतार–चढ़ाव होता है। ध्वनि के आरोहण अथवा अवरोहण के कारण एक प्रकार के स्वर की सृष्टि हो जाती है। इसी को वाक्य का सुर कहते हैं। इस सुर के साथ श्वास का आघात होने से वाक्य का अर्थ स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो जाता है। एक ही पद समष्टि से बने वाक्य का अर्थ "सुर" के कारण बदल जाता है।

1. <u>तुम</u> क्या खाओगे?
2. तुम <u>क्या</u> खाओगे?
3. तुम <u>क्या</u> <u>खाओगे?</u>

पहले वाक्य का अर्थ है– और कोई चाहे जो खाए तुम क्या खाना चाहते हो उसे बताओ। दूसरे का अर्थ है तुम्हें खाना है या नहीं? तीसरे वाक्य का अर्थ है– यहाँ अन्य किसी के खाने की बात नहीं है। यह पता है कि तुम्हें खाना है। सिर्फ यह बताओ तुम्हें कौन सा खाना चाहिए।

1.0.2.6. वाग्धारा– लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ युक्त विशिष्ट वाक्यांश अथवा शब्द समष्टि को <u>वाग्धारा</u> कहा जाता है। वाग्धारा वस्तुतः विशिष्टार्थ बोधक वाक्यांश होता है। ये किसी भी भाषा की सम्पत्ति होते हैं। इन्हें मुहावरा भी कहा जाता है।

पीछे वाक्य की परिभाषा पर यत्किंचित विचार किया गया है। वस्तुतः वाक्य की परिभाषा विवादास्पद है।

1.1.1. भारतीय और पाश्चात्य भाषाशास्त्री वाक्य को भाषा की एक अविभाज्य और सर्वत: पूर्ण इकाई मानते हैं। इस मान्यता के मूल में यह तर्क है कि मन में भाव और विचार एक वाक्य के रूप में ही उत्पन्न होते हैं और इसी रूप में इनका आदान -प्रदान होता है। वैन्द्रेय के मत से मानव- विचार प्रक्रिया एक आन्तरिक भाषा के समान है जिसमें व्यक्त भाषा के समान ही वाक्य परस्पर सम्बद्ध रहते हैं। हमारे सोचने का और वार्तालाप का माध्यम वाक्य ही है।[1]

इस सम्बन्ध में भाषा- विषयक विवेचन में कई प्रकार के मत मिलते हैं, यास्क, जैमिनी और अन्य भाषाविदों की रचनाओं में परस्पर विरोधी मत पाए जाते हैं। एक मत के अनुसार प्रत्येक वर्ण का निश्चित अर्थ होता है और शब्द वर्णो का समूह है अत: शब्द का अर्थ वर्णो के संघात पर आधारित रहता है। दूसरे मत के अनुसार शब्दों या पदों का अर्थ पृथक- पृथक होता है और ये स्वतंत्र इकाइयाँ हैं जिनके संयोग से वाक्य की रचना होती है। इन मान्यता के आधार पर शब्दों को परस्पर स्वतंत्र और स्वत: महत्वपूर्ण वर्णो में विभाजित कर दिया गया। एक अन्य मत है कि शब्दों का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता। शब्द केवल अपनी निषेधात्मक और प्रतीकात्मक शक्तियों के द्वारा काम करते हैं। वाणी की इकाई नही हो सकती है क्योंकि केवल अर्थवत्ता मात्र से ही वाणी की इकाई सिद्ध नहीं की जा सकती। इस प्रकार वर्ण, शब्द और वाक्य तीनों ही वाणी की इकाई सिद्ध किए जाते रहे।[1]

इस संदर्भ में वाक्य पदीयकार मर्तृहरि का मत ही मान्य है। उनके मत का निष्कर्ष यह है कि वाक्य शब्द- संघात से बनता जरूर है किन्तु शब्दों की स्वतंत्र सत्ता नहीं है अपितु वाक्य शब्द समूह से उत्पन्न एकात्मक और समग्र प्रतीक है। इसीलिए डा0 व्रजवासी लाल श्रीवास्तव का मत है: वाक्य एक अखण्ड इकाई है।[2] पद की सत्ता उसकी अखण्डता में वाधक न होकर साधक होती है। इसीलिए जहाँ वाक्य की पूर्णता के लिए विभिन्न विशेषताओं का उल्लेख किया गया है, वहाँ आकांक्षा तथा सन्निधि का भी महत्व बतलाया गया है। ये दोनों तत्व पद के महत्वको प्रकट करने के साथ-साथ वाक्य की अखण्डता की ओर भी संकेत करते हैं। इसी को ध्यान में रखकर कहा गया है कि वाक्य में पदों का अर्थ की दृष्टि से महत्व होने पर भी एक- दूसरे के बिना वे अधूरे हैं। प्राचीन भाषा शास्त्रियों ने वाक्य की पूर्णता के लिए आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि तीन आवश्यकताओं को अनिवार्य बताया है। वाक्य में प्रयुक्त पदों को परस्पर इतने निकटता से संबद्ध होना चाहिए कि वे वक्ता के अभिप्रेत अर्थ की अभिव्यक्ति कर सकें। डा0 भोलानाथ तिवारी के शब्दों में "समवेत रूप से वाक्य के लिए छह बातों आवश्यक हैं:-

----

1. डा0 सुधा कालरा, हिन्दी वाक्य विन्यास, पृष्ठ 13

2. हिन्दी वाक्य रचना, डी0 लिट का अप्रकाशित शोध. प्रबन्ध, डा0 व्रजवासी लाल श्रीवास्तव, वाक्यभेद प्रकरण 1-400 "वाक्य सार्थक पद- योग्यता के अन्तर्गत अखण्ड इकाई में मानव विचारोंकी अभिव्यक्ति है।" 1.2.29 वही।

सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, सन्निधि, अन्वय, और क्रम।

1. सार्थकता – इसका आशय यह है कि वाक्य के शब्द सार्थक होने चाहिए।

2. योग्यता – "योग्यता" का अर्थ यह है कि शब्दों की आपस में संगति बैठे। शब्दों में प्रसंगानुकूल भाव कर बोध कराने की योग्यता या क्षमता हो। "वह पेड़ को सींचता है" वाक्य में शब्द तो सार्थक है, किन्तु पत्थर से सींचना नहीं होता, इसीलिए शब्दों की परस्पर योग्यता की कमी है, अतः यह सामान्य अर्थो में योग्यता की कमी है, अतः यह सामान्य अर्थो में वाक्य नहीं है, उलटबाँसी भले हो।

3. आकांक्षा – इसका अर्थ है "इच्छा"। वाक्य में इतनी शक्ति होनी चाहिए कि पूरा अर्थ दे। उसे सुनकर भाव पूरा करने के लिए कुछ जानने की आकांक्षा न रहे। यह शर्त विवादास्पद है।

4. सन्निधि या आसक्ति – सन्निधि या आसक्ति का अर्थ है "समीपता"। वाक्य के शब्द समीप होने चाहिए।

अन्विति या अन्वय – इसका अर्थ है व्याकरणिक दृष्टि से सामान्य रूपता। दूसरे शब्दों में वाक्य के पदों या रूपों में लिंग, वचन, कारक, पुरूष आदि की दृष्टि से एकरूपता या समता। इस दृष्टि से हर भाषा के अपने नियम होते हैं। हिन्दी में क्रिया प्रायः लिंग, वचन, पुरूष में कर्ता के अनुकूल होती है।

6. पदक्रम अथवा शब्दक्रय – वाक्य के पदों या शब्दों का क्रम भी भाषा विशेष के नियमों के अनुसार होता है। कर्ता, कर्म, क्रिया या उद्देश्य, विधेय आदि वाक्य में क्रम के लिए हर भाषा के अने नियम होते हैं। वाक्य की रचना में इनका ध्यान रखा जाता है। यदि उपर्युक्त सारी बातें किसी रचना में हों, तभी उसे वाक्य कहेगें। डा0 भोलानाथ तिवारी इनमें एक "वी विशेषता लघुतम" भी जोड़कर उसे भाषा की सार्थक लघुतम इकाई कहते हैं। [1]

1.1.2. वाक्य विभाजन : ऊपर वाकय विभाजन का संकेत किया जा चुका है। अभी तक भाषा वैज्ञानिकों को ऐसा कोई विभाजन नहीं मिल सका जो सब भाषाओं पर लागू किया जा सके। फिर भी इसका तीन प्रकार का विभाजन है: (क) अग्र और पश्च, (ख) उद्देश्य और विधेय, (ग). उपवाक्य।

वाक्य के अग्र और पश्च भाग स्वाभाविक रूप से आते हैं। विशेषतः जब हम धारा प्रवाह रूप में बोलते हैं तो भाग अपने आप सामने आ जाते हैं। पर ये भाग अपढ़ लोगों के छोटे–छोटे वाक्यों में मिलते हैं, शिक्षित लोगों की लिखा भाषा में नहीं।

---

1. डा0 भोलानाथ तिवारी: भाषा विज्ञान कोश, पृष्ठ 591–92

(ख) उद्देश्य विधेय वाक्य में कर्ता और क्रिया ये दो विभाग अवश्य रहते हैं। कभी –कभी कर्ता के साथ उसका विस्तार भी रहता है। इसी प्रकार क्रिया के साथ उसका भी विस्तार रहता है। कर्ता और उसके विस्तार को छोड़कर, वाक्य में जो कुछ होता है, उसमें एक तो क्रिया होती है और शेष जो कुछ भी होता है क्रिया का विस्तार अथवा विधेय विस्तारक कहलाता है। वाक्य में कर्ता या कर्ता और उसके विस्तार को उद्देश्य तथा क्रिया या क्रिया और उसके विस्तार को विधेय कहते हैं। उद्देश्य या कर्ता के बारे में विधान करने के कारण ही शेष वाक्यांश विधेय कहलाता है।

उद्देश्य अधिकतर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियार्थक संज्ञा या वाक्यांश होते हैं। उद्देश्य का विस्तार सार्वनामिक विशेषण, विशेषण या विशेषता सूचक वाक्यांश "राम का बड़ा भाई श्याम घर गया" आदि होते हैं। मूल विधेय या विधेय का मूल भाग क्रिया होता है। उद्देश्य, उद्देश्य का विस्तार तथा मूल विधेय के अतिरिक्त वाक्य में जो भी शब्द बचते हैं क्रिया या मूल विधेय के विस्तार या विधेय के विस्तार कहलाते हैं।

विधेय के विस्तार पूरक, पूरक के विस्तार, कर्म, कर्म के विस्तार, करण, करण के विस्तार, सम्प्रदान, सम्प्रदान के विस्तार, अपादान, अपादान के विस्तार, अधिकरण, अधिकरण के विस्तार, सम्बोधन, सम्बोधन के विस्तार, क्रिया विशेषण तथा पूर्व कालिक क्रिया आदि हो सकते हैं।

1.1.2.1. **उपवाक्य :** किसी वाक्य में यदि कई वाक्य हों तो वे उपवाक्य कहलाते हैं। उपवाक्य दो होते हैं– मुख्य उपवाक्य तथा उसके उपवाक्य। जो वाक्य किसी के आश्रित न हो वह प्रमुख उपवाक्य कहलाता है। आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं– संज्ञा, विशेषण और क्रिया विशेषण उपवाक्य। पद–लोप–वाक्य में किसी पद रूप या शब्द का लुप्त रहना पद लोप कहलाता है। वाक्य में जब आवश्यक सभी पद तथा सहायक शब्द (परसर्ग, संयोजक, सहायक क्रिया आदि) हों तो वह पूर्ण वैयाकरणिक वाक्य होता है, किन्तु प्रायः ऐसा भी देखा जाता है कि इनमें एक या अधिक की कमी भी होती है। हिन्दी में आजकल लेखकों में पद लोप की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसीलिए अब हिन्दी रचनाओं में एक "पद" के भी वाक्य मिलते हैं। ऐसे वाक्यों को पद लोपी वाक्य कहा जाएगा। कारक करने (कृ क्रियार्थे) वाले को कारक कहते हैं। व्याकरण में "कारक" वह संज्ञा या सर्वनाम कहलाता है जिसका क्रिया से सीधा संबध हो। या "कारक उस वस्तु को कहेंगे जिसका क्रिया संपादन में सीधा उपयोग हो। कारक छः होते हैं– कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, उपादान, अधिकरण। पद दो और माने जाते हैं, संबध तथा संबोधन। इनके चिन्हों को परसर्ग, विभाक्ति या कारक चिन्ह कहा जाता है। इन्हें संबध सूचक अव्यय भी कहा जाता है।

ऊपर संक्षप में वाक्य संरचना और उसके विन्यास मूलक जिन आधारों का संकेत किया गया है इन्हीं आधारों पर डा0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों की वाक्य संरचना का अनुशीलन किया जाएगा।

यहाँ यह जान लेना जरूरी है कि डा0 शिव प्रसाद सिंह का भाषा-विषयक आदर्श और लक्ष्य क्या था? उनकी उपन्यास- सृष्टि का शिल्प क्या है साथ ही उनके उपन्यासों की वाक्य संरचना किस प्रकार की है।

1.1.2.2. **शिव प्रसाद सिंह: उपन्यास सृष्टि**

साहित्यकार डा0 शिवप्रसाद सिंह (1928-1998) एक बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वे एक भाषाविद, समीक्षक, दर्शनशास्त्री, निबन्धकार, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार, विचारक शोध प्रज्ञा- सम्पन्न एक ऐसे रचनाकार थे कि इन्होंने साहित्य की जिस विधा का स्पर्श किया उसी पर अपनी छाप छोड़ दी। प्रायः इनके इस बहु आयामी व्यक्तित्व को हिन्दी में बहुत कम लोग पचा पाते थे। उनके समकालीनों ने उनकी उपेक्षा की, पर उनकी रचनात्मक प्रतिभा अपनी डगर पर निरन्तर गतिशील बनी रही- उनकी मृत्यु तक।

अन्य विधाओं की तरह उनके उपन्यास- सृष्टि भी विविधमुखी है। उन्होंने अपने एक उपन्यास के शिल्प या ढांचे को कभी दूसरे उपन्यास में नहीं दुहराया। जिनकी हर कथाकृति अपने रूप और प्रस्तुतीकरण में विशिष्ट है।

उनका पहला उपन्यास "अलग-अलग वैतरणी" है जो ग्रामीण जीवन के उस पतनमुखी समाज को उजागर करता है जो स्वतंत्रता के बाद उभर कर आया है। दूसरा उपन्यास "युवा-आक्रोश" पर आधारित "गली आगे मुड़ती है" है जिसमें उन्होंने काशी के आधुनिक और समकालीन जीवन को चुना है, जो उनकी काशी श्रृंखला, में अन्तिम किन्तु, लेखन अवधि की दृष्टि से उस त्रयी का पहले प्रकाशित उपन्यास है। तीसरा उपन्यास "नीला चाँद" है जो 1988 ईसवी में प्रकाशित हुआ। यह काशी श्रृंखला का दूसरा उपन्यास है। इसमें मध्यकाल की काशी और जुझौती की भी कुछ कथा आ गयी है। चौथा उपन्यास नटों के जीवन पर लिखा गया शैलूष (1989) है जो काफी विवादास्पद रहा और इसके बाद अपनी पुत्री को आधार बनाकर लिखा गया मंजुशिमा (1990) उपन्यास है जिसमें व्यक्तिगत् पीड़ा और आज के अस्पतालों में व्याप्त संवेदन-हीनता को तीखी शैली में व्यक्त किया गया है। इसके बाद के उपन्यास "कुहरे में युद्ध" (1993) तथा "दिल्ली दूर है" (1993) जो एक ही उपन्यास हनोज दिल्ली दूरअस्त

के दो खण्ड हैं। और विश्वमंच पर चलने वाले छायायुद्ध "प्रोक्सीवार" के मनोविज्ञान पर प्रश्न चिन्ह लगाया गया है। इसके बाद उनका उपन्यास "औरत" है जो नारी की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालता है और अन्तिम उपन्यास काशी श्रृंखला की पहली किन्तु प्रकाशनावधि की दृष्टि से अन्तिम कड़ी "वैश्वानर" है जिसमें वैदिक काल की काशी पर प्रकाश डाला गया है।

अपनी उपन्यास सृष्टि के संबध में स्वयं लेखक के क्या विचार हैं इसे नीचे दिया जा रहा है।

"सपने अधूरे" शीर्षक से लिखित और व्यास सम्मान के अवसर पर पठित अपने आत्म कथ्य में डा0 शिव प्रसाद सिंह ने कहा है: गॉव में जन्मा, धान खेतों, चैती फसलों के अछोर सीवानों पर तितली पकड़ने के लिए दौड़ता रहा। सीमान्त की मेड़ों पर झबेरी की झाड़ियाँ हासिए बनाती रहीं, पर वे मेरी उड़ान कभी रोक नहीं पायीं।

काशी आया और कुछ-कुछ पर फड़कने का बोध हुआ तो लगा मेरे सामने दो व्यक्ति खड़े हैं जो मेरी नियति हैं। पिता का कोई विकल्प होता भी कहाँ है। मन में गॉव पर कुछ अनकहा कहने की कामना जगी तो भेंट हो गई श्री प्रेमचन्द से। उनका कोई विकल्प आज तक नहीं मिल सका। यथार्थवादी कथाकार को, गॉव पर लिखने को उत्सुक व्यक्ति को उनसे अलग शरण भी कहॉ थी। पर 1951 में "दादी माँ" छपी तो एक ऐतिहासिक तथ्य इसी के साथ उछला था पर अब तक कभी कहा नहीं गया। मैंने प्रेमचन्द की अपेक्षा उन दिनों प्रसाद को पढ़ने में अतिशय भावविभोरता का अनुभव किया। मुझे शरत् पसन्द थे, प्रेमचन्द नहीं। मैने कहीं लिखा है कि हिन्दी कथा साहित्य में मेरा प्रवेश शरत्, तोल्स्तोय, चेखव और तुर्गनेव के बीच से हुआ, प्रेमचन्द ओर जैनेन्द्र के भीतर से नहीं। कारण साफ कह दूँ कि मैं प्रेमचन्द की भाषा की सपाटता और शरत् के भराव में बहुत अन्तर करता हूँ। मैं रूपवादी कभी नहीं रहा, पर रूप को अथवा अभिव्यक्ति माध्यम के सौन्दर्य को यूँ ही अस्वीकृत नहीं करता।

"दादी माँ" कहानी के बाद संपादक डा0 सिंह से आंचलिक जीवन पर लिखी जाती कहानी माँगते गये और समीक्षक उन्हें आंचलिक कथाकार की श्रेणी में डालते गये। उन्होंने लिखा है: तंग आकर मैने आंचलिक सम्मोहन या "नास्टेलजिया" को तोड़ने के लिए "अलग-अलग वैतरणी" लिखी। इस उपन्यास की तट-चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा मैं चाहे लाख चाहूँ, पढ़ने वाले इसे यदि ऑचलिक उपन्यासों की पंक्ति में डालदें, तो मैं कर ही क्या सकता हूँ। हॉ, निवेदन सिर्फ इतना है कि पढ़ते समय उपन्यास यदि ऑचलिक लगे तो लगे, आपकी दृष्टि ऑचलिक न हो, बस।"

उन्होंने उस समय के (1951) ईसवी के माहौल की चर्चा करते हुए लिखा है: "कुछ ऊल जलूल या ऐबसर्ड जेसी परिस्थितियों में लेखन चलने लगा। मैं साफ कह दूँ कि मैं साहित्य में जितनी रूचि रखता था, उतनी ही दर्शन या तत्व चिन्तन में भी।....

"इसी तरह के माहौल में मैने काशी पर तीन उपन्यासों के लिखने का संकल्प लिया। "गली आगे मुड़ती है" आधुनिक काशी का नखदर्पण है। मेरी मान्यता रही है कि नगरीय संस्कृति के सही मूल्यांकन के लिए आधुनिकतम से लेकर प्राचीनतम इतिहास के उन हिस्सों को चुनना होगा जहाँ भौगोलिक और संस्कृति के दोनों पनाले बन्द हो जाऐं और एक साथ गटर का पानी पूरे शहर की गलियों में भर जाय। तभी आप उस वैषभ्य का बोध कर पायेगें। स्थूल गटर से ज्यादा मन के गटर होते हैं। दोनों को देखना था। अतः जानकर 1967 को चुनना पड़ा क्योंकि वह वर्ष अंग्रेजी हटाओ के नारों से गुंजित-कंपित छात्र आन्दोलनों का वर्ष था और कोढ़ पर खाज उसी वर्ष गंगा की बाढ़ ने विभीषिका के पुराने मान दण्डों को भी तोड़ दिया था।..... आज भी "गली" उस जमाने के समाजवादी युवजनों के गले की हार बनी है। पर मेरी तो हार बन गई क्योंकि वह "वैतरणी" की उच्चता को तोड़ नहीं पायी। हाँ, लोक प्रियता में जरूर लाँघ गयी।"

"नीला चाँद" की प्रेरणा बनी अदम्य इच्छाशक्ति, अदम्य जिजीविषा। यही है "नीला चाँद" की सबको प्राप्त सुलभ ज्योति किरण विद्याधर देव का सपना मेरे मन का सपना था।"

अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए शिव प्रसाद सिंह ने लिखा है "अराजकता में डूबा, निराश, दिशाहारा मैं और मेरा देश पुकारने लगे। मुझे इतना भी आत्म विश्वास नहीं था कि मैं एक दशक के अन्तराल के बाद फिर रचना कर सकूँगा। पर "नीला चाँद" तो मन के भीतर इस तरह झिलमिला रहा था कि मैं उसे बिना बाँधे बेचैन था। मैने अपनी जिन्दगी में तीस साल के रचनाकाल में कभी ऐसा होते नहीं देखा। मैं कलम लेकर बैठता और वेदना का सरोवर अचानक उमड़ पड़ता। शायद बहुत बेचैन आन्तरिकता को खोलने और बिलगाने के लिए मुझे वर्तमान के ओर-छोर विहीन समाधानों की जरूरत नहीं थी। मैं समाज विखण्डन का कथाकार कभी नहीं था। मेरी समस्याएं और समाधान तै नहीं थे जैसे प्रेमचन्द में हैं। या कि उनकी परम्परा को पूजने वालों में है। मैं व्यक्ति विखण्डन के भीतर से गुजरने वाला कथाकार हूँ मुझे पूर्वजों का रिक्थ और आधुनिकता की भरपूर जीवनी शक्ति प्राप्त है। पर मैं आधुनिकता की नकली दुनिया और समाजवादी यथार्थ के नाम पर नारों का संसार फेंक चुका था। मेरे भीतर एक आहत

व्यक्ति था, एक कर्तव्यमूद राष्ट्र था, एक अतिवादी छोरों पर औसत से ज्यादा खिंचती रवड़ के टुकडे जैसी मानवता थी, जिसका टूटना देख रहा था। जिसे मैं जीना और जिलाना चाहता था। अपना सब कुछ, सारी अस्मिता विश्व मानव के हेतु निछावर कर देना चाहता था।

कहना न होगा इन्हीं सबका प्रतिफलन "नीला चॉद" में हुआ है। उन्होंने लिखा है: "मैंने पुत्री के निधन के बाद अगस्त 85 में इस उपन्यास का आरम्भ किया। और मैं बल देकर कहना चाहता हूँ कि स्वान्त: सुखाय वैसी हास्यास्पद चीज नहीं है जैसा मैं या दूसरे लोग समझते हैं। उदासी और दिशाहीन अंधेरे में सत्य के लिए समर्पित छोटे से छोटा व्यक्ति डोम, गोंड, नट, कहार, नाई या इससे भी अदने किसी पात्र के साथ मैं रोज जन्म लेता रहा, टूटता रहा, हर विजय पर हॅसता रहा, हर पराजय पर रोता रहा। आदमी तो आदमी एक अश्व भी इस उपन्यास का एक विशिष्ट पात्र है जिसके साथ मैं हॅसता और रोता रहा हूँ। "नीला चॉंद" का सपना इतिहास में रखने का मूल कारण था वह छूट जो मूल कारणों को आसानी से पहचान कर उनकी अमानवीयता को रेखांकित कर सकती है।"

"नीला चॉद" का इतना विस्तृत उद्धरण इसलिए दिया कि यही उनकी वाक्य संरचना की जटिलता और भाषा के कई तेवरों को व्यक्त करने में समर्थ है।

अन्य उपन्यासों के संदर्भ में शैलूष (1989) को सम्पादकों ने "दस्तावेजी उपन्यास कहा है।" [1] लेखक अपनी भूमिका में कहता है: "शैलूष में आप ध्यानपूर्वक देखें तो लगेगा कि आपके एकदम निकट परिवेश में हक के लिए लहुलुहान होने पर भी लड़ाई जारी है। कल्पना करके कि मुझे एक सकारात्मक उपन्यास लिखना है, मैने शैलूष नहीं लिखा। शैलूषों की लड़ाई मैंने 10 वर्ष की उम्र में अपने चाचा की छावनी गोसइसीपुर में देखी। फिर करैता के खलिहान में। वह लड़ाई मेरे जेहन में उतरती गयी। मैं उन दु:स्वप्नों की बिना कागज पर उतारे शांति नहीं पा सकता था। वह सब सही ढंग से उतारने की कोशिश की है। उतरा या नहीं, इसे आप बतायें, मैं तो संतुष्ट हूँ कि बबूल के कॉटों को अपने कलेजे से उखाड़कर जनधारा में फेंक दिया है।"

"मंजुशिमा" आत्म पीडा का उपाख्यान है। इस संदर्भ में लेखक का कथन है "मैं जानता हूँ कि व्यक्ति की नियति को मानव जाति पर आरोपित करना लेखक की स्वस्थ रचनाधर्मिता के विरूद्ध है। मैं सैडिस्ट नहीं हूँ। मैं यह आशा करके नहीं चला था मंजुशिमा लिखने, कि मेरे जैसे दु:ख से ग्रस्त

----

1. "आज" के काशी संस्करण के सम्पादक चन्द्रकुमार का कथन।

2. शैलूष, भाटिका पृष्ठ

लोगों को थोड़ी ढाढस मिलेगी, सुकून मिलेगा। मैं अपने किसी निकट्तम व्यक्ति को भी इस पीड़ा का साझीदार बनाना नहीं चाहता। मैंने तो सपने में भी नहीं सोचा कि मेरे पाठक मेरी ही तरह दु:ख की अग्नि ज्वाला के भीतर से गुजरें तभी उन्हें मंजुशिमा की रचना प्रक्रिया का बोध हो सकता है।" आगे उन्होंने लिखा है: मैं जिन्दगी भर अशांत रहा। जब भी अशांत स्थिति भारी हो जाती थी, कोशिश करता था कि सब कुछ अल्लम–गल्लम जो दिमाग में जमा है, उखाड़– पछाड़ कर बाहर फेंक दूँ। [1] सब कुछ इसी उलीचने की प्रक्रिया से मंजुशिमा का जन्म हुआ है।

"कुहरे में युद्ध" (प्रोक्सी वॉर) तथा "दिल्ली दूर है" ये दोनों उपन्यास मध्यकालीन भारत पर केन्द्रित हैं। एक का घटना स्थल जुझौती –बुन्देलखण्ड है दूसरे का दिल्ली। इन दोनों की प्रेरणा भूमि के सम्बन्ध में लेखक का कहना है–

"अंधेरा और इतिहास लगभग मिलते–जुलते अभिप्राय वाले विरोधी शब्द लगते हैं, पर इसमें शक नहीं कि हम जब भी भारतीय वातावरण में अतीत को देखना चाहते हैं, वर्तमान को पहचानने के लिए या इसके आगे भविष्यत् की ओर बढ़ने के लिए हमारा इतिहास एक मोटी पर्त जैसा लगता है जो सत्य के मुख को हिरण्मय पात्र से ढकने की, ढंगे रखने की प्रक्रिया छोड़ने को तैयार नहीं लगता। मुझसे बार–बार पूछा जाता है कि आप "अलग –अलग वैतरणी" के बाद काशी पर क्यों लिखने लगे या कि "नीला चॉद" की सफलता ने क्या आपको लाचार बना रखा है कि आप आज के समसामयिक परिवेश से टकराना नहीं चाहते।"[2]

इस संदर्भ में उन्होंने आगे लिखा है: वैश्वानर अब तक आ गया होता, पर भारत के आधुनिक परिवेश में पिछले एक दशक से जैसा उद्वेलन जन्मा है और जो निरन्तर बदतर रूप लेता जा रहा है, उसने मुझे बहुत तोड़ा। हिन्दु –मुस्लिम साम्प्रदायिकता ने नींद हराम कर रखी है।...... आप पिछले चार दशक से जिस धर्म निरपेक्षता के खूँटे में देश की नैया को बाँधे हुए हैं उसका न रूपाकार है न आयतन। न ही उसकी कोई पहचान है न तो विश्वास और आस्था, जो तूफान में तो कर्णधारों के मन में होनी ही चाहिए।

"अगर आपने मन–ही–मन यह निश्चय कर लिया हो कि इतिहास में लौटना प्रतिगामिता है और ऐसा करने वाले वर्तमान से टकराने में कतराते हैं तब तो बहस का सवाल ही नहीं है। आज यदि

----

1. मंजुशिमा की भूमिका "कठिन है डगर पनघट की", पृष्ठ 9

2. रुकिए, आगे भग्नावशेष है, कुहरे में युद्ध की भूमिका, 9

आप पूरे विश्व के साहित्य को देखें तो अतीत की ओर दौड़ आपको हतप्रभ कर देगी। आधुनिकता और तकनीकी प्रोन्नति से जन्मे वातावरण में सांस लेना जैसे कठिन हो गया है वैसे ही आज के तथाकथित आधुनिक मूल्यों के कशमकश से घबराकर लोग ऐसे चरित्रों को ढूंढ रहे हैं जो अतीत के होते हुए भी हमारे वर्तमान के आदर्श हैं।"

उन्होंने आगे लिखा है: "इन सबका प्रेरणा बिन्दु अपनी-अपनी पहचान को ढूंढने का वह भाव है जो अपनी जड़ों की ओर लौटने का संकल्प लेकर चला है। यह कार्य अगर भारत में बहुत स्पष्ट रूप से उभरा है तो उसका कारण हमारे इतिहास की समृद्ध परम्परा है। प्राचीनता है।.. यह खण्ड "कुहरे में युद्ध" तो पूर्णतः जुझौती पर ही केन्द्रित है। क्यों केन्द्रित हुआ? कारण कि मुसलमानी आक्रमण से सर्वाधिक रूप से टकराने का कार्य केवल तीन क्षेत्रों में ही हो पाया है।" आगे वे लिखते हैं- सारी पराजयों में एक अपवाद रही जुझौती। यह लड़ाई कुहरे में क्यों हुई आप खुद पढ़िए। [1]

"दिल्ली दूर है" की भूमिका में डा0 शिव प्रसाद सिंह उसकी प्रेरणा भूमि का जिक्र करते हुए लिखते हैं: मैंने "व्यास सम्मान" ग्रहण करते हुए कहा था कि मैं व्यक्ति और व्यक्तिगत् घटनाओं से थोड़ा हटकर कालचक्र पर लिख रहा हूँ इसलिए यदि मेरे भारी भरकम उपन्यास आपकी कलाकारिता भरी छोटी-छोटी सुन्दर रचनाओं की जौहरी तुला पर असुन्तुलन पैदा कर रहे हैं तो क्षमा करेगें।"

इसी में जोड़ते हुए उन्होंने लिखा था, आज इतनी दूरी और खाई आ गई है कि एक-दूसरे को शब्द सेतु भी जोड़ नहीं पा रहे हैं। ऐसे में क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं है कि हम एक बार उन नीवों की जांच कर लें जिनको रखते वक्त शायद गारे की जगह मॉस के लोथड़े, खून में भिगोकर तहियाये गये थे।....... मेरा ध्रुव विश्वास है कि आगामी मानवता के विकास में भारतीय धर्मो, वेदान्त केन्द्रित हिन्दु धर्म तथा बुद्ध, गॉधी की अहिंसा प्रमुख तत्व बनेगी। "वसुधैव कुटुम्बकम्" का मन्त्र सारे विश्व में गूँजेगा। एक - न -एक दिन, पर अब तक ऐसा क्यों नहीं हुआ। इसके कई कारण हैं।" इन्हीं सब कारणों की छानबीन का परिणाम "दिल्ली दूर है" उपन्यास है।

और "वैश्वानर" (काशी-1) वैदिक काशी के अंधकार युग को आधार बनाकर लिखा गया उपन्यास है। वैदिक सूक्तों और मंत्रों का सहारा लेकर उन्होंने यह उपन्यास लिखा है। उनका कहना है:

1. वही भूमिका पृष्ठ 11, 12

मैं जानता हूँ कि हमारा बौद्धिक कितना नकलची और अज्ञान के ज्ञान में मस्त रहने वाला प्राणी है। उसे अगर बाइबिल या कुरान सुनाया जाये तो वह प्रशंसा के अतिरिक्त एक शब्द नहीं कहेगा, परन्तु यदि हम वैदिक युग की मान्यताओं के अनुरूप कुछ भी लिखें तो वह उसे रासायनिक प्रक्रिया कहकर नाक-भौं सिकोड़ेगा। उसे सर्वत्र अलग देखने की बीमारी है।" लेखक ने वैदिक सूक्तों और कुछ किंवदन्तियों के सहारे इस उपन्यास की रचना की है।

अपने एक मित्र की जिज्ञासा का उत्तर देते हुए शिव प्रसाद सिंह ने एक स्थान पर लिखा है: "आरवेल का अलेकजाण्ड्रिया-चतुष्टय अपनी ओर नहीं खींचता, क्योंकि वे ऐतिहासिक विवरणों से भरे रिपोर्ताज की शैली में लिखे गए हैं, जबकि मेरी "काशी-त्रयी" संस्कृति, आचार- व्यवहार तथा सच्चे वातावरण में डूबकर लिखी गयी है। [1] इन तीनों उपन्यासों का लक्ष्य वैदिक, मध्यकाल और समकाल को साकार प्रस्तुत करना रहा है।

यहाँ तक लेखक के शब्दों में उसकी उपन्यास सृष्टि की प्रेरणाभूमि की चर्चा की गयी। आगे उसके उपन्यास शिल्प और उसके भाषादर्श पर विचार किया जाएगा।

1.1.2.3. शिवप्रसाद सिंह का उपन्यास शिल्प व भाषादर्श

यह कहा जा चुका है कि शिवप्रसाद सिंह के औपन्यासिक शिल्प में विविधता है। उन्होंने अपने एक उपन्यास के ढाँचे, उसकी संवेदना, उसकी भाषा- संरचना, उसके वाक्य विन्यास को अपने अगले उपन्यास में दुहराया नहीं है। बल्कि यह कहना अधिक समीचीन होगा कि उनका हर उपन्यास हिन्दी उपन्यासों की विकास यात्रा में पहले से उपलब्ध खाँचे से थोड़ा बाहर है। एक स्थान पर उन्होंने स्वयं लिखा है:

"मैं अब कैसे समझाऊँ कि यह प्रश्न कथा- साहित्य को बाड़े- बन्दी में कैद रखने वाले अधकचरे समीक्षकों की लाचारी से उपजा है जो हिन्दी- कथा क्षेत्र में ग्रामीण, आँचलिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक आदि शीर्षकों में उपन्यास साहित्य को बाँट कर आसान समीक्षाएं लिखने में लगे हुए हैं। ऐसे समीक्षकों में अधिकांश मुदर्रिस हैं, मेरे जैसे ही। मैं कृती साहित्यकार की मुहर अपने नाम के साथ नहीं लगाना चाहता, पर निवेदन जरूर करूँगा कि ये चौखटे तोड़िए। [2] उन्होंने आगे लिखा : "मेरे लिए प्रेमचन्द अब मंजिल नहीं है, उसी तरह मैं प्रसाद को अस्वीकार करना सत्य से आँखे चुराना कहता हूँ।

---

1. "सिर्फ एक मिनट"- नीलाचाँद की भूमिका पृष्ठ 1
2. कुहरे में युद्ध, रूकिए आगे है, पृष्ठ 9

आचार्य द्विवेदी के चारों उपन्यास मेरे संबल हैं। क्योंकि प्रसाद और प्रेमचन्द की संधि की एक अद्‌भुत छटा वहाँ क्षण प्रतिक्षण दिखायी पड़ती है। [1] वे अपने उपन्यासों को किसी शिविरवाद या विचार धारा का उल्था नहीं बनाना चाहते थे।

इन्हीं खाँचों से मुक्त होने की बात उन्होंने अपने "आत्मकथ्य" में भी कही है: अगर जो "रेणु" में था वही "वैतरणी" में भी होता तो मैंने अपने उपन्यास को जला दिया होता।.... मैं "रेणु" की पीढ़ी का आँचलिक लेखक नहीं हूँ। "मैला आँचल की सम्मोहिनी तोड़ने के वास्ते ही तो "वैतरणी" का अवतरण हुआ। [2] इसी में उन्होंने एक जगह लिखा है: मैं प्रेमचन्द के निकट से निकट होता गया और सम्पादक, आलोचक कसम खाकर मुझे आँचलिक खाते में झोंकते गए। तंग आगर मैंने आँचलिक सम्मोहन या "नास्टेलिजिया" को तोड़ने के लिए "अलग-अलग वैतरणी" लिखी। [3]

"नीला चाँद" की भूमिका में डा0 सिंह ने लिखा है: "गली को कुछ लोग बुर्जी पर बैठकर लिखा गया उपन्यास कहते हैं। मैं पिछले चालीस साल से काशी में हूँ। एक सप्ताह के लिए अतिथि के रूप में आने जाने वालों से जब यह सुनता हूँ तो ठहाका लगाकर हँसता हूँ। [4]

"नीला चाँद" के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा: आरवेल का अलेकजाण्ड्रिया-चतुष्टय अपनी ओर नहीं खींचता, क्योंकि वे ऐतिहासिक विवरणों से भरे रिपोतजि की शैली में लिखे गये हैं, जबकि मेरी काशीत्रयी, संस्कृति, आचार-व्यवहार तथा सच्चे वातावरण में डूबकर लिखी गयी है। मेरी अपनी मान्यता रही है कि सही काशी को अगर देखना है तो तीनों उपन्यासों में तीन ऐसे समय चुनने होगें, जो काशी की जनता को, समाज को, पूरी तरह भयानय उथल-पुथल से ऐसा मथ दें कि सबसे निचले वर्ग के सर्व वहिष्कृत चांडालों और डोमों से लेकर महिमाशाली ब्राहम्ण, राजन्य, महाजन और सेठों को नग्न खड़ा कर दें। उथल- पुथल से क्या मतलब? मतलब यह कि जब सामाजिक संघर्ष होता है तो मल्लाहों, घाटियों, पत्तल चाटने वाले, श्वानवृत्ति वाले लोगों की भाषा, रहन-सहन सब इस तरह से गड्डूमगड्ड हो जाती हैं कि नीचे की तलछट ऊपर के वर्णो की भाषा को छूने लगती है और एक नयी भाषा सामन्तशाही के खिलाफ लड़ने वालों के तेवर से जुड़कर नये वातावरण का सृजन करने लगती हैं। उस तलछट से भी गहरे रूप से जुड़ा हूँ और सफेद पोशाक में शोषितों को ठगने वाले लोगों से भी। [5]

---

1. वही पृष्ठ 10
2. व्यास सम्मान के अवसर पर पठित "आत्म कथ्य" पृष्ठ 2
3. वही
4. नीला चाँद की भूमिका, पृष्ठ 2
5. वही पृष्ठ 2

1.1.2.4. उपन्यासों की रचना–प्रक्रिया और भाषा संरचना :

डा0 शिव प्रसाद सिंह अपने उपन्यासों को लिखने के पहले तमाम तैयारी करते हैं। उनका उपन्यास चाहे "गली हो" या "नीला चॉद", "कुहरे में युद्ध" या "दिल्ली दूर है" अथवा वैश्वानर। यहाँ तक कि "वैतरणी" और "मंजुशिमा" भी इन्होंने पूरी तैयारी के बाद ही लिखा है।

"वैतरणी" के संबध में वे लिखते हैं: "इस उपन्यास पर मैं कई बरसों से काम करता आ रहा हूँ। कई बार काटा–पीटा और रद्दो–बदल किया है। जानता हूँ यह अन्तिम रूप भी मेरे मन के करैता की सही "ठनक" को बॉध नहीं पाया है। पर कहीं न कहीं तो विराम चाहिए ही। [1]

"गली आगे मुड़ती है" के प्रारम्भ में लेखक का कहना है: "काशी का नाम युवा–आक्रोश के साथ बदनामी की हद तक जुड़ गया है। मैंने काशी को ही इस उपन्यास का केन्द्र बनाया है। "अलग–अलग वैतरणी" में एक बार भी लेखक ने करैंता नहीं छोड़ा, "गली आगे मुड़ती" हैं मैं एक बार भी काशी नहीं छूटी है। काशी चिरादिम नगर है, नित नूतन भी।" इसी में आगे लेखक कहता है: मेरा विश्वास है कि बनारस जैसे नगर की संस्कृति के प्रति पूरा न्याय करने के लिए सैकड़ों समाज शास्त्रीय शोध– प्रबंध और दर्जनों उपन्यासों की अब भी जरूरत है। तभी गंगा की कमर पर रखे संस्कृति के इस लबालब भरे कलश को सही ढंग से जाना जा सकता है।

"इस उपन्यास को लिखने में लेखकीय व्यक्ति स्वातंत्र्य और समाजिक दायित्व के जिस कशमकश से मैं गुजरा, उसने मेरी आत्मा पर पूरी छाप डाल दी है। काशी न केवल विभिन्न प्रांतीय लोगों का जीवित संगम है, बल्कि नाना प्रकार की वेश–भूषा और बोली–भाषा का भी विचित्र गुलदस्ता है। काशी में खुद स्थानीय बोली भोजपुरी के ही पूर्वी और पछाहीं रूप धड़ल्ले से चलते हैं। खांटी काशीवासी पछांही भोजपुरी का प्रयोग करते हैं, इसलिए बोली–बानी को ज्यादा बोझिलता से बचाने के लिए अवधी मिश्रित, भोजपुरी यानी काशिका का ही प्रयोग हुआ है।

"जैसा पहले निवेदन किया गया, इस उपन्यास में अनेक अँचलों की तथा विदेशी संस्कृति का समवेत चित्रण होने से कई अनजाने शब्दों का प्रयोग हुआ है। कदना, मंडा जैसी बँगाली मिठाइयों के नाम हैं तो करोला, दियारिया जैसे गुजराती शब्द भी है।[2]

---

1. तटचर्चा, पृष्ठ 1

2. "गली आगे मुड़ती है" भूमिका पृष्ठ 2–3

कहना न होगा इस उपन्यास के लेखन के लिए गुजराती, बंगाली समाज, संस्कृति की जानकारी के लिए लेखक को अपने परिचित बंगाली गुजराती बंधुओं से मदद लेनी पड़ी। इसीलिए "गली" का भाषा संस्कार और वाक्य संरचना पर इन संस्कृतियों की भाषा का प्रभाव है।

ऊपर संकेत किया गया कि डा0 शिव प्रसाद सिंह अपने उपन्यास रचने के पूर्व पर्याप्त तैयारी करते थे। उन्होंने "नीला चॉद" में लिखा है:

काशी में राजघाट के पास उत्खनन से कई ऐसी बातों का पता चला है कि यहाँ कुम्हार नापित, बढ़ई, छोटे-छोटे गहने बनाने वाले कारीगर थे, जिन्होंने सारी दरिद्रता छिपाए बगैर अपने पुश्तैनी सुवर्ण शिल्प को जिलाए रखा।

"खुदाई में प्राप्त आरण्यक श्रेणी के ठप्पे बताते हैं कि आरण्यक श्रेणी बहुत विस्तृत रही होगी"

"मैं उन तमाम लोगों का ऋणी हूँ जिनसे सहायता ली गयी है। "वाराणसी वैभव", "काशी का इतिहास", "कुट्टनीमतम्", "स्कन्द पुराण" का काशी खण्ड, विशुद्धानन्द पाठक का उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास और डा0 अर्जुन दास केसरी के "करमा" से दो गीतों का मैंने इस्तेमाल किया है"[1]

"कुहरे के युद्ध" की तैयारी के समय लेखक ने खूब परिश्रम किया। इसका संकेत उसका यह कथन देता है: इस खण्ड के लेखन में पर्याप्त साहित्य पढ़ना पड़ा। कई-कई वस्तुओं के बारे में जानने की हरचन्द कोशिश की। [2]

"दिल्ली दूर है" के प्रारम्भ में लेखक लिखता है: "दिल्ली दूर है" लिखने का मंसूबा बनाया तो पहली जरूरत इस नगर के प्राचीनतम मानचित्र की खोज की गई। कई-कई यात्राओं में मिहरौली, कुब्बतें इस्लाम और लौहस्तम्भ के क्षेत्र का बारीकी से निरीक्षण किया। "सेवन सिटीज ऑफ देल्ही" पुस्तक तथा अद्यावधि सर्वाधिक प्राचीन नक्शा 1807 का मिला। गायकवाड़ पुस्तकालय के वरिष्ठ लोगों ने मेरी मॉग पर कई-कई जिलों के गजेटियर्स दिखाए। इस उपन्यास में मिथक और प्रतीकों के प्रयोग भी हुए हैं। [3]

----

1. "नीला चॉद" की भूमिका, पृष्ठ 3-5
2. आभार, कुहरे में युद्ध, पृष्ठ 1
3. "दिल्ली दूर है" के प्रारम्भ में दिये आभार से।

"मंजुशिमा" उपन्यास लिखते समय लेखक बेहद तनाव से गुजरा। इसकी तैयारी और प्रस्तुतीकरण में लेखक ने "उर्दू के कुछ शेर, हिन्दी कविताओं के टुकड़े, सिनेमा के गीत, बाइबिल की पंक्तियाँ, व्यग्य का कटु प्रयोग, अंग्रेजी की कविताओं का अनुवाद, आदि का उपयोग किया है।

लेखक आगे कहता है: हॉं इस उपन्यास को लिखते वक्त कभी-कभी कई जगहों पर ऐसा भी हुआ है कि मैं अनावश्यक रूप से कटु हो गया हूँ। लेखक की हरारत में ऐसा हो जाता है। उसे बदल दूँ तो उनके प्रति थोड़ा सा न्याय जैसा तो लगेगा, पर वे रचना- प्रक्रिया के भीतर के तापमान के बैरोमीटर बनकर आये हैं, जल और वेदना के साक्षीभूत हैं, अतः ज्यों-का-त्यों रहने दिया है। [1]

"वैश्वानर" की तैयारी के लिए लेखकनेवैदिक, पौराणिक, बौद्ध धर्मग्रन्थों के अलावा बहुत कुछ पढ़ा लिखा तब यह उपन्यास लिखा।

"शैलूष" उपन्यास के सम्बन्ध में लेखक एक स्थान पर कहता है: आपने शैलूष पढ़ा। वह एक बहुत बारीकी से "डाटाज" एकत्र करने के बाद लिखा गया उपन्यास है। मैं शैलूषी ऋषि की याद दिलाता, भी तो क्या लाभ होता? ऋग्वेद के नवम् मंडल में शक कुषाण कबीले की नारी ऋषि बन सकती हैं तो कोई आज तो उससे भी हजार गुना अधिक आदर, सम्मान, सुयश, सभी पा सकता है। [2]

1.1.2.5. भाषा- संरचना और शैली :

डा0 शिव प्रसाद सिंह अपनी कथा-भाषा के संबध में बहुत सचेत लेखक थे। इनका कथ्य संप्रेषित हो जाय यह उनका प्रमुख लक्ष्य था। इस कारण वे अपनी वक्तव्य वस्तु के अभिव्यंजन के लिए सटीक शब्द की ही खोज करते थे। उनका वाक्य विन्यास भी कथ्य के अनुरूप परिवर्तित होता जाता था। उनकी भाषा तथा वाक्य संरचना का सम्बन्ध उनकी औपन्यासिक कृतियों की प्रकृति से गहराई से जुड़ा हुआ था।

उन्होंने "नीला चॉद" की भाषा और वाक्य विन्यास के सम्बन्ध में एक जगह लिखा है: यह उपन्यास एक साथ संस्कृत के विदग्धजनों, पर लुच्चे, नंगे, चारों की संस्कृति को भी और तत्कालीन जनपदीय बोलियों के रूपों को भी जो "उक्ति व्यक्ति" में भरे हैं साथ-साथ लेकर चलता है- खोज़ने वाले इसमें अनेकानेक शब्दों के पीछे संस्कृतियों के अन्तरावलम्बन को भी पहचान चुके हैं। भाषा-

----

1. मंजुशिमा उपन्यास की भूमिका पृष्ठ 11
2. दस्तावेज- 81, अक्टू-दिस. 1998 में पत्रों के आकाश में नीला चॉद, डा0 रामशंकर द्विवेदी को लिखे शिवप्रसाद सिंह के पत्र।

व्यतिकर सौन्दर्य को कई प्रसिद्ध आलोचकों ने सराहा है। आप सराहें, यह जरूरी नहीं है। सिर्फ सोचें कि अगर "नरेशन" को "डिस्टार्शन" में बदला गया तो एक क्या कोई नई सोच, या धारणा या अन्योक्ति कुछ भी झलकी या कि ये शब्द पाठक को बाधा पहुँचाने मात्र के लिए लिखे गये। आप यह तो सोचकर चलें ही कि वैदिक भाषा, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी काशिका का साथ-साथ निर्वहन किया गया है- अब आपको यह प्रयोग खींचता है या धक्का मारता है- अलग बात है।[1]

इस पत्र में डा० सिंह का भाषादर्श तथा उनकी "नरेशन" पद्धति स्पष्ट हो जाती है। इसलिए उनकी शैली और वाक्य संरचना अनेक व्यतिकरों, विचलन- विपथन और प्रोक्तियों, वाग्धाराओं के सौन्दर्य से युक्त हैं। इसका विवेचन आगे किया जाएगा।

उनके भाषादर्श के सम्बन्ध में समीक्षकों ने भी कुछ लिखा है जो मेरे कथन को और स्पष्ट करेगा।

"वैतरणी" यद्यपि शिव प्रसाद सिंह का आरम्भिक उपन्यास है, पर भाषा की प्रौढ़ता का स्तर उसने पा लिया है। "मदाम बावरी" के लेखक ने अपनी कृति के विषय में स्वयं कहा था कि इसे मैंने बार-बार सजाया- सँवारा है, और अब यह लगभग काव्य बन गया है। यही प्रशंसा पत्र "अलग-अलग वैतरणी" को दिया जा सकता है। [2]

शिव प्रसाद सिंह के उपन्यास "गली आगे मुड़ती है" में कथावस्तु और शिल्प को नया मोड़ दिया गया है। उपन्यास क्या है- आधुनिक काशी की संस्कृति, वहाँ के विविध सम्प्रदायों, जातियों, वर्गों की विभिन्न सभ्यता, और भाषा का जीवन्त दस्तावेज है। [3]

उपन्यास को आत्मकथात्मक शैली में लिखकर कथाकार ने पाठकों के साथ आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित किया है। [4] उपन्यास का मूल स्वरूप "वर्णनात्मक" न होकर संवादात्मक है। बातचीत के क्रम में धक्का खाती हुई कथा आगे बढ़ती गई है। इसमें कथानक बोझिल और बनावटी होने से बच गया है। बीच-बीच में लगता है लेखक पाठकों से पूँछकर कहानी कह रहा है। "आपने नहीं देखा है.... आप नहीं मानते हैं, जैसे वाक्यों का प्रयोग कई बार हुआ है। [5]

----

1. दस्तावेज 81 में प्रकाशित पत्र का एक अंश, पृष्ठ 8-9, अक्टू.-दिस. 1998
2. शिवप्रसाद सिंह: सृष्टा और सृष्टि, पृष्ठ 142 पर डा० प्रेमशंकर का लेख।
3. वही पृष्ठ 158, डा० मान्धाता राय का लेख।
4. वही पृष्ठ 159
5. वही।

नीला चॉद की प्रेषणीयता –संवलित भाषा के संदर्भ में डा0 राजमणि शर्मा लिखते हैं: ऐतिहासिक उपन्यास के लिए भाषा का चयन बड़ा कठिन कार्य होता है। उपन्यासकार इसमें प्रयासरत् है, वह तत्सम शब्दों से विकसित होने वाले अनेक लोक–व्यापी शब्दों तथा आवश्यकयतानुसार संस्कृत निष्ठ शब्दों का प्रयोग तो करता है किन्तु उसकी असली सफलता है भाषा की संप्रेषणीयता में। प्रवहमान, तीखी और सरल भाषा के प्रयोग में। संवादों की संक्षिप्तता, अन्तरतम को बेध जाने वाली तीक्ष्णता, परिस्थिति और परिवेश को व्यंजित कर देने में सक्षम भाषा इस उपन्यास की धरोहर है। राजकीय आवरण से दूर जन–सामान्य की भाषा, सूरज, भरत, वँधुजीव, बब्बर, गोपाल भट्ट की भाषा इसकी आत्मा है। [1]

"दिल्ली दूर है" की भाषा के संबध में यह टिप्पणी कितनी समीचीन है: ऐतिहासिक उपन्यासों की भाषा ऐतिहासिक संदर्भो की अपेक्षा रखती है। इस धरातल पर रचनाकार सफल है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि अरबी और फारसी के शब्दों का या वाक्य रचना का भी वे उसी सफलता से प्रयोग कर सकते हैं जिस सफलता से वे हिन्दी का प्रयोग करते रहे हैं। भाषा– अर्थ– सम्पृक्त है, शब्दों की पहचान और उनकी अर्थ– संप्रेषणीयता सहज है, हृदय पर वे चोट भी करते हैं। [2]

भाषा संवेदना और वाक्य संरचना की दृष्टि से "औरत" एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस संदर्भ में यह कथन विचारणीय है: "औरत" अपने रचना–शिल्प में एक अध्यायहीन उपन्यास है। इसमें कोई परम्परित विभाजन– शिल्प नहीं है। यहाँ लेखिनिक अंतराल नये प्रकरण के आरम्भ होने का ज्ञान कराता है। पूरे उपन्यास में आद्यन्त संवादात्मकता मिलती है। कथा की उत्तारवीयता (नैरेशन) तो कई–कई रूपों में संश्लिष्ट होकर सामने आती है। यहां उपस्थिति में कभी उत्तारक है, तो कभी शिवेन्द्र और कभी शोधार्थी मित्र, तो कहीं हरीश और कहीं मुनीश। उपन्यासकार का दावा है कि यह जटिलता उसने उत्तारकीयता को अन्यथाकृत, "डिस्टोर्ट" करने के उद्देश्य से की है। [3]

यहाँ तक डा0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों की भाषा संवेदना और वाक्य संरचना के आधारभूत आयामों की चर्चा की गयी। स्वयं लेखक के शब्दों में उसकी भाषा– संवेदना, उपन्यास शिल्प और रचना पद्धति क्या थी? किस प्रकार उसका हर उपन्यास अपने ढॉचे, शैली–शिल्प में एक अन्तरण है, एक विकास है, एक प्रयोग है। उनकी वाक्य संरचना विविध मुखी और अपनी संवेदना को व्यक्त

---

1. वही पृष्ठ 188
2. शिवप्रसाद सिंह सृष्टा और सृष्टि, सं0 पाण्डेय शशि भूषण "शीतांशु"पृष्ठ 262,डा0 राजमणि वर्मा का लेख "दिल्ली दूर है" अतीत की पृष्ठिभूमि पर वर्तमान की सार्थक झंकृति
3. वही पृष्ठ 501 पर शीतांशु का आलेख स्रष्टा जिसे मैं जानता हूँ

करने में सक्षम हैं। आगे उनकी भाषा– संवेदना और वाक्य संरचना के कुछ साक्ष्य दिये जा रहे हैं जिससे उनकी विविधमुखी वाक्य संरचना का वैशिष्ट्य उजागर होता है।

घुरबिनवा बैलों को सानी –भूसा, दाना– पानी देता। सार में से गोबर निकालता। दरवाजे को खरहरे से झाड़– बुहारकर साफ करता, तब चमरौटी लौटता। उस समय पूरब में क्षितिज के पास के आसमान में पेड़ों के हाशियें के माथे पर एक छोरसे दूसरे छोर तक उदीयमान सूरज की लाली छायी होती। ललछौंही रोशनी में चमरौटी का अस्थिपंजर अपनी सारी विकृतियों को उझाड़कर ठगा–सा खड़ा प्रतीत होता।

ठीक छबरे के अन्तिम छोरे पर जहाँ से चमरौटी शुरू होती है, दुक्खन चाचा का मकान है, इसे मकान कहना ठीक न होगा। खंडहर है यह अब।

"का हो धुरबिन बेटा।" गली से गुजरते वक्त टोकते– "जरी हाथ सेंक ले बेटा"। बड़े भिनुसारे निकल जाते हो। बढ़िया है, बहुत बढ़िया।" वे हुक्के के नारियल में ओठों को सटाकर तमाखू सुड़कते हुए कहते– "मिनकू भाई तो ठीक है न रहे?"

–अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ 160–161

"बनारस भी क्या अदा से बसा हुआ शहर है। गंगा को धुनषाकार होना था तो यहीं क्यों हुई, और यदि हुई ही तो उसने अपने सारे मरोड़ को एक शहर में क्यों बदल दिया, इसे देखकर लगता है कि जैसे कोई तपस्वी कुमारी अपनी बलखाती कमर पर संस्कृति का कलश धरे चली जा रही है। हाय, यह छत्राकार ज्योति कितनी शाश्वत और अमर है।"

– "गली आगे मुड़ती है" पृष्ठ 19

"किरण।" मैंने पूछा। खड़ी पुस्तक की आड़ में उसने मेरी हथेली पर अपना हाथ रख दिया था।

"हूँउ"।

"तुम क्या नहीं सोचती कि यह एक विचित्र रक्त की पुरा कथा है जो अपनी विकास गति को कभी रोक नहीं पाती? इसका चक्र अपनी परिक्रमा पूरी करके ही रहता है।"

"जानती हूँ कि यह अटूट रक्त की भाषा कोई रूकावट वर्दाश्त नहीं करती, तो भी मैं हजार बार कोशिश करके भी उसे इन्कार कर सकने की स्थिति में नहीं हूँ। तुमने एक दिन "निशीथ"

कविता की एक पंक्ति कही थी, याद है? इसी कविता के आरम्भ में ही मेरा पूरा इतिहास लिखा है। आनंद, मैं चाहती हूँ कि वह तुम्हें सुना दूँ।....... रात–दिन तुम्हें रटती रहती हूँ पर तुम्हारा नाम नहीं जानती। स्वप्न में तुम्हें अपने आलिंगन में भर लेती हूँ, पर पहचानती नहीं। सचमुच में कैसी पागल हूँ जो तुमसे लगातार बात करती रहती हूँ, पर आज तक मन में यही लालसा बनी है कि किसी तरह तुम्हारे अन्तरतम की आवाज पहचान लेती। पता नहीं आनंद, इस जिन्दगी का आदि–अंत भी कुछ है या नहीं। पर तुमसे जुड़कर अचानक वर्तमान सार्थक हो गया है। मैं सिर्फ उसी को देख पाती हूँ।"

– गली आगे मुड़ती है" पृष्ठ 67

मैं आँखें मलता छत पर पहुँचा, कौन है?

"हम हई तिवारी भइया सीचन्न।"

"क्या हो सीचन्न, क्या बात है?"

" आप सभे जगा रहें, बड़ा तेज पानी बढ़ा आय रहा है भइया जी, कोठी चारों ओर से जलमग्न हुई गयी है। दरवज्जे से भीतर भी पानी घुसि रहा है।"

मैं देख रहा था– सिचन्ना जिस गली में खड़ा है, उसके घुटने तक पानी है। वह अपनी लुंगी समेटकर मद्रासी ढंग से बाँधे है।

"अरे तो दरवाजा खुलाकर पुजारी जी से नहीं कह दिया?" मैंने कहा।

"ओह, ससुरा से हमार का वास्ता। आप लोग न होते तो हम तो मनौती करते गंगा भैया से कि उमड़ –घुमड़ के पलट दो महारानी ई अधरम के किला, हाँ...."

– "गली आगे मुड़ती है" पृष्ठ 68

"अरे तिवारी बेटा, हियाँ तो तलैया उमड़ी हैगी रे बप्पा।"

"चिल्ला मत। दरवाजा खोल।"

गिरती–पड़ती, रोती–चिल्लाती बुढ़िया ने ज्यों ही दरवाजा खोला, पानी का रेला उसकी कोठरी में टूट पड़ा।

"हाय मोरी मैया, ई का होवै है।"

"प्रलय, प्रलय है।"

"अरे मोर बचवा, ई न करो, बाबू, हम का करवे एहि परलय माँ? हाय दैया, मोर बरतन–भाँड़ा सब भरिगे पानी से।"

–गली आगे मुड़ती है" –पृष्ठ 70

अमावस्या की काली रात धीरे–धीरे गझिन होती जा रही थी। काले अन्धकार में खजुराहो के राज प्रासाद से उठने वाली अग्नि की लपटों का दृश्य वह देख रहा था। वह अट्ठाइस वर्ष का नवयुवक था। जंगली झाड़ियों, झरबेरी, छेवला, करौंदो की कतारों से ढंगे उस टीले पर गर्दन लटकाये एक हाथ की हथेली पर दूसेरेहाथ की मुट्ठी को पीटते हुए, एक ओर से दूसरे ओर तक प्रदक्षिणा करते हुए बुदबुदाया...... "सब कुछ ध्वस्त, विनष्ट.. ।।

"पीत लोहित रंग की पृष्ठभूम में अवस्थित खजुराहो के लोक विश्रुत मन्दिरों के कलश और भी स्याह लग रहे थे। आज वैश्वानर कुपित था।.... उस युवक की आंकुचित भौहों में क्रोध था, निराशा थी और एक आदिम युग से, मानवीय अन्तःकरण में छिपे हुए भयंकर प्रतिशोध की भावना थी। उसके पैरों में विचित्र कम्पन था।

"आज उसने पहली बार अनुभव किया कि चक्राकार वृत्त केवल जल में ही नहीं होते, केवल मन में ही नहीं होते, वे सन्नाटे के भीतर भी होते हैं। वह लपटों के भीतर के चक्राकार वृत्तों को देख रहा था, जिनकी चपेट में उसका सब कुछ, जो आत्मीय और निजी लगने वाला था, खो गया था।

नीला चॉद– पृष्ठ 11

महुवे की शराब, उठती हुई उमस से शरीर को आर्द्र करते स्वेद कण, औरतों के लहंगे, वर्तुल घूमते हुए घाँघरे, नर्मदा के उद्गम से धूम्रधारा तक अद्वितीय शीतल सौन्दर्य– यह सब कुल मिलाकर ऐसा लग रहा था मानो मैहर की माँ के द्वार पर बधावा बज रहा है। चाँदी के कड़े, पैंजनी, कटिबन्ध और बिछुओं की झंकार एक विचित्र माहौल बना रही थी।– नीला चाँद, पृ0 643

जाड़े की भोर थी। ठिठुरन से उँगलियां अकड़ गई थीं। केन (कर्णावती) की धारा में नौका हिलती–डुलती चली जा रही थी। किनारे पर झांडियों में रंग–बिरंगे फूल हल्की हवा में अठखेलियाँ कर रहे थे। नाव पर एक प्रौढ़ व्यक्ति खड़ा था और लम्बी सॉसें खींच कर अपने फेफड़ों को सुगंधित हवा से भर रहा था। पता नहीं केन नदी से उसे इतना मोह क्यों है? अगर है भी तो केन कहीं आसमान में उड़कर हिन्दुस्तान की पकड़ से निकलने जा रही थी क्या? फिर ऐसी वेसब्री क्यों? वह तो वही जाने।

–कुहरे में युद्ध, पृ0 9

ऐ है। कइसी बात करत हो पंडत महाराज। हमरी बहुबेटिन को लूट्यो, ऊप्पर सो उन पर दोषो मढ़त हो! आनन्द वाशेक आये रहे गढ़े के पानी को छेंकने कि तोहान रघुनन्दित गढ़ी में गल्ला में घुन लग गये हैं और हमारी तड़तताड़ी अतंड़ी में एक दान देवे से इनकार करने को वाशेक आये कि सुफलक कुछ तो लाज–वाज किया करो महाराज। झूंठ बकै मुँह मार्‌यो जाय।

–कुहरे में युद्ध, पृ0 128

वह चैत्र के शुक्ल पक्ष की पंचमी थी। पहूज एकदम शान्त अपनी गति में बह रही थी। आनन्द वाशेक को पहूज के दोनों ही रूप मोहते थे। जब वह वर्षा में विकराल रूप धारण करती थी और अपनी धारा की त्वरित भयानकता में तट के लम्बे- चौड़े वृक्षों को जड़मूल से ध्वस्त कर देती थी तब भी उसके लाल रंग की बाढ़ में रक्तिम खून का उद्वेग आनन्द को आनन्द आनन्द ही देता है और जब वह आज जैसी शीतल गति से मंद-मंद इठलाती बह रही है तो भी माँ की लोरियों की तरह एक तंद्रा को जगाती है जो बिना किसी मादक पदार्थ के शरीर को मस्ती में डुबो देती हैं। -कुहरे में युद्ध, पृ0 161

तभी एक शराबदार चाँदी की बड़ी तश्तरी में मीठा शरबत और मदिरा लेकर तयासी की छोलदारी में घुसा।

"देखो उधर, मकबूल कहाँ है। उस हरामी से कहो कि जामा-ए-संजाब (घर का वस्त्र) भी पेश करेगा या इसी फौजी कपड़े में शरबत पी लूँ? कहाँ है वह वदजात। मकबूल ?"

"आका क्या हुक्म है?"

मकबूल ने सोने की बनी सुराही से ठंडा किया शरबते- इत्र पेश किया। तयासी ने एक घूँट लिया और मुस्कराने लगा- "क्यों? मकबूल, क्या इसमें मिश्री और शहद भी है? तो अब तक मन पसन्द साकी क्यों नहीं आयी यहाँ?" -कुहरे में युद्ध, पृ0 164-165

"क्यों पवन, क्या केन के किनारे की हरी-हरी दुबें याद आ रही हैं। जब लता गहरों के भीतर गौरये भी बेतवा की छाती को छूकर आने वाली हवा के स्वागत में चहचहा उठते हैं, विदिशा के उत्तर के महाकान्तार में अंधेरा तो होता है, सूरज की किरणें पत्तों के जाल को लांघ सकने में असफल हो जाती हैं, तभी अचानक दक्षिण पवन शीतलता का अलस भार उठाये भुचेंगे पक्षियों को छेड़ देता है। वे ठाकुरजी ठाकुरजी बोल-बोलकर डालियों पर उछलने लगते हैं- जागिए ब्रजराज कुंवर वेत्रवती जागी, मधु-कदंव- मुग्ध वायु खोलन [illegible] पट लागी- हाय", वह ठक्क-सा विजड़ित खड़ा हो गया। पवन चुप। वाशेक चुप। हलचल थी अगर तो वह स्वप्न की वेतवा में। ऊपर की पँक्तियाँ प्रतिदिन प्रातःकाल अपने आराध्य देव व मदन मोहन को जगाने के लिए देविका गाया करती थी। एक पीड़ा सी उठी। क्या वह उसी प्रभाती को वैसे ही उन्मुक्त भाव से गा पाती होगी? क्या पिंजड़े की [illegible] पपीही एक बार भी किसी को पीऊ-पीऊ कहकर पुकार पाती होगी? -दिल्ली दूर है, पृ0 17

"आनन्द वास्तव्य।"

"जी नहीं उसका नाम है सफीउल्लाह वाशा अर्थात् चाँद की सफेदी में लिपटा अफगानी पाशा। पाशा जिसको पश्तो में बाशा ही कहते हैं। और यह भी सोचो कि वह चाँदनी को प्यार क्यों करता है? क्योंकि जुझौती का राजवंश चन्द्रात्रेय गोत्र का है। समझ सके? या नहीं? यानी वह कहीं से

तलकी–मलकी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में कभी नहीं कर सकता। तुम उसे बुलाकर काम भी निकालोगे और बलवन के आक्रमण से जुझौती वालों को भयभीत करके, राजेश्वर त्रैलोक्य मल्ल देव को पराजित भी देखना चाहोगे, जिसे वह कभी होने नहीं देगा।"

"उसे बुलवाइए।"

"कैसे? उसने तो तब तक पता भी नहीं बताया था कि वह कहाँ ठहरा है। दिल्ली कोई गाँव नहीं है।"

"अजीब लद्धड़ किसम के आदमी हैं आप भी। आपने उसके ठहरने की जगह नहीं पूँछी?

–दिल्ली दूर है, पृ0 16

सामने से तीन ताजी घोड़ों पर तुर्क आकर खड़े हो गये– "क्यों वे मुर्तजा, अल्लारक्खी तवायफ किधर गई?"

"उधर है हुजूर, उधर दुकान के पीछे वाले गूलर के नीचे।"

"अबे जाकर कह उसे कि हम उसे गिरफ्तार करने आए हैं। गूलर में फूल खिल रहे हैं हरामजादी के यहाँ?"

"अभी कहा हुजूर।"

अल्लारक्खी आते ही भभकी, "कौन है स्साला उल्लू की दुम जो अल्लारक्खी को तवायफ कह रहा है?"

"हम हैं। अपने बापों को देख लो," एक ने कहा– "अच्छा तो तू हैं। साले गद्दार। हिन्दु बरहमन के वहकाबे में आकर शक्सी खानदान के साथ कुफ्र के नताइज सोच लो मियाँ तोता चश्म। तुमने क्या समझ रक्खा है अल्ला रक्खी को? जब तुम्हारे बाप– दादों का जन्म भी नहीं हुआ था तातारो, तब से हमारा खानदान पाक इस्लाम पर सब कुछ कुर्बान करके यहाँ हिन्दुस्तान में आ गया। कभी तुमने कड़ा खिताई खानदान का नाम सुना है?"

"यह क्या होता?" सभी बोले।

"तुममें से कोई ऐसा है जो बताए कि तुर्किस्तान, मुवारून्नहर, खुराशान, ख्वारिज्म, ईराक, अजर बैजान, फारस, रूम से कौन–कौन मुसलमान शाहजाते दिल्ली में आकर पनाहगुजीस हुए हैं? बोलो?"

"हम नहीं जानते अल्ला रक्खी बेगम।" तीनों बुद्धू की तरह एक–दूसरे की ओर निरीह भाव से देखते रहे, "तुमने जो नाम लिये क्या वे इस्लामी खानदान से हैं?"

"अब गधे की औलादो, जब तुम अलिफ–बे नहीं जानते तो खुराशानी खून वाली इस अल्लारक्खी से उलझे क्यों? क्या नाम है उसका? गंगू बरहमन? हाँ, तो उस बरहमन के बच्चे से कह दो कि

किसी खुराशानी शाहजाते को बदनाम करने की कोशिश की तो मैं उसकी सारी करतूतों की कहानी अपने मालिक तजिकुल उस्मान अलहमीदी बिन शेख उल इस्लाम अमीरे हाजिब से बयान करूँगी कि वह उमरा को भड़काता है और गलत बातें करके इस्लाम के बन्दों को गुमराह करता है।" –दिल्ली दूर है, पृ0 26

उसे क्या पता अमात्य कि पहुज के धनखेतों में इठलाती हेमन्ती स्वर्णाभा से एक ऐसी गंध जन्म लेती है जो चर्मण्वती से हजारों युगों बाद भी कभी उठ नहीं सकती। और तो और गंगा की पवित्रता और शीतलता का अध्यात्म मेरे पहुज और वेत्रवती के प्रणय की पार्थिवता के सामने हल्का पड़ जाता है। आज तुम क्या सचमुच एक अल्हड़ और बचकानी निर्लज्जता से मोहित् हो गए? कहाँ गए, किधर गए? किससे पूछूँ?, कौन है मेरा इस लंकागढ़ में जो अशोक वाटिका से मेरे शोक को दूर करने के लिए रक्त पुष्पों का अंगार बरसा सके? –दिल्ली दूर है, पृ0 133

"मान गए हुजूर बलाकी दानिशमंदी है आपकी खोपड़ी में। माशा अल्ला शकीला बानो तो तब से बेहाल हैं। गश पर–गश आ रहे हैं और वह खातून तड़प–तड़प कर उठ जाती है और निढ़ाल होकर गिर पड़ती है। कहा तो जाता है हुजूर कि सारी शर्मोहया छोड़कर उसने खुराशानी शाहजादे के सुनहले बालों में अपनी उँगलियाँ फँसाकर अपने दिल को फँसा दिया है। किसी ऐसे इत्र की चर्चा है हुजूर जो सफी उल्लाह के बदन से मौसमे बहार के फूलों की रंगारंग खुशबू की तरह छा गया था जिसकी वजह से वह सब कुछ किसी अजनबी शाहजादे के नाम सौंपकर लूटी–लूटी लौटी और अब सुना कि उसने अपने चचाजान से कह दिया है कि मैं सफी उल्लाह के बिना जिन्दा नहीं रह सकती।" –दिल्ली दूर है, पृ0 134

दीप्ति ने उसकी पीठ अनावृत कर दी। एक नव देवदारू वृक्ष का चिकना तना था सुडौल जिस पर सुनहले रंगों की कई–कई गुच्छे दिखाई पड़ते थे। दीप्ति ने बड़े आहिस्ते अपने होंठ उसकी पीठ पर यों रख दिये जैसे दाडिम के फूल के केशर–गुच्छ हों। वह झनझना उठा उसके सारे शरीर में जैसे एक अनजानी सर्पिणी फन काढ़े ऊपर की ओर चढ़ती जा रही हो। दीप्ति ने घाव को धीरे से छुआ। जरा–सा चमड़ा छिला था। लेकिन और शरीर पर वह घाव भी चन्दन के टीके पर छोटी रोली की बिन्दी जैसा लग रहा था। वहीं उसके ललाट का स्पर्श हुआ। यही है बिन्दी मेरे भाल की। वह सोच रही थी। आनन्द चुप था। पर कुछ ऐसा था जो सनसनाहट के साथ पूरे शरीर को झकझोरता ऊपर से नीचे तक दंश की तरह फैल गया। वाशेक ने करवट बदली और बलपूर्वक दीप्ति को अपनी भुजाओं में कस लिया। दीप्ति के चेहरे पर गोरोचन की दीप्ति थी, पर उसमें लज्जा के सिंदूर का रंग भी मिलता जा रहा था। उसके गोल पद्मपुष्म की तरह खिले हुये मुख को उसने दोनों हथेलियों में बड़ी कोमलता से उठाया और उसकी अगम अपार आँखों में एकटक झाँकता रहा। –दिल्ली दूर है, पृ0 142

प्रातःकाल इन्द्रप्रस्थ में वैसे नहीं आता था, जैसा वह लाल कोट, सीरी अथवा जहाँ आरा सराय पर आया करता था। मुर्गों की बांग तो साभी जगह प्रातः सुनाई पड़ने वाली एक निश्चित बात है, पर उसे ताम्रचूड़ कहने वाले अपनी प्रथा के अनुसार प्रातःकाल की किरणों के साथ सोनजूही की अधखिली कलियों की वर्षा के बीच भगवान विष्णु के मन्दिर घंटों में उन्हें जगाने के लिए मंगला आरती में तल्लीन थे। वाशेक अलसाया पड़ा रहा। शरद ऋतु का सवेरा योगिनीपुरम् में कुछ भिन्न रूप में होना ही चाहिए। कहाँ दशार्ण के धन खेतों पर फैला, चमकता शरद और कहाँ दिल्ली की चिपचिपी सड़कें।

– दिल्ली दूर है, पृष्ठ 143

"छोड़ो यार, दिमाग खराब कर दिया साले।" कल्लू बोला, "अरे मैनवाँ?"

"का हो भइया"?

"अरे दू कप चाय ले आ।"

मैनवाँ हरिजन कन्या थी, उसे इस सबसे कोई मतलब नहीं था कि कौन समीकरण जीतेगा, कौन हारेगा। उसने तो जब से ननकू को देखा है, पगला गयी है। उसने अभी तक सवेरे ददुवा के अखाड़े पर ननकू को देखा। कइसा वदन है लोहे का ढ़ला फौलाद जैसा। कइसी आँखें हैं, लांबी लांबी सितुही (सीपी) जैसी! हाय ननकू!

"का हो, विजय दसमी की छुट्टी होय गयी?" मुस्कराते हुए रामदास काका बोले– "कुछ पलिवार के इज्जत–विज्जत पर खियाल करिए।"

"मैं आपकी तरह खानदान या परिवार से चिपका तो हूँ नहीं काका, पर कभी उसे रेहन भी नहीं रक्खा है। समझ में नहीं आता कि आपका इशारा का है।"

"इशारा उहै है दुखना, एक चमार को कपाट पर मत बैठाइए, आप होगें ऐमे–सैमे, पर मैं इस बेहुदेपन को झेल नहीं पाऊँगा।" रामदास काका खड़ी बोली में भोजपुरी मिलाकर बोल रहे थे। यानी खतरे की घंटी।

जब भी क्वार के महीने में छुट्टी होती, मैं घर आ जाता। मेरा गाँव चमन तो है नहीं कि "अहा ग्राम जीवन" का राग अलापूँ, बस बरसाती पानी को रोकने के लिए बना है एक बाँध। कोनहरे के पानी में जो जंगली घासों के सड़ जाने के कारण बहुत अजीब गंध की चादर लपेटे रहता, धमा– चौकड़ी, उछल–कूँद, तैरने और छूल–छूलैया खेलने में पता नहीं क्या मजा मिलता, पर मुझे तो लगता है कि गाँव का कोहनरा एक "ऐंगिल" है, दृष्टिकोण कहिए, जहाँ से आपको गाँव की स्थिति का सही अंदाज मिल जाता है। पीले रंग में रंगे धनखेतों की लहरियादार चूनर में दुपहरिया के लाल फूलों के गोटे काढ़ने वाली हेमंत का आगमन सिर्फ मोहित नहीं करता बल्कि एक आरजू कि इस सोंधी गंध को जितना भी खींच सकूँ फेफड़े के भीतर खींचू।

– शैलूष, "माटिका" पृष्ठ 6–7

"बात तो दिल में धंसती है काका, चारों ओर माटी, माटी। कैसी खुदी है, कैसा घमंड है, बड़ा अहंकार है। सुनो काका यह माटी जो खुद ही सब करती है। माटी का घोड़ा, माटी को जोड़ने की लालसा, माटी का असवार यह इंसान माटी को माटी से मारते हैं लोग हथियार माटी का, घमंड माटी का, बाग–बगीचे के फलों से लदा गुलजार माटी का, पर सब कुछ मृत्यु में बिला जायेगा।"

– शैलूष, पृष्ठ 9 भूमिका

प्रातःकाल। चैत के अंतिम दिनों में गर्मी बढ़ जाती है, पर सुबह तो ऐसी बावन छुरी छप्पन पेच होती है कि दिल में "सीधे उतर जाती है। हवा नाना प्रकार के लताओं में गुंथे फूलों की, गेंदा, दवना, बेला, केवड़ा की सुगंध के स्पर्श से लोगों को पागल कर देती है। इस मदहोश करने वाली हवा को इतना खींचें, इस तरह खींचे कि फेफड़े भर जायें, दिल तरावट से नहा जाय। नटों ने देखा कि रेवतीपुर के पूरब और नटों की झोपड़ियों के पश्चिम एक काफिला चला आ रहा है। भैंसो पर लदी रावटियाँ और गूदड़ वहँगी पर, सींक के बड़े पिंजरों में बन्द मुर्गे– मुर्गियाँ, लाल रंग की रावल मुनिया, हांड़ियों में कसमताते गेहुँअन, पिंजरों में बन्द नेवले, इठलाती हुई नट कन्याएं और लंहगा–पटोर में लिपटे बंदर– बंदरियाँ।

– शैलूष, पृष्ठ 34

मुद्दत के बाद सब्बा मौसी झोपड़ी की कैद से बाहर आयीं। सोन के बीहड़ों में घूमने वाली सावित्री पराधीन पंछी की तरह पिंजड़े में बंद रहती हैं। पलास के पेड़ों में सुग्गे की ठोर की तरह काले लाल कल्ले फूटे हुए थे। हवा के थपेड़ों से घायल होकर सेमल के फूल गुब्बारे की तरह फूट रहे थे। नरम– नरम रूई– गालों से, बालों से छू जाती थी। इतनी लम्बाई पार करने के बाद भी प्रकृति से सब्बो का मन नहीं भरा। तभी तीन पेड़ दीख पड़े। एक ऊँचाई के, एक साथ, एक से सटे। कचनार के फूलों में उनका मन विभोर हो गया। कचनार के हल्के लाल, बैंगनी, सफेद फूल राहत तो दे सकते हैं, पर अपमान और बेइज्जती की जलन तो मिटा नहीं सकते।

– शैलूष, पृष्ठ 55

ब्लड ग्रुप की विलक्षणता देखते हुए मेरे दिमाग में हमेशा हलचल होने लगती। कितनी अभागिन है मंजु कि ब्लड ग्रुप श्रीमती इन्द्रागांधी का मिला और रोग राष्ट्र नायक जय प्रकाश नारायण का। जय प्रकाश को जिलाने के लिए नब्बे लाखं की डायलसिस मशीन मंगायी गयी जिसका सारा व्यय श्रीमती इंदरा गांधी ने उठाया। मैंने ये नाम इसलिए नहीं गिनाये कि मैं मंजु श्री को आसमान की ऊँचाई पर बैठाना चाहता हूँ, इसे मात्र अपनी दीनता के प्रमाण के रूप में रख रहा हूँ। कहाँ राजा भोज और कहाँ भोजुआ तेली।

– मंजुशिमा, पृष्ठ 89

"ठीक है सत्यनारायण, तुम्हारा पाँच हजार का प्रस्ताव मैं स्वीकार करता हूँ।" मैंने कहा।

"नाहीं, भइया, हम छः हजार से एक्को पइसा कम न लेब" जगरदेव ने गर्दन झुकाये हुए कहा– "हमहन के रहे–सहे क इंतजामों ठीक नाहीं बा। अच्छा होटल आ बढ़िया खाने–पीने का बंदोवस्त भी चाही।"

– मंजुशिमा, पृष्ठ 89

थोड़ी देर में पांडेय जी आये। वे चालीस– पैंतालीस से अधिक वय के नहीं लगे। चेहरे पर एक इस तरह की शांति थी जो प्रायः आत्म विश्वास से पैदा होती है।

"कहिए डाक्टर साहब।" आपके बारे में बी.एच.यू. के अस्पताल से या गैर परिचित लोगों की दर्जनों चिट्ठियाँ आ चुकी हैं। सबने एक बात जरूर लिखी है कि आप हिन्दी के रचनाकारों की अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं। मुझे बहुत खुशी हुई।"

"यह सब आपकी शालीनता है डा0 पांडेय। मेरे जैसे मुदर्रिस और फटीचर लेखक के बारे में लोगों ने क्या– क्या लिखा है, मैं नहीं जानता। न तो उत्कंठा ही है कि उनकी प्रशंसा भरी पंक्तियों को देखूँ, पर आज मैं आपके सम्मुख एक घोर संकट में पड़ी लड़की के बाप की हैसियत से आया हूँ।"

– मंजुशिमा, पृष्ठ 90–91

शौनक ने दौड़कर गालव गर्ग को अपने वक्ष से लगा लिया, "वत्स बहुत दिन बाद पीड़ा के समुद्र में मुझ डूबते को तिनके का सहारा मिला। तुरन्त बताओ वत्स। क्या समाचार है क्षत्रवृद्ध आर्यजन के। क्या समाचार हैं मेरे अग्रज धन्वन्तरि के? क्या समाचार हैं मयूरक्का– पुत्री सिंधुजा के? क्या समाचार हैं वीरवर मेरे आर्यजन में इन्द्रवत पूजित वत्स प्रतर्दन के?

घोर शौनक की विहलता में अद्‌भुत चमत्कारिक सुख का मधु चख रहा था। कैसा अनिर्वचनीय है अपने रक्त सम्बन्धी के समाचारों को जानने की उत्सुकता का आनन्द। वह आनन्द भी निजी स्वार्थ पूर्ति का परिणाम नहीं है। अपनी वचन बद्धता का भविष्य जानने की पीड़ा ने शौनक जैसे परार्थ प्रेमी को इतना दुःखकातर बना दिया है।

– वैश्वानर, पृष्ठ 24

"वाचालता नहीं, वाचालता नहीं। प्रतर्दन अभी शिशु है। प्रवंचना पूर्वक बल्मा के स्पर्श से अपने अश्व को लक्ष्य से हटाकर भद्रश्रेण्य की पीठ में आलक्ता बाण उतार दिया तो क्या यह इन्द्रदेव की वज्रशक्ति का अधिष्ठाता बन गया। हम अभी सामान्य सामन्तों से छेडछाड़ नहीं करना चाहते।

– वैश्वानर, पृष्ठ 101

वैश्वानर आकाश में सूर्य, अन्तरिक्ष में विद्युत, धरती पर अग्नि है। यह वैश्वानर ही प्राण है, यही अन्न है। यह वनस्पतियों में पुष्प बनकर खिलता है, फल बनकर शाखाओं को झुका देता है। औषधियों में कष्ट-निवारक रोगों को हरने वाले रस का परिपाक करता है। वही जीवन का पर्याय है। पर जब वही मुट्ठी से स्खलित होकर गिरता है तो वलीवर्द की भाँति शस्यों को अपनी सप्त जिह्वाओंसे चाट जाता है।

– वैश्वानर, पृष्ठ 524–525

उपर्युक्त भाषांशों से डा0 शिव प्रसाद सिंह द्वारा प्रयुक्त शब्दावली और वाक्य-संरचना की कुछ बानगी देखी जा सकती है। "अलग-अलग वैतरणी" से लेकर "वैश्वानर" तक उनकी वाक्य संरचना के तेवर विविध मुखी और सावलील गद्य के प्रतीक हैं। वाक्यों के प्रायः सारे भेदोपभेद उनके यहाँ प्राप्त होते हैं। उनका उद्देश्य अपने कथ्य को संप्रेष्य बनाना है। मनोदशाओं के विश्लेषण, प्रकृति-चित्रण, संवादों की रचना में उनका गद्य पूरी तरह सक्षम है। वह सर्वत्र सहज, भंगिमा युक्त, वक्र कथनों से अलंकृत और पारदर्शी गद्य है। उनके उपन्यासों की वाक्य संरचना का आगे जिन आधारों पर विश्लेषण किया गया है वे निम्नवत् हैं:

1.3.5 यह अध्ययन शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में प्रयुक्त वाक्य-विन्यास का संश्लेषणात्मक अनुशीलन किया गया है। इस अध्ययन को सात प्रकरणों में बाँटा गया है। पहला विषय प्रवेश जिसमें वाक्य संरचना का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसी अध्याय में शिव प्रसाद सिंह की उपन्यास-सृष्टि की संक्षिप्त रूपरेखा, उसकी विषय-वस्तु, भाषा-संरचना और वाक्य विन्यास के संबध में उनके विचार तथा उनकी कथा-भाषा के संबध में अन्य समीक्षकों के मत दिये गये हैं। इसके बाद उनके उपन्यासों से भाषा और वाक्य विन्यास के द्योतक कुछ उद्धरण दिये गये हैं।

इसके उपरान्त पूरी "थीसिस" को सात प्रकरणों में विभाजित कर पद स्तरीय वाक्य विन्यास, वाक्य स्तरीय वाक्य-विन्यास, वाक्य-विन्यास के खंडीय तत्व जैसे बीज वाक्य आदि, अति खंडीय तत्वों में "सुर", बलाघात, हिन्दी वाक्य संरचनाएं, अर्थमूलक तत्व तथा विशेष रचनाओं के अन्तर्गत लोप आदि का अनुशीलन किया गया है।

* प्रकरण – 2 *

* प्रकरण – 2 *

प्रकरण – 2

2.0.0 संश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास: पद स्तरीय अनुशीलन

वाक्यों के सभी तत्वों की अन्त: स्थापित व्यवस्था की प्रयोजन मूला योजना को ही संश्लेषणात्मक पद्धति कहते हैं। इसीलिये मैंने अपने प्रतिपाद्य में वाक्य में प्रयुक्त पद स्तरीय इकाइयों से लेकर वाक्य स्तरीय संरचनओं तक सभी का समावेश किया है। प्रतिपाद्य विषय में मैंने पद को वाक्य की परिचालन और अनुशासन- व्यवस्था से अनुप्राणित मानकर अध्ययन किया है।

पद-स्तरीय संरचनाओं के बाद वाक्य स्तरीय संरचनाओं का विभिन्न वर्गो की इकाइयों के रूप में परीक्षण भी संश्लेषणात्मक दृष्टि से हुआ है।

वाक्य- संरचना की एक अन्य व्यवस्था- जो उद्देश्य- विधेय मूला है। इसके अन्तर्गत मैंने इन दोनों योजकों को योजित करने वाले प्रत्यक्ष एवं परोक्ष तत्वों की ओर संकेत करते हुए संश्लेषणात्मक तत्वों की ओर निर्देश किया है।

उपन्यासों में प्रयुक्त कहावतें अथवा लोकोक्तियाँ और वाक- पद्धतियों (मुहावरे) डा० शिव प्रसाद सिंह जी की अन्तश्चेतना एवं जीवन- सम्बन्धी दृष्टिकोण के सिद्ध प्रतिफलन हैं। प्रतिपाद्य विषय के अन्तर्गत मैंने इन इकाइयों की प्रयोगान्तर्गत योजना पर ही विचार किया है।

वाक्य- संरचना में पद अपरिहार्य सिद्ध तत्व हैं। वस्तुत: पदों का संश्लेषण ही वाक्य की सप्राणता का सूचक है।

प्रतिपाद्य विषय के अध्ययन के अन्तर्गत मैंने रूढ़ शब्द भेद का उपयोग करते हुये पद की वास्तविक स्थिति एवं सक्रियता का वाक्य- विन्यासीय विवेचन करने का प्रयत्न किया है।

अर्थ की दृष्टि से संज्ञा दो प्रकार की होती है। वस्तुवाचक तथा गुणवाचक। वस्तुवाचक संज्ञा के चार भेद होते हैं:- व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, समूहवाचक और द्रव्यवाचक। गुणवाचक संज्ञा का एक भेद होता है। जिसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

2.1.0 संज्ञा- वाक्य विन्यास

डा० शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में संज्ञा के सभी भेदों का प्रयोग मिलता है- कारक, लिंग, वचन की दृष्टि से संज्ञाओं में प्रत्यय योगमूलक रूपान्तर हो जाता है।

2.1.1 कारक

2.1.1.1. व्यक्ति वाचक संज्ञा

खुदाबक्कस ने झुककर जुहार की।

(अलग-अलग वैतरणी पृ0-37 करण, भाव0)

प्रतर्दन को अपने जाने- पहचाने गोपनीय स्थानों के ठौर-ठिकानों का ज्ञान बहुत स्पष्ट था। (कर्म0, वैश्वानर, 432)

श्यामिका जब पहाड़ी रास्ते से चलती है।

(कर्ता, कर्तृ0, कुहरे में युद्ध, 203)

गोगई महाराज बनारस से लौटे।

(कर्तृ0, अपादान0, अलग0 45)

जब तक तू श्री विद्या को नहीं जानता।

(कर्म0, कर्तृ0, नीला चाँद, पृ0 347)

रामनगर किले से वरूणा- संगम तक उसने फरे-पर-फेरे लगाए।

(व्यक्तिवाचक संज्ञा, अपादान कारक, कर्तृ0,
एकवचन, पुल्लिंग, गली आगे मुड़ती है, पृ0 13)

मैंने अस्सी घाट से राजघाट तक की गंगा के किनारे किनारे अक्सर परिक्रमा की है।

(व्यक्तिवाचक संज्ञा, अपादान कारक, कर्तृ0, पु0,
एक0, गली आगे0, पृ0 14)

मेरे मन का दु:ख भी शुन:शेप के लिए सहानुभूति से भर उठा।

(व्यक्तिवाचक संज्ञा, कर्तृ0, सम्प्रदान का0, पु0,
एकवचन, गली आगे मुड़ती है, पृ0 15)

मेरे माता पिता पूर्वी पाकिस्तान में मारे गये तिवारी।

(व्यक्ति0, कर्म0, अधिकरण कारक, एकवचन,
पु0, गली आगे मुड़ती है, पृ0 16)

गाड़ी मालवीय पुल पर थी।

(व्यक्ति, भाव0, अधिकरण, एक0, पु0,
गली आगे मुड़ती है, पृ0 17)

देखो हरिचरन। आगे कुछ कहा तो अच्छा न होगा।

(व्यक्ति0, कर्तृ0, संबोधन, एक0, पु0,
गली आगे मुड़ती है, पृ0 14)

बनारस भी क्या अदा से बसा हुआ शहर है।

(व्यक्ति, कर्तृ0, कर्ताकारक, एक0, पु0, गली आगे मुड़ती है, पृ0 19)

राजेश्वरी मठ के पुजारी बाबा रामकीरत दास अपने किस्म के अलग इन्सान हैं।

(व्यक्ति0, कर्तृ0, सम्बन्ध कारक, कर्ताकारक, पु0, एक0, गली आगे मुड़ती है, पृ0 21)

देवी चौधुरी बड़े गुस्से में उखड़कर बोला–

(कर्तृ0, कर्ता0, व्यक्तिवाचक, एकवचन, पुल्लिंग अलग– अलग वैतरणी, पृ0 195)

मैंने यह सब ठीक करके देवू चौधरी को बुलवाया।

(कर्तृ0, कर्म0, व्यक्ति0, पुर्ल्लिंग, एकवचन, अलग–अलग वैतरणी, पृ0 195)

लेखपाल ससुरे ने बीस बिगह वाले रकवे पर भी देव चौधुरी का कब्जा दिखाया।

(कर्तृ0, सम्बन्धकारण, एक0, पुर्ल्लिंग, अलग– अलग वैतरणी, पृ0 195)

"ये देखो न फँस गया।" पुष्पी बोली।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ 266)

विद्यापति की ये पंक्तियाँ जाने कितनी बार पढ़ी थीं।

(कर्तृ0, सम्बन्धकारक, पु0, एक0, अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ 267)

मैंने आचार्य सरोरूह वज्रपाद के दोहे को थोड़ा बिगाड़ दिया है, अर्थ से नहीं भाषा से।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, एकवचन, पुर्ल्लिंग, मंजुशिमा, 109

मैं मंजु के पास जाने के लिए निकला ही था कि श्रीकांत और नरेन्द्र आये।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, एकवचन, स्त्री0, मंजुशिमा–111)

हमारे बीच आ गया नन्हा शिशु गोविन्द।

(कर्तृ0, कर्ताकारक, एक0, पु0, नीलाचाँद– 183)

दूसरा विचारणीय विषय है काशी की प्रजा की आर्थिक परिस्थितियाँ।

(कर्तृ0, सम्बन्धकारक, स्त्री, एक0 नीलाचाँद–183

ब्रह्मपुरी में दो गुट हैं।

(कर्तृ0, अधिकरण,एक0,स्त्री0,नीलाचाँद- 183)

विनायक भट्ट ने रूदन तेज कर दिया।

(कर्तृ0, कर्ता, एक0,पु0,नीला चाँद 205)

दुलारी ने मिठाइयाँ अँचरे में बाँधीऔर फिर मिस्सर के घर पहुँची।

(कर्तृ0, कर्ता,एक0,स्त्री0, नीलाचाँद,पृ0-243)

सूरज काका नीचे पथ पर कुछ विपणियाँ खुल गयी हैं।

(भाव0,संबोधन, एक0,पु0,नीलाचाँद, पृ0 282)

त्रैलोक्य मल्ल को जितना पता था, स्थिति उससे कहीं अधिक भयानक थी।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, कुहरे में युद्ध-119)

क्यों रिपु! तुम्हारा मुख सूखा-सूखा उदास लगता है।

(कर्मवाच्य, संबोधन,एक0,पु0,कुहरे में युद्ध-119

क्या है राजेश्वर कुछ खट्टी -मिट्ठी सुनाइए।

(भाव, संबो0,एक0पु0, कुहरे में युद्ध पृ0-166)

राजेश्वरी वेला ने कहा-

(कर्तृ0, करण, एक0,स्त्री0, कुहरे में युद्ध-167)

सुभगा के साथ चारणी देवियों का समूह निकल पड़ा।

(भाव,सम्बन्ध,एक0,स्त्री, कुहरे में युद्ध-174)

सुमेधा आर्या को देखकर मुझे सर्वदा आश्वस्ति मिलती रही है।

(भाव, कर्मकारक, एक0,स्त्री, वैश्वानर,-98)

घोर सिन्धु की आँखों में एकटक देख रहे थे।

(कर्तृ0, सम्बन्धकारक,एक0,स्त्री0,वैश्वानर-98)

मदाल से, क्या बाबा धन्वन्तरि की कन्या सिन्धुजा प्रारम्भ से ही ऐसी रही है?

(कर्तृ0,सम्बन्ध कारक,एक0,स्त्री0, वैश्वानर-285

यहाँ "मदाल से" सम्बोधन कारक, स्त्रीलिंग, एक वचन भी है।

आलोक मत्स्योदरी झील पर आवरण जाल-सा लटक रहा था।

(कर्तृ0,स्त्री0,अधिकरण,एक0,नीला चाँद-39)

कर्ण मेरू के बारे में एक ऐतिहासिक जनश्रुति थी।

(कर्तृ0, कर्मकारक, एक0, पु0, नीलाचाँद, पृ0–40)

"तात्पर्य"? कीर्ति वर्मा ने पूँछा।

(कर्तृ0, कर्ताकारक, एक0पु0, नीलाचाँद–43)

सूर्य आकाश में एक बॉस ऊपर आ चुका था।

(कर्तृ0, कर्ता, एक0, पु0, नीलाचाँद, पु0–43)

विप्पी की सारी जिदें सो गयीं।

(कर्तृ0, सम्बन्धकारक, एक0, स्त्रीलिंग, अलग–अलग वैतरणी, पृ0 79)

2.1.1.2. जाति वाचक संज्ञा

व्यक्तिवाचक संज्ञाओं की तरह शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासोंमें जातिवाचक संज्ञाओं के भी सभी रूप सभी कारकों, लिंग, वचन में प्रयुक्त हुए हैं।

पियाऊ की पत्नी ने ताने देते हुए कहा था।

(कर्तृ0, एक0, स्त्री0, करण, अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ– 31)

थैली से एक सौ रूपया का नोट निकाला।

(उपादान, कर्तृ0, एक0, स्त्री, शैलूष पृष्ठ–95)

अम्मा चारपाई पर गिरी सुबुक– सुबुक कर रोती रही।

(कर्तृ0, अधिकरण, एकवचन, स्त्रीलिंग, गली आगे मुड़ती है, पृ0 161)

ऐसे दधिक्राष्ण अश्वों का प्रबन्ध तुरन्त करना होगा।

(संबध, कर्तृ0, बहुवचन, पुर्ल्लिंग, वैश्वानर–115)

"घोड़े को दूब डालकर आता हूँ।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, दिल्ली दूर है–255)

जब मालकिन बहिन जी ने खुद पुष्पी को घूरे से उठाकर गोद में लगा लिया तो अब क्या करना–धरना रह गया उन्हें।

(कर्मवाच्य, करण, अलग–अलग पृष्ठ –78)

सुबह से शाम तक अनाज–पानी उठाने–रखने में लगी रहतीं।

(कर्मकारक, कर्तृ0, विधेय, अलग0, पृ0 78)

बाप ने बेटी का मुँह न देखने की कसम खाली।

(कर्तृ0, सम्बन्धकारक, मुख्य कर्म, अलग–अलग वैतरणी, पृ0 78)

अरे आज धरमू सिंह की कुर्की हो रही है।

(कर्तृ0, कर्मकारक, अलग–अलग वैतरणी–85)

मैंने विधवा भौजाई रख ली है।

(कर्मवाच्य, कर्मकारक, अलग–अलग वैतरणी–227

जग्गन मिसिर को रजाई के भीतर गरमी मालूम होती तो सिर बाहर कर लेते।

(कर्तृ0, सम्बन्धकारक, अलग0 पृष्ट 227)

दूसरे दिन प्रातः एक अश्वारोही को गढी की ओर आते देखकर प्रहरी सन्नद्ध हुए।

(कर्तृ0, कर्मकारक, नीलाचाँद, पृष्ठ 119)

हाँ, वे स्नानगृह में हैं।

(कर्तृ0, अधिकरण, नीलाचाँद, पृष्ठ 119)

लड़ाइयाँ पहले मानचित्रों पर जीती जाती हैं।

(कर्म0, अधिकरण, नीलाचाँद, पृ0 119)

कीरत सिंह ने कटि–पट्टियाँ बाँधी।

(कर्मवाच्य, कर्म0, नीलाचाँद, पृष्ठ 139)

मुगल सराय में वक्सर शटल के एक डिब्बे में वह आ घुसा।

(कर्तृ0, अधिकरण, गली आगे मुड़ती है, 117)

मैंने सिगरेट के धुएं से आपको परेशान किया।

(कर्म0, करणकारक, गली आगे मुड़ती है–208)

श्रीकांत विस्तरे पर लेट गया।

(कर्तृ0, अधिकरण, गली0 पृष्ठ 312)

मैं बड़ी आसानी से किसी पुलिस अफसर को इत्मीनान करा सकता था कि वह होटल राष्ट्रद्रोह में मुब्तिला है।

(कर्मवाच्य, कर्मकारक, गली0 पृष्ठ 322–23)

2.1.1.3. द्रव्य वाचक संज्ञा

बालू की जगह गंगा मैया यहाँ कीचड़ फेंक गयीं।

(कर्तृ0, कर्म0,स्त्री0,बहु0,गली0 पृष्ठ 126)

दधि-चिउरा उपहार अपारा। भरि भरि काँवरि चले कहाँरा।

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0 पु0, गली0 पृष्ठ-126)

परिक्रमा के पत्थर टूट-फूट गये हैं।

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0,पु0, गली0- 104)

सींक के बडे पिंजरों में बंद मुर्गे- मुर्गियाँ।

(कर्तृ0, सम्बन्धकरण, बहु0, स्त्री0, शैलूष-34)

खटियों पर पेट्रोल छिड़क दिया गया।

(कर्म0,कर्मकारक,एक0,पु0, शैलूष- 107)

शराब की खुमारी बिना कोशिश कपूर की तरह उड़ जाती है।

(कर्तृ0, पूरक,एक0, पु0, शैलूष- 107)

करीमन की रावटियों में किनारे-किनारे लोहे की चॉदरें लगी हुई थीं।

(कर्तृ0, कर्ता0, बहु0, स्त्री, शैलूष- 108)

जाओ दौड़कर मेरी झोपड़ी से गुग्गुल माँग लाओ।

(कर्तृ0, कर्मकारक, एक0,पु0, शैलूष- 109)

परताप ने बगल के ताखे से डिटाल उठाया।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, शैलूष-229)

सबके हॉथोंमें बाँस की बनीं द्रोणियों में पर्याप्त परिजात के पुष्प भरे थे।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, बहु0, पु0, वैश्वानर-141)

पाँच वेदपाठी पीले वस्त्र पहने दूर्वा अक्षत लिए आ रहे थे।

(कर्तृ0, कर्म0,बहु0,पु0,वैश्वानर- 141)

कारीगर ने रेशम भी कुछ मिलाया है कि सारे ताने-बाने कपासी सूत के ही हैं।

(कर्तृ0,कर्म0,एक0,पु0, गली0 पृष्ठ 62)

भगवती की दोनों आँखें सोने की बनीं।

(संबध, कर्तृ0, अलग-अलग वैतरणी पृष्ठ-10)

बहुत देर तक वह पानी- पानी चिल्लाता रहा।

(कर्म0, कर्तृ0, कुहरे में युद्ध, पृ0 189)

श्रीमां के पास कुछ अतिथि आये हैं, इसलिये दूध, पानी और शक्कर मिलाकर दे जाय।

(कर्म0, कर्म0, नीला चाँद, पृ0 315)

मिट्टी के खिलौने की दुकान पर "बबुए" देखकर बबुए ठुनक जाते।

(संबध, कर्तृ0, अलग-अलग वैतरणी, पृ0-1)

2.1.1.4. समूह वाचक संज्ञा

तू हमारी बड़की विरादरी का छोकरा तो होगा ही।

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, स्त्री, एक0, शैलूष- 47)

वह छोटकी विरादरी का है।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, स्त्री0, एक0, शैलूष- 49)

दूसरे दिन भैंसवार नटों का कुनवा दुद्धी छोड़कर सोन नदी की दुर्गम घाटियों में चला गया।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पृ0, शैलूष- 4)

कबीले में तरह-तरह के आर्थिक स्तर होते हैं।

(कर्तृ0, अधिकरण, एक0, पु0, शैलूष- 13)

विक्रमादित्य ने शक-कुषण कबीलों पर जोरदार आक्रमण किया।

(कर्म0, अधिकरण, बहु0, पु0, शैलूष-13)

बीस नवयुवक करीमन के कबीले की ओर चल पड़े।

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, एक0, पु0, शैलूष-107)

तो सुन। तू आल्हा दंगल में जब उतरा तो क्या तूने लकदक पायजामा और लखनऊ का कलाबत्तू वाला कुरता नहीं पहना?

(कर्तृ0, अधिकरण, एक0, पु0, शैलूष 170)

छावनी में काफी भीड़ थी।

(भाव, एक0, स्त्री0, अलग-अलग पृ0 259)

करैता के मेले में करैता वाले गुण्डई नहीं करते थे कभी।

(कर्तृ0, अधि0, पु0, अलग–अलग वैतरणी–16)

बेचारे का खलिहान फूँक दिया सारों ने।

(कर्तृ0, कर्म0, पु0,एक0, अलग–अलग पृ0–16)

आज ही मेला शुरू हुआ है।

(भाव,एक0पु0, अलग–अलग पृष्ठ 1)

दयाल महाराज ने जो दुलकी ली तो मेले में ही जाकर रुके।

(कर्तृ0, अधि0, एक0,पु0, अलग0 पृ0–2)

जैसे पूरब के भीटे से कुलचकर कोई गुस्सैला भैंसा भीड़ में कूंद पड़ा हो।

(कर्तृ0, अधि0, एक0,स्त्री0,अलग0 पृष्ठ–14)

सारी भीड़ उलटकर पच्छिम तरफ टूटी।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0,स्त्री0, अलग0 पृ0–14)

ई मोहल्ला ही ससुरा भँडुओं की जमींदारी है।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0,पु0, गली0 पृ0 48)

पुजारी बड़ा– सा तालियों का गुच्छा लिये आया।

(कर्तृ0, कर्म0, पु0,एक0 गली0, पृ0–50)

ई मंदिर है या गुंड्डों का अड्डा है?

(कर्तृ0, कर्म0,एक0,पु0,गली0, पृ0–51)

मुहल्ले के पंच लोग पुजारी जी को ही भला– बुरा कहते चले गये।

(कर्तृ0, कर्ता0, पु0,बहु0,गली0, पृ0–52)

लड़कियों ने अपने–अपने हॉथों में फूलों के गजरे को बाँध रखे थे।

(कर्म0,पु0,बहु0, गली आगे0, पृ0–85)

वेणियों में भी श्वेत कुंद के गजरे सुशोभित थे।

(कर्तृ0, कर्ता0 बहु0,पु0, गली0, पृ0–85)

अब की कतार में नया परिवर्तन था।

(कर्तृ0, अधिकरण, एक0,स्त्री0,गली0, पृ0–86)

आनंद बाग में दरवाजे के पास खड़े, कदंब के पेड़ पर गौरे शोर कर रहे थे।

(कर्तृ0, अधि0, एक0, पु0, गली0, पृ0–44)

यह है चाँदी का सट्टा बाजार।

(भाव, एक0,पु0, गली0, पृ0– 107)

सोमवार की शाम विश्वविद्यालय के फाटक पर चलने वाली सभा से मैं काफी देर से लौटा।

(कर्तृ0, अपादान कारक, एकवचन, स्त्रीलिंग
गली आगे मुड़ती है, पृ0– 122)

धारा में उड़ता चक्रवाक पक्षियों का दल क्रेंक क्रेंक की आवाज करता सन्नाटे को तोड़ रहा था।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0,गली0, पृ0–122)

नगर को पूर्णतः अंग्रेजी विहीन करने के बाद छात्रों के दल कैंट स्टेशन पर जमा होने लगे।

(कर्तृ0, कर्ता0, बहु0, पु0, गली0, पृ0–123)

सिगरेट के बंडलों की लूट ने तनी हुई नसों वाले छात्रों को काफी राहत पहुँचायी।

(कर्म0, सम्बन्ध, बहु0 पु0, गली0, पृ0–123)

छात्रों के दो समूहों ने दोनों गाड़ियों के इंजनों पर कब्जा कर लिया।

(कर्म0, बहु0, पु0, गली0, पृ0– 123)

छात्रों का जुलूस भीड़ का रूख अख्तियार कर चुका था।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0,पु0, गली0, पृ0–124)
(कर्तृ0, सम्बन्ध, एक0,स्त्री0, गली0 पृ0=124)

चित्तरंजन पार्क में होने वाली सभा में नहीं जा सका।

(कर्तृ0, अधिकरण, पु0, एक0,गली0–124)
(कर्तृ0, अधिकरण, एक0,स्त्री0, गली0,पृ0–124

अस्सी चौमुहानी छात्र–आन्दोलन के कारनामों की चर्चा से गुंजायमान थी।

(कर्तृ0, कर्ता0, स्त्री0,एक0,गली0,पृ0–124)

मैं जानता हूँ इनके लिए छात्र मोरचे का मतलब क्या होता है।

(कर्तृ0, सम्बन्ध0,एक0,पु0, गली0,पृ0–124)

देहात की तीन–चार औरतें रहीं आर पार की माला चढ़ाने वदे आयीं रही।

(कर्तृ0, कर्म0, स्त्री0,एक0, गली0,पृ0–125)

सुना आज बहुत बड़ा जुलूस आने वाला है।

(कर्तृ0, कर्म0, पु0, एक0, गली0, पृ0–127)

मैं कोई गुंडों–शोहदों के जुलूस में नहीं जाता और न यह राजनीतिक जुलूस है।

(कर्तृ0, अधि0, पु0, एक0, गली0, पृ0–127)

तो चल पड़ी शहीदों की टोली।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, स्त्री, गली0 पृ0–127)

बीच–बीच में बैनर आदि नारों–लिखी दफ्तियाँ ऐसी लग रहीं हैं मानो हुजूम के बीच उड़न–घोड़े, ठुमुक–ठुमुक कर चल रहे हों।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, एक0, पु0, गली0, पृ0–128)

ई बानरी सेना हमें नोच–नाच के मार डाली।

(कर्तृ0, कर्ता0, स्त्री0, एक0, गली0, पृ0–128)

तुम इतना पैसा पाते कहाँ से हो जो अपने गुट के असामाजिक तत्वों तक को एम्बैसी में ही नहीं, शहर में किसी खास जगह खिलाते– पिलाते हो।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, एक0, पु0, गली0, पृ0–129)

मुझे खुशी है कि युवजन सभा के न होते हुए भी तुम इतनी मुस्तैदी से जुलूस में सम्मिलित हो।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, स्त्री0, एक0, गली0, पृ0–130)

(कर्तृ0 अधिकरण, पु0, एक0, गली0, पृ0–130)

सम्मिलित तो सभी वर्ग के या वर्गहीन छात्र हैं जिन्हें हिन्दी से लगाव है।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, एक0, पु0, गली0, पृ0–130)

इसे एक दल से जोड़ने की कोशिश क्यों कर रहे हो तुम?

(कर्तृ0, सम्बन्ध, एक0, पु0, गली0, पृ0–130)

आज सशस्त्र पी.ए.सी. हमारा रास्ता रोके खड़ी है।

(कर्तृ0, कर्ता0, स्त्री0, एक0, गली0, पृ0–131)

आप मीटिंग डिस्पर्स करें।

(कर्तृ0 कर्म0 एक0, स्त्री0, गली0, पृ0–132)

उमड़ती हुई जनगंगा अपने– आपसी फटकर छितरा रही थी।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, स्त्री, गली0 पृ0–132)

लोगों के ठसमठस भीड़ के द्वारा ठेला जा रहा था।

(कर्तृ0, करण, एक0, स्त्री0, गली0, पृ0–133)

मैं एक भीड़ के रेले के साथ जिस गली में झोंक दिया गया उसमें एक मद्रासी परिवार था।

(कर्म0, सम्बन्ध, एक0, पु0, गली0, पु0– 137)

एक बिना राह का जंगल उसके माथे के भीतर हरहराने लगा।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, गली0, पृ0–141)

मैं इस मुकम्मल गैंग को ध्वस्त करके ही रहूँगा।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, गली0, पृ0– 144)

यहाँ कौन नुमाइश लगी है जो देखने चली आयी हो?

(भाव0, स्त्री0, एक0, गली0, पृ0–147)

ई त कवनो भारू गिरोह के कारस्तानी मालूम होते हैं।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, एक0, पु0, गली0, पृ0–153)

कौनो बड़ी गिरोह तोहरे पीछे काहे पड़ी है।

(कर्तृ0, कर्ता0, स्त्री0, एक0, गली0, पृ0–154)

माझी की बातों ने उसके मन में सोये हुए विचारों के छत्ते को खोद दिया था।

(कर्तृ0, कर्म0, पु0, एक0, गली0 पृ0–163)

उनके कबंध पर कनेर की मालाएं लटकाते हैं।

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, स्त्री0, गली0 पृ0–165)

तुर्क, टिड्डी दल की तरह उत्तरापथ की शस्य श्यामला भूमि की सारी रंगत चाट चुके हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, कुहरे0 पृ0–9)

पहली बार युद्ध की रणनीति में नया परिवर्तन लाकर जो व्यूह रचा गया, वह तुरूष्कों के लिए लौह पिंजर प्रमाणित हुआ।

(कर्म0, एक0, पु0, कुहरे में युद्ध– पृ0 10)

जनजाति के लोग असभ्य और वनैले नहीं है।

(कर्तृ0 एक0, पु0, कुहरे में युद्ध, पु0–10)

गुरू पुत्र देव शर्मा राजसभा में पधार रहे हैं।

(कर्तृ0 अधिकरण, एक0स्त्री0, कुहरे में युद्ध–12)

गुरू पुत्र देवशर्मा राजसभा में पधार रहे हैं।

(कर्तृ0, अधिकरण0, एक0, स्त्री0, कुहरे0–12)

बलवन का सैन्य दल टिडिड्यों की तरह आप पर टूट पड़ेगा।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, कुहरे में युद्ध–14)

रमजान के कारण सुल्तानी सेना ग्वालियरके किले के बाहर ही रूकी रही।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, स्त्री0, कुहरे में युद्ध–33)

शाही फौजें' वहां पर सं0 1289 तक टिकी रही।

(कर्तृ0, कर्ता0, बहु0, स्त्री0, कुहरे में युद्ध–33)

तुरूष्क वाहिनी काली सिंध पार कर उत्तर श्मश्रुधर घाटी (चम्बल घाटी)में प्रवेश करने वाली हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0, स्त्री0, एक0, कुहरे में युद्ध–74)

अश्वारोही सेना बहुत बड़ी है।

(भाव, एक0, स्त्री, कुहरे में युद्ध–74)

इसमें खलजी दस्ते भी शामिल हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0, बहु0, पु0, कुहरे में युद्ध–74)

वे कोई मायावरी रेगिस्तानी कबीले तो हैं नही।

(कर्तृ0, पूरक0, बहु0, पु0, कुहरे में युद्ध–172)

खुद देखो, सारा लश्कर सो रहा है।

(भाव, एक0, पु0, कुहरे में युद्ध–175)

औलिया गांव–गांव घूम–घूमकर लश्करों में नाश्ता करने नहीं आते।

(कर्तृ0, अधि0, बहु0, पु0, कुहरे में युद्ध–176)

ऐरावत की देखा–देखी हस्ति सैन्य के सभी हाथी इस मनपसन्द क्रीड़ा में बड़ी प्रसन्नता के साथ सम्मिलित हो गये।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, स्त्री0, एक0, कुहरे में युद्ध–177)

चन्देल की हस्ति सेना इंगित की प्रतीक्षा कर रही थी।

(कर्तृ0, कर्ता0, स्त्री0, एक0, कुहरे में युद्ध–177)

तभी वाशेक के पवन की टापों से संगम पर उपस्थित भीड़ चौंकी।

(कर्तृ0, अधिकरण, पु0, एक0, कुहरे में युद्ध–179)

(कर्तृ0, स्त्री0, एक0, कुहरे में युद्ध–179)

आनन्द ने सामने से जन–सम्मर्द को देख लिया था।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, कुहरे में युद्ध–180)

आपके दोनों पीलूपति पचास–पचास के हस्ति गुल्म के साथ तयासी के स्कंधावार में विनाश और ध्वंश लीलायें करके आ रहे हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0 वाक्यांश, बहु0, पु0, कुहरे–180)

सारी सभा अद्‌भुत उदास क्षण के गहरे सरोवर में डूब उतरा रही थी।

(कर्तृ0, एक0, स्त्री, कुहरे में युद्ध–180)

वीर वर्मा के साथ एक सौ सैनिकों का गुल्म नायक वीरभद्र की अधीनता में चला।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, कुहरे में युद्ध–184)

उसके दल–दस्यु देवगढ़ के पास किसी गुप्त स्थान में रहते हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, कुहरें में युद्ध–184)

लछू बैलों के टांड़े और घचरा सभी को जनसेवा में ले ले।

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, पु0, कुहरे में युद्ध–169)

फौज इस पार उतरते ही झोपड़ियों की ओर लपकी।

(कर्तृ0, कर्ता0, स्त्री0, एक0, कुहरे में युद्ध–227)

क्या तुम कुनबे के साथ आये थे।

(कर्तृ0सम्बन्ध, एक0, पु0, कुहरे में युद्ध–239)

जरा महोबा की लूट तो होने दो, जुझौती की तमाम अनमोल चीजों की तुम्हारे सामने नुमाइश लगवा दूँगा।

(कर्तृ0, कर्म0, स्त्री, एक0, कुहरे में युद्ध–240)

आज़ तयासी के सैन्य को छिन्न–भिन्न करके घूलिसात् कर देना है।

(कर्तृ0, कर्म0, पु0, एक0, कुहरे में युद्ध–248)

भीतर हरम का माहौल कुछ इस कदर का था जिसमें संजीदगी थी।

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, पु0, एक0, दिल्ली दूर है–125)

वह अकेले दुनिया की किसी भी फौज को शिकस्त दे सकता है।

(कर्तृ0, कर्म0, स्त्री0, एक0, दिल्ली दूर है–125)

पन्द्रह बीस घुड़सवारों के एक दस्ते ने सराय घेर ली।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, दिल्ली दूर है–195)

एक झुण्ड औरतें और मर्द आकर दरवाजे पर खड़े हो गये। सारा झुण्ड हांककर वही लाये थे।

(कर्तृ0, कर्म0, पु0, एक0, अलग–176)

2.1.1.5. व्यक्ति वाचक संज्ञायें– जाति वाचक संज्ञायें–विशिष्ट धर्मिता युक्त

सुनिये जनाब, आप सत्यवादी हरिश्चन्द्र हैं, यह मालूम है।

(कर्तृ0, कर्म0, पु0, एक0, गली0–31)

तुम भी जानते हो और मै भी कि हरिश्चन्द्र का रास्ता क्या होता है।

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, एक0, पु0, गली0–31)

हे धर्मराज, मै तेरे सब करतब जानता हूँ।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, गली0–48)

साला अपने को सुल्ताना डाकू समझता है शायद।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, गली0–52)

इस क्क्त ये हमारी चाव को सुदामा का तुंदुल मानकर क्षमा करेंगे।

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, पु0, गली–58)

अच्छा देवि, जयंती मंगला काली, भद्र काली.....नमस्कार......

(कर्तृ0, अपादान0, स्त्री0, एक0, गली–62)

"हाय तिवारी!" जयंती भावुक होकर बोली, "मै देवयानी नहीं हूँ।"

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, स्त्री0, गली–62)

यह आदमी चलता-फिरता इनसाइक्लोपीडिया है।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, गली–68)

वाह रे बजरंग बली तो तुम बरम बाबा की सुरक्षा को लाँघ आये।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, गली – 74)

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, स्त्री0, गली – 74)

अभी जो गोली दिया है न, बस रामबाण है।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, गली – 75)

"का वे मलाह–सलाह, तू तुलसी बाबा का अशरण–शरण राम बन गया है।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, गली0 – 77)

दरिद्रता के रावरण ने सारे दाने छीनकर हमें कंगाल बना दिया।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, गली – 77)

ई रावण साला लंका का ही थोड़े था। ई रावण साला तो आज भी तुम्हारी रोटी छीन रहा है।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, गली0 – 77)

मुझे अपने घर से निकलने के लिये हर बार वैतरणी पार करनी पड़ती है।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, स्त्री0, गली0 – 78)

हाँ–हाँ–हाँ ऐसा मत कीजिये ऋषि दुर्वासा, मै अभी पानी ले आयी।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, गली0 – 79)

भाव, ज्योति और नृत्य की जो त्रिवेणी यहां बहती है, वह अन्यत्र कहीं शायद ही दिखे।

(भाव, एक0, स्त्री0, गली – 80)

नवरात्र में काशी सचमुच देवनगरी बन जाती है।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, स्त्री0, गली0 – 82)

मै सुतली की झण्डी साट रहा हूँ और देख रहा हूँ, गरबा के परिक्रमा नृत्य के लिये बने केले के खम्भों से बनी मॉंडली के चारों तरफ झण्डियों का यह लरिया बितान आंगन को सुघर्मा में बदल रहा है।

(कर्तृ0, अधिकरण, एक0, स्त्री0, गली–82)

दो झण्डियों की जगह इस देवलोक में खाली ही रहेगी।

(कर्तृ0, अधिकरण, एक0, पु0, गली – 83

यह मेरा नैवेद्य मंत्र था जिसे मैने मन ही मन दुहराया।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, गली–84)

कंधे पर परिवार को बिठाये मैं हनुमान की तरह यह जंगल पार करना चाहता हूँ।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, गली – 87)

काशी से शीघ्र महिषा सुर का प्रताप नष्ट होगा। शीघ्र ही उस आततायी नरेश का बधं होगा।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, एक0, पुर्ल्लिग, नीला चांद–80)

एक दिन ऐसी ब्राह्मणी युवती के दर्शन हुये जो साक्षात पार्वती थी।

(कर्ता0, कर्म0, एक0, स्त्री0, नीला चांद–311)

वासुदेव की कृपा से गाहड़वालों को द्रोपदी का मृदा पात्र प्राप्त हो गया है।

(कर्ता0, एक0, पुल्लिंग, नीला चांद–377)

तुम लोग गार्गी मैत्रेयी ओर लोपामुद्रा जैसी कन्याओं के प्रताप को सहने में उलूक की तरह असमर्थ हो।

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, स्त्री0, नीला चांद – 380)

डा0 शिव प्रसाद सिंह ने अपने उपन्यासों में ऐसी व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का प्रयोग जातिवाचक संज्ञाओं की विशेषता बताने के लिए किया है। ये संज्ञाएं लगती व्यक्ति वाचक हैं किन्तु, यहाँ वे विशेष धर्म के प्रतीक रूप में लोक परम्परा में प्रतिष्ठित हो जाने के कारण एक विशेष प्रवृत्ति का प्रतीक बन गयी हैं। इनका प्रयोग वाक्य के अर्थ को और विशिष्ट बना देता है।

2.1.1.6. भाव वाचक संज्ञाएं

कुछ तो मूल रूप में होती हैं और कुछ अन्य शब्द भेदों से निर्मित होती हैं। डा0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में इनके बहु स्तरीय प्रयोग मिलते हैं :

जेबासे यह तो किसी न किसी से लड़ने का बहाना ही खोजता था।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, अलग0–पृ0 99)

उन्हें सोचकर उनकी गर्दन लज्जा से झुक जाती है।

((कर्तृ0, करण0, एक0, स्त्री0, अलग0, पृ0–99)

किसी ने साहस नहीं किया।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, विधेय, अलग0–पृ0 99)

गली में दोपहरी का सूरज का ताप अपनी परछाईं को समेट कर ठहर गया था।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, उ0, अलग0 पृ0–99)

(कर्तृ0, कर्म0, विधेय, एक0, स्त्री0, अलग0–99)

सूरज सिंह के प्रति उनके मन में कभी कोई बुरा भाव न आया।

(कर्तृ0, अधिकरण0, एक0, पु0, अलग0, पृ0–99)

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, अलग, पृ0–101)

परीक्षाफल निकला तो अचानक हरिया का चेहरा तिकोने से चौकोन हो गया।

(भाव0, पु0, एक0, अलग–अलग पृ0–101)

वह एक अचूक आत्म–विश्वास से भरा–भरा लगने लगा।

(कर्तृ0, करण0, एक0, पु0, अलग–अलग, पृ0–101

जहाँ पहले गाँव के लोगों के सामने अपनी शिकायतों को सुनाये जाने से परेशान होकर मुँह लटका लेता था।

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, स्त्री0, अलग–अलग– 101)

गाँव में कल्लू सिंह के लड़के की सज्जनता और सिधाई की तूती बोलती थी।

(भाव0, एक0, स्त्री0 (विशेषण से निर्मित),

अलग–अलग वैतरणी पृ0 101, 102)

अक्सर लोग हरिया की आवारा गर्दी और लोफरई का जिक्र करते हुए बतौर नमूने के सूरत का नाम लेते थे।

(कर्तृ0, कर्म0 स्त्री0 (विशेषण आवारा, लोफर से निर्मित) एक0, अलग-अलग वैतरणी, पृ0-102)

तुम उसकी सोहबत से अपनी जिन्दगी क्यों खराब कर रहे हो?

(कर्तृ0, कारण0, स्त्री0, एक0, अलग-अलग0, 103)

यह तुम्हें आखिरी चेतावनी दी जा रही है।

(कर्मवाच्य, कर्म, एक0, स्त्री0, अलग0, पृ0-103)

हरिया के प्रति उनके रूख में काफी तबदीली आ गयी थी।

(कर्तृ0, अधिकरण0, पु0, एक0, अलग0, पृ0-101)

उसकी घुमन्तू आदतें ज्यों-की-त्यों बरकरार थीं।

(भाव0, बहु0, स्त्री0, अलग-अलग वैतरणी, पृ0-102)

शरारतों में इजाफा ही हुआ था।

(भाव, बहु0, अधिकरण, अलग-अलग वैतरणी-102)

कोई मर्यादा नहीं।

(भाव0, स्त्री0, एक0, गली आगे0, पृ0-79)

दूसरी ओर इस नये जल की अधिकता ने वे प्रणालियाँ भी बन्द कर दीं जिनसे सदियों का गलीज धीरे- ही धीरे सही बहा करता था।

((कर्तृ0, कर्ता, एक0, स्त्री0, गली0, पृ0-79)

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, स्त्री0, गली0, पृ0- 79)

तुम्हारी मनोकामन पूर्ण हो।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, स्त्री0, गली0, पृ0-79)

में उसके पागलपन को देखता रहा।

(कर्तृ0, पु0, एक0, गली0, पृ0- 79)

मन-वितृष्णा से भर जाता है।

(कर्तृ0, करण0, एक0, स्त्री0, गली0, पृ0-81)

मैंने सोफे पर थोड़ा विश्राम जरूर किया।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, गली0, पृ0-84)

मातृ पूजा के दो ही सर्वथा जाग्रत केन्द्र हैं अभी तक बंगाल और गुजरात।

(कर्तृ0, सम्बन्ध, एक0, स्त्री0, गली0, पृ0-85)

गरबा की बढ़ती हुई गति, एक तान तालियों की तरंग, चुटकियों की यति, और झुकती हुई मयूर- कन्याओं का कोकिल गान पूरे वातावरण को शक्ति- पूजा की मधुर भावना से भरने लगा।

(कर्तृ0, कर्ता0, स्त्री0, पु0, गली0 पृ0-85)

(कर्तृ0, कर्म0, पु0, एक0, गली0, पृ0-85)

(कर्तृ0, करण0, स्त्री0, एक0, गली0, पृ0-85)

बुझारत से उन्हें घृणा थी।

(कर्तृ0, कर्म0, स्त्री0, अलग0, पृ0- 79)

कनिया के चारों तरफ अकेलेपन की डरावनी छायाएं नाचने लगतीं।

(कर्तृ0 सम्बन्ध0, पु0, एक0, अलग0, पृ0- 79)

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, स्त्री0, अलग0, पृ0-79)

उनकी सिसकियों की आवाजें कोई न सुन पाता।

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, बहु0, स्त्री0, अलग0, पृ0-79)

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, स्त्री0, वही पृ0-79)

ये सब चुगली की रोटी खाते हैं।

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, स्त्री0, एक0, अलग0, पृ0-99)

हरिया पूरी भीड़ की ताकत को अपनी भौंहो में थाहते हुए बोला।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, स्त्री0, अलग0, पृ0-99)

गली में दोपहरी का सूरज का ताप अपनी परछाई को समेट कर ठहर गया था।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, स्त्री0, अलग0, पृ0- 99)

दोपहर का धमाका अपनी साँस तोड़कर दम साध लेता।

(कर्तृ0, कर्ता0, पु0, एक0, अलग0, पृ0-99)

(कर्तृ0, कर्म0, मुख्य, स्त्री0, एक0, अलग0, पृ0-99)

(कर्तृ0, गौणकर्म, स्त्री0, एक0, अलग0, पृ0-99)

यह सब तो आपका ही पुन्न परताप है।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, शैलूष पृ0-95)

उसकी तुलना में खड़ा होने लायक यहाँ कुछ ही लोग होगें।

(कर्तृ0, अधि0, एक0, स्त्री0, शैलूष पृ0-99)

जब तूने अपनी नौकरानी की भी लियाकत न रखने वाली बुढ़िया को यह मान-सम्मान दिया।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, स्त्री0, शैलूष, पृ0-175)

रात्रि का तृतीय प्रहर काशी को एक अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य से सजा देता है।

(कर्तृ0, करण0, एक0, पु0, वैश्वानर, पृ0–135)

तभी तीव्र शब्द की कड़क से रात्रि की स्तब्धता भंग हुई।

(कर्तृ0, करण0, एक0, स्त्री0, वैश्वानर, पृ0–135)

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, स्त्री0, वैश्वानर, पृ0–135)

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, एक0, पु0, वैश्वानर, पृ0–135)

प्रतर्दन के शंख की ध्वनि के साथ ही युद्धघोष करते तूर्यो की प्रतिध्वनियों की अनुगूँजें चारों ओर छा गयीं।

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, एक0, स्त्री0, वैश्वान, पृ0–135)

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, बहु0, स्त्री0, वैश्वानर, पृ0–135)

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, स्त्री0, वैश्वानर, पृ0– 135)

जहाँ अमर्ष टकराता।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, पु0, वैश्वानर, पृष्ठ–135)

काशी के नागरिक आप इसे कौतुक समझकर इसके द्रष्टान बनें।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, वैश्वानर, पृष्ठ–137)

यह तुम्हारी परीक्षा की घड़ी है।

(भाव0, सम्बन्ध0, एक0, स्त्री0, वैश्वानर, पृ0–309)

धन्वन्तरि के मृत शरीर की परिक्रमा देवता भी करेगें।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, स्त्री0, वैश्वानर, पृ0–309)

हाँ, उसे वाणिज्य और समुद्रपार देशों से होने वाले व्यापार का ज्ञान नहीं है।

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, एक0, पु0 वैश्वार, पृ0–211)

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, वैश्वानर पृ0–211)

अनादिकाल से मृत्युएं होती रही हैं।

(भाव0, बहु0, स्त्री0, वैश्वानर, पृष्ठ–334)

भोजन –भक्षण करने वालों को चाहे यह प्रतिदिन की अष्टयाम साधना लगे या परिचर्या।

(कर्मवाच्य, कर्म0, एक0, स्त्री0, वैश्वानर, पृ0–334)

2.1.2.1. लिंग

व्यक्तिवाचक संज्ञा पु0

शौनक की आँखों से धार–सार अश्रु गिर रहे थे।

(वैश्वानर, पृ0– 17)

वह गालव तुम धन्य हो गालव तुम्हारे भाग्य सराहने योग्य हैं।

(वैश्वानर, पृष्ठ– 31)

मैं श्रीकांत पर्वत से गिरकर गंगा की धारा में बहते–बहते अंग देश चला गया।

(वैश्वानर पृष्ठ– 31)

किरात वन के पास भिषक धन्वन्तरि रूक गये।

(वैश्वानर पृष्ठ– 79)

"चलें, आर्य अब सूर्योदय होने वाला है।"

(वैश्वानर, पृष्ठ– 77)

धन्वन्तरि खिल खिलाये, "तक्मन्, तक्मन्। धन्वन्तरि से लड़ने का साहस मत करना।

(वैश्वानर, पृष्ठ– 88)

"मेरी कपोती गा रही है, मेरी कपोती गा रही है, मेरी कपोती गा रही है।

(वैश्वानर पृष्ठ– 91)

उत्तरीय फेंककर अधोवस्त्र पहने वृद्ध धन्वन्तरि दौड़े।

(वैश्वानर पृष्ठ– 93)

राजा हरिश्चन्द्र के भागे हुए पुत्र की बलि के लिए उसे खरीद लिया था।

(गली आगे मुड़ती है, 15)

जय गोविन्द, जय गोपाल, जय बिंदु माधव, छिमा करो नाथा।

(गली आगे मुड़ती है, 20)

राजेश्वरी मठ के पुजारी बाबा रामकीरत दास अपने किस्म के अलग इन्सान हैं।

(गली आगे मुड़ती है, 27)

राजेश्वरी जायसवाल राँची के वैश्य कुल के आभूषण थे।

(गली मुड़ती है, 23)

हरिश्चंद्र घाट काशी का महाश्मशान है।

(गली आगे मुड़ती है, 29)

सामने दुर्गा मन्दिर था।

(गली आगे मुड़ती है, 41)

यह जेठ की पूनो थी।

(शैलूष पृ0 8)

"अच्छा माता सुरसुती जी.....।।

(शैलूष पृष्ठ सं0 - 10)

मुकुल–बकुल के बैठने से ऐसी गरदन घुमाकर हूँकती है कि मानो जगराज की माँ हो।

(शैलूष पृष्ठ सं0 - 11)

तुलसीदास का नाम सुना है?

(शैलूष पृष्ठ सं0 - 12)

आखिर कोमल चाचा की ही तो बेटी है न।

(शैलूष पृष्ठ सं0 - 12)

मैने डॉटकर कहा– हमारी अइयया क्या जूठा खरबूजा चढ़ायेगी कन्हैया जी की मूरत पर"

(शैलूष पृष्ठ सं0- 19)

"तुमको यह तो मालूम होगा परताप सिंह कि सात दिन पहले तक यहाँ सत्ती मइया की परती थी?"

(शैलूष, पृष्ठ सं0- 24)

तुम्हारे साथ बैठा है वह खरदूषण पूछो उससे।"

(शैलूष पृष्ठ सं0- 24)

इसलिए पूर्वांचल की राजनीति में वही कर सकता है जो जातिवाद को लात मारकर पूरे पूर्वांचल की गरीबी का विश्लेषण करके जनता को जगा सके।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 29)

वैसे सुना है कि कुरूक्षेत्र में दोनों सेनाएं आमने–सामने खड़ी हैं।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 32)

मेरा नाम नौजादिक पांडे है।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 34)

"रूको जुड़ावन मैंने तुम लोगों को कितनी बार कहा कि इस धर्मराज के अवतार को चाहे वह मुझे कुलटा कहे, भ्रष्ट कहे, मारो मत।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 38)

वह झमर–झमर कर बरसने वाला सावन नहीं, बल्कि नाना तरह के फूलों से लदा मधुमास था।

(शैलूष पृष्ठ सं0 - 46)

वह लोटन कबूतर की तरह जमीन पर गिर पड़ी।

(शैलूष पृष्ठ सं0 - 47)

रेणुकुट, शक्तिनगर, ओबरा, सिगरौली, अनपरा में सब देख चुकी हूँ।

(शैलूष पृष्ठ सं0 - 51)

तुम भोलेनाथ ही रह गये रजऊ।

(हनोज0 पृ0, एकवचन, 48)

प्रातः होते गंगा स्तुति या अन्नपूर्णा स्तोत्र का स्थान ले चुका था कुपुत्र धिक्कार स्तोत्र, किन्तु मेरे बाप को अपने बाप से जो गड़ी सम्पत्ति मिली थी, उस ओर उसने ध्यान नहीं दिया।

( )

कौटिल्य का अर्थशास्त्र देख लें, राजा।

(हनोज0 पृष्ठ सं0- 72)

व्यक्तिवाचक संज्ञा स्त्री

वे मुझसे काशी में मिले थे।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0- 31)

यहाँ देवी सिन्धुजा आयी हैं तो समय पूर्ण मधूक खिल गया।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0- 72)

(श्रृंखला)

मैं तो एक बार विन्ध्य श्रृंखला के साथ -साथ छोटा नागपुर तक गया हूँ।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0- 78)

वे लोग यहाँ बनारस में रहते हैं।

(गली आगे मुड़ती है, 17)

"यही कि तन-मन सब तुम्हारा होगा, पर सावित्री को कोई संतान नहीं होनी चाहिए।"

(शैलूष पृष्ठ सं0- 42)

रेवती देवयानी की तरह पूजित रहेगी और तुम्होरा वंश चमकते हुए जुगनू की तरह एक झलक दिखाकर विनष्ट हो जायेगा।

(शैलूष पृष्ठ सं0 - 8)

"अच्छा माता सुरसुती जी....।।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 10)

तमाम नट छोकरे-छोकरियाँ, बहू-बेटियाँ, मर्द पट्ठे और जईफ सभी आश्चर्य से देख रहे थे।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 12)

नट नहीं, सब इंस्पेक्टर मैं नटीं हूँ।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 24)

यह इंदिरा गाँधी का राज है।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 28)

"अच्छा दीदी," बेला सावित्री के चरण पकड़कर बैठ गयी, "तूने हमेशा कहा कि मुझे अपनी बड़ी बहन माना कर, तो आज उसी छोटी बहन की कसम है दीदी कि तुम थोड़ा दूध पी लो।"

(शैलूष पृष्ठ सं0 – 41)

नटों ने दो दल बनाकर दौड़ शुरू कर दी, एक दल पच्छिम से चला, एक पूरब से।

(शैलूष पृष्ठ सं0–42)

वर्णसंकर भारत तो क्या, सारा विश्व हो चुका है।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 72)

केन की धारा में नौका हिलती–डुलती चली जा रही थी।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 9)

हम लोग परा विध्यवासिनी के दर्शन को जा रहे हैं, इसलिए थोड़ी शीघ्रता कर रहे हैं।

(नीलाचाँद पृष्ठ सं0– 93)

2.1.2.2. जाति वाचक संज्ञा पु0

"राजकुमार, क्या आज्ञा है।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0–26)

पुत्र इधर आ। माधवी ने पुकारा, "सिन्धु।"

(वैश्वानर पृष्ठ सं0– 26)

हे अविजेय योद्धा मेरी ओर से दोनों के वचनों का निर्वहन कर।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0– 27)

बताऊँगी अग्रज परंतु अभी संभव नहीं है।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0– 29)

मैंने कहा, "राजन्" आपका जो उद्देश्य है उसे कह डालिए।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0– 32)

ऋषि का पुत्र ऋषि ही हो सकता है।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0– 32)

संस्कार करो मन्दिर का पूर्णिमा के पहले, अन्यथा देवता मूर्तियों को छोड़ देगें कहा पंडितों ने।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0- 70)

"धन्य है प्रभो।" माधव बोला, "हमआयेहैं, सुदूर पर्वत से यहाँ छिपकर रहने।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0- 71)

तुम सचमुच भगवान हो।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0- 81)

सर्वभूत का आश्रय, विश्वकर्मा का आश्रय, मानव जाति का आश्रय क्या है।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0- 88)

जिस तरह आपने आर्य जन के पुरूषों को कार्य सौंपा है, उसी तरह हमें भी बताइये।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0-89)

वह तो शौनक है कि हर अवसर पर मेरे चेहरे को देखकर भाँप जाता है कि किस क्षण किस सही समय पर वैश्वानर की कौन सी स्तुति करने का भाव उठता है मेरे मन में।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0 -90)

"देव पहली शिक्षा यह है कि वह युद्ध केवल दो व्यक्तियों की जीवन दृष्टियों के अन्तर के कारण हुआ।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0- 97)

घोड़े की आँखों से आँसू गिरने लगे।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0- 132)

"हूँउ।" महाराज ने मन्दिर में जाकर एक पुड़िया उठायी और फिर बइठके में आ गये।

(गली आगे मुड़ती है, 28)

"जै महावीर जी।" वे धीरे से बोले, "जोरदार चीज है बबुआ, इसमें शक नहीं।

(गली आगे मुड़ती है,29)

"राजर्षे! तूने यह क्या किया। सत्य की ऐसी अद्‌भुत परीक्षा दी कि देवता राक्षस, यक्ष, गंधर्व सभी आश्चर्य चकित रह गये।

(गली आगे मुड़ती है, 32)

तू याद करेगा तो तेरा चरित्तर बताने वाले एक दरजन आदमी मिल जायेगें।"

(गली आगे मुड़ती है, 48)

लोग आजकल चिल्ला रहे हैं, प्रदूषण रोको।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 1)

इस तरह का जानवर तुमने देखा है चाची?"

(शैलूष पृष्ठ सं0- 5)

अंधविश्वास तो हजारों किस्म के होते हैं, पर चरितार्थ वे ही होते हैं जहाँ अन्याय से न्याय को दबाया गया है, झूंठे रक्त के अभिमान में शुद्ध की खाल खीचीं जाती है, एक बार के पतन के लिए नारी को घर से निकाल दिया जाता है।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 8)

मूंगा ने स्सलाई फेंकी तो सूरज ने उसके गाल पर तमाचा जड़ दिया, "स्साली, एक लड़के की माँ हुई और अकल गयी भैंस चराने।"

(शैलूष पृष्ठ सं0- 13)

अब जाने दो काका। बच्चे हैं।

(शैलूष पृष्ठ सं0 13)

"ननद जू आप अपनी तरह बिना खाये-पिये बलम की राह ही जोहती रहीं कि बेचारे पखेरू पर कभी-कभी किरपा भी की?"

(शैलूष पृष्ठ सं0- 17)

नीलू जी मिर्चा खाकर और चहके, "ई स्सालयाँ गॉव-गॉव घूमकर खेल दिखाती हैं।"

(शैलूष पृष्ठ सं0- 17)

ऐसी बातें भी जानने लगी हैं, जिन्हें अब तक पढ़े-लिखें मर्द ही समझते रहे हैं।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 20)

"साथियों, मैं अभी यहाँ की स्थानीय समस्याओं पर कुछ कहना नहीं चाहता।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 32)

पता ही नहीं चलता कि आपको उन आदमियों से डर लगता है या नहीं।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 54)

घोड़े पर हलकी चाबुक लगायी।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 55)

एक और विशेष बात है राजनु शायद आप जानते हो।

(हनोज0, पृष्ठ सं0-10)

बात-बात मं उसने कहा- "विरादर" तुम्हारी शक्ल से लगता है कि तुम बहुत बड़े सुल्तान हो।

(हनोज0, पु0,एक0,-10)

महामात्य वाशेक हँसे– "वर –वधु के लापक की तरह।

(कुहरे में युद्ध, 11)

पुर्वजों का यश नष्ट हो चुका है।

(हनोज0, पृष्ठ– 13)

तभी प्रासाद के नीचे दो घोड़े की टापों की आवाज उभरी।

(हनोज0, द्विवचन,पृ0,20)

"हट जा बुड्ढे बहुत हो चुका।

(हनोज0, एक0,पु0, 41)

हमारे अब्बा हुजूर घोड़ों के सौदागर थे।

(हनोज0, बहु0,पु0, 47)

2.1.2.3. भाववाचक संज्ञा पु0

प्रतू को अभिमान है बाबा तुम पर।

(वैश्वा0, पृष्ठ– 81)

वे एक क्षण मौन सोचते रहे, एक मुंडा रोगी तो है मेरे आश्रम में भ्रात:, वह अपना बलिदान भी दे सकेगा, वह भीषण तक्मा से ग्रस्त भी है किन्तु?"

(वैश्वा0, पृष्ठ– 85)

नहीं पुत्र! यह अपनापन का बोध है, उदण्डता नहीं।

(वैश्वा0, पृष्ठ– 241)

बुझबल बुझाने को लड़कपन भी कह सकते हैं।

(गली0, पृष्ठ– 19)

नागर जी के चेहरे पर उभरी मुस्कान में विश्वास का रंग भी घुला था।

(गली0, पृष्ठ– 62)

अंधविश्वास तो हजारों किस्म के होते हैं, पर चरितार्थ वे ही होते हैं जहां अन्याय से न्याय को दबाया गया है, झूठे रक्त के अभिमान में शूद्र की खाल खींची जाती है, एक बार के पतन के लिये नारी को घर से निकाल दिया जाता है।

(शैलूष0, पृष्ठ– 8)

अचानक घुरफेंकन का चेहरा उल्लास से चमक उठा।

(शैलूष0, पृष्ठ– 27)

वही हमारे उत्साह का कारण भी है।

(हनोज दिल्ली0, पृष्ठ–9)

दूसरी ओर सेनापति भागने को कायरता कह रहे थे।

(हनोज0 पृष्ठ सं0- 17)

बड़े तुली न तो कभी बड़प्पन दिखाते हैं न छुटपन।

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0- 12)

मैं आपसे पूँछने ही वाला था कि आप मेरा मन्तव्य जान गये।

(नीलाचाँद, पृ0- 23)

मन का भार हल्का हुआ और कीरत ने मत्स्योदरी को अपनत्व भरी दृष्टि से देखना आरम्भ किया।

(नीलाचाँद पृष्ठ सं0- 33)

भाववाचक संज्ञा : स्त्री

वरना बाबा ऐसा चेहरा बनायेगें कि लज्जा से सिर झुका लेने के अलावा हम क्या कहेंगे?

(वैश्वानर पृ0- 74)

उन्हें यह भी चिन्ता नहीं कि वीतिहोत्र सर पटक–पटक कर फूत्कार रहे हैं।

(वैश्वानर पृष्ठ- 74)

चेहरे पर लुनाई है।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0- 75)

पर आर्य आपका शरीर रक्तरंजित है मैं आपको छोड़कर भाग जाऊँ तो मेरे परिवार वाले मेरी कायरता को क्षमा नहीं करेंगे।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0- 79)

मैं भी झेंपा, पर मैंने बहुत जल्दी अपनी झेंप को खिसियाहट में बदलते हुए कहा, हाँ–हाँ, वैसे ही चलता है।

(गली आगे मुड़ती है, 25)

यह देखकर प्रसन्नता हुई।

(गली आगे मुड़ती है, 62)

वह जहाँ भी जाता, वहाँ नम्रता से लोगों का मन जीतना उसका लक्ष्य था।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 30)

जनक यादव कह रहे थे "जब सांसद गहमरी ने पूर्वी उत्तर प्रदेश की दीनता की कहानी सुनायी थी तो नेहरू जी रो पड़े।

(शैलूष पृष्ठ सं0- 32)

उसे इस भावुकता का दंड मिलता रहा है।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 32)

आप तटस्थ रहेंगे तो आपकी तटस्थता को ही गुनाह घोषित करके आपको कालकोठरी में बंद कर दिया जायेगा।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 46)

सारे नट युवक उत्सुकता के साथ मौसी के चेहरे को देख रहे थे।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 48)

श्वेत दाढ़ी गम्भीरता की निशानी थी।

(हनोज0 पृष्ठ सं0– 13)

आप मेरी ओर से सुलतान बलवन से सिफारिश करेंगे, यह सब आपका बड़प्पन है, यह सब आपकी अहेतु की कृपा है।

(हनोज0 पृष्ठ सं0– 16)

आचार्य की मुस्कुराहट देखिए।

(हनोज0 पृष्ठ सं0– 18)

वह आनन्द से जीने को भी मूर्खता कहता है।

(हनोज0, पृष्ठ सं0– 19)

में भी तो सुनूँ कि तुम्हारी वीरता के आदर्श नुसरत तयासी ने कोई नई कारगुजारी तो नहीं दिखाई?

(हनोज0 पृष्ठ सं0– 53)

वह नई बहु –बेटियों के भोग की निर्ल्लज्जता में डूबा था।

(हनोज0 पृष्ठ सं0– 63)

उसमें न कोई परेशानी का भाव था, न तो घबराहट का।

(हनोज0 पृष्ठ सं0– 63)

यही मेरी जिज्ञासा है।

(हनोज0 पृष्ठ सं0– 66)

कौन था कुंई का फूल, कौन थी अरूणाम कमल की अधखिली कली जो उसके शरीर की निकटता से जनमें ताप के कारण अपनी बन्द पंखुरियों को धीर–धीरे खोलती चली जा रही थी।

(हनोज0 पृष्ठ सं0– 67)

महामात्य की इस राजभक्ति पर में प्रशंसा के आँसुओं को गिराकर चिन्ता को हलका नहीं करना चाहता।

(हनोज0 पृष्ठ सं0– 80)

मैं जानता था कि उनकी मित्रता निबाहने में मैंने निर्णायक की सीमा तोड़ी है।

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0– 5)

"जाने दीजिए चाचा जी, चाय-पान के माहौल में कड़ुआहट ले जाना ठीक नहीं है।"

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0– 06)

सफलता नहीं मिली है।

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0– 10)

यह मेरी स्मरण-शक्ति की दुर्बलता का तथ्यात्मक प्रमाण है।

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0– 23)

वह शायद अपने बाप के प्रति अपनी निकटता और आसक्ति के कारण उसे भी कर्तव्य अकर्तव्य में भेद करने वाले अक्षम साहित्यकार जैसा बेगाना मानने लगी। (मंजुशिमा पृष्ठ सं0– 24)

मनुष्य और मनुष्यता दोनों में कभी भी फाँक नहीं पड़नी चाहिए।

(दिल्ली दूर है, 43)

पर आनन्द वाशेक तुम्हारी उदारता का उत्तर उदारता से कभी नहीं देगें ये तुरूष्क।

(दिल्ली दूर है, पृ0– 347)

यह जो भी हो वीर है और मातृभूमि की स्वतन्त्रता के नाम पर लड़ रहा है।

(दिल्ली दूर है, पृ0– 348)

एक दहशत गर्मी की शुरूआत में ही हैजा।

(अलग-अलग, पृष्ठ – 32)

गॉव के बनियों की दुकानों पर चीनी की मिठाइयाँ, ककनी, जलेबी, और रेवड़ियों की परातें भरी रहतीं।

(अलग-अलग0, पृष्ठ–)

प्रचंड की निवधि दौड़ बढ़ती जा रही थी।

(नीलाचाँद, पृष्ठ सं0–11)

"मेरे चेहरे पर, उस समय कोई परिचित देखता तो कहता कि प्रसन्नता का प्रकाश छा गया।

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0– 67)

2.1.2.4. द्रव्यवाचक संज्ञाः पु0

पानी धीरे-धीरे उतर गया।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0– 15)

"ठीक है आर्य धन्वन्तरि वह क्वाथ मुझे पिलाइयो" अँगिरस ने कहा, "मैं इनके सामने उसे पीकर दिखाता हूँ।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0– 84)

धन्वन्तरि ने आरकूट (पीतल) के पात्र में जल लिया।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0–90)

मैं बाबा से मिलकर उन्हें फलकारस पिलाकर ही जाऊँगा।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0–133)

"मैंने तुझे दूध की जगह खून पिलाकर पाला है नंदू!" अम्मा उस दिन बहुत आवेश में थीं।

(गली आगे मुड़ती है, 39)

इस में लोहे का एक छोटा बक्सा था।

(गली आगे मुड़ती है, 43)

सोने का यह टीका तुम दोनों का नाम लिखाने और फीस के रुपये भरने को भी हो जाय तो बहुत है..।"

(गली आगे मुड़ती है, 44)

इसमें कभी दूध में मिलाकर ब्रांडी पीने का मजा भी है और आमदनी न होने पर फाके करने की नौबत भी।

(शैलूष पृ0 सं0– 4)

"तो लो मरती हूँ, कहाँ गयी किरासन तेल की बोतल?"

(शैलूष पृष्ठ सं0– 12)

दूध– घी की नदियाँ बहती रहें।

(हनोज0 पृष्ठ सं0– 15)

एक बाल्टी शरबत बना था।

(अलग–अलग, पृ0 सं0–31)

सहस्त्रों सुवर्ण के द्रम्म, कार्षापण, आभूषण, बहुमूल्य रत्न और मणिमुक्ता आदि से भरी है।

(नीलाचाँद, पृष्ठ सं0–38)

"मंदिर का द्रव्य जो विराट लौह पेटिकाओं से भरा है, वह तो मन्दिर के अन्त:प्रकोष्ठ में रखा है।

(नीलाचाँद, पृष्ठ सं0– 38)

मैं और महेसुवा आज आपके शरीर में तेल मर्दन करेंगे।

(नीला चाँद, पृ0– 88)

मैंने कभी ईश्वर से यह नहीं माँगा कि मेरे बच्चे स्वर्ण के कच्चोलकों में दूध – भात खाएं।

(नीलाचाँद पृष्ठ– 100)

"पानी, पानी", धधकते हुए पठारों पर तड़पते हुए लोग चिल्लायेंगे "पानी दो, पानी दो" – पानी कौन देगा, गोविन्द?"

(नीलाचाँद पृष्ठ सं0–118)

"धन कहीं बाहर से नहीं आता, हम महमूद की तरह मंदिरों को तोड़कर स्वर्ण हाटों को लूटकर कोशागारों को छीनकर धन नहीं पा सकते, इसके लिए धन तुम्हारी प्रजा देगी।

(नीलाचाँद पृष्ठ सं0- 118)

बरातियों की ओर से सुखे मेवे वितरित होने लगे, गुलाबजल भरी पिचकारियाँ सीधे आँखों को लक्ष्य करके फुहारे बरसाने लगीं।

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0- 14)

उनके जनेऊ में लोहे की अंगूठी थी जिसे फाटक खुलते ही उन्होंने झटके से फेंटे में खोंस लिया।

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0- 29)

मुकुंद की पत्नी खौलते हुए पानी की बटुली लिये किचन से कहीं और जा रही थी, वह फिसलकर गिरी तभी उसके ऊपर पूरी बटुली उलट गयी।

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0- 29)

"वही बेले की माला, घी के दीपक और वेशकीमती सिल्क की एक चादर।"

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0- 47)

मैंने उस तमिलियन गाइड को पाँच रूपये दिये, " एक गिलास में दूध और दो ताजे बँद ले आओ गेट के पास वाली दुकान से।"

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0- 60)

जली हुई रोटियाँ सब्जी के नाम पर चने का काढ़ा, चावल और प्याज।

(मंजुशिमा, पृष्ठ सं0-61)

तब तक शर्बत आ गया।

(मंजुशिमा, पृष्ठ सं0- 167)

आप गाली भी देगें तो इत्र के फाहे में बंद करके कितना करते बनता है न हाँ करते।"

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0- 167)

बोलो भाई जल की सौगन्ध खाकर बोलो कि तुम हिन्दु हो।

(दिल्ली दूर है, पृ0- 41)

जिस नगरी में हिन्दु विदेशी बन गए, हमलावर देशी हैं वहाँ टेढ़ी उँगली से घी निकालने की कहावत मूर्खता प्रदर्शन तो बनेगी ही।

(दिल्ली दूर है, पृ0-43)

इसमें इत्र रखा जाता है जनाब।

(दिल्ली दूर है, पृ0-49)

"प्यास? तो आप क्या जमना में पानी नहीं पी सकते?"

(दिल्ली दूर है, पृ0–113)

एक की पीठ पर सोने के गहनों से लदी–फदी कोईनारी थी जिसे उसने अपने ही फेंटे से अपनी पीठ से सटाकर बाँधा था।

(दिल्ली दूर है, पृ0– 120)

अगर वह इत्र अपना जाना–पहचाना नहीं था तो जाहिर हैं कि हिन्द में ही बनता होगा।

(दिल्ली दूर है, पृ0– 129)

द्रव्यवाचक संज्ञा: स्त्री

कुछ अपनी कुटियों की ओर भागे और इंगुदी तेल में डूबी प्रज्वलित उल्काएं लिए कगार की ओर बढ़े।

(वैश्वानर पृ0 सं0– 88)

"तो ले चल ये प्रातराश और रजत की सराविकायें (तश्तरियाँ)।

(वैश्वानर पृ0 सं0–286)

मेरी अम्मा की चाय पीना पसन्द करेंगे या नहीं?"

(गली आगे मुड़ती है, 55)

लल्लू काका अलमुनियम के गिलास के साथ चाय चुसकते आये।

(शैलूष, पृष्ठ सं0– 14)

ये ढोंग तो बड़े लोग करते हैं इक्के वाले, जिन्हें ढोंग के बिना न तो मुर्ग– मुसल्लम मिलता है, न बेशकीमती शराब।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 55)

होली के मौके पर न अब भारी कंडाल में ठंडाई घोली जाती थी, न अबरक का चूरा– मिली अबीर की धूल परजा पर बखेरी जाती थी।

(अलग –अलग0, पृ0–24)

तभी कक्ष में दो दासियाँ – चाँदी के थालों में रक्खे रजत कच्चोलकों में दूध से निर्मित पायस, जिसमें सूखी द्राक्षा, परिपक्व कदली के कतरे, तालमखाना, नागरंग (नारंगी) पड़े थे, लेकर आयी।

(नीलाचाँद पृ0– 126)

बहू का वस्त्र एकदम शुभ्रा था और मेरी दी हुई ताम्रपर्णी की मुक्तामाला कितनी शुभ्रा है कि सब कुछ धवल ही धवल लगता है।

(नीलाचाँद, पृ0– 128)

"जाने दीजिए चाचा जी, चाय – पान के माहौल में कड़ुआहट ले आना ठीक नहीं है"।

(मंजुशिमा, पृ0– 06)

"आधी रात को क्या मिलेगा खाने में तिल?" वह मुस्कराई, सिर्फ एक कॉफी मंगा दीजिए।"

(मंजुशिमा, पृष्ठ– 21)

चाय या कॉफी ही सही, कुछ ग्रहण किया आपने।

(मंजुशिमा, पृ0– 22)

घर पर जाकर एक दीये में सरसों का तेल भर दीजिएगा।

(मंजुशिमा पृष्ठ सं0– 47)

नान और दूध तो मिलेगा ही।

(दिल्ली दूर है, पृ0–18)

2.1.2.5. समूह वाचक संज्ञा: पु0

हमारा पक्षि–युग्म आर्य जनों की अरुण पताकाओं से भी बहुत ऊपर बहुत उन्मुक्त, बहुत गहरे आकाश में उड़ा करता था।

(वैश्वानर पृ0– 92)

उत्तरीय में बँधे गट्ठर को खोला।

(वैश्वानर, पृष्ठ सं0–92)

मेरी आँखों के सामने झुंड–के–झुंड सैन्यासी साधु खड़े हो जाते हैं।

(गली आगे मुड़ती है, 19)

घोषाल महाशय को आम्रकुंज तलैया के पास कटहल के पेड़ों का बगीचा, खेतों की मेंड़ पर एक कतार में उगे सुपारी के पेड़ सोनामाटी को तराशे हुए पन्ने की आब में डुबा देते और सुबोध सीवान की मेड़ों पर दौड़ता– दौड़ता गाँव के बाहर जाने वाली कच्ची सड़क पर खड़ा हो जाता जो बैलगाड़ियों की रगड़ से घुटने भर गहरी धूल से भरी होती।

(गली आगे मुड़ती है, 84)

"अभी आया भइया।" पुजारी बड़ा– सा तालियों का गुच्छा लिये आया और उसने मंदिर का फाटक खोल दिया।

(गली आगे मुड़ती है, 50)

झील के कम गहरे जल में शैवालों के बीच श्वेत हंसों के युग्म, जिनकी टाँगें लाल और पंख कुमुद से भी अधिक श्वेत थे, कलरव करते हुए घूम रहे थे।

(नीलाचाँद, पृष्ठ सं0– 39)

ई छूटा है टिड्डी दल। (अलग–अलग0 पृ0– 12)

ब्राह्मुहूर्त में शय्या त्यागकर, गंगा में नहाकर, स्नान– पूजन से निवृत्त होकर गंगा तट पर आसन जमा कर झुंड के झुंड लोग बैठ जाते थे।

(नीलाचाँद, पृष्ठ सं0– 99)

"यह काशी भी अद्भुत नगरी है।" विनायक भट्ट बोले, "सब जानते हैं कि यह एक अत्यन्त नीचे और अस्पृश्य व्यक्ति है तो भी इतने नवयुवक झुंड बाँधकर इसके पीछे गाते–बजाते चल रहे हैं।

(नीलाचाँद, पृष्ठ सं0–103)

टिड्डी दल की तरह चारों–ओर से आने–जाने वाले लोगों का तांता लगा रहता है।

(दिल्ली दूर है, पृ0– 10)

आनन्द वाशेक अपनी पटकुटी से निकल कर आक्रमणकारियों को एक झुरमुट में छिपकर देख रहा था।

(दिल्ली दूर है, पृ0– 38)

तभी हर हर महादेव के साथ सैनिकों का एक गुल्म हाथों में उलकाएं लिए उस कुशादा (विस्तृत) रावटी से घुसा और हाए, हाए, हाए आवाजों का एक बेमानी सिलसिला शुरू हो गया।

(दिल्ली दूर है, पृ0– 38)

तभी सामने से पंक्तिबद्ध भागते अश्वों में से एक बिदका और पंक्ति से बाहर आरोही के साथ गिर पड़ा।

(दिल्ली दूर है, पृ0– 40)

आनन्द ने देखा अश्वारोही एक कृष्णकाय वृद्ध व्यक्ति है पर उसकी दाढ़ी के दोनों पार्श्वो के अधपके गलगुच्छे उसके वीर होने के प्रमाण थे।

(दिल्ली दूर है, पृ0–40)

समूह वाचक संज्ञा: स्त्री

हरिश्चंद्र घाट पर नीचे चिताओं की राख है, धुआँ है, चिरायंध गुंध है और ऊपर गंगा से निकाली हुई बालू की राशि है जो शहर में नित्यप्रति बनते मकानों के निर्माण के लिए सप्लाई की जाती है।

(गली आगे मुड़त है, 32)

वह उँगली उठाये उड़ती बलाका–पंक्ति की ओर इशारा करता अपने बाबा से कुछ कहता और वे उसे गोद में और ऊपर खिसका लेते।

(गली मुड़ती है, पृ0 34)

लगभग सौ एकड़ में फैली इस परती में तीखे पैरों में धँस जाने वाले कॉटों से भरे घने बबूलों की कतारें फैली हैं।

(शैलूष, पृष्ठ सं0– 2)

उन अश्वत्थ वृक्षों की झुरमुट में।

(हनोज0, पृष्ठ सं0 36)

एक–एक के साथ बच्चे–बच्चियों की लम्बी कतार।

(अलग–अलग0, पृष्ठ– 7)

अलग–अलग टोलियाँ भीड़ में धँसती चली जा रही थी।

(अलग–अलग0, पृष्ठ –13)

परछाईं गली में चाँदनी की क्यारियाँ बन रही थी, एक दूधिया छाया खड़ी थी, सफेद साड़ी में लिपटी, काँच की मूरत की तरह निश्चेष्ट।

(अलग–अलग0, पृष्ठ– 73)

एक तीखी झंकार पहाड़ियों, करील कुंजों, चीरहरण के वट के निकट बहती यमुना की कलकल ध्वनि में ध्वनि मिलाती चारों तरफ अनुगुंजित हो रही थी।

(मंजुशिमा पृ0– 18)

जब मंजु 19 दिसम्बर 84 को मुझे छोड़कर चली गयी तभी मुझे अभिज्ञान शाकुंतल की पंक्ति का सही अनुभव हुआ।

(मंजुशिमा, पृष्ठ सं0–19)

लाखों लोग, सीमा के उस पार के हों या इस पार के, खून से रंगे, भूखे– प्यासे, थके–हारे लंबी कतारों में चले जा रहे हैं, चले आ रहें हैं।

(मंजुशिमा, पृष्ठ सं0–72)

मेरे सामने हरिश्चंद्र घाट है, नीचे गंगा से निकलकर सूखे बालू की राशि–राशि ढेर, किन्तु इस चक्रव्यूह का भेदन कर चुके हैं तो शेष के लिए जल्दी और तड़प क्यों?

(मंजुशिमा, पृष्ठ सं0–198)

यह अवाम से कोई ताल्लुक नहीं रखती।

(दिल्ली दूर है, पृ0– 40)

घाघरे को एक परिधि में घुमाते चारों ओर की भीड़ को पंक्तिबद्ध कतार में थोड़ा स्थान छोड़कर खड़े होने के लिए जैसे उसने हुक्म दे दिया, वह चारों ओर मयूरी की तरह घाघरे का पंख छितराएं नाच उठी–

(दिल्ली दूर है, पृ0– 70)

2. सर्वनाम वाक्य–विन्यास

संज्ञा के स्थान पर आने वाले नामों को सर्वनाम कहते हैं। सर्वनामों में रूपान्तर वचन और कारकों के कारण होता है। इनके लिंग भेद का ज्ञान क्रिया अथवा विशेषण के लिंग के आधार पर होता है। हिन्दी में सर्वनामों के आठ भेद हैं। इन सभी के प्रयोगों से बने वाक्यों को सर्वनाम वाक्य–विन्यास कहते हैं। हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में इनकी प्रायोगिक स्थिति निम्नलिखित उदाहरणों से ज्ञात हो जाएगी।

2.2.1. पुरूष वाचक सर्वनाम

यह सर्वनाम जो बात कहने वाले, सुनने वाले या किसी तीसरे (जिसके संबध में बात हो) का बोध कराये पुरूष वाचक सर्वनाम कहलाता है। जैसे मैं, तुम और वह। इसे व्यक्ति वाचक सर्वनाम भी कहते हैं। इन्हें उत्तम, मध्यम तथा अन्य पुरूषवाची सर्वनाम भी कहते हैं। (क) उत्तम –मैं, हम। (ख) मध्यम– जैसे तू, तुम और आप। (ग) अन्य पुरूष– यह, ये, आप, यह, वो, वे।

2.2.2.1. उत्तम पुरूष अविकारी

मैं आपकी तरह खानदान या परिवार से चिपका तो हूँ नहीं काका, पर कभी उसे रेहन भी नहीं रक्खा है।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, शैलूष, माटिका– पृ0 7)

मैं इस बहेतूपन को झेल नहीं पाऊँगा।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, शैलूष, माटिका, पृ0–7)

जब भी क्वॉर के महीने में छुट्टी होती, मैं घर आ जाता। मेरा गॉव चमन तो है नहीं कि 'अहा ग्राम जीवन' का राग अलापूँ।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, शैलूष, माटिका, पृ0–7)

सच तो यह है काका कि मैं आपको अपनी सवोत्तम उपलब्धि ही सौंप रहा हूँ।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0–62)

मैं ट्यूशन के बदले डेढ़ सौ रूपये महावारी तुम्हें देता रहूँगा।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0–63)

आप बता ही रहे हैं अबोधदा, तो मैं भी कह दूँ: मुझे संस्कृत से एलर्जी नहीं, भय है।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0–63)

मैं किरण के साथ–साथ उसके कमरे में चला गया।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0– 63)

अब्बल तो मैं कनपटी ताले (साइड लॉक्स) खुद पसन्द नहीं करता किरण देवी, फिर उनकी हिन्दी भाषा पर कोई मनापली कायम है, मैं नहीं मानता।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0– 64)

मैं कर क्या रहा हूँ। मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगा, जो मेरे और किरण के लिए किसी भी प्रकार से लज्जा का विषय बने।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0–65)

"जानती हूँ कि यह अटूट रक्त की भाषा कोई रूकावट वर्दाश्त नहीं करती, तो भी मैं हजार कोशिश करके भी उसे इनकार कर सकने की स्थिति में नहीं हूँ।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0–67)

तुम नहीं जानते आनन्द, मैं गरबा से बहुत प्रेम करती हूँ। शायद ही कोई गुजराती लड़की हो जो गरबा के नाम पर थिरकन उठती हो, पर दुनिया भर के तमाम लोगों के सामने मैं यह सब दिखाने की स्थिति में अब नहीं रही..... मैं नाचना चाहती हूँ, रिझाना चाहती हूँ, किन्तु सिर्फ उसको जिसमें अपने होने का प्रमाण मानती हूँ।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0–67)

मैं सिर्फ उसके ही सामने नाचना चाहती हूँ, और किसी के भी नहीं।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0 पृ0–67)

मैं बहुत देर तक सोचता रहा कि आखिर ऐसा सौभाग्य शाली वह कौन है, सिर्फ जिसके सामने ही किरण नृत्य हो सकता है।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0–68)

मैं उसकी आवाज से जग तो गया था, पर कुछ न समझ पाते जैसा लेटा था।

(कर्ता0, कर्तृ, उ0, गली आगे0, पृ0– 68)

"मैं जानता हूँ कि मैं जरूरी, बहुत जरूरी काम को अंजाम देने के लिए जुलूस में शरीक हो रहा हूँ, यह मेरी अन्तरात्मा का सवाल है, बहुत अहम् सवाल।"

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0–127)

मैं नाश्ता करके थोड़ा लेट रहा।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0–127)

मैं पानी में हेलने लगा तो झूरी बोला, आ जाव डोंगी पर।"

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0–126)

मैं कुछ न बोला। चुपचाप लुंगी–तौलिया लिये डोंगी पर बैठ गया।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0– 126)

मैं यह सुनकर काफी उदास हो गया।

(कर्ता0,कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0- 129)

"यह क्या कह रहे हो।"

"सच कह रहा हूँ भई।"

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0-129)

"आनंद, मैं कह रही थी कि तुम नौ बजे आ जाना।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0-136)

मैं देख रहा था, गंगा के कुहरे में डूबे जल में एक डोंगी अस्सी की ओर जा रही है।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0- 136)

मैं बहार बटिया कहाँ हूँ।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0-136)

रंगपुर कुंज का फाटक खुला है। मैं उसे धीरे से धकेलकर भीतर आ जाता हूँ।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0 पृ0- 137)

"काफी है जयंती, मैं तुम्हारा यह उपकार जन्म भर नहीं भूलूँगा।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0-137)

मैं भी कितनी बुद्धू थी आनंद की तमाम लोगों को एक विशेषण देकर उनसे घृणा करती थी।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0- 137)

मैं सुख और खुशी में तुम्हें यहाँ आने का आग्रह नहीं कर रही, मैं जानती हूँ कि मैं तुम्हें दो टुकड़ों में बाँटना भी नहीं चाहती। पर कष्ट में जयंती को अपने पास पाओगे।"

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0-139)

पता नहीं मैं कब सो गया।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0-139)

मैं चलने को हुआ तो मैंने स्वयं जंयती के दोनों हाथ पकड़ लिये।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0- 139)

ये सभी "मैं" सर्वनाम के एक वचनान्त प्रयोग हैं। शिव प्रसाद सिंह ने "मैं" सर्वनाम के सर्वाधिक प्रयोग प्रस्तुतीकरण शैली के कारण "गली आगे मुड़ती है" उपन्यास में किये हैं क्योंकि इसकी शैली आत्मकथात्मक है। रामानन्द तिवारी इस उपन्यास का नायक अपनी कहानी स्वयं कहता है। अन्य पात्र जैसे किरण, जयंती और हरिशंकर भी पत्रों के माध्यम से अपनी कहानी मैं शैली में कहते हैं। कहीं-कहीं "मैं" सर्वनाम लुप्त है

किंतु उसका पता क्रिया से चल जाता है कि यहाँ "मैं" सर्वनाम होना चाहिए। शिव प्रसाद सिंह ने "मैं" सर्वनाम का प्रयोग विभिन्न कालों और विभिन्न वाक्य विन्यासों में किया है। ये वाक्य विन्यास "मैं" सर्वनाम की विभिन्न अर्थ छवियाँ हमारे सामने उकेर देते हैं। उत्तम पुरूष हम सर्वनाम के एक वचनान्त तथा बहुवचनान्त प्रयोग इस प्रकार हैं:-

"हम" कुछ नहीं जानते काका और न तो समझ पा रहे हैं कि तुम किसकीबावत कह रहे हो।

(कर्ता0, कर्तृ0, उत्तम0, बहु0, शैलूष-131)

"हम" हथगोले फेंककर तुम्हारा नामो निशान मिटा देगें।

(कर्ता0, कर्तृ0, उत्तम0, बहु0, शैलूष-137)

"हम" खुद अहमक हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, बहु0, शैलूष, पृ0-138)

या "हम" चलें राम का नाम लेकर।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, एक0, शैलूष, पृ0-164)

हम दोनों भी चलें पीछे-पीछे।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, बहु0, अलग0, पृ0-15)

हम तो तुम्हें किसी राह-भूले देवता का अवतार समझते थे।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, एक0, अलग0, पृ0-295)

"क्या वादा किया है तूने?"
"कहा कि हम जियेगें तो साथ मरेगें तो साथ।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, बहु0, अलग0, पृ0-30)

हम तुम्हारी हिम्मत देखकर दंग हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, एक0, अलग0, पृ0-30)

"हम तो रानी बस तुम्हारा मुख जोहती रहीं।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, एक0, स्त्री0, अलग0, पृ0-123

हम लोग तो सब दिन तुम्हारा ही नमक खाकर जिये।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, बहु0, अलग0, पृ0-123)

"हम" तुम्हारा रूपया भर देगें।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, बहु0, अलग0, पृ0-123)

तब तो "हम" पुन:पुन: धन्यवाद करते हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, बहु0, वैश्वानर, पृ0-272)

"हम" कौशिक सरस्वती पुत्र अश्वतर नाग को अपने परिवार से अलग नहीं मानते।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, बहु0, वैश्वानर, पृ0–272)

"हम" किसी की धरती या धन हड़पना नहीं जानते।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0–338)

"हम" प्रजा का पालन धर्म मानते हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0–335)

2.2.1.2 उत्तम पुरूष विकारी

अइया गयीं तो मैंने किसी तरह धीरज धर लिया।

(करण, कर्म0, उ0, एक0, अलग0, पृ0–123)

उनके रहते मुझे अइया का सोग उतना खलेगा नहीं।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, अलग0, पृ0–123)

मैंने तो चाची बहुत कुछ आशा बाँधी थी तुमसे।

(कर्म0, करण0, उ0, एक0, अलग0, पृ0–123)

तुमने तो मुझे एकदम से अलग निकालकर रख दिया है।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, अलग0, पृ0–123)

मुझसे तो आप नाराज नहीं हैं न?

(कर्तृ0, अपादान, एक0, उ0, अलग0, पृ0–128)

मुझे तो लगता है।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, अलग0, पृ0–128)

मुझे और क्या चाहिए?

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, उ0, अलग0, पृ0–129)

मुझे सावधान करना था जो कर चुका।

(कर्म0, एक0, उ0, वैश्वानर, पृ0–272)

तू मुझे बेटवा देगी?

(कर्तृ0, कर्म0, सम्प्रदान, उ0, एक0, नीलाचाँद, 66)

मैंने मार तो दिया पर जी उचट गया।

(कर्तृ0, करण0, एक0, उ0, मंजुशिमा, पृ0–14)

मुझे देखते ही वह चुप हो गया।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, मंजुशिमा, पृ0–14)

तब किसी ने मुझे कुछ नहीं दिया।

(कर्म0, करण0, उ0, एक0, गली0–337)

हमें हुक्म दिया गया है कि दामोदर शास्त्री की हत्या करने वाली सलमा को गिरफ्तार करो।

(कर्म वाच्य, कर्मकारक, पु0, उ0, बहु0, शैलूष–137)

हमें जबरदस्ती उजाड़कर मौत के मुँह में जोत दिया जाता है।

(कर्म वाच्य, कर्म0, बहु0, उ0, पु0, शैलूष–162)

अपने मेले में हमीं खुद चरम पंथी करते हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0, बहु0, उ0, पु0, अलग–अलग–15)

हमें यहां रहते हुये पन्द्रह साल न हुये होते तो भूमिहीनों के नाम पर इस धरती से कुछ ले पाना असम्भव हो जाता।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, बहु0, पु0, शैलूष–162)

हमने वादा किया है भैया।

(कर्मवाच्य, करण0, उ0, एक0, पु0 अलग0–30)

आ गया विदूषक हमें अपना लंहगा दिखाने।

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, उ0पु0, वैश्वानर, 277)

हमें हर स्थिति में जाना चाहिये आर्यपुत्र।

(कर्म0, पु0, बहु0, उ0, वैश्वानर–451)

हमसे कोई मतलब नहीं।

(कर्तृ0, कर्म0एक0, पु0, उ0, अलग–175)

हमसे लड़ना मत, नहीं तुम्हारे तीन पीढ़ी को तार दूँगी।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, स्त्री0, उ0, नीलाचांद–66)

2.2.1.3. मध्यम पुरूष – अविकारी

तुम कहतीं थीं कि मेले में मिठाई खरीदेंगे।

(कर्ता, कर्तृ0, म0, स्त्री0, एक0, अलग–2)

तू उससे दुःख ही पाती रही।

(कर्ता0, कर्तृ0, मध्यम0, एक0, स्त्री0, गली0–210)

आप नहीं होंगे।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, एक0, नीला चांद–214)

तुम लोगों को पच्चीस रायफल धारी जवानों ने घेर लिया है।

(कर्तृ0, कर्म0, म0, बहु0, पु0, शैलूष–137)

तुम स्सालो समझते हो कि इन चीज़ों को हम बेबेस की तरह सह लेंगे।

(कर्ता0, कर्तृ0, बहु0, म0पु0, शैलूष–163)

तुम लोगो को हिम्मत क्यों कर हुई मेरे फाटक को पीटने की?

(कर्तृ0, कर्म0, म0, बहु0, पु0, शलूष–163)

तुम क्या पुलिस हो?

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, एक0, पु0, अलग–16)

आप चलिये हम आ रहे हैं थोड़ा रूककर।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, पु0, अलग–16)

तू उसके सामने होती ही नहीं।

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, एक0, स्त्री0, अलग0–31)

अब अइय्या नहीं हैं तो तुम भी नहीं हो।

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, एक0, स्त्री0, अलग0–123)

मुझसे तो आप नाराज नहीं हैं न।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, बहु0, स्त्री0, अलग0–128)

प्रतर्दन, तुम उस साक्षी भाव चेतना की व्याख्या करो।

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, एक0, पु0, वैश्वानर0–268)

तुम सोच लो, अभी भी मौका है।

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, एक0, पु0, अलग–129)

आप भौतिक शरीर से अलग होकर साक्षी चेता निर्गुण को समझ सकते हो।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, पु0, वैश्वानर –268)

तू मेरे मन को ऐसे ही विस्तृत और व्यापक बनाता चल।

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, एक0, पु0, वैश्वानर–271)

आप और मै तो उस अज्ञात के क्रीड़ा पुत्तलक बन चुके हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, बहु0, पु0, वैश्वानर–276)

आप भी थोड़ा विश्राम कर लो।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, स्त्री0, वैश्वानर–364)

आप चिन्तित क्यों होती हो।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, स्त्री0, वैश्वानर–364)

तू मुझे वेटवा देगा ?

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, एक0, स्त्री0, नीला चांद–66)

तू हमीर को नहीं जानते वत्स।

(कर्त0, कर्ता0, म0, एक0, पु0, नीलाचांद –68)

तू समूची भ्रष्टता में आपादमग्न है, रज्जुक।

(कर्त0, कर्ता0, म0, एक0, पु0, नीलाचांद–375)

उस समय तू एक सुन्दरी युवती थी।

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, एक0, पु0, नीलाचांद–377)

तुम सब लोग नीचे उतरकर आठ–दस सीढ़ी पार करके बैठो।

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, बहु0, पु0, नीलाचांद–277)

ले, यह पूजा का थाल संभाल और तू मेरे दक्षिण पार्श्व में आजा।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, म0, स्त्री0, नीलाचांद–277)

पहले तुम लोग उस ग्रामीण बधू को छोड़ो।

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, बहु0, पु0, नीलाचांद–203)

कुछ तो शील–सौन्दर्य का परिचय दो तुम लोग।

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, बहु0, पु0, नीलाचांद–203)

आप जैसे कितने हैं इस ब्रह्मपुरी में।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, बहु0, पु0, नीलाचांद–203)

तू कभी बुद्धि से काम लेना तो जानेगा नहीं।

(कर्तृ0, कर्ता0, म0, एक0, पु0, नीलाचांद–203)

2.2.1.4. मध्यम पुरुष – विकारी

हारकर तुमसे एक चीज मॉंगने आया हूँ।

(कर्तृ0, करण0, एक0, अलग0–30)

तुमने आने में कई घंटे देर कर दी।

कर्तृ0, करण, एक0, म0, शैलूष, पृ0-45)

आपका कहना उचित है।

(कर्ता0, सम्बन्ध0, एक0, दिल्ली दूर है, 300)

वत्स तुमसे हम एकान्त में वार्ता करना चाहते हैं।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, म0, नीलाचाँद-218)

यदि तुम्हें इस समय कुछ असुविधा हो तो हम बाद में आ जायेगें।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, पु0, म0, नीलाचाँद-218)

आपके लिए क्या समय ढूँढना पड़ेगा क्या मुझे?

(कर्तृ0, अपादान, पु0, एक0, उ0, नीलाचाँद-218)

देखो वत्स, हमने तुमसे एकान्त में चलने का अनुरोध इसलिए किया कि हम पूर्णतः केवल तुम पर ही विश्वास कर सकते हैं।

(कर्तृ0, कर्म0/ अधि0, एक0, म0, पु0, नीलाचाँद-219)

तुम्हें न तो अधिकतम लाभांश दे पाएंगे।

(कर्तृ0, कर्म0/ सम्प्रदान, म0, एक0, पु0, नीलाचाँद-219)

तुमसे या तुम्हारे पिता श्री से मेरा परिचय था। इसलिए मैं तुम्हें अपने रक्त से संयुक्त मानकर कह रहा हूँ।

(कर्तृ0, करण0, म0, एक0, पु0, नीलाचाँद-219)

(कर्तृ0, कर्म0, मु0, एक0, पु0, नीलाचाँद- 219)

क्यों मूलराज तुम्हारे लिए काशी के नये नरेश इतने महत्वपूर्ण हो गये कि तुम हमें और स्थान पर जाने की आज्ञा देने लगे।

(कर्तृ0, सम्प्रदान, म0, पु0, एक0, नीलाचाँद- 219)

मूलराज का पूरा परिवार आपके लिए शूली पर चढ़ने को तैयार है।

(कर्तृ0, सम्प्रदान, म0, एक0, नीलाचाँद- 220)

चलिए आर्य, आपने पहचाना तो सही।

(कर्तृ0, करण0, उ0, पु0, एक0, नीलाचाँद-221)

क्या तुम्हें अपने पर विश्वास नहीं है रानूव

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, पु0, नीला0, पृ0-222)

आज आपको सब फाइलें मिल जायेंगी।

(कर्तृ०, कर्म०, उ०, एक०, पु०, गली०, पृ०–98)

अगर तुमने यह सोचा हो।

(कर्म०, करण०, म०, एक०, गली आगे०, पृ०–64)

तो तुम्हें जरूर झल्लाहट होगी।

(कर्तृ०, कर्म०, म०, एक०, गली आगे०, पृ०–64)

मुझे चिंता नहीं कि तुम्हें क्या पसंद है, क्या पसंद नहीं, शुरू हो जाओ।

(कर्तृ०, कर्म०, म०, एक०, गली०, पृ०–64)

जो तुम्हें पूछना हो।

(कर्तृ०, कर्म०, म०, एक०, गली०, पृष्ठ–64)

तुमने एक दिन "निशीथ" कविता की एक पंक्ति कही थी।

(कर्तृ०, कर्ता०, करण०, म०, एक०, गली०, पृ०–67

सचमुच में कैसी पागल हूँ जो तुमसे लगातार बात करती रहती हूँ।

(कर्तृ०, करण०, म०, एक०, पु०, गली०, पृ०–67)

पर तुमसे जुड़कर अचानक वर्तमान सार्थक हो गया।

(कर्तृ०, करण०, म०, एक०, पु०, गली०, पृ०–67)

तोहें तो झोपड़िया कौन बुरी थी।

(कर्तृ०, सम्प्रदान, म०, स्त्री०, नीलाचाँद– 66)

यों तो चन्देल सेना में तुमसे कुशल और अनुभवी अनेक लोग हैं।

(कर्तृ०, करण०, म०, पु०, नीलाचाँद–88)

जो मैं ढूँढ़ रहा था वह केवल तुममें मिलीं।

(कर्तृ०, अधिकरण, म०, एक०, पु०, नीलाचाँद–88)

तुझे अपना आर्शीवाद दूँ।

(कर्तृ०, कर्म०, म०, पु०, एक०, वैश्वानर– 275)

तुमको जग्गन वहाँ जाना नहीं चाहिए।

(कर्तृ०, कर्म०, म०, पु०, एक०, अलग०– 16)

तुने जिस प्रतर्दन अग्निहोत्र की उद्भावना की है।

(कर्तृ०, कर्ता, करण, म०, एक०, पु०, वैश्वानर–271)

तुम पर मेरे पिता दीर्घतमा का आर्शीवाद सहस्त्रों धाराओं में बरसता रहे।

(कर्तृ0, अधिकरण, म0, एक0, पु0, वैश्वानर–271)

हारकर तुमसे एक चीज माँगने आया हूँ।

(कर्तृ0, अपादान, म0, एक0, पु0, अलग0, –30)

आपको उनमें से प्रत्येक की अपने प्रति निष्ठा का विश्वास हो तो अवश्य जाइये।

(कर्तृ0, कर्म0, म0, एक0, पु0, वैश्वानर–277)

आप अगर यही दण्ड देगें तो नारी वध का पाप तो आप पर और आपके नरेश पर लगेगा।

(कर्तृ0, अधिकरण, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0–189)

में यह नहीं मानता योगिराज कि स्वप्न में आप द्वारा प्रदत्त कृपा और करुणा मात्र स्वप्न है।

(कर्तृ0, करण0, उ0, पु0, एक0, वैश्वानर, पृ0–190)

आपने प्रातराश लिया।

(कर्म0, करण0, उ0, पु0, एक0, वैश्वानर–191)

आपने अपने वचनों को शत प्रतिशत निभाया।

कर्म० करण०

(~~कर्तृ0~~, ~~कर्ता0~~, उ0, पु0, एक0, वैश्वानर, 192)

आपको इसमें किसी भी प्रकार की लज्जा का अनुभव नहीं करना चाहिए था।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, पु0, वैश्वानर, पृ0–193)

वत्स, ऋशि कक्षीवान् तुमसे विदा होना चाहते हैं।

(कर्तृ0, अपादान, एक0, म0, पु0, वैश्वानर–193)

तुझे घर पर बैठे–बैठे कैसे पता चला कि पश्चिमोत्तर भारत में क्या हो रहा है?

(कर्तृ0, कर्म0, म0, एक0, पु0, वैश्वानर, –194)

मैंने यही सूचना देने के लिए आपको बुलाने की प्रार्थना की थी।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, पु0, वैश्वानर, पृ0–195)

आज अगर तीन मास तक मेरा बध न करायें तो मैं आपके लिए बहुत सहायक सिद्ध हो सकता हूँ।

(कर्तृ0, अपादान, उ0, एक0, पु0, वैश्वानर, –195)

वे क्या तुम्हें अपना अमात्मा मानते हैं।

(कर्तृ0, कर्म0, म0, एक0, पु0, वैश्वानर– 195)

जीजी, में रात भर तुमसे प्रार्थना करती रही।

(कर्तृ0, अपादान, म0, एक0, पु0, नीलाचाँद–480)

तुझे उसका नाम तो ज्ञात ही कर लेना चाहिए था।

(कर्तृ0, कर्म0, म0, एक0, पु0, नीलाचाँद–482)

मैं तुम्हें संकट में डालकर चैन की वंशी नहीं बजा रहा हूँ।

(कर्तृ0, कर्म0, म0, पु0, एक0, नीलाचाँद–482)

यह साहस केवल तेरे में हैं।

(कर्तृ0, अधिकरण, म0, पु0, एक0, नीलाचाँद–483)

2.2.1.5. अन्य पुरुष अविकारी

वे दिनभर इधर से उधर घूमतीं रहीं।

(कर्ता0, कर्तृ0, अन्य0, बहु0, स्त्री0, अलग0, –255)

वह पतली–छरहरी, भरे मुख की युक्ती थी।

(कर्ता0, कर्तृ0, अन्य0, एक0, गली0, पृ0–45)

वह बहुत विस्तृत गुफा थी।

(कर्ता0, कर्तृ0, एक0, अन्य0, नीलाचाँद, पृ0–230)

अरे वह झूरी माझी बीमार है। कल अस्पताल सें दवा लाया था, देना भूल गया।

(कर्तृ0, एक0, अन्य0, पु0, गली आगे0, पृ0–127)

"जल्दी करें सरकार।" वह काँपता हुआ बोला।

(कर्ता0, कर्तृ0, अन्य0, पु0, गली आगे0, पृ0–127)

तब का ऊ ससुर हुवाँ जायके त्रियंक सास्तरी का निदान पढ़ि है।

(कर्तृ0, कर्ता0, अन्य0, पु0, एक0, गली आगे0, 126)

"पीते क्यों नही?" वह मुझे वैसे ही बैठे देख बोली।

(कर्तृ0, कर्ता0, अन्य0, स्त्री0, एक0, गली0, –111)

वह गर्दन झुकाकर वैसे ही वर्फी कुतरती रही।

(कर्तृ0, कर्ता0, अन्य0, स्त्री0, एक0, गली0, –111)

ऊ चलता है तो भूमि धसक जाती है।

(कर्तृ0, कर्ता0, अन्य0, पु0, एक0, नीलाचाँद–68)

तब ऊ अपनी कन्दरा में चला जाता है।

(कर्तृ0, कर्ता0, अन्य0, पु0, एक0, नीलाचाँद–68)

वे दोनों एक –दूसरे के मुख में मुँख मिलाकर जाने क्या–क्या फुस–फुसा रही थीं।

(कर्तृ0, कर्ता0, अन्य0, बहु0, अलग0, पृ0–124)

वे ललककर उससे जा मिलीं।

(कर्तृ0, कर्ता0, अन्य0, बहु0, अलग0– 122)

वे तुरन्त मुड़कर बाहरी निकसार की तरफ पीठ करके खड़े हो गये।

(कर्तृ0, कर्ता0, अन्य0, बहु0, पु0, अलग0, पृ0–126)

वे एकदम से बहुत गम्भीर हो गयी थीं।

(कर्तृ0, कर्ता0, अन्य0, बहु0, स्त्री0, अलग0, –126)

2.2.1.6. अन्य पुरूष– विकारी

उसने बड़े भाई के मुँह की तरफ देखा।

(कर्म0, अन्य0, एक0, अलग–अलग0, पृ0–30)

उन्होंनें तो चचिया से कोई बात ही नहीं की।

(कर्ता0, कर्म0, अन्य0, एक0, अलग0–122)

उसने जाने कितनी बार कै की।

(कर्ता0, कर्म0, अन्य0, अलग–अलग0, पृ0–31)

बड़ी मुश्किल से उनको होश आया था।

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य0, एक0, अलग0, –33)

जाने तभी उनको कहाँ से बचपन की सीखी पंक्तियाँ याद हो आयीं।

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य0, अलग–अलग, 125)

उन्हें एक बार भी शंका नही हुई।

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य0, अलग0, –32)

अपने ही हाथों उनको माहुर दे दिया मैंने।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अन्य0, अलग–अलग, 32)

उसे खिलाने के लिए जगाना जरूरी हुआ।

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य0, एक0, अलग0, –32)

सब उसको बाँट देगें।

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य0, एक0, अलग0, पृ0–36)

आँख की लाज–शरम को भले ही पानी की तरह बहाये, कनिया के सामने आते ही उसके भीतर का कालुष्य उसे पूरी तरह जकड़ लेता।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अन्य0, अलग0, पृ0–126)

आप उन्हें आर्शीवाद देगें।

(कर्तृ0 कर्म0, अन्य0, वैश्वानर, पृ0–273)

उसे आप नकारेंगे तो समस्त उत्तरापथ में आपकी निन्दा होगी।

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य0, एक0, वैश्वानर, पृ0–272)

उन्हीं को काशी का राज कहते हैं।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अन्य0, नीलाचाँद– 68)

उसी को फसरी की तरह गर्दन में डाल लेती है।

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य0, एक0, वैश्वानर, पृ0–335)

और उसे यह सब तब पता चलता है जब गाँठ का हीरा गँवा बैठता है।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अन्य0, वैश्वानर, पृ0–335)

उन्हें साचेकर ही इनकी गर्दन लज्जा से झुक जाती है।

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य0, अलग–अलग, पृ0–99)

उन्हें खुद बहु–बेटे के मामले पर ज्यादा सोचना कष्ट कारक लगता है।

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य0, एक0, अलग0, पृ0–150)

आग मिलती, पानी मिलता, वँशी बो काकी न रहीं तो सन्देश सुनकर भाभी उनसे भुगता देने का वचन भी देतीं।

(कर्तृ0, करण0, अन्य0, अलग–अलग वैतरणी–151)

पट नहिया भाभी उसे देखकर जरा झझकीं लजाईं।

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य, अलग–अलग वैतरणी–153)

समय का भारी बोझ एक क्षण के लिए उतरा हुआ जरूर लगता था, पर उसको ढोते रहने की एक अजीब मुर्दनी थकान चेहरे पर छाई हुई थी।

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य0, अलग–अलग वैतरणी–155)

तभी विपिन ने उन्हें संकोच में दरवाजे के बाहर खड़ा देखकर कहा–"चली आइये।"

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य0, एक0, अलग0, पृ0–156)

पटनहिया भाभी उससे पहले सीढियाँ उतरकर आँगन में आ गयीं थी।

(कर्तृ0, अपादान, अन्य0, एक0, अलग0, पृ0–156)

अच्छा, तो उनको भी साटन की चोली चाहिए थी का?

(कर्तृ0, कर्म0, अन्य, अलग–अलग वैतरणी–242)

तुम्हारे राज्य में जो पहाड़ियाँ हैं उनसे जाने कितनी बड़ी–बड़ी पर्वत श्रृंखलायें जैजाक मुक्ति में हैं।

(कर्तृ0, अपादा0 अन्य, नीलाचाँद, पृ0–118)

ठीक है, तुमने उनके लिए ठीक समय निर्धारित किया है। अगर विलंब हो जाय तो उन्हें कल तक यहीं रोकना।

(कर्तृ0, सम्प्रदा0 अन्य0, नीलाचाँद, पृ0–138)

आप उससे बहुत दूर रहने वाले परदेशी लगते हैं।

(कर्तृ0, अपादान, अन्य0, एक0, दिल्ली0, पृ0–267)

जितना तुम देख रहे हो उससे सहस्त्रगुना अधिक तुम्हारी जानकारी के बाहर है।

(कर्तृ0, अपादान, अन्य, एक0, दिल्ली0, 267–268

हमारे बीस –पच्चीस योद्धा उसमें भी काम आए।

(कर्तृ0, अधिकरण, अन्य0, दिल्ली0, पृ0–268

जिस पथरीली घाटी में गिरकर पारस का घोड़ा मर गया उसमें प्रचंड के साथ गिरने पर वे क्या अक्षत बाहर आ गये होंगें?

(कर्तृ0, अधिकरण, अन्य0, एकवचन,
नीलाचाँद पृ0– 175– 176

तुममें और उनमें इतना अन्तर अवश्य है, किन्तु तुम दिल्ली के निकट होने से तुरूष्कों को उनकी अपेक्षा अधिक सही ढंग से पहचानते हो।

(कर्तृ0, अधि0, अन्य0, बहु0, दिल्ली0, पृ0–267)

आपको उनमें से प्रत्येक की अपने प्रति निष्ठा का विश्वास हो तो अवश्य जाइये।

(कर्तृ0, अपा0, अन्य0, वैश्वानर, पृ0–277)

उनमें किसी तरह की कमी का क्या सवाल।

(कर्तृ0, अधि0, अन्य0, बहु0, अलग0, पृ0–149)

पर, उनमें क्रोध न था।

(कर्तृ0, अधि0, अन्य0, बहु0, अलग0, 30)

उत्तर कोने में जो बड़ा सा चौकोर घेरा था, उसमें एक बूढा सा बाघ रहता था।

(कर्तृ0, अधि0, एक0, अन्य0, अलग0, पृ0–34)

उसी में प्रतर्दन अग्निहोत्र की साधना का विधान है।

(कर्तृ0, अधि0, अन्य0, एक0, वैश्वानर, पृ0–262)

2.2.1.7.

अन्य पुरूष के अन्तर्गत उस इंगित व्यक्ति का उल्लेख किया जाता है जिसका उद्देश्य कर बात कही जाती है। सामान्य रूप से यह इंगित व्यक्ति दूरवर्ती होता है, पर कभी-कभी ऐसा भी देखने में आया है कि यह व्यक्ति सामने भी होता है। ऐसी स्थिति में जिस आदरार्थक "आप" सर्वनाम का प्रयोग होता है वह अन्य पुरूष के अन्तर्गत ही आता है।

अविकारी

आप तो रचनाकार हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, एक0, नीलाचाँद, पृ0-213)

आप ऐसा कहना अनुचित क्यों मानती हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, दिल्ली दूर है, पृ0-70)

आप सरीखे भीष्म पितामह लोग जहाँ निवास करते हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, नीलाचाँद, पृ0- 68)

आप बैठिये भौजी इस पर।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, अलग-अलग0, पृ0-122)

आप पहले आदमी हो जो करैता स्कूल में नियुक्ति का समाचार सुनकर भी मुस्करा रहे हो।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, अलग-अलग0, पृ0-128)

मैं आप जैसे निर्गुणिये सभाध्यक्ष को "तुम" नहीं कहूँगा।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, वैश्वानर, पृ0-268)

आप चिन्तित क्यों होती हो।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, वैश्वानर, पृ0- 364)

आप भौतिक शरीर से अलग होकर साक्षी चेता निर्गुण को समझ सकते हो।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, वैश्वानर, पृ0- 268)

विकारी

आपके लिए मेरे समस्त अपराधों को सर्वथा क्षमा करना उचित है।

(गौ0, कर्म0, कर्म0, नीलाचाँद, पृ0- 359)

आपने तो कहलाया नहीं छोटे सरकार।

(कर्म0, करण0, उ0, अलग-अलग0, पृ0-35)

मालिक काका ने आपके लिए खास तौर से कहलवाया है।

(कर्म0, सम्प्र0, उ0, अलग-अलग0, पृ0-35)

आपने वृहद आरण्यक और छान्दोग्य में जो आदर सत्कार पाया है, उसे अगर आप स्वयं ही मिटाना चाहते हैं तो कौन मना करेगा।

(कर्म0, करण0, उ0, वैश्वानर, पृ0- 262)

आपको प्रमत्त कहने वाले वज्र मूर्ख होगें।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, वैश्वानर, पृ0-365)

यह छोटी-सी सार्थकता आपके लिए भले ही उतनी महत्वपूर्ण न लगे, पर जामाता को तो एक अवबोधन मिल जाता है।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, वैश्वानर, पृ0- 276)

2.2.2.1

आपके स्थान पर "खुद" "स्वयं" शब्दों का प्रयोग भी डा0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में मिलता है।

अब तो नये जमाने के कपिल-कणाद खुद वर्तन मलते हैं।

(कर्ता0 विस्तार, कर्तृ0, अलग-अलग0, पृ0-355)

उसने अपने को संयत किया और तीव्र स्वरों में बोला।

(कर्तृ0, कर्म विस्तार, वैश्वानर, पृ0- 145)

नियति का चेहरा अगर ऐसा स्पष्ट दिखता होता अग्रज तो मैं स्वयं आने वाली परछाई को अपने सीने से सटा लेता।

(कर्तृ0, कर्ता विस्तार, वैश्वानर, पृ0-276)

समय पर हर व्यक्त अपनी रक्षा का दायित्व स्वयं जान लेता है।

(कर्तृ0, कर्म विस्तार, वैश्वानर, पृ0- 277)

आपने तो मेरे लिये केवल अपने को संकटों में ही तो डाला है।

(कर्तृ0, कर्म विस्तार, वैश्वानर, पृ0-277)

मैं उस दिन अपने से ही नाराज हुआ था।

(कर्तृ0, अपादान, गली आगे मुड़ती है, पृ0-13)

मैं उस रोज अपने को रोक न पाया था।

(कर्तृ0, कर्म विस्तार, गली आगे0, पृ0- 15)

स्वयं क्षत्रवृद्ध आर्य जन विरोधी हैं।

(कर्तृ0, कर्ता विस्तार, वैश्वानर, पृ0- 134)

युद्ध आर्यजन आपस में लड़ते हैं तो आदर्श का प्रश्न उठता है।

(कर्तृ0, अधि0, वैश्वानर, पृ0- 137)

पर तुझे पचास कशाघात का दण्ड मैं स्वयं दूंगा।

(कर्तृ0, कर्ता विस्तार, वैश्वानर, पृ0- 138)

वे स्वयं देखें तो लोगों को सुधरने में कितना अल्प समय लगता है।

(कर्तृ0, कर्ता वि0, वैश्वानर, पृ0- 140)

वह तो स्वयं ही अपने को राष्ट्र का विग्रह ओर देवों से श्रेष्ठ कहती है।

(कर्तृ0, कर्ता विस्तार, वैश्वानर, पृ0- 142)

मैंने क्षण भर में ही अपने को सँभाल लिया।

(कर्तृ0, कर्म विस्तार, गली आगे0, पृष्ठ- 38)

लड़कों के उकसाने पर भी खुद कभी कोई हरकत नहीं की।

(कर्म वाच्य, कर्म वि0, गली आगे0, पृष्ठ-46)

आपही पंचो तो दक्षिणा देने को कहकर मंदिर खुलवाये।

(कर्मवाच्य, कर्म वि0, गली आगे0, पृ0-51)

हम तो माता जी खुद इस रसाले को छूना पाप मानते हैं।

(कर्तृ0, कर्ता वि0, गली आगे0, पृष्ठ- 51)

इसके साथ मंत्र कौन- सा पढ़ा जाता है, तुम स्वयं पढ़ लो।

(कर्मवाच्य, पूरक विस्तार, गली आगे0, पृ0-89)

मुझे स्वयं पर गहरी ग्लानि होने लगी।

(कर्मवाच्य, अधि0, गली आगे0, पृ0-110)

मैंने खुद देखां है कि अंग्रेजी के नकली कागजात दिखाकर मामूली- मामूली सरकारी नौकर बेचारे भोले-भाले किसानों को लूटते हैं।

(कर्तृ0, कर्ता विस्तार, गली आगे0, पृ0- 117)

मेरी अजिया सास कहा करती थी कि पाठ करने वाला यदि खुद शुद्ध न रहे तो फल उलट जाता है।

(कर्तृ0, कर्म0, गली आगे0, पृ0- 120-121)

प्रधानमंत्री स्वयं विधेयक के पक्ष में नहीं हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0, गली आगे0, पृ0- 123)

कितने खुद-ब-खुद उतारकर रख देना चाहते थे, पर छात्रों का जुलूस भीड़ का रुख अख्तियार कर चुका था।

(कर्तृ0, कर्ता0, गली आगे0, पृ0- 124)

वह गगन भेदी नारों के आकर्षण से स्वयं स्थिर नहीं थी।

(कर्तृ0, कर्म0, गली आगे0, पृ0- 128)

मुझे खुद पर कुढ़न हो रही थी।

(कर्तृ0, अधि0, गली आगे0, पृ0- 332)

मैं अच्छा -बुरा, गलत- ठीक का निर्णय स्वयं करने की स्वतंत्रता चाहती थी।

(कर्तृ0, कर्म0, गली आगे0, पृ0- 344)

आनंद खुद रो रहा था, पर उसने मुझे उठाकर वक्ष से लगा लिया। अपने हाथों मेरे आँसू पोंछता रहा। खुद रोता रहा और मुझे हँसने को कहता रहा।

(कर्तृ0, कर्ता विस्तार, गली आगे0, पृ0- 346)

हमारे ऊपर तुम्हारा खुद का पावना था।

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, गली आगे0, पृ0- 351)

उसने खुद अपनी कृत्रिम निर्लज्जता के कारण ऐसी ग्लानि का अनुभव किया कि कुछ समय के लिए तुमसे बोलना बन्द कर दिया।

(कर्तृ0, कर्ता वि0, गली आगे0, पृ0 356-357)

हे! उन्मत्त भैरव, मैं स्वयं बनारस छोड़ रहा हूँ।

(कर्तृ0, कर्ता वि0, गली आगे0 पृ0- 357)

तुम हिन्दवी जानते हो उसी की सौगन्ध है तुम्हें कि हमारी बहनों, बहु-बेटियों की दुर्दशा भी स्वयं निकट से देखो।

(कर्तृ0, कर्म वि0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 121)

जाने लगे तो मैंने खुद ही कहा वाशा तुम तुंगमान साहब से मिल क्यों नहीं लेते।

(कर्तृ0, कर्ता वि0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 124)

सच मानिए, आपको चाहे विश्वास हो या न हो, उसकी निर्लज्जता पर मैं स्वयं क्रुद्ध था।

(कर्तृ0, कर्ता वि0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 135)

मैं स्वयं पर लज्जित हूँ।

(कर्तृ0, अधिकरण, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 135)

पर मैं स्वयं पर इस प्रकार कुपित हूँ कि एक उटनी से हारकर मुझे आत्म हत्या कर लेनी चाहिए।

(कर्त0, अधि0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ-135)

हम खुद ही इस सख्श को तयासी साहब के हाथों सौंपकर अपना फर्ज अदा करना चाहते हैं।

(कर्तृ0, कर्ता वि0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 136)

देखें स्वयं ही स्वयं से प्रश्न पूँछकर स्वयं क्या उत्तर देता है।

(कर्तृ0, करण0, वैश्वानर, पृष्ठ - 268)

दीप्ति इस दृश्य को देखकर स्वयं सकते में थी।

(कर्तृ0, कर्म वि0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 137)

पार्श्व से उसने जल पात्र लिया और खुद अपने हाथ से पानी लेकर आनन्द का मुँह पोंछ दिया।

(कर्तृ0, कर्ता0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 141)

शायद वह खुद आने से इंकार कर दे।

(कर्तृ0, कर्ता0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 145)

मरहूम सुलताने आजम खुद अपनी बेटी रजिया को अपना वारिस बनाकर गये थे।

(कर्तृ0, कर्ता वि0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 156)

संबल देने के लिए दीप्ति जब स्वयं आ गयी मेरे जीवन में तो मैं कुहरों- कुहेलिकाओं से कभी घिर जाने की परवाह नहीं करता।

(कर्तृ0, कर्ता0 दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 158)

कोई ऐसा कहेगा तो वह स्वयं निर्वंश हो जाएगा।

(कर्तृ0, कर्म0 वि0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ-176)

मैं सीधे नंगी तलवार लिये, खुद उसकी ड्योढी तक जाता और अपने बाजुओं की वेपनाह ताकतों का बयान करता।

(कर्तृ0, कर्ता वि0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 182)

2.2.3 निश्चय वाचक सर्वनाम

"यह", "वह" "सो" निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं। "वह" सर्वनाम का प्रयोग दूरस्थ व्यक्ति के लिए होता है और "यह" का प्रयोग निकटस्थ के लिए। वह के प्रयोग अन्य पुरूष सर्वनाम के अन्तर्गत विवेचित हो चुके हैं। यहाँ विवेच्य उपन्यासों में "यह" के प्रयोगों पर विचार किया जा रहा है।

2.2.3.1. अविकारी

वह एक स्नेह विह्वल देवी है।

(कर्ता0, कर्तृ0, एक0, नीलाचाँद, पृष्ठ-349)

यह बुढ़िया तो विचित्र प्राणी है।

(कर्ता0, कर्तृ0, एक0, उ0, शैलूष, पृष्ठ-8)

यह भ्रम मैंने जगाया है।

(कर्म0, कर्म0, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0-226)

यह तो उनसे पूछिये।

(कर्म0, कर्म0, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0-339)

ये अपने को समय आने पर सँभाल लेगें।

ई तुम्हारा पुश्तैनी आदमी है।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0-276)

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, अलग0, पृ0-175)

यह जीवन अग्नि और सोम के समन्वय से बनता है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0- 267)

अग्रज यह तो अश्रुत पूर्व प्रश्न है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0-268)

ई अपने को चक्करवर्ती समझता है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, नीलाचाँद, पृ0-68)

यह न मान कि मैं तुझे भयभीत कर रहा हूँ।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, वैश्वानर, पृ0- 275)

अब यह वही करैता नहीं है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, अलग-अलग0, पृ0 -35)

ये साले सबसे-सब एकसे -एक हरामी हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, बहु0, अलग-अलग0, पृ0-36)

ये उनके दोनों ही रूप विपिन को जाने कितना कितन आश्वस्त करते हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, बहु0 अलग-अलग0, पृ0-124)

यह सब तामसिक कार्य तालजंघ के नेता कार्तवीर्य ने ही किया होगा।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0- 110)

जब पद और अर्थ जुड़ेगें तब यह क्षुप् पदार्थ बनेगा।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, वैश्वानर, पृष्ठ-111)

यह तो अनुभूत सत्य है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0-266)

सत्य तो यह है पुत्र कि मानव शत प्रतिशत अज्ञान-कवच में बन्द रहता है।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0- 299)

ये रुपये एडवांस में देने के लिए मैंने कह हैं।

(कर्म0, कर्म0, उ0, बहु0, गली आगे0, पृ0–63)

यह आदमी चलता–फिरता इनसाइक्लोपीडिया है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, गली आगे0, पृ0–62)

यह बड़े दु:ख की बात है कि ऐसे प्रतिभावान् ब्राह्मण विद्यार्थी के साथ ऐसा अन्याय हुआ।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, गली आगे0, पृ0–62)

यह कौन –सी हिन्दी है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, गली आगे0, पृ0– 64)

मैं जानता हूँ कि ये परचे किसके पास थे और उन्होंने यह सब किसलिए किया है। मैं किसी का नाम लेना नहीं चाहता। न तो यह मेरी आदत है।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, बहु0, गली आगे0, पृ0– 60)

(कर्म0, कर्म0, उ0, एक0, गली आगे0, पृ0– 60)

(कर्ता0, उ0, एक0, गली आगे0, पृष्ठ– 60)

यह वह तिलस्मी खोह है जयंती, जहाँ काला सफेद और सफेद काला बनकर निकलता है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, गली आगे0, पृ0–60)

यह सामने बैठा लड़का पिछले वर्ष सर्वोच्च स्थान पाये था।

(कर्म0, कर्म0, उ0, एक0, गली आगे0, पृ0– 60)

यह सब क्यों ले आयी।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, गली आगे0 पृ0–111)

यह हिन्दी किसी की भी नहीं है, इसलिए सबकी है।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, गली0, पृ0–111)

क्यों आनन्द, दादा ने जो आन्दोलन के बारे में अपनी बातें कहीं, उसे देखते क्या यह सवाल नहीं उठता कि चीजों को जानते हुए भी बौद्धिक लोग पलायन कर रहे हैं।

(कर्तृ0, कर्म विस्तार, एक0, उ0, गली0, पृ0–164)

यह सवाल तुम्हें दादा से ही करना था।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, गली0, पृ0–164)

क्या यह सही नहीं है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, एक0, गली0, पृ0–164)

यह तुम अपने विभाग की बात कह रहे हो।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, गली आगे0, पृ0–165)

हाँ तो लड़को, मैं कह रहा था कि ये हैं तुम लोगों के नये मास्टर बाबू।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, बहु0, अलग0, पृ0-131)

यह सब सरो-सम्मान बस पर रखकर वह गाँव के पास तक लाने में सफल हो गया।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, अलग0, पृ0- 136)

यह भी वह लड़कों की मदद से कर सकता था।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, अलग0, पृ0- 136)

ये वाक्य महज वाक्य के अलावा कुछ लगे ही नहीं।

(कर्म0, कर्म0, उ0, बहु0, अलग0, पृ0- 136)

जब उन्हें सहसा लगा कि यह मास्टर भी उन्हीं की तरह एक मामूली आदमी है।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, अलग0, पृ0-137)

यह सब तो तुम्हें चढ़ते असाढ़ में कहना चाहिए था।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, अलग0, पृ0- 173)

2.2.3.2. विकारी

मै इससे तनिक भी चिंतित या विचलित नहीं हूँ।

(करण, कर्तृ0, एक0, वैश्वानर, पृ0- 195)

इसने इसी भाव से किया होगा।

कर्म0 करण0
(कर्ता0, कर्तृ0, एक0, गली आगे0, पृ0- 257)

वेशक तू इसे चाहे तो छुपाकर रखना।

(कर्म0, कर्तृ0, एक0, शैलूष, पृ0- 201)

जब तक इससे अच्छा कोई अन्य तन्त्र नहीं बनता।

अपादान, कर्म0
(~~करण, कर्तृ~~0, एक0, कुहरे में युद्ध, पृ0-218)

इन लोगों ने तो कल खुले आम सुरजू का साथ दिया था।

कर्म0, करण0
(~~कर्ता0, कर्तृ~~0, बहु0, अलग-अलग0, पृ0-51)

इसमें सन्देह नहीं है।

(कर्तृ0, अधि0, एक0, वैश्वानर, पृ0- 271)

इस बात को सोच-सोचकर वे सिसक-सिसक कर रोते रहे।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, वैश्वानर, पृ0-275)

इसे फुसफुसाकर मत कहना।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, वैश्वानर, पृष्ठ– 275)

इसमें रोने की बात नहीं है बेटी।

(कर्तृ0, अधि0, एक0, अलग–अलग0, पृ0– 67)

पर अचानक कुछ ऐसा होता है कि जो इसमें सबसे अमूल्य, सबसे बेशकीमती होता है, वह खो जाता है।

(कर्तृ0, अधि0, एक0, अलग–अलग0, पृ0–67)

कुछ भी तो नहीं है इसमें।

(कर्तृ0, अधि0, एक0, अलग–अलग0, पृ0–67)

मैं तो इसे ठीक नहीं मानता।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग–अलग0, पृष्ठ– 86)

मैं इन्हें पकड़कर हवालात में बन्द कर दूँगा।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग–अलग, पृष्ठ–261)

मेरे दरवाजे पर तो आप इनको गिरफ्तार नहीं ही कर सकते थानेदार साहब।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग–अलग0, पृ0–261)

इससे अधिक शायद मैं नहीं कह पाऊँगा।

(कर्तृ0, अपादान ~~करण~~0, एक0, अलग–अलग0, पृ0–318)

इससे तो राजन्, अपने ऊपर कोई संकट नहीं है।

(कर्तृ0, करण0, एक0, कुहरे में युद्ध, पृ0– 94)

इन्हीं भाड़े के टट्टुओं को जरीदा सवार कहा जाता है।

(कर्मवाच्य, कर्म0, बहु0, कुहरे में युद्ध, पृ0–94)

मैं इससे सहमत नहीं हूँ, राजन।

(कर्तृ0, करण0, एक0, कुहरे में युद्ध, पृ0–94)

इसमें मेरे पराक्रम को चुनौती दी गयी है, पितामह।

(कर्मवाच्य, अधि0, एक0, कुहरे में0, पृ0–168)

कहीं–कहीं इनके उपन्यासों में "सो" का प्रयोग भी मिलता है।

लाओ भाई, रामानन्द का प्रसाद है सो उसकी प्रतिष्ठा तो रखनी ही होगी।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, गली0, पृ0 182)

.... सो तू दुलारी है दुर्ललिते।

(कर्ता0, कर्म0, एक0, नीलाचाँद, पृष्ठ–245)

सो उस दिन भी जग्गन मिसिर कस्बे के हाईस्कूल से लौट रहे थे।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग–अलग0, पृ0– 209)

2.2.4.1. सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

अविकारी

बस से? नहीं राम जी। अपनी बस, साइकिल, कार, टैक्सी, जो कहो, ये दो पैर हैं। अच्छा राम जी, फिर मुलाकात होगी।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, गली आगे0, पृ0– 66)

मैं रास्ते भर इस अद्भुत् साधु के बारे में सोचता आया। ठग होगा? मन कहता है, जो प्राय: साधु मात्र के बारे में इस प्रकार की धारणा बनाने का अभ्यस्त हो चुका है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, गली आगे0, पृ0– 66)

परंतु मन के भी भीतर, परत–दर–परत नीचे कोई और भाग है। मन का ही जो इसकी ओर आकृष्ट होता है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, गली आगे0, पृ0– 66)

इसकी आँखों में देखो। कितनी व्यथा है: कितनी अद्भुत निर्मम सविच्छा है जो विष पीने के बाद जीने वाले की आँखों में ही उभरती है।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, गली आगे0, पृष्ठ– 66)

तब आरती के चेहरे पर शरारत के जो रंग उभरते, मैं सिर्फ उसकी कल्पना से ही चौंक उठता।

(कर्तृ0, कर्ता0, उ0, गली आगे0, पृ0– 66)

मैं कर क्या रहा हूँ। मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगा जो मेरे और किरण के लिए किसी भी प्रकार से लज्जा का विषय बने।

(कर्तृ0, कर्म विस्तार, उ0, गली0, पृ0– 66)

तुम भंड हो नंदन पांडे जो अपने को व्रह्मपुरी में ब्राह्मणों से प्रतिस्पर्द्धा के योग्य समझते हो।

(कर्ता0, कर्म0, एक0, वैश्वानर, पृष्ठ– 230)

आने वाला जो असाध्य रोगी भगवान की चिकित्सा से आज जीवित है।

(कर्ता0, कर्तृ0, एक0, वैश्वानर, पृ0– 230)

जो जिन्दगी में हमेशा समतल जीवन चाहते रहे।

(कर्ता0, कर्तृ0, बहु0, शैलूष, पृष्ठ– 73)

2.2.4.2. विकारी

आज ऐसा दिन है, जिसे नट कभी नहीं भूल पायेगें।

(कर्म0, कर्तृ0, एक0, शैलूष, पृष्ठ– 126)

जिसमें से ढ़ेर सारी गुलाब की पंखुरियाँ बिखरती थी।

(अधि0, कर्तृ0, अपादान, बहु0, गली0, पृ0–137)

जिनको ठीक से पूरा न कर लेने पर स्कूल में उनका मन उचाट– उचाट होता रहता है।

(गौण कर्म, कर्तृ0, बहु0, अलग0, पृ0–203)

जिन्हें न करने के लिए मेरी आत्मा ने बार–बार रोका।

(गौण कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृ0–121)

जिसमें एक बहती नदी ठिठककर वर्फ में बदल गयी थी।

(अधि0, कर्तृ0, एक0, दिल्ली दूर है, पृ0–29)

जिन्हें वे कलेजे का टुकड़ा समझकर सीने से लगाये थीं, आज वे हमारे लिए एकदम बेगाने हो गये हैं।

(कर्तृ0, ~~कर्ता0~~ कर्म0, बहु0, अलग0, पृ0– 126)

चाहे मेला लगे, चाहे चूल्हे भाड़ में जाय। जिसको सँभालना हो सँभाले। ई तो पुलिस का काम है।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग0, पृष्ठ – 16)

गंदी कमीजें, फटे–पुराने जाँघिये पहने, जिनसे बड़ी मुश्किल से देह ढ़क पाती, अपास–में धींगा–मुस्ती, लड़ाई–झगड़ा करते छोकरे नगाड़े की आवाज के साथ इस तरह बहे चले जाते गोया कहीं खुशी की मिठाइयाँ बँटने वाली हैं।

(कर्तृ0, करण0, बहु0, अलग–अलग0, पृ0–82)

तुम क्या नहीं सोचती कि यह एक विचित्र रक्त की पुराकथा है जो अपनी विकास–गति को कभी रोक नहीं पाती।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली0, पृ0– 67)

सचमुच मैं कैसी पागल हूँ जो तुमसे लगातार बात करती रहती हूँ।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली0, पृष्ठ– 67)

शायद ही कोई गुजराती लड़की हो जो गरबा से थिरकन उठती हो।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृष्ठ–67)

वह गोल मुँह की छोटे कद की लड़की थी, जो प्रायः अपने अस्तित्व के बारे में सावधान थी।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृष्ठ–206)

वे तुम्हें किसी ऐसे हिन्दु गुलाम को खोजने में मदद कर सकते हैं जो अभी कल बदायूँ से पकड़कर लगाए गए हैं।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, दिल्ली दूर है, पृ0-49)

हुजूर दुनिया में एक-से-एक नायाब चीजें हैं जो बनीं किसी और काम के लिए, मगर इस्तेमाल किसी दीगर काम के लिए होती हैं।

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, दिल्ली दूर है, पृ0-50)

जो शाहजादियाँ पेशा तवायफों का करें, उन्हें क्या कहेंगे हुजूर?

(कर्तृ0, कर्ता0, बहु0, दिल्ली दूर है, पृ0-50)

आपने अपनी भाभी जान की खूबसूरती और हुनर का जो बयान किया, मुझे लगा कि यह किसी औरत का नहीं हिन्दुस्तान की जमुना नदी की कहानी है।

कर्तृ0, कर्म0, एक0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ-50)

यही तो बात है हुजूर, जो हम विदेशी लोग नहीं जानते।

(कर्तृ0, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 51)

एक हैं काफिर जो अपने मरे सिपाहियों की लाशों को चुन-चुन कर उठा ले जाते हैं।

(कर्तृ0, कर्ता0, बहु0, कुहरे में युद्ध, पृ0-234)

बहुतेरे जरीदा हैं, बाकी मुजाहिद भी हैं जो कभी काफिर थे।

(कर्तृ0, कर्ता0, बहु0, कुहरे में युद्ध, पृ0-235)

तो क्या मेरे मन में पहले से कुछ ऐसा था जिसे भाभी जानतीं थीं।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग-अलग0, पृ0-223)

2.2.5 अनिश्चय वाचक सर्वनाम

कामता प्रसाद गुरू के अनुसार जिस सर्वनाम से किसी विशेष वस्तु का बोध नहीं होता, उसे अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं। अनिश्चय वाचक सर्वनाम दो हैं- कोई, और, कुछ। "कोई" और "कुछ" में साधारण अंतर यह है कि "कोई" पुरूष के लिये और "कुछ" पदार्थ या धर्म के लिये आता है।

"कोई" और "कुछ" के विविध रूप हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में प्राप्त होते हैं। "कोई" सर्वनाम के विशेष प्रयोग इसके साथ "सब", "हर", "एक", "और" तथा "दूसरा" शब्द जोड़ कर किये जाते हैं। निषेधार्थक वाक्यों में "कोई" का अर्थ "सब" होता है।

2.2.5.1 अविकारी

वह किल्ला कोई तोड़ नहीं सकता।

(कर्ता0, कर्तृ0, एक0, नीलाचाँद, पृ0– 69)

इस पर विश्वास कौन करेगा?

(कर्ता0, कर्ता0, एक0, अलग–अलग0, पृ0–279)

बेतवा को संगीनों की छाया में जीने के लिए कोई मजबूर नहीं कर सकता था।

(कर्ता0, कर्तृ0, एक0, कुहरे में युद्ध, पृ0–187)

शायद अभी कुछ और घटने वाला है, यह सोचकर मेरे भीतर का अन्तर्यामी बोल रहा है– "यह आराम है"

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, नीलाचाँद, पृ0–12)

आप लोगों में से कोई भी वहाँ जाता तो इस घटनीय की सूचना लेकर ही लौटता।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, नीलाचाँद, पृ0– 15)

हरिमंगल कुछ कहता कि लाजो कमरे से बाहर चली गयी।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0– 152)

वहाँ कोई नहीं था।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृ0– 152)

लाजो ने सब कुछ ऐसे बेलाग ढंग से कहा कि हरी ने छड़ चौकी के पास फेंक दी।

(कर्तृ0, कर्म0, बहु0, गली आगे0, पृ0– 153)

जवन कुछ होई पहले लाजो के होई, तब तोहार कुछ होय सकत है।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृ0–153)

कोई आया नहीं था।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृ0– 153)

खिड़की के पास कोई गावटी में मुँह लपेटे खड़ा था।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृ0– 153)

कोई जरूर रहा।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृ0–154)

लालटेन की रोशनी पड़ते ही छत से कोई कूदा।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृ0– 154)

लाजो कुछ नहीं बोली।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0 गली आगे0, पृ0– 154)

नींद की मदहोश चादर में सब कुछ डूबा था।

(कर्तृ0, कर्ता0, बहु0, गली आगे0, पृ0– 155)

जब इतना सोचते हो तो शायद इसी के भीतर से कुछ करने की हिम्मत जगजाये।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0– 162)

मैं कुछ न बोला।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0– 162)

कोई कवि बनने चला तो बुभुक्षित पीढ़ी के नाम पर सेक्स का शिकार हुआ।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृ0– 163)

कोई अपने को छिपाए कमरे में पड़ा रहता है, और कोई गुडकट्टा चेहरे पर मुखौटा लगाए अपने को सबसे नया और ताजा बौद्धिक घोषित करने के लिए छात्रों के साथ चाय–पानी, नाश्ता–खाना करके अपने को "अल्ट्रामॉडर्न" दिखाने का रियाज कर रहा हे।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृ0– 165)

वे खुद एक–दूसरे को कुछ नहीं समझते।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0– 165)

पर उसके जगने का कुछ–कुछ आभास जरूर समझ में आने लगा है।

(कर्तृ0, कर्म वि0, एक0, गली आगे0, पृ0–166)

"क्या हुआ?"

"पता नहीं क्या हुआ? क्या गड़ गया– जैसा लगा है।

(कर्म0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0– 166)

लाजो ने कुछ ऐसा किया कि आपका नुकसान हुआ हो?

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0–168)

आज हरिमंगल के दिल में जो कुछ है, वह बिल्कुल मासूम फूल की तरह अपनी जामुनी खुशबू बिखेर रहा है।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0– 168)

आखिर बिना किसी फायदे के कोई आग में उँगली क्यों डालेगा?

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृ0–225)

ऐसे लोग बिना पैसे के कुछ क्यों करने लगे।

(कर्तृ0, कर्म0, गली आगे0, पृ0– 225)

वहाँ कोई नहीं है।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृ0– 227)

2.2.5.2. विकारी

वह अकेले दुनिया की किसी भी फौज को शिकस्त दे सकता है।

(कर्म0, कर्तृ0, एक0, दिल्ली दूर है, पृ0–125)

देखने वालों से यह बात छिपी न रही कि किसी ने जहर दे दिया है।

(कर्म0, करण0, एक0, अलग–अलग0, पृ0– 31)

किसी को भेजकर पता लगाओ।

(कर्म0, कर्ता0, कुहरे में युद्ध, पृष्ठ– 125)

उनके न रहने पर हुक्का धूल में सना किसी कोने में रखा था।

(कर्तृ0, अधि0, एक0, अलग–अलग, पृ0–123)

उसे आशा थी कि पुष्पा यह बात सुनकर दरवाजे पर दौड़ी आयेगी और बार–बार हॉथ जोड़कर बिनती करेगी कि यह बात किसी से मत कहना।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग–अलग0, पृ0–108)

हरखू सरदार की बातों में किसी को रस न हो, ऐसी बात नहीं।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग–अलग0, पृ0–113)

किसी के तन पर पूरा बस्तर नहीं। किसी को भरपेट खाने को अन्न नहीं।

(सम्बन्ध0, कर्तृ0, एक0, अलग0, पृ0– 113)

किसी से कहीं कुछ कहेंगे नहीं।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग–अलग, पृ0–299)

जिसके सामने बेपर्दा होने में भी किसी को परेशानी नहीं होती।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग–अलग0, पृ0–300)

किसका–किसका मुँह बन्द कर सकेगा वह।

(कर्तृ0, सम्बन्ध वाचक, एक0, अलग0, 302)

मैं किसी की कृपा नहीं चाहती थी।

(कर्तृ, सम्बन्ध0, एक0, अलग0, पृ0–462)

न तो वैसा कहने का उद्देश्य गलत है, न तो वह किसी के प्रति कोई अनुचित काम ही कर रहा है।

(कर्तृ0, सम्बन्ध0, एक0, अलग0, पृ0–475)

दोनों में से कोई किसी से नहीं बोला।

(कर्ता0, कर्म0, एक0, अलग0, पृ0– 48)

यह तो नहीं समझती कि किससे क्या कह रही है।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग0, पृ0– 482)

2.2.5.3. अविकारी

आनन्द वाशेक के बिना कोई भी भारतीय नरेश एक भी युद्ध जीत नहीं सकता।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, एक0, दिल्ली0, पृ0–440)

पर ऐसे समय में तुम्हारे सिवा मुझे कोई दूसरा दिखाई भी तो नहीं पड़ता।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, एक0, अलग0, पृ0–74)

रात को कोई एक ऐसा भी है जो उसकी खोज–खबर लेगा।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, अलग0, पृ0–461)

अलगाने वाले सर्वनाम "कोई और", "कोई दूसरा", के बहुवचनान्त रूप विरल हैं। इनकी आवृत्ति से ही "बहुत्व" का बोध होता है।

2.2.5.4. अविकारी

दृशद तो सर्वदा धन्वन्तरि परिवार की गरिमा को सुरक्षित रखने के लिए सब कुछ करती रही।

(कर्तृ0, कर्म0, उ0, एक0, वैश्वानर, पृ0–295)

2.2.6. प्रश्न वाचक सर्वनाम

2.2.6.1. अविकारी

कौन जा रहा है?

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, एक0, अलग0, पृ0–41)

वे कौन है?

(कर्ता0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृ0– 305)

कौन डरता है?श्यामलक: मैं देविका से नहीं उसकी सीसी से डरता हूँ।

(कर्ता0, कर्तृ0, एक0, दिल्ली दूर है, –53)

उसने दो –चार बातें कह भी दीं देविका को, तो कौन परायी है वह?

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, नीलाचाँद, पृ0–53)

कौन जाने कल क्या हो।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, नीलाचाँद, पृ0– 54)

तू कौन है? राजवंश का शुभ चिंतक।

(कर्ता0, कर्तृ0, एक0, नीलाचाँद, पृ0–57)

तुम हो कौन बुड्ढे?

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, नीलाचाँद, पृ0– 59)

पर कौन मौका दे।

(कर्तृ, कर्ता0, एक0, नीलाचाँद, पृ0– 62)

कौन क्या कह रहा है किसे क्या तकलीफ है, किसे क्या कहना है, यहाँ कोई कुछ नहीं जानता।

(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, नीलाचाँद, पृ0– 62)

2.2.6.2. विकारी

तुमसे किसने कहा कि कापियाँ मैने देखी हैं?

करण0
(कर्ता0, कर्तृ0, एक0, गली0, पृ0– 31)

आपका घेराव था आज?
तुमसे किसने कहा?

कर्म0, करण0,
(कर्तृ0, कर्ता0, एक0, गली आगे0, पृ0– 35)

लड़कों के उकसाने पर भी खुद कभी कोई हरकत नहीं की और न कभी भरसक किसी को करने दी।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0– 46)

आप किसी से भी पूँछ लीजिए।

(कर्तृ0, करण0, एक0, गली आगे0, पृ0– 54)

मैं तीन महीने का किराया किसको दूँ।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0–55)

मेरे घर में तेरे जैसे चोरों को किसने दावत दी?

कर्म0, करण0,
(कर्ता0, कर्म0, एक0, दिल्ली दूर है, 269)

"का हो वंशी भाई"! किसको झाड़े जा रहे हो?

(कर्म0, कर्तृ0, एक0, अलग0, पृ0– 82)

"तुमसे किसने कही झूरी के घर खाने की बात?"

कर्म0, करण0
(कर्ता0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0–123)

सामान्य रूप से "क्या" का प्रयोग विशेषण और क्रिया विशेषण के रूप में किया जाता है, सर्वनाम के रूप में कम। डॉ0 शिव प्रसाद सिंह ने "क्या" का एक–दो स्थान पर सर्वनाम के रूप में प्रयोग किया है।

2.2.6.3. क्या

क्या बात है?

(पूरक कर्तृ0, अलग–अलग वैतरणी, पृ0–74)

अब क्या करोगे तुम?

(कर्म0, कर्तृ0, गली आगे0, पृ0– 60)

हाँ, अब ठीक है क्या पढ़ायेंगे आज?

(कर्ता0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0– 64)

मैं कर क्या रहा हूँ।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0–66)

"क्या था?" मैंने घबड़ाकर पूँछा।

"कुछ नहीं।" किरण बोली।

(कर्तृ0, पूरक0, एक0, गली आगे0, पृ0– 67)

"नंद्दू! नंद्दू!"

"क्या है अम्मा"

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0–68)

"तो चलो, मैं भी देखूँगी।"

"तू क्या देखेगी, वहाँ क्या जल परी नाच रही हो।"

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, गली आगे0, पृ0– 69)

यह क्या है?

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, दिल्ली दूर है– 155)

अब क्या बचा है जिसको बचाने के लिए कवायद सीखी जाए।

(कर्तृ0, कर्ता0, दिल्ली दूर है, पृ0–307)

काहे, क्या किया था उसने?

करण0
(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग–अलग0, –97)

बड़ा मजा आया, इसमें क्या कहना।

(कर्तृ0, कर्म0, एक0, अलग–अलग0, पृ0–99)

2.2.7. संयोग मूलक सर्वनाम

जाने किसकी–किसकी शामत मलामत होगी।

(कर्तृ0, कर्म0, अलग–अलग0, पृ0– 60)

यह किसी–न–किसी ने बताया ही होगा।

करण0
(~~कर्ता0~~, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृ0–285)

यहाँ तो सब कुछ बचाना ही विकट कर्म बन गया है।

(कर्ता0, कर्तृ0, कुहरे में युद्ध, पृ0– 79)

अंधकार की मोटी–से–मोटी परतें भी अपने–आप कट जाती हैं।

(पूरक, कर्तृ0, कर्म0, अलग–अलग0,)

आज वे अपने को छिपा नही पायीं।

(कर्म0, भाव0, नीला चाँद, पृष्ठ--22)

वाशेक ने आज पहली बार अपने को छिपाने के लिए अपनी हुलिया बदली।

(कर्ता0, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृ0--214)

तो अपने--आप लगा।

(कर्म0, भाव0, दिल्ली दूर है, पृ0-- 217)

एक खास ऊँचाई पर जाकर अपने--आप खुल जाता था।

(कर्ता0, कर्तृ0, गली आगे0, पृष्ठ--204)

और मन कहता है कि यह सब किसी--न--किसी को बता देना अच्छा होगा।

(कर्ता0, कर्म0, गली आगे0, पृ0-- 320)

वरना जो कुछ करना होता, वह मैं अब तक कर चुका होता।

(कर्तृ0, कर्म0, गली आगे0, पृ0-- 325)

2.3. कारक वाक्य विन्यास

कारकं स्यात् क्रियामूलं [1]

क्रियान्वयित्वं कारकत्वं [2]

संस्कृत व्याकरण-कर्ताओं के मत से कारक अनिवार्य रूप से क्रिया से अन्वित रहता है। इस प्रकार क्रिया कारक से अनिवार्य रूपेण संबद्ध मानी गई है। पर, सच यह है कि क्रिया का नाभ पदों से सम्बन्ध ही कारक कहलाता है। जिस विकारक तत्व से यह अन्वय सूचित होता है, उसे विभक्ति या परसर्ग कहा जाता है। कारक-- विषयक यह मान्यता हिन्दी वैयाकरणों को भी स्वीकार्य है।

दुनीचन्द अपने "हिन्दी व्याकरण" (पृ0 63) में लिखते हैं: वाक्य में नाम पद का क्रिया के साथ जो सम्बन्ध हो उसे कारक कहते हैं।

डॉ0 शिवनाथ के अनुसार "वाक्य में प्रयुक्त इस नाम (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) को कारक कहते हैं जिनका अन्वय या सम्बन्ध साक्षात्कार या परम्परा से आख्यात क्रिया वा कृदन्त क्रिया के साथ होता है।[3]

आचार्य किशोरी दास वाजपेयी के अनुसार, क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं।[4]

---

1. सम्पादित: संस्कृत साहित्य परिषद पुस्तपाल-- श्री जानकी नाथ साहित्य शास्त्रिणा--"कारकोल्लास", 1 दिसम्बर, 1924, पृष्ठ 24
2. पं0 किशोरी दास वाजपेयी, "हिन्दी शब्दानुशासन"-- 136
3. डॉ0 शिवनाथ, हिन्दी कारकों का विकास, पृष्ठ 14
4. हिन्दी शब्दानुशासन, पृष्ठ 136

कुछ वैयाकरण वाक्य में किन्हीं भी दो पदों के सम्बन्ध को "कारक" मानते हैं, किनतु यह मत ग्राह्च नहीं है। क्योंकि दो पदों का सम्बन्ध विशेषण– विशेष्य भी हो सकता है और क्रिया– विशेषण– क्रिया का भी, जैसे–

इसका कारण याद आ गया है।

प्रस्तुत वाक्य में इसका और कारण पदों में विशेषण–विशेष्य सम्बन्ध है।

फिर एकाएक सिकुड़कर अध बैठी रह गई।

उपर्युक्त वाक्य में अधबैठी और रह गई पदों में क्रिया–विशेषण–क्रिया का सम्बन्ध है।

इसके अतिरिक्त क्रिया में काल, अर्थ, वाच्य आदि सभी की मान्यता रहने के कारण, वाक्य में किन्हीं दो पदों का सम्बन्ध कहना कारक के प्रसंग में कोई अर्थ नहीं रखता। एच.आर.स्टोकी तथा ओटो जेस्पर्सन ने अपने ग्रन्थों क्रमशः "द अण्डरस्टैन्डिंग ऑव सिन्टेक्स[1] (पृ0 66) और "ए माडर्न इंगिलश ग्रामर, पार्ट–7 सिन्टेक्स [2] (पृ0 219) में इन्हीं विचारों को व्यक्त किया है। कारक अनिवार्य रूपेण क्रिया से अन्वित रहता है।

संस्कृत व्याकरण की तरह हिन्दी में भी छः कारक ही माने गये हैं। कामता प्रसाद गुरू ने इनके अतिरिक्त सम्बन्ध और सम्बोधन दो कारक और माने हैं। किन्तु, ये दोनों कारक कारक की अपेक्षाएं पूरी न करने के कारण कारकों में परिगणित नहीं होते हैं। पं0 कामता प्रसाद गुरु ने सम्बन्ध की परिभाषा देते हुए लिखा है:

संज्ञा के जिस रूप से उसकी वाच्य वस्तु का सम्बन्ध किसी दूसरी वस्तु के साथ सूचित होता है, उस रूप को सम्बन्ध कारक कहते हैं, जैसे राजा का महल, लड़के की पुस्तक, पत्थर के टुकड़े इत्यादि।[3]

1. Stokoe, H.R. - "The understanding of syntax, Page 66. 'The case forms given in the declension of nouns or pronouns are different forms of the noun or pronoun which are used to show the relation between the person (s) or thing (s), i.e. the object of thought signified by the noun or pronoun and that which is signified by some other word or by some word-group in the sentence."
2. Jesperson Otto - A modern english grammer, part 7 syntax, page 219. 'Case is defined in NEd as, "One of the varied forms of a substantive, adjective or pronoun, which express the various relations in which it may stand to some other word in the sentence. "I know no better definition than this.

– डॉ. सुधा कालरा द्वारा 'हिन्दी वाक्य विन्यास' में पृष्ठ 96 पर उद्धृत

3. पं0 कामता प्रसाद गुरू, "हिन्दी व्याकरण", पृ0 220

किन्तु, इस परिभाषा में दिये गये उदाहरणों को यदि पूरे वाक्य का रूप प्रदान कर दिया जाय तो स्पष्ट हो जाएगा कि ये कारक नहीं हैं, वरन विशेषण हैं, क्योंकि ये क्रिया से अन्वित नहीं हैं। जैसे –

राजा का महल सुन्दर है।

लड़के की पुस्तक खो गई है।

पत्थर के टुकड़े कहाँ से गिर रह हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में तथा कथित सम्बन्ध कारक– राजा का लड़के की ओर पत्थर के– क्रमशः सुन्दर है, खो गई है, गिर रहे हैं क्रियाओं से सम्बद्ध नहीं हैं। ये तीनों ही महल पुस्तक टुकड़े संज्ञाओं के विशेषणों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। अतः का, की, के आदि विशेषक हैं सम्बन्धकारक नहीं।

सम्बोधन कारक के सम्बन्ध में पं० कामता प्रसाद गुरु का कहना है कि:–

संज्ञा में जिस रूप से किसी को चेताना व पुकारना सुचित होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं, जैसे हे नाथ? मेरे अपराधों को क्षमा करना।[1]

इस वाक्य से स्पष्ट है कि "हे नाथ" अविकारी कर्ता के समान प्रयुक्त हुआ है और इसी वर्ग का है। अतः सम्बोधन भी कोई कारक नहीं है। इसे अविकारी कर्ता में ही समाहित किया जा सकता है। इस प्रकार हिन्दी में सामान्यतः छः कारकों को स्वीकार किया जाता है– कर्ता०, कर्म०, करण०, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण। व्याकरण वेत्ताओं ने सम्प्रदान, कारक को अलग से कारक न मानकर कर्म कारक में ही समाविष्ट कर लिया है। कर्म कारक के दो भेद होते हैं: मुख्य कर्म तथा गौण कर्म– यह गौण कर्म ही व्याकरण-सम्मत सम्प्रदान कारक हैं। इस प्रकार कारकों की संख्या पाँच ही रह जाती है। कर्ता, कर्म, करण, अपादान और अधिकरण। इन कारकों में से कर्ता और कर्म विकारी तथा अविकारी दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं, अन्य तीनों केवल विकारी रूप में। अविकारी कारक परसर्गरहित और विभक्ति रहित रहते हैं, विकारी कारक-प्रयोगों में परसर्ग अथवा विभक्ति का योग रहता है। कुछ स्थलों पर विकारी कारकों के परसर्ग या विभक्तियाँ भी लुप्त हो जाती हैं।

संस्कृत में कारकीय सम्बन्धों की अभिव्यक्ति के लिए केवल विभक्तियों का प्रयोग किया जाता है किन्तु हिन्दी में परसर्ग और विभक्ति दोनों का प्रयोग होता है। परसर्ग और विभक्ति में अन्तर है। परसर्ग स्वतंत्र शब्दों से विकसित होकर कारक निर्माण हेतु अलग से जुड़ता है। इसके योग से शब्द में विकार नहीं होता। कारक निर्माण के हेतु जो विकार मूल शब्द में हो जाता है उसे विभक्ति कहते हैं।

यह काम तुमको करना है। (परसर्ग)

यह काम तुम्हें करना है। (विभक्ति)

---

1. वही पृष्ठ 221

हिन्दी के ने, को, के लिए, से, में, पर– परसर्ग लिंग, वचन एवं पुरूष के भेद होने पर भी अपरिवर्तित रहते हैं।

नीचे डॉ0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में प्रयुक्त कारकीय वाक्य संरचनाओं का अनुशीलन इसी दृष्टि से किया जाएगा।

2.3.1. अविकारी कारक

अभी कुछ देर पहले अमीर तयासी की हवेली से तुगरिल आया था।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, दिल्ली दूर, पृ0–150)

आप स्पष्ट करिये कि हमारा लाल कोट स्थित व्यक्ति क्या उस गुप्त निमंत्रण के बारे में जानता है।

(कर्तृ0, कर्ता विस्तार, दिल्ली दूर है, –150)

एक जनरवा उसे खोजते–खोजते पीछे के बाग में पहुँचा।

(कर्तृ0, कर्ता0, दिल्ली दूर है, पृ0–151)

नहीं, इसमें चिन्तित होने का प्रश्न कहाँ रहा दीप्ति, जब तुम्हारे जैसे पारिजात वृक्ष आँखों में, नासिका में, मन में सुगन्धि और सौन्दर्य को समवेत जगा रहा हो।

(कर्तृ0, कर्ता विस्तार, दिल्ली0, पृ0– 320)

यह सब बाद में करना भ्रातृ जाया।

(कर्तृ0, कर्ता0, दिल्ली दूर है, पृ0–321)

अब, अम्मी जान इसका फैंसला तो आपको करना है।

(कर्तृ0, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृ0– 326)

आप शान्त रहें मलय सिंहरण।

(भाव0, कर्ता0, दिल्ली दूर है, पृ0– 437)

पुजैया के बकरे को भी कनइल की माला पहनायी जाती है।

(कर्म0, कर्म0, अलग–अलग0, पृ0– 99)

सुरजू सिंह ने एक सिगरेट निकालकर खुद जलायी और तीखे धुएँ को बड़े ढंग से फेंकते हुए बोले।

(कर्तृ0, कर्म0, अलग–अलग0, पृ0– 98)

हरखू सरदार की बातों में किसी को रस न हो, ऐसी बात नहीं।

(पूरक0वि0, कर्म0, अलग–अलग0, पृ0–113)

अभी तो सनिच्चर गोड़ तोडे बैठा है।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग-अलग0, पृ0- 113)

बाबू कान्ता सिंह मन मारकर बैठ रहे।

(कर्ता0, कर्त0, अलग-अलग0, पृ0-113)

इम्तहान खतम हुआ तो आपने खबर भी नहीं दी।

(कर्तृ0, कर्म0, अलग-अलग0, पृ0-117)

बीसों लाठियाँ एक साथ दद्दू पर गिरीं और दद्दू ने उन्हें ऐसे ठरकाया जैसे लाठियाँ किसी के वदन पर नहीं, चट्टान पर गिरी हों।

(कर्तृ0, कर्ता0, गली आगे0, पृ0- 141)

ऐसी औरत हमने तो अपनी जिन्दगानी में नाहीं देखा!

(कर्तृ0, कर्म0, गली आगे0, पृ0- 200)

भूलना भी एक कला है।

(भाव, कर्म0, गली आगे0, पृ0- 279)

बुल्लू पण्डित करैता गाँव की हँसी- खुशी के सफरमैन हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, अलग-2, वैतरणी-3)

कीरत पहाड़ी किरातों की तूर्यध्वनि की तरह चिल्लाये।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, नीलाचाँद, पृ0- 49)

जयन्ती मुस्कराई।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0- 60)

प्रतर्दन एक सामान्य मनुष्य है।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, वैश्वान, पृ0- 197)

परताप आया था।

(कर्ता0, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ- 84)

मेवाती बुरी तरह भयभीत होकर भागे।

(कर्ता0, कर्तृ0, कुहर में युद्ध, पृ0-121)

एक प्रहरी राज राजेश्वरी बेला के द्वार पर पहुँचा।

(कर्ता0, कर्तृ0, कुहरे में युद्ध, पृ0- 288)

2.3.2. विकारी कारक

कर्मवाच्य प्रयोगों में कर्तृ पद विकारी रहता है अर्थात् नाम पद में "ने" परसर्ग जुड़ जाता है। भाव वाच्य के कर्म अपेक्षित प्रयोगों में कर्म–परसर्ग– "को" अथवा कर्म– विभक्ति "ए" जुड़ती है।

2.3.2.1. कर्ता परसर्ग युक्त नाम पद

वह मैंने आज दूसरी अगस्त को तुम्हारे पास पहुँचा दिया।

(कर्ता0, कर्म0, गली आगे0, पृ0– 63)

भट्टाचार्य महाशय ने वल्लभचंद्र के ड्राइंग रूम में बैठते हुए कहा।

(कर्ता0, कर्म0, गली आगे0, पृ0– 62)

मैंने शीशी हिस्की के अद्धे के पास मुँह लगाकर भर दी।

(कर्ता0, कर्म0, गली आगे0, पृ0– 127)

आपने अपने सहकर्मियों को नाश्ता– पानी करने से भी मना कर दिया।

(कर्ता0, कर्म0, गली आगे, पृ0– 98)

हरिमंगल ने दरवाजा भेड़ दिया था।

(कर्ता0, कर्म0, गली आगे0, पृ0– 146)

हरिमंगल ने उसे नये सिरे से देखा।

(कर्ता0, कर्म0, गली आगे0, पृ0– 149)

अक्षय ने ठीक कहा था, वह सोचने लगा।

(कर्ता0, कर्म0, गली आगे0, पृ0– 149)

रंगपुर कुंज फाटक जयंती ने ही खोला।

(कर्ता0, कर्म0, गली आगे0, पृ0– 166)

"सुनो"। जयंती ने कहा और मुझे पकड़कर विल्व–वृक्ष के पास वाले कमरे में ले गयी।

(कर्ता0, कर्म0, गली आगे0, पृ0– 166)

मैंने चारों ओर देखा।

(भाव, कर्ता0, कर्म0, गली आगे0, पृ0–212)

नन्हकू ने जलेवी की ओर उँगली उठा दी।

(कर्ता0, कर्म0, अलग–2, वैतरणी–6)

मैंने पुष्प इसलिये नहीं चढ़ाये।

(कर्ता0, कर्म0, वैश्वानर, पृ0– 310)

2.3.2.2. <u>कर्म विभक्ति/ परसर्ग युक्त नाम पद</u>

<u>हमें</u> नहीं देवी चौधुरी का डर लगा है।

(अधिकृत कर्ता, भाव0, अगर-2, वैतरणी-254

मनोबल <u>इन लोगों को</u> पथभ्रष्ट निरीह प्राणी मानता है।

(कर्ता0, भाव0, शैलूष, पृष्ठ- 207)

<u>विश्वामित्र</u> को पता चला गया।

(कर्ता0, भाव0, वैश्वानर, पृष्ठ- 384)

2.3.2.3. <u>करण परसर्ग युक्त नाम पद</u>

<u>हमसे</u> कौन-सी खता हो गयी।

(कर्ता, भाव0, अलग-2, वैतरणी- 30)

अब <u>तुमसे</u> डर लगता है।.....

(कर्म0, भाव0, गली आगे0, पृ0- 182)

मैंने <u>आपसे</u> कहा था।

(कर्ता0, कर्म0, नीलाचाँद, पृ0- 60)

2.3.2.4. <u>अधिकरण परसर्ग युक्त नाम पद</u>

वह <u>अखाड़े में</u> पागल गैंडे की तरह चक्कर देने लगा।

(कर्म0, कर्तृ0, अलग-2, वैतरणी- 27)

हम <u>दुश्मन पर</u> टूट पड़ने के लिए तत्पर हैं।

(कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ- 99)

रामानन्द ने <u>दरवाजे पर</u> खड़े हो एक नजर इधर- उधर देखा।

(कर्म0, कर्तृ0, गली आगे0, पृष्ठ- 93)

2.3.2.5. <u>को परसर्ग या ए विभक्ति युक्त नाम पद</u>

राजमती ने <u>देपाल को</u> कई बार देखा था।

(कर्म0, कर्तृ0, अलग-2, वैतरणी-28)

अगर राज <u>हमें</u> स्मरण करता है।

(कर्म0, भाव0, नीलाचाँद, पृष्ठ- 176)

इनकी माता जी <u>इन्हें</u> औघड़ अवधूत कहती हैं।

(गौ0, कर्म0, कर्तृ0, गली आगे0, पृ0-123)

वह तुम्हें कितना मानती और चाहती हैं।

(गौ०, कर्म०, कर्तृ०, शैलूष, पृ०- 253)

2.3.2.6. के लिये परसर्ग युक्त नाम पद

टीन की पपिहरी के लिये जिदियायें बच्चे की पपिहरी रूलाई से माँ चिढ़ जाती है।

(गौ०, कर्म०, कर्तृ०, अलग-2, वैतरणी-1)

2.3.2.7. "से परसर्ग युक्त नाम पद

तुम ईरान से आये हो।

(कर्म०, कर्तृ०, दिल्ली दूर है, पृ०- 390)

वह फिर शरारत से मुस्कराने लगी थी।

(गौ०, कर्म०, कत्तृ०, गली आगे०, पृ०- 71)

2.3.2.8. में, पर परसर्ग युक्त नाम पद

परजा पर धाक जमाने के लिये हाथी का हिरदा चाहिये।

(कर्ता०, कर्म०, अलग-2, वैतरणी-20)

चंचल नदियों के मन में समुद्र या नद से मिलने की ऐसी तीव्र आकांक्षा क्यों जन्म लेती हैं।

(गौ०, कर्म०, कर्तृ०, वैश्वानर- 122)

2.3.2.9. विशेषक- की, -के-का-रा-री, -रे युक्त नामपद

कनिया का व्यक्तित्व भी अजब पारदर्शी आईना है।

(गौ०, कर्म०, कर्म०, अलग-2, वैतरणी-125)

हम सब कच्ची मिट्टी के खिलौने हैं।

(गौ० कर्म०, कर्तृ०, शैलूष , पृ०- 249)

मुझे तुम्हारे पिता से कहना पड़ेगा।

(गौ० कर्म०, कर्तृ०, वैश्वानर, पृ०- 121)

2.3.2.10. परासर्ग "के लिये" के स्थान पर अन्य शब्द युक्त नाम पद

कौन ऐसे बेकहल प्रानियों के पीछे जी हलकान करें।

(गौ० कर्म०, कर्तृ०, अलग-2, वैतरणी-2)

मेरे वास्ते दौड़ मचाने की आज तुमने शपथ ली है क्या जमुना?

(गौ० कर्म०, कर्म०, गली०, पृष्ठ- 165)

2.3.3. करण कारक

2.3.3.1. से परसर्ग युक्त नाम पद

मन की सारी उमंगें अपनी अन्तिम सीमा की असफल यात्रा से लौट आयी।

(करण0, कर्म0, अलग-2, वैतरणी-140)

अब पृथ्वी के हृदय से अपार स्नेह की वर्षा हो रही है।

(करण, कर्तृ0, शैलूष, पृ0- 32)

2.3.3.2. करण परसर्ग लोप

"अपने ही हाँथों उनको माहुर दे दिया मैंने।"

(करण0, कर्म0, अलग-2, वैतरणी- 32)

नंगे पैरों सीढ़ियाँ उतरकर दालान में उतर आई।

(करण0, कर्तृ0, अलग-2,- 149)

2.3.3.3. कर्म परसर्ग युक्त नाम पद

मैं इस मुकम्मल गैंग को ध्वस्त करके ही दम लूँगा।

(करण, कर्तृ0, गली आगे0, पृ0- 95)

2.3.3.4. विशेषक युक्त नाम पद

हम तो तुम्हें किसी राह भूले देवता का अवतार समझते थे।

(करण0, कर्तृ0, अलग-2, वैतरणी- 29)

2.3.3.5. अधिकरण परसर्ग युक्त नाम पद

देशभक्त के स्वागत सत्कार में गाँव का मुखिया ही न रहे, तो कितनी बुरी बात होगी।

(करण0, कर्तृ0, अलग-2, वैतरणी-45)

आप आध्यात्मिक शक्ति में किंचित् भी विश्वास नहीं करते हैं।

(करण, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृ0- 248)

अभी तक पानी की एक बूँद भी धरती पर नहीं आयी।

(करण0, कर्म0, अलग-2, वैतरणी-111)

उन्होंने एकलिंग देव पर फूलों के साथ अपना कटा अँगूठा भी चढ़ा दिया।

(करण0, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृ0-505)

2.3.3.6. करण परसर्ग "से" के स्थान पर अन्य शब्द युक्त नाम पद

दरारों से उछल–उछल कर मेगाचियों का झुण्ड डर के मारे गिरता– पड़ता दूर किनारे की ओर चला जाता है।

(करण0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी– 95)

2.3.4. "अपादान" कारक

2.3.4.1. "से" परसर्ग युक्त नाम पद

सारी दुनिया अपने स्वार्थ के लिये दूसरों से आत्मीयता दिखाने का नाटक करती हैं।

(अपादान, भाव0, अलग–2, वैतरणी–227)

जिसमें से ढ़ेर सारी गुलाब की पंखुरिया बिखरती थीं।

(अपादान, कर्म0, गली आगे0, पृ0– 137)

उनकी जांघ से खून का फव्वारा बरस रहा था।

(अपा0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ– 293)

2.3.4.2. "अपादान– परसर्ग लोप

"अपने ही हाथों उनको माहुर दे दिया मैंने।"

करण/
(अपा0, कर्म0, अलग–2, वैतरणी– 32)

2.3.4.3. विशेषक युक्त नाम पद

दृशद तो सर्वदा धन्वन्तरि परिवार की गरिमा को सुरक्षित रखने के लिये सब कुछ करती रही।

कर्म0
(~~अपा0~~, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ– 295)

मैंने भूमिधरी के कागज बेच दिये हैं।

करण
(~~अपा0~~, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ – 139)

2.3.4.4. "अधिकरण" परसर्ग युक्त नाम पद

यहाँ तो भूल भुलैया में रास्ता ढूँढकर खुद मेमने ही बाघ की माँद में आया करते थे।

अधि0
(~~अपा0~~, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी– 34)

किन्तु इस त्रिकंटक विराजित क्षेत्र में मुझे अश्व का कष्टकपायन न बनाया करें।

अधि0
(~~अपादान~~, कर्म0, नीलाचाँद पृ0–294)

2.3.4.5. अपादान परसर्ग "से" के साथ अन्य शब्द युक्त नाम पद

मेरी जान बड़ी खुशी–खुशी इस शरीर से बाहर निकलेगी।

(अपा0, भाव0, अलग–2, वैतरणी– 68)

2.3.5. अधिकरण कारक

2.3.5.1. अधिकरण परसर्ग युक्त नाम पद

बहरहाल इस मामले में कोई दम नहीं है।

(अधि0, कर्ता0, गली आगे0, पृ0- 157)

लाहौर पर बार-बार ऐसा ही कहर टूटेगा।

(अधि0, कर्ता0, दिल्ली दूर है, पृ0-411)

"अइय्या तुम भी कभी-कभी अद्‌भुत गुत्थियों में झोंक देती हो।

(अधि0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृ0- 259)

2.3.5.2. अधिकरण परसर्ग लोप

पूरे रास्ते वह मौन ही रहा।

(अधि0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0-285)

ऐसे अश्व स्वामी के हित प्राण देने के लिये भी तत्पर रहते हैं।

(अधि0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृ0- 95)

पुष्पी उन दिनों कुल तीन-चार बरस की रही होगी मुश्किल से।

(अधि0, कर्त0, अलग-2, वैतरणी-66)

उसी रात शास्त्री जी के कतल का बदला लेने के लिये ब्राहम्ण छोकरों ने करीम की सारी रावटियों पर पेट्रोल छिड़कर कर आग लगा दी।

(अधि0, कर्तृ0, शैलूष, पृ0- 178)

2.3.5.3. कर्म परसर्ग युक्त नाम पद

तुम या हम चाहें भी तो नियति को रोक नहीं सकते।

(~~अधि0~~ कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0- 37)

इसी शोभा को हम काशिक जन, केवल एक शब्द में कहना हो तो, कहते हैं आनन्द-वन।

(~~अधि0~~ कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृ0- 124)

2.3.5.4. करण परसर्ग युक्त नाम पद

उसके नीले-नीले फूलों से हलकी खुशबू निकल रही थी।

(~~अधि0~~ करण0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ- 40)

हम उनका बेसब्री से इन्तजार करेगें।

(~~अधि0~~ करण0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0-295)

2.3.5.5. विशेषक युक्त नाम पद

श्री माँ का वरदान सफल हुआ।

(अधि0, कर्म0, नीला चाँद, पृ0- 183)

उसके साथ घर का भृत्य सुखपाल चिराग लिये चल रहा था।

(अधि0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0- 133)

2.3.5.6. विशेषक के साथ अन्य शब्द युक्त नाम पद

नाले के भीतर दौड़ने की आवाज स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी।

(अधि0, कर्म0, अलग-2, वैतरणी-270)

बेतवा को संगीनों की छाया में जीने के लिये कोई मजबूर नहीं कर सकता था।

(अधि0, कर्म0, हनोज दिल्ली दूरअस्त-187)

तभी एक टैक्सी हरिहर नट की झोपड़ी के पास थानेदार की जीप के पीछे आकर रूक गयी।

(अधि0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ- 142)

2.3.6. परसर्ग युग्मक युक्त नाम पद

अचानक सीपिया नाले में से निकलकर खुदाबक्कस मेरी ओर दौड़ा।

(में-से-अपा0, कर्म0, अलग-2, वैतरणी-296)

योगिनी के शरीर पर से आत्म प्रकाश का मंडल हटा नहीं है।

(पर-से- अपा0, कर्तृ0, नीलाचाँद, -391)

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि डा0 शिवप्रसाद जी ने अपने उपन्यासों में रूढ़ एवं परम्परागत् प्रयोगों के अतिरिक्त कारकों का नव्य प्रयोग अपनी रचनाओं की वाक्य योजना में बहुलता के साथ किया है।

2.4. विशेषण- वाक्य विन्यास

डॉ0 शिव प्रसाद जी के उपन्यासों के भीतर जो कारकमूला स्थिति विशेष्य की है, वही उससे सम्बद्ध विशेषण की भी है। विशेषणों के तीनों वर्ग इस प्रकार हैं- सार्वनामिक, गुणवाचक और संख्या वाचक।

2.4.1. सार्वनामिक विशेषण

प्रायः सभी सर्वनामों को विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इनके दोनों प्रकार डा0 सिंह के उपन्यासों में प्रयुक्त हुए हैं:- 1. मूल, 2. साधित

2.4.1.1. मूल

हमारा देश सचमुच कमालपुर है।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, शैलूष, पृ0- 1)

आज गोविन्द ने मेरा अपमान किया है।

(कर्म0, कर्म0, नीलाचाँद, पृ0- 86)

तुम लोगों में दया माया कुछ भी नहीं बची है।

(अधि0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0- 68)

वह भी आपकी कायानी (पवित्र) शख्सियत के कारण काफी परेशान है।

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ-127)

तू इस वैवाहिक मंगलमाला को गोमती के गले में पहना दे।

(कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृ0- 279)

अगर उनके ऊपर दस्यु आक्रमण करें तो वो क्या अपनी रक्षा कर पायेगें?

(कर्म0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृ0- 354)

जिन ब्राहम्णों ने लछ्छ चंडी किया यानी एक सौ एक।

(कर्ता0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ- 95)

यह सब कुछ ताश के पत्ते की तरह हल्के से धक्के से बिखर गया।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग-2, वैतरणी-24)

जिनकी छाया में हमारे पूर्वज रहते आये हैं।

(अधि0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ- 183)

यह जीवन अग्नि और सोम के समन्वय से बनता है।

(कर्ता0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ-269)

वह पुत्र सद्पुत्र हो ही नहीं सकता जो पिता के अज्ञान प्रेम से रूष्ट न हो।....

(कर्ता0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली दूरअस्त,)

मुझे उसका देखना बड़ा शीतल लगा।

(कर्म0, कर्म0, गली आगे0, पृ0- 136)

किसी को भेजकर पता लगाओ।

(कर्म0, कर्म0, हनोज दिल्ली0, पृ0-125)

आप किनकी बात कर रहे हैं फतेह मियाँ।"

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0- 76)

"कौन राजा। देवि, यहाँ दो राजा हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ- 170)

जरूर इसमें कोई-न-कोई राज है।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग-2, वैतरणी-97)

2.4.1.2. सम्बन्ध सूचक विशेषण

2.4.1.3. साधित

ऐसे मक्खीचूस की जलेबी तीती न होगी तो क्या मीठी होगी।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, अलग-2, वैतरणी-6)

जैसे तेज दौड़ते घोड़े ने अपने पिछले पैरों के निशानात पत्थर पर टाँक दिये हों।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, दिल्ली दूर है, पृ0-119)

राजन, ऐसी विपरीत की मैंने कल्पना भी नहीं की थी।

(कर्म0, कर्म0, नीलाचाँद, पृ0- 55)

लल्लू नत अनुभवी थे, जाने कितने फाके किये, जाने कितने जवार-भाटे देखे।

(कर्म0, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ- 12)

स्वर्ण रवचित भुजबन्ध उतना मसृण नहीं होगा जितना हरिक चूर्ण और बीच-बीच में लघु-लघु माणिक्य दानों से बना हुआ हो सकेगा।

(कर्म0, कर्म0, वैश्वानर, पृष्ठ- 210)

कितनी खुशी और उल्लास के साथ वे उस कमरे के दरवाजे पर बाजू से सटकर खड़ी थीं, उस दिन।

(कर्म0, कर्तृ, अलग-2, वैतरणी- 155)

"आप जाने कितने आनन्दातिरेकों के रहस्यों से भरी-भरी हैं।

(करण0, कर्तृ0, (भाव0) दिल्ली दूर है, -146

2.4.1.4. सार्वनामिक विशेषणों के साधिक रूपों को दो प्रकार में दर्शाया गया है- 1. गुणवाची, 2. परिमाण वाची। -सा, -सी, -से, अन्त्य वाले गुणवाची तथा -ना, -नी, -न, अन्त्य वाले परिमाण वाची हैं।

2.4.2. गुणवाचक विशेषण

"तू" दुर्गा कवच से ढ़की होने के कारण बच गयी पापिष्ठे।

(करण, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ- 197)

वे आहत मन से मेघन के चबूतरे से उतरे।

(कर्म0, कर्तृ0, उलग-2, वैतरणी-30)

आप बड़े अफसर हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, गली आगे0, पृ0- 67.)

"आनन्द वाशेक एक अभिशप्त आत्मा है दीप्ति जी।

(कर्ता0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0-140)

मैं तो एक जल विहीन कूप हूँ, निरर्थक बेमतलब, मौसी सोच रही थी।

(कर्म0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ- 84)

यह मंदिर आटव्य देश से लाये गये रंगीन और चिकने पत्थरों से निर्मित था।

(करण0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृ0- 121)

लल्लू काका की धुँधली आँखों के आगे एक चेहरा नाच उठा।

(कर्म0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ- 143)

कई लोगों ने युवराज को उठाया और दुर्ग के बाहरी प्रकोष्ठ में तूलपटी पर लिटा दिया।

(अधि0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृ0- 529)

मन घायल भंवेर-सा कहीं और ही चक्कर लगाता।

(कर्म0, कर्तृ0, अलग-2, वैतरणी-216)

मैं भगवान कृष्ण तो हूँ नहीं पर उनकी अनन्य भक्ति में बड़ी आस्था है।

(अधि0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0- 247)

"रजुल्ली बड़ा शरारती है।

(कर्ता0, कर्तृ0, गली आगे0, पृ0-176)

जिसे वह जिन्दगी की सबसे प्यारी चीज समझता था।

(कर्म0, कर्तृ0, गली आगे0, प0- 161)

2.4.3. संख्या वाचक विशेषण

इसके तीनों प्रकारों- निश्चित, अनिश्चित और परिमाण वाचक का प्रयोग डा0 सिंह ने किया है।

2.4.3.1. निश्चित संख्या वाचक विशेषण –गणना–

पतुक्की से दो लड्डू निकाल कर ले आये।

(कर्म0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी– 12)

ले यह पचास रूपये का नेट, पता नहीं कब तक छिप–छिपाकर रहना पड़े तुम लोगों को।

(कर्म0, कर्तृ0, शैलूष, पृ0– 23)

पाँच सौ बाभन खिलाये थे।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी– 21)

आपकी राजधानी में आपके द्वारा निर्मित एक सौ चार मन्दिर हैं।

(कर्म0, कर्म0, नीलाचाँद, पृ0– 41)

कौन पूछे इस नगरी से कि उसके भीतर छह घड़ी में इतनाअसन्तुलन क्यों होता रहता है।

(अधि0, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृ0– 29)

पिछले तीन दिन के अन्दर में ही उन्होंने जान लिया कि काशी का जितना विस्तार है उतनी ही गहराई भी है।

(कर्म0, कर्म0, नीलाचाँद, पृ0– 61)

क्रम

सुब्बा ने पहले बार से ही चौकन्ना कर दिया।

(करण0, कर्तृ0, उ0, अलग–2, वैतरणी–27)

यह सत्ताइसवाँ नक्षत्र है यानी अंतिम।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, शैलूष, पृ0– 4)

अदने आदमी का दिमाग जब सातवाँ आसमान छूने लगता है।

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0– 71)

दूसरे दिन प्रातः एक अश्वारोही को गढ़ी की ओर आते देखकर प्रहरी सन्नद्ध हुये।

(कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 119)

आवृत्ति

उसने अपने मनीबेग से सौ–सौ रूपये के दो नोट निकालकर सभी रूपयों को एक कागज में लपेट लिया।

(कर्म0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी– 76)

"क्या एक दिन में पंचकोसी करने निकला है?

(कर्म0, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ– 46–47)

किन्तु इस त्रिकंटक विराजित क्षेत्र में मुझे अश्व का कष्टकपायन न बनाया करें।

(अधि0, कर्म0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 294)

पर यह नगर मेरी अपेक्षा आपको द्विगुणित यथार्थ का अनुभव करा चुका है।

(कर्म0, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ–111)

समुदाय

चौबीसों घण्टा जब यहाँ रहना है तो पानी के बिना कैसे चलेगा।

(कर्म0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी– 12)

एक झुण्ड परवाह शोर मचाते खेलों में मशहूर थे।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, अलग–2, वैतरणी–21)

तभी जुड़ावन की पत्नी बेला उसके दोनों पैरों में गिर पड़ी।

(अधि0, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ– 19)

दोनों अश्वों के पहुँचते ही उन्होंने सम्मान और अभिनन्दन में शंख बजाये।

(अधि0, कर्म0, नीलाचाँद, पृष्ठ–136–38)

यह पाचवाँ साल है अमीर,

(कर्ता0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0– 154)

प्रत्येक

सारे गाँव के एक–एक लड़के का नाम याद था उनको।

(कर्ता0, कर्म0, अलग–2, वैतरणी–21)

आपके कहने से ये वेदपाठी यहाँ आये और इन्हें दक्षिणा दी जा रही है सौ रूपये यानी हर ब्राहम्ण पर एक रूपया।

(अधि0, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ– 95)

इनके पास प्रतिवर्ष अगहनी और चैती फसलों के कहते ही टट्टुओं से लादकर गेंहूँ– जौ या धान–बाजरा आता है।

(कर्ता0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ– 99)

"अपने त्राटक से तूने मेरे भीतर के एक–एक टुकड़े को देख लिया है, माँ।

(कर्म0, कर्म0, नीला चाँद, पृष्ठ– 277)

"हर नयी पीढ़ी पहले की पीढ़ी वालों को परम्परा विरूद्ध लगती है।

(कर्ता0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0–54)

2.4.3.2. अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण

संख्या वाचक विशेषण "एक"

ई एक पतुक्की में लड्डू हैं सेर–डेढ़–सेर।

(अधि0, कर्म0, अलग–2, वैतरणी– 11)

एक पागल करने वाली खुशबू से परती नहा उठती है।

(करण, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ – 2)

एक अवला का शास्त्र ज्ञान में रूचि लेना अपराध है।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, नीलाचाँद, पृ0– 124)

उसने झोले से एक सौगंधिक पुटिका निकाली।

(कर्म0, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृ0– 49)

संख्या वाचक विशेषण "एक" + अव्यय

मैंने एक से एक बदनीयत इन्सान देखे हैं।

(कर्ता0, कर्म0, अलग–2, वैतरणी–197)

एक से आज सोलह घर हो गये हैं तिवारी खानदान के।

अपादान
(करण0, कर्म0, शैलूष, पृ0– 6)

–इसी प्रसंग में विरह–दु:ख से आक्रान्त गोपिकाएं एक–दूसरे से कहने लगीं।

कर्म0,
(करण0, कर्तृ0, नीला चाँद, पृष्ठ– 170)

नजमा सिर्फ एक मित्र हैं, अधिक–से–अधिक।

(कर्ता0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0– 246)

संख्यावाचक विशेषण – द्वित्व

सबको एक–एक मलमल का गमछा और चवन्नी दच्छिना में मिली रही।

(कर्म0, कर्म0, अलग–2, वैतरणी–21)

बारह–बारह पट्ठे हैं उहाँ के दंगल में।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी– 15)

संख्या वाचक विशेषण + संख्या वाचक विशेषण

युद्ध के दो–तीन महीने पहले कही हुई भविष्यवाणी याद नहीं रही।

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0– 60)

वरना ऐसा मामला हो और तालाब के किनो दस–बीस आदमी न रहें।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी–365)

पर मेरा बापू बोला कि बीस–पच्चीस अखवार भी लेता जा।

(कर्म0, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ– 47)

"थक गये, अब तो केवल चालीस–पचास सीढ़ियाँ ही बची हैं।

(कर्म0, कर्म0, नीलाचाँद, पृ0– 95)

अन्य सूचक "और" "अन्य", दूसरा + अन्य शब्द–भेद

वहाँ और कोई न था।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी– 59)

आज यह उदास भोली– भाली दीवालों और नन्हे नन्हे घरों का मकान किसी और का हो जायेगा।

(कर्म0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी– 90)

कोई और एक सरूवा लड़की होती।

(कर्ता0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ – 20)

पर आप जैसा डरपोक इंसान भी दूसरा कहीं नहीं मिलेगा।

(कर्ता0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0– 312)

कीर्त्त सिंह की जगह कोई दूसरा नरेश होता तो कृष्णमिश्र का वध हो चुका होता।

(कर्ता0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 86)

सर्वसूचक शब्द

जो अपना सब कुछ अपने खुदा पर न्यौछावर कर चुके हैं।

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0– 302)

यह सारी भीड़ जैसे मन्दिर के पास आने के लिये ही चली थी।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी– 14)

महाशिवरात्रि तो काशिक जन के लिये ऐसे भी सब कुछ को भोलेनाथ के ऊपर छोड़कर मदमत्त होने की रात्रि है।

(कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 134)

आज मेरा सारा विश्वास हिल गया है।

(पूरक, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ– 287)

समूची पृथ्वी तमसपूर्ण कलिल जल में निमग्न हो जाती है।

(कर्ता0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 371)

आधिक्य और "न्यूनता" सूचक शब्द

इसमें मर्द कम औरतें और बच्चे ज्यादा हैं।

(कर्ता0, कर्त0, अलग–2, वैतरणी– 1)

बहुत सटे हुए पचासों दिमौट थे।

(कर्ता0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ – 2)

बीस–बाईस गांवों में कम–से–कम चालीस–पचास घर तो खदरकर गिरे ही होगें।

(कर्म0, कर्तृ0, गली आगे मुड़ती है, पृ0–51)

इसे बहुत अभ्यास और संतुलन द्वारा ही निभाया जा सकता है।

(करण, कर्म0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 140)

आप क्या थोड़ा पानी पिलाएंगें।

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0–339)

अनेकता सूचक शब्द

वह झमर–झमरकर बरसने वाला सावन नहीं नाना तरह के फूलों से लदा मधुमास था।

(करण0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ– 46)

आस–पास के अनेक छोटे–बड़े मन्दिरों के प्रबंध का उत्तरदायित्व भी अविमुक्तेश्वर संस्थान के प्रधान मठाधीश के अधीन था।

(कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृ0– 123)

पर सौ दीनारों के लिये इस मुल्क में तो (अगणित) अनगिनत सैकड़ों लोग मिल जायेगें।

(कर्ता0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ–200)

कई नरेश सोचते हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृ0– 283)

निश्चित गणना वाचक + अनिश्चित गणना वाचक विशेषण

वही वह समुद्र है जिसमें सहस्त्रों नदी –नाले गिरते हैं।

(कर्म0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ– 270)

सारे देहात से चार–पाँच–सौ बहिला बाँझ तो आज आई ही रही होयगी।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी–11)

तुमने हमारे पन्द्रह–बीस नवयुवकों की भी बलि दे दिला दी।

(कर्ता0, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 278)

बीस–पच्चीस अखवार भी लेता जा।

(कर्म0, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ– 47)

2.4.4. परिमाण वाचक विशेषण

2.4.4.1. अनिश्चित

अब थोड़ा जलपान, क्यों भाई जू?"

(कर्म0, कर्म0, नीलाचाँद, पृष्ठ – 93)

सारे बबूल कटवा दिये मैंने।

(कर्ता0, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ– 33)

समझ लीजिए, अधिक से अधिक घंटा भर और।

(कर्म0, कर्म0, अलग–2, वैतरणी– 35)

तुम्हें और दीनारें चाहिए तो सोमन को भेज देना।

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 85)

टिप्पणी:– यहाँ अनिश्चित परिमाण सूचक विशेषण अनिश्चित संख्यावाचक भी हैं।

2.4.4.2. निश्चित

हमारे ऊपर एक घटी पश्चात् भयंकर आक्रमण होने वाला है।

(अपा0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ– 26)

ले लो पावभर गरमा गरम जलेबी।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी– 7)

तब तक तो उसे राटी का एक टुकड़ा मिलता रहना चाहिए।

(कर्म0, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ – 72)

"बड़े मियाँ, एक प्याला दूध और एक खस्ता गरमागरम देना।

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0– 161)

दुलारी अपनी गरदन से नीचे अंगिका में हाथ डालकर एक दस अंगुल की क्षुरिका निकालकर पाण्डे की ओर बढ़ी।

(कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 310)

तब उज्जैनी के महाकालेश्वर मन्दिर को जो 300 वर्षो में अद्भुत कारीगरी के साथ निर्मित हुआ था और जो एक सौ पाँच गज ऊँचा था, तोड़कर जमींदोज कर दिया।

(कर्ता0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली दूर अस्त, 33)

2.4.5. अन्य शब्द + विशेषण

डा0 सिंह के उपन्यासों में इसके अतिरिक्त अन्य शब्द भेद भी कभी स्वतंत्र रूप में और कभी अन्य तत्वों के योग से विशेषण के समान प्रयुक्त हुए हैं।

2.4.5.1. क्रियावाचक विशेषण

धक्के देने वालों पर गुर्राती–खिजलाती औरतें।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी–)

जो असाध्य रोगियों के स्वस्थ होते चेहरे पर पहली स्मिति लेखा की तरह अंकित होती चलती हैं।

(अधि0, कर्म0, वैश्वानर, पृष्ठ– 21)

तभी सामने से दौड़ता सुरजितवा पहुँचा।

(कर्ता0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ – 10)

वे ज्यों–ज्यों चुभे हुए कंटक को खींचते हैं, पीड़ा बढ़ती जाती हैं।

(कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 174)

वे तो अन्तर्निहित ऊर्जा से भरा एक क्रीड़ा कन्दुक थीं।

(कर्ता0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली दूर अस्त, 53)

क्या उस बादशाह ने इन पठारों की जलती छाती पर ठण्डे पानी का इतना बड़ा हौज बनवाकर अवाम की खिदमत नहीं की।

(अधि0, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृ0– 118)

क्या स्वाभाविक स्नेह के लिए छटपटाती हुई आत्मा से भी अधिक व्यस्त हैं?"

(कर्ता0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 296)

डूबते सूर्य की लाली में रंगी लहरों का नर्तन।

(अधि0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली0, पृ0–12)

2.4.5.2. संज्ञा और सर्वनाम

ऐसे दधिक्राष्ण अश्वों का प्रबंध तुरन्त करना होगा।

(कर्म0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ– 115)

सामने दुर्गा मन्दिर था।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे0, पृ0–26)

हम तो श्रेष्ठि समाज में मुँह दिखाने योगय भी नहीं रहे।

(अधि0 कर्म0, हनोज दिल्ली, पृष्ठ– 219)

जहाँ–जहाँ सनातनी संस्कृति फैल रही है।

(कर्ता0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ– 101)

निःसन्देह हमारा काम भारतीय संस्कार के विरूद्ध है।

(कर्म0, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ–121)

तू स्वयं से घबड़ाकर रोग बढ़ा लेता है।

(कर्म0, कर्म0, नीलाचाँद, पृ0– 182)

शौनक अपनी छोटी सी टोली के साथ कगार के एक बड़े अश्वत्थ वृक्ष के नीचे बैठ गये।

(कर्म0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ– 16)

कगार पर रूपा लंबी-सी कोरई में गुल्ली बाँधकर पत्तों में फँसा-फँसाकर खींच रही थी।

(अधि0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ- 18)

बिल्कुल सन्नाटे से रंगे सिलेटी लैंड स्केप के ऊपर के नई रूई के सफेद गोले-सा चाँद अँटका हुआ हो जैसे-

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग-2, वैतरणी-93)

2.4.5.3. "सा" के स्थान पर "जैसा" और "सरीखा" शब्द भी इनके उपन्यासों में प्रयुक्त हुए हैं-

मगर तुर्क रणनीति में जरीदा सवारों, की भूमिका को राजन आप जैसे कुशल और भविष्योन्मुख राजे भी समझ नहीं पाये।

(कर्ता0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली दूर है, 169)

पुष्पा तो जैसे ओड़हूल का फूल थी लाल सिंधोरे पर रखा हुआ टटका फूल।

(पूरक, कर्तृ0, अलग-2, वैतरणी- 125)

मेरी जैसी वृद्धा जिसका न पुत्र न पौत्र, क्यों दुनियादारी में फँसे।

(कर्ता0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ- 22)

आप जैसी अद्वितीय नारी की बहुत बनकर मेरी बेटी ने तो मुझे भी अमर बना दिया।

(कर्ता0, कर्म0, वैश्वानर, पृष्ठ- 395)

दुलारी ऐसे लोगों के परिवारों से जुड़ी थी जो तेरे-जैसे वृषल ब्राहम्ण को चौके में घुसने भी नहीं देते।

(कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ- 249)

2.4.5.4. का- सा का योग

2.4.6. विशेषण + "सा" - हीनतासूचक

क्या सचमुद मानव इतना विवश है कि उसकी कुछ वर्ष जीने की छोटी-सी इच्छा भी अपराध बन गई है।

(कर्म0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृ0 - 66)

बीरा पीठ पर बड़ा सा गट्ठर बाँधे आगे- आगे चल रहा था।

(कर्म0, कर्तृ0, अलग-2, वैतरणी- 37)

आनन्द ने अपनी जेब से छोटी सी डिबिया निकाली।

(अपा0, कर्म0, दिल्ली दूर है, पृ0-244)

दिशाएं प्रकंपित-सी लगीं।

(कर्ता0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ- 223)

वह इस समय मात्र एक छोटा-सा सिपह सालार है।

(कर्ता0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली0, पृष्ठ-54)

2.4.7. विशेषण द्वित्व और विशेषण युग्मक प्रयोग

कर्म और धर्म की जुदा-जुदा परिभाषाएं हम मृत्यु पर्यन्त ढ़ोते रहते हैं।

(कर्म0, कर्म0, अलग-2, वैतरणी-152)

सहस्त्रों बड़े-बड़े काश्तकार हैं, हाकिम महाजन हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली0, पृष्ठ- 37)

बेइन्तहा डरा-डरा शख्स भी जब जान हथेली पर लेकर खतरों के दरिया में कूद पड़ता है।

(कर्ता0, कर्तृ, दिल्ली दूर हे, पृ0- 163)

खाली-खाली भूसा खाएंगे रोज तो कै दिन चलेगा वह।

(अलग0, कर्म0, पृष्ठ- 224)

विश्वामित्र को पता चल गया कि मंत्र-तंत्र बहुत दूर तक साथ नहीं देता।

(कर्म0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ- 384)

हँसते-हँसते वह बालों को झटका देती जो उसके लुभावने चेहरे में हटना नहीं चाहते थे।

(कर्म0, शैलूष, पृष्ठ - 47)

जग्गन को अचानक लगा था कि वे किसी भारी-अबूझ पदार्थ की लपेट में फँस गये हैं।

(अलग-अलग वैतरणी कर्म00 पृष्ठ-222)

2.4.8. बलद्योतक गुणवाची विशेषण इन विशेषणों में पहला पद हिन्दी का तथा दूसरा वही अर्थ रखने वाला फारसी का होता है।

शाम की सुरमई-रोशनी बुझ रही थी।

(कर्म0, कर्म0, अलग-2, वैतरणी- 93)

एक फौजी दुश्मन में लड़ने युद्ध-भूमि में गया और वहाँ से धन-दौलत गुलाम और बन्धकी नारियों की भीड़ को पशुओं की तरह हाँककर घर ले आया।

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ-43)

मैंने तो उतना लाड़-प्यार दिया है कि वह सब कहते नहीं बनेगा मुझसे।

(पूरक, कर्म0, वैश्वानर, पृष्ठ- 164)

कुटुम्ब-कबीले को घास की रोटियाँ भी तोड़नी पड़ सकती है।

(पूरक, कर्तृ0, हनोज दिल्ली0, पृष्ठ- 12)

चारों व्यक्ति मत्स्योदरी के किनारे एक साफ-सुथरी जगह देखकर बैठ गये।

(कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ- 33)

2.4.7. विशेषण द्वित्व और विशेषण युग्मक प्रयोग

कर्म और धर्म की जुदा-जुदा परिभाषाएं हम मृत्यु पर्यन्त ढ़ोते रहते हैं।

(कर्म0, कर्म0, अलग-2, वैतरणी-152)

सहस्त्रों बड़े-बड़े काश्तकार हैं, हाकिम महाजन हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली0, पृष्ठ- 37)

बेइन्तहा डरा-डरा शख्स भी जब जान हथेली पर लेकर खतरों के दरिया में कूद पड़ता है।

(कर्ता0, कर्तृ, दिल्ली दूर हे, पृ0- 163)

खाली-खाली भूसा खाएंगे रोज तो कै दिन चलेगा वह।

(अलग0, कर्म0, पृष्ठ- 224)

विश्वामित्र को पता चल गया कि मंत्र-तंत्र बहुत दूर तक साथ नहीं देता।

(कर्म0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ- 384)

हँसते-हँसते वह बालों को झटका देती जो उसके लुभावने चेहरे में हटना नहीं चाहते थे।

(कर्म0, शैलूष, पृष्ठ - 47)

जग्गन को अचानक लगा था कि वे किसी भारी-अबूझ पदार्थ की लपेट में फँस गये हैं।

(अलग-अलग वैतरणी कर्म00 पृष्ठ-222)

2.4.8. बलद्योतक गुणवाची विशेषण इन विशेषणों में पहला पद हिन्दी का तथा दूसरा वही अर्थ रखने वाला फारसी का होता है।

शाम की सुरमई-रोशनी बुझ रही थी।

(कर्म0, कर्म0, अलग-2, वैतरणी- 93)

एक फौजी दुश्मन में लड़ने युद्ध-भूमि में गया और वहाँ से धन-दौलत गुलाम और बन्धकी नारियों की भीड़ को पशुओं की तरह हाँककर घर ले आया।

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ-43)

मैंने तो उतना लाड़-प्यार दिया है कि वह सब कहते नहीं बनेगा मुझसे।

(पूरक, कर्म0, वैश्वानर, पृष्ठ- 164)

कुटुम्ब-कबीले को घास की रोटियाँ भी तोड़नी पड़ सकती है।

(पूरक, कर्तृ0, हनोज दिल्ली0, पृष्ठ- 12)

चारों व्यक्ति मत्स्योदरी के किनारे एक साफ-सुथरी जगह देखकर बैठ गये।

(कर्म0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ- 33)

2.4.9. तुलनात्मक विशेषण

2.4.9.1. मूलावस्था

शशिकान्त ने साँवले लड़के की पीठ थपथपाते हुए कहा।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, अलग–2, वैतरणी–232)

जब जुड़ावन के बादामी कुत्तों को मौसी के साथ जाते हुए देखते थे तो ठिठक कर उदास खड़े हो जाते थे।

(कर्म0, कर्म0, शैलूष, पृष्ठ– 14)

चेहरे को काली वस्त्र पट्टिका में छिपाने से तू बच नहीं पायेगा।

(अधि0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली0, पृ0–117)

उस पर कामदेव की अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा थी।

(पूरक, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 40)

इसका दिमाग जो इन सुनहले बालों के नीचे छिपा है, एकदम पीली बर्र का छत्ता है।

(पूरक, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0– 82)

उसने पीत सर्षप के दाने मंत्र पढ़कर उस पर फेंके।

(कर्म0, कर्म0, वैश्वानर, पृष्ठ– 152)

2.4.9.2. उत्तरावस्था

दो में की तुलना द्वारा डा0 शिव प्रसाद जी ने अपने उपन्यासों में कभी साम्य, कभी आधिक्य कभी न्यूनता का उल्लेख किया है।

साम्य सूचक

देवपाल केवल सुन्दर ही नहीं कठोर भी है।

(पूरक, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी–27)

वह झमर–झमर कर बरसने वाला सावन नहीं बल्कि नाना तरह के फूलों से लदा मधुमास था।

(पूरक, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ– 46)

जिसने जैसा नीच पाप किया उसे वैसे नीच दण्ड सर्वथा उचित है।

(कर्म0, कर्म0, हनोज दिल्ली0, पृ0–79)

हमें सहस्त्रार्जुन को छकाने के लिये उतनी बड़ी सेना नही चाहिए जितनी वह लेकर चला है।

(पूरक, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ– 115)

दो महीने बाद पूरी त्रिपूरी युद्ध की लपटों में वैसे ही जलेगी जैसे खजुराहो जला था।

(पूरक, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ–274)

यह जानवर की तरह हर जुल्म सह लेती है और जितना ही यह सहती है उतना ही घाव सड़ता जाता है।

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ–154)

आधिक्य सूचक

सुब्बानट का डील–डौल देवपाल से दूना–चौगुना तो जरूर था।

(पूरक, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी–25)

हमारे अपराध इसमें कई गुने बड़े हैं।

(पूरक, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ– 218)

शैतानों के लिये एक फकीह (धर्मशास्त्री) हजारों पाक जिन्दगियों से कहीं ज्यादा खौफनाक है।

(पूरक, कर्तृ0, हनोज दिल्ली0, पृ0– 165)

मेरे बयान से कहीं ज्यादा दिलचस्प तुगरिल और फतेह मियाँ के बयान होंगे।

(कर्म0, कर्म0, उ0, दिल्ली दूर है, पृ0–204)

"आप भी आर्य, कभी–कभी अपनी आवश्यकता से अधिक शुद्ध स्वजनोचित भाषा से लज्जित कर देते हैं।

(पूरक, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 18)

न्यूनता सूचक

उन हालात में मैं भी होता तो शायद यही करता या इसे भी बदतर सजा देता।

(कर्म0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0–328)

मेरे और उसके बीच जब भी लड़ाई होगी, ताऊ चार याम से कम में तो कोई निर्णय हो नहीं पायेगा।

(कर्म0, कर्म0, हनोज दिल्ली0, पृष्ठ–196)

दो–तीन हजार से कम के गहने देवा के हाथ नहीं आये हैं।

(कर्म0, कर्तृ0, अलग–2, वैतरणी–59)

सीढ़ियाँ लांघते हुए सूरज काका, लोचन, शोभू बनाफर और शक्तेशगढ़ के आटविक चन्दर अष्टभुजा मन्दिर के निकट से निकटतर होते गये।

(पूरक, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ–272)

अन्यथा वह युवराज की प्रशंसा में किसी स्तुति गायक अथवा चारण से कम नहीं है।

(पूरक, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ– 244)

2.4.9.3. उत्तरावस्था में डा0 सिंह ने समुदाय से तुलना की है–

सबसे + विशेषण

नरवन का यह सबसे बड़ा मेला अपनी रंगीनी, चहल–पहल, हँसी–खुशी और मस्ती के लिये मशहूर था।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, अलग–2, वैतरणी–2)

"क्यूँ भाई, सबसे ज्यादा खस्ताहाल तुम्हारा ही है।

(पूरक, कर्तृ0, हनोज दिल्ली0, पृ0–201)

"आप सकुशल लौटे हैं, यही मेरी सबसे बड़ी मन्नत थी।

(पूरक, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0–237)

तक्मा का सबसे कष्ट कर रूप होता है, विषम ज्वर।

(पूरक, कर्तृ0, वैश्वानर, पृ0– 82)

यहाँ संस्कार नहीं है, विचार नहीं है और सबसे बड़ी बात यह है कि यहाँ किसी के किये पर कृतज्ञता ज्ञापन करने वाला नहीं है।

(पूरक, कर्तृ0, नीलाचाँद पृ0– 85)

"तुम क्या सबसे बड़ी नाल उठाने वाले तुम्हारे सारे पहलवानों को चारों खाने चित्त करने वाले से उम्मीद करते हो–

(कर्म0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ– 132)

विशेषण + तम

अपनी सर्वाधिक प्रियतम वस्तु को भी मैं उसी दाँव पर लगा रहा हूँ।

(कर्म0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ– 92)

2.5. क्रिया वाक्य विन्यास

2.5.1. अकर्मक और सकर्मक

2.5.1.1. अकर्मक क्रियाएं

लड़के अधीर हो रहे थे।

(कर्तृ0, सार्वकालिक, अलग–2, वैतरणी–4)

अब आसमान ललछौंटा हो गया था।

(कर्तृ0, सार्वकालिक, विधा0, शैलूष–15)

माधव चला गया।

(कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 157)

"राज्यभिषेक का समय निकट आ रहा था।

(कर्तृ0, सार्वकालिक, विधा0, वैश्वानर, 212)

गंगाधर खीझते जा रहे थे।

(कर्तृ0, अभूत0, विधा0, हनोज0, पृ0–17)

मैं केवल विश्राम करता हूँ।

(कर्तृ0, अभूत0, विधा0, नीलाचाँद–153)

2.5.1.2. सकर्मक क्रियायें

गांव के दक्खिन तरफ नीम का एक छोटा-सा पेड़ है।

(कर्तृ0, सार्व0, विधा0, अलग-2वैतरणी-100)

दोनों व्यक्ति गोमती के प्रकोष्ठ द्वार पर आये।

(कर्तृ0, पूभूत0, विधा0, नीलाचांद-234)

छुरे पाकड़ के तनों को भेद नहीं सके।

(कर्त0, प्रभूत0, विधा0, शैलूष-94)

सोमन बारी थप्पड़ की चोट से चिहुंका।

(भाव0, पूभूत0, विधा0 हनोज दिल्ली-42)

युवराज उसके मुखमण्डल को अपलक देख रहा था।

(कर्त0, पूभूत0, विधा0, वैश्वानर-226)

तुंगमान ने हुक्का थमाते हुये कहा।

(कर्तृ0, पूभूत0, विधा0, दिल्ली दूर है-50)

2.5.2. प्रेरणार्थक क्रियाएं

2.5.2.1. अकर्मक- व्यंजनान्त

जैपाल सिंह ने कई बार आदमी भेज-भेजकर पुछवाया।

(अ0क्रिया, पूछ्-सक्रिधा, पूछा प्रेक्रिधा0,
पूछ 91 भूतकाल अलग-2, वैतरणी-)

मैं अपनी प्रजा में छिपे देश द्रोहियों का वध धरकारों और डोम- चांडालों से कराऊँगा।

(सक्रिधा, कर-प्रेक्रिया धा0, करा-करवा,
भूत0, विधा, हनोज दिल्ली दूरअस्त-182)

"नहीं, मैं आपको एक अश्वतर से भिजवाता हूँ।

(सक्रिधा, भेज- प्रेक्रिधा0, भिजवा-भिजवाता
कर्तृ0, वर्तृ0, वैश्वानर, पृ0- 185)

मैं एस0डी0ओ0 साहब से दरखास्त करता हूँ कि इस ट्यूबबेल को चलाने वाले जानकार आदमी को यहां तुरन्त नियुक्त करवायें।

(सक्रिधा0, कर्-प्रेक्रिधा0, करा, करवा, कर्तृ0
वर्त0, शैलूष, पृष्ठ- 240)

2.5.2.2. अकर्मक स्वरान्त

मैं नृपतिचन्द्र गाहड़वाल वंश की ओर से तुम्हें समूची सेना का प्रधान सेनापति बनाता हूँ।

(अक्रियाधा0, बना–सक्रियाधा0, बनना, प्रक्रियाधा0 बनाता, कर्तृ0, वर्त0, विधा0, नीलाचाँद–188)

तुम उस ओर से आधी अश्वारोही सेना से उधर का रास्ता रोक दो।

(व्यंजनान्त अक्रियाधा0, रोक–सक्रियाधा0, रूकना प्रेक्रियाधा0, रूकवाना पर यहां पर रोक दो आज्ञा दी गई है। वर्तृ0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली दूर अस्त– 114)

2.5.2.3. सकर्मक व्यंजनान्त

उसी दिन बाबू टीमल सिंह ने शाम के समय जब हरी स्कूल से लौटा तो उसे बुलाकर चारपाई के पास बिठाया।

(सक्रियाधा0, बैठ–प्रेक्रियाधा0, बैठाया, बिठाया, कर्तृ0, भूत0, विधा0, अलग–2, वैतरणी–105)

"देखे मानिक, तुम लोगों को किसी ने एक शब्द सिखा दिया है रणनीति।

(सक्रियाधा0, सीख–सीखना, प्रेक्रियाधा0, सिखाना, सिखा दिया। वर्त0, कर्तृ0, विधा0, शैलूष–50)

2.5.2.4. सकर्मक स्वरान्त

अनन्त ने बच्चे को बुलाया।

(सक्रियाधा0, बुलाना, प्रेक्रियाधा0, बुलाया0, बुलवाया कर्तृ0, विधा0, नीला चाँद, पृष्ठ– 69)

पर आप लोग सारा दृश्य देखकर मुझे विस्तार से बताइयेगा न?"

(सक्रियाधा0, बताना, प्रेक्रियाधा0, बताया, बताइयेगा। कर्तृ0, वर्तृ0, विधा0, वैश्वानर– 186)

मैं शुचिस्मिता और कल्पलता दोनों को एक ही तत्व के दो पहलू मानता हूँ।

(सक्रियाधा0, मानना, प्रेक्रियाधा0, माना, मानता हूँ। कर्तृ0, वर्त0, विधा0, हनोज दिल्ली0, –153)

2.5.3. क्रिया रूपान्तर मूलक

डा0 शिवप्रसाद सिंह ने हिन्दी क्रिया के विधान में लिंग, वचन, पुरूष, काल, अर्थ और वाच्य के सक्रिय योग को अपने उपन्यासों में दर्शाया है यथा–

2.5.3.1. कर्तृ वाच्य (अकर्मक)

भूत विधानार्थी

पीछे-पीछे गोबरधना चलता था बन्दूक लिये।

(पु0, एक0, वर्त0, कृ0, अलग-2, वैतरणी-20)

वे बहुत थके थे।

(पु0, एक0, (आदर), भूत0, कृ0, वैश्वानर 88)

दुलारी वैसे ही खड़ी थी।

(स्त्री0, एक0, भूत0, कृ0, नीलाचाँद, -246)

ऐसा ही लोग जानते थे।

(पु0, बहु0, आदर0, वर्त0, कृ0, शैलूष- 97)

भूत संभावनार्थी

वह जहाँ भी गया हो।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, हनोज दिल्ली0-124)

मैं उससे वंचित न किया जाऊँ।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, नीलाचाँद, पृ0- 50)

आपको नासिर के बारे में गलत सूचना भेजी गयी हो।

(स्त्री0, एक0, आदर0, भूत0, कृ0, शैलूष-183

हो सकता है कि वे आ भी गये हों।

(पु0, एक0, आदर0, भूत0, कृ0, दिल्ली0-422

भूत संदेहार्थी

वह मन ही मन मुस्कराती रही होगी।

(स्त्री0, एक0, भूत0, कृ0, वैश्वानर-289)

यह भी डॉक्टर लोहिया ने कहीं कहा होगा।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, शैलूष, पृ0- 188)

बुझारथ बुलाता होगा।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, अलग-2, वै0-115)

भुक्तिपति पुण्डरीक परिहार निश्चय ही अकेला नहीं होगा।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, हनोज दिल्ली0-185)

भूत संकेतार्थी

राजा का संदेश गोमती ने मुझे दिखा दिया होता।

(स्त्री0, एक0, भूत0, कृ0, नीलाचाँद, पृ0–238)

उन्होंने चाहा होता तो देवपाल को उस राह पर कदम बढ़ाने से रोक लिया होता।

(पु0, एक0, (आदर), वर्तृ0, कृ0, अलग–2, वैतरणी– 25)

यदि राजकुमार ने उसे बीच में पकड़ न लिया होता।

(पु0, एक0, वर्त0, कृ0, वैश्वानर, पृ0–123)

वर्तमान विधानार्थी

सारे सवर्ण राजसेवक कहते हैं।

(पु0, बहु0, (आदर), वर्त0, कृ0, हनोज0, 114)

मैं चलता हूँ।

(पु0, एक0, वर्त0, कृ0, वैश्वानर, पृ0–235)

हाँ, वह जानता है।

(पु0, एक0, वर्तृ0, कृ0, दिल्ली0, पृ0–150)

वर्तमान सम्भावनार्थी

तुम हो कि किताब में मूड़ गड़ाये बैठे रहते हो।

(पु0, एक0, वर्तृ0, कृ0, अलग–2, वै0–153)

जैसे वह व्यक्ति अपनी सारी नीचता के साथ उसकी आँखों के सामने खड़ा हो।

(पु0, एक0, वर्तृ0, कृ0, शैलूष, पृ0–92)

वर्तमान संकेतार्थी

क्योंकि वह एक प्राकृतिक सत्य कहता।

(पु0, एक0, वर्त0, कृ0, दिल्ली0, पृ0– 241)

जग्गन मिसिर कुछ न बोलते।

(पु0, एक0, (आदर) वर्त0, कृ0, अलग0 254)

वे भी इतने मूर्ख नहीं होते कि यह सब दिन दहाड़े करते।

(पु0, बहु0, वर्त0, कृ0, शैलूष, पृ0– 60)

वर्तमान आज्ञार्थी

तुम लोग यहीं रहो।

(उभय0, बहु0, (आदर) धातु सिद्ध, दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 235)

"बेटी, अब रोना बन्द कर।

(स्त्री0, एक0, धातु सिद्ध, नीलाचाँद–157)

"अब थोड़ा चूप रह पुत्र।

(पु0, एक0, धातुसिद्ध, वैश्वानर, पृ0–168)

"ए लड़के, बजा तो जरा जोर से डुगडुगी।"

(पु0, एक0, धातुसिद्ध, अलग–2, वैतरणी–92)

वर्तमान अनुमत्यार्थी

"मैं चलूँ, राजेश्वर।"

(उभय0, पु0, एक0, धातुसिद्ध, हनोज0–83)

"अच्छा हो धुरविन बेटा, चलें हम भी।

(उभय0, पु0, एक0, धातुसिद्ध, अलग–2 वैतरणी, पृष्ठ – 159)

"तुम्हारे मौन को मैं क्या स्वीकृति मान लूँ?

(पु0(उभय0)एक0, धातुसिद्ध, वैश्वानर–223)

भविष्य विधानार्थी

"मैं भी चलूँगा ऋषिवर।"

(पु0, एक0, धातुसिद्ध, वैश्वानर, पृ0–141)

"नहीं मैं भी जाऊँगा।

(पु0, एक0, धातु सिद्ध, गली0, पृ0–256)

मैं तुम्हारे साथ–साथ चलूँगा।

(पु0, एक0, धातुसिद्ध, नीलाचाँद, पृ0– 91)

मैं रूपा और ताहिरा के कारनामे जरूर देखूँगा।

(पु0, एक0, धातुसिद्ध, शैलूष, पृ0– 202)

भविष्य सम्भावनार्थी

मैं इसे क्या समझाऊँ। (शायद)

(पु0, एक0, धातुसिद्ध, गली0, पृ0–197)

"आप क्षमा करें स्वामी।

(पु0, एक0, (आदर) धातुसिद्ध, वैश्वानर–121)

"आर्य, आप ऐसा न सोचें।

(पु0, एक0, (आदर) धातुसिद्ध, नीलाचाँद–284

भविष्य आज्ञार्थी

तुम ठीक नौ बजे आना।

(पु0, एक0, क्रियार्थक संज्ञा, गली0, पृ0–89)

"आप चलिए हम आ रहे हैं थोड़ा रूककर।"

(उभय0, एक0, (आदर), क्रियार्थक संज्ञा, अलग–2, वैतरणी– 16)

आप सीधे बाहय प्रकोष्ठ में पहुँचिये।

(पु0, एक0, (आदर), उभय0, क्रियार्थक संज्ञा नीलाचाँद, पृष्ठ– 324)

भविष्य आदरार्थी

आप ठीक हो जायेंगे।

(पु0, उभय0, एक0, आदर0, धातुसिद्ध, अलग–2 वैतरणी– 66)

"क्या आप गंगास्नान नहीं करियेगा?"

(पु0, एक0, आदर0, धातुसिद्ध, नीलाचाँद–211

जब हौसला आ जाएंगे, आप यहाँ आ जाइएगा।"

(पु0, एक0, आदर0, धातु0, गली0, पृ0–96)

पर आप लोग सारा दृश्य देखकर मुझे विस्तार से बताइयेगा?

(बहु0, आदर0, धातुसिद्ध, वैश्वानर, पृ0–186)

भूत विधानार्थी

तब से मैं अंगदेश से लेकर लगातार भ्रमण कर रहा हूँ, पर अपने पिता का संधान नहीं कर पाया।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, वैश्वानर– 31)

वह कुछ इस कदर मुस्कराई कि मैं अपने को रोक नहीं पाया।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, गली0, पृ0- 73)

हरिया इस हँसी को झेल नहीं पाया।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, अलग-2, वै0-109)

आज तक श्री माँ द्वारा बेसुधी में दिखाये गये दृश्य को मैं भूल नहीं पाया।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, नीलाचाँद, पृ0-383)

भूत सन्देहार्थी

"मौसी, जब तूने नहीं सुना तो मैं ताहिरा और रूपा कहाँ सुन पाये होगें।"

(स्त्री0, बहु0, भूत0, कृ0, शैलूष0, पृ0-206)

वर्तमान विधानार्थी

मैंने इस मंदिर में शांति पाई है।

(स्त्री0, एक0, भूत0, कृ0, गली0, पृ0- 26)

कई बार अपने को अजीब पेशोपेश में पाया है।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, अलग- 2
वैतरणी, पृष्ठ- 193)

यह सभी कुछ उसने माँ के गर्भ से ही पाया है रे चक्रपालित।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, वैश्वानर, पृ0-345)

2.5.3.4. कर्मवाच्य (कर्म कर्मणि प्रयोग)

भूत विधानार्थी

शौनक को क्रोध करते पहली बार देखा गया था।

(पु0, एक0, भूत0, कृ0, वैश्वानर, पृ0-381)

2.5.4. संयुक्त क्रियाएं

डॉ0 शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में संयुक्त क्रियाओं की बहुलता है। ये संयोजक तत्वों से अलग एक अतिरिक्त और विशिष्ट अर्थ का बोध कराती है।

प्राय: धातु से निष्पन्न क्रिया क्रियार्थक संज्ञा, संज्ञा, विशेषण और कृदन्त मुख्य क्रिया के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

2.5.4.1. मुख्य क्रिया – धातु से निष्पन्न

गोमती ने अपना कक्ष भीतर से बन्द कर लिया है।

(स्त्री0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0,
नीलाचाँद, पृष्ठ- 156)

मैं इतना कहकर चुप हो गया।

{पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0, गली0–126}

"साधु, "साधु,"सभी ऋषि बोल पड़े।

{पु0, बहु0, भूत0, विधा0, कर्तृ0,
वैश्वानर, पृष्ठ– 267 }

तो मैं उनके दर्शन से सारी मुरादें पा लूँगी।

{स्त्री0, एक0, भवि0, विधा0, कर्तृ0, शैलूष–74}

मैं तो सिर्फ उज्जैनी प्रासाद पर पुनः के सरिया ध्वजा को लहराते हुए देखना चाहता हूँ।

{पु0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, हनोज0, 34}

अगले दिन बड़े सबेरे जगेसर थाने चल पड़ा।

{पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0, अलग–
अलग वैतरणी– 254 }

2.5.4.2. मुख्य क्रिया– क्रियार्थक संज्ञा

वह फिर शरारत से मुस्कराने लगी थी।

{स्त्री0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0, गली0–71}

तभी महेश दरवाजे पर आकर यह कौतुक देखने लगा।

{पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0,
नीला चाँद, पृष्ठ– 310 }

दोनों भाइयों को उपधिया–परिवार से हटाकर पुरानी बखरी में भेजना होगा।

{पु0, बहु0, भवि0, विधा0, भाव0,
अलग–2 वैतरणी, पृष्ठ– 206 }

ननकू धाड़ मारकर रोने लगा।

{पु0, एक0, भूत0, विधा0, भाव0, शैलूष–59 }

मुझे आप लोग शान्त जीने दो।

{पु0, एक0, वर्त0, अनुनय0, कर्म0,
दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 438 }

"मैं तो गाँव लौट जाना चाहता हूँ युवराज।"

{पु0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0वैश्वानर–252}

2.5.4.3. मुख्य क्रिया – संज्ञा

आप अपने तीनों अंगरक्षकों के साथ स्वल्पाहार ग्रहण करें।

{पु0, एक0, बहु0, आदर0, वर्त0, कर्तृ0,
हनोज दिल्ली दूर अस्त– 143 }

आज गोविन्द ने मेरा अपमान किया है।

(पु0एक0, वर्त0, विधा0, कर्म0, नीला0–86)

अब नवयुवक महुअर खिलाड़ी को गर्व हुआ।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, गली0, – 60)

वह राजा भी चिता में भस्म हो गया।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, भाव0, वैश्वानर, पृष्ठ– 378)

2.5.4.4. मुख्य क्रिया – विशेषण

तयासी खानदान का भी बेजोड़ रूत्वा (प्रतिष्ठा) है।

(पु0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, दिल्ली–126)

लोचन गरम दूध आधी घड़ी में ले आयेगा।

(पु0, एक0, भवि0, विधा0, कर्तृ0, नीला–144)

लड़का काफी गोरा–चिट्ठा और नाक–नक्शा से भी आकर्षित था।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0, अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ– 143)

तू बड़ा बीहड़ पुरूष है रे इन्द्रसखा।

(पु0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, वैश्वानर–140

किरण ने आज जार्जेट की वही सिंदूरी रंग वाली साड़ी पहन रखी है।

(स्त्री0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, गली0–70)

अब आसमान ललछौंहा हो गया था।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0, शैलूष–15)

2.5.4.5. मुख्य क्रिया – कृदन्त

– वर्तमान कालिक कृदन्त

मगर विपिन को लगता है कि जब तक वह सोचता रहता है।

(पु0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, अलग–अलग वैतरणी पृष्ठ– 287)

.... रात–दिन तुम्हें रटती रहती हूँ।

(स्त्री0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, गली0–47)

उन लोगन का उतसव हमेशा चलतै रहता है।

(पु0, बहु0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, कर्म0, नीला चाँद, पृष्ठ– 68)

"आज के छोरे–छोरियां कितने निर्लज्ज होते जा रहे हैं।

(उभय0, बहु0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 54)

मैं परिक्रमा करते हुए आता हूँ।

(पु0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, हनाज0–120

"आप अभी भी पितामह वैसे ही सरस और कौतुकी बाना धारण करते जा रहे हैं।

(पु0, एक0, वर्त0, आदर0, विधा0, कर्त0 वैश्वानर, पृष्ठ– 247)

भूतकालिक कृदन्त

वाशेक को तलवारों के घेरे में इजलास के पास लाया गया।

(पु0 एक0, भूत0, विधा0, कर्म0, कर्तृ0 दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 279)

एक कल्पित सतय के ऊपर से उसके हिरण्यमय ढक्कन से हटा देना चाहता हूँ।

(पु0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, वैश्वानर–313

हाँ, अचानक मैं मुस्करा पड़ा, वत्स।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली दूर अस्त– 47– 48)

विपिन ने कनिया को अक्सर ममतालू माँ के रूप में ही देखा है।

(पु0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, अलग–अलग, वैतरणी, पृष्ठ– 124)

भाभी ने एकदम निर्जलावृत ठान लिया है।

(स्त्री0, एक0, आदर0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृ0– 132)

पूर्वकालिक कृदन्त

तभ सुखराम व्यंग्य से मुंह को बिगाड़कर हँसते हुए बोला।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, कतृ0, अलग–अलग, वैतरणी, पृष्ठ– 141)

तभी मयुनवां अपने भाई के सीने में फब्बारे की तरह गिरते खून को देखकर पगला गयी।

(स्त्री0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0,
नीलाचाँद– 192)

मै ईश्वर के यहां से केवल कर्म–भोग लेकर आयी हूं।

(स्त्री0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0,
नीलाचाँद – 158)

2.5.4.6.

कतिपय प्रयोगों में डॉ0 शिवप्रसाद सिंह ने दो कृदन्त अथवा उनके छायापदों को साथ–साथ लिया है।

वर्तमान कालिक कृदन्त : सार्थक – निरर्थक

कर्ज–वर्ज की बात न करो चांचिया।

(स्त्री0, एक0, वर्त0,(आदर), कर्तृ0,
अलग–2 वैतरणी–124)

विरोधी

सिकुड़ना–प्रसरणना ही प्राण की प्रक्रिया है।

(एक0, वर्त0, कर्तृ0, वैश्वानर–418)

इसलिये कि ग्राहक पकड़ने, पुड़िया बेचने वह रोज कमालपुर आती–जाती है।

(स्त्री0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0,
शैलूष – 272)

समजातीय

तभी दो पुरूष और लगभग पांच युवतियां चिल्लाती–चीखती भय से कांपती बाहर आयीं।

(स्त्री0, बहु0, भूत0, विधा0, कर्त0,
हनोज दिल्ली – 115)

दृशद् और मदालसा भी सिमती–सकुची रहीं।

(स्त्री0, बहु0, भूत0, विधा0, कर्तृ0,
वैश्वानर – 451)

2.5.4.6 दो क्रियार्थक संज्ञायें अथवा उनके छायापद साथ–साथ प्रयुक्त किये हैं–

समजातीय

"कि आपने श्रीकृष्ण मिश्र को सोचने–विचारने का एक नया दृष्टिकोण दिया।"

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0,
नीलाचांद – 215)

"वे महापुरूष हैं, खूब पढ़े–लिखे।"

(पु0, एक0, (आदर) वर्त0, विधा0, कर्तृ0,
गली आगे0– 134)

विरोधी

हमेशा लोग आते–जाते रहते हैं।

(पु0, बहु0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0,
अलग–2 वैतरणी–265)

सार्थक–निरर्थक

परताप सिंह पिस्तौल को उलटते–पुलटते रहे।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0, शैलूष–37)

2.5.5. सहायक क्रियायें

2.5.5.1. सक्

मै नहीं बोल सकता राजन।

(पु0, एक0, वर्त0, विधा0, कर्तृ0,
नीलाचांद– 125)

"जरूरत भर धन–दौलत मिल जाये तो मै इस जगह को छोड़कर क्यों नही जा सकता?

(पु0, एक0, भूत0, प्रश्न0, कर्तृ0,
दिल्ली दूर है – 363)

मै इधर कई रोज से किरण के यहां ट्यूशन करने नहीं जा सका था।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0,
गली आगे0 – 125)

चुक्

यह पूरा प्रसंग अर्थवाद से दूषित हो चुका है।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0,
वैश्वानर – 111)

एक सहस्त्र से ऊपर लोग मर चुके हैं।

(उभय0, बहु0, भूत0, विधा0, कर्तृ0, वैश्वानर–30)

किन्तु अब तो न्यायाधिकरण से भी श्रेष्ठ आपके निजी राजकीय न्यायालय में मै अपना अपराध स्वीकार कर चुका हूँ।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली–218)

उनके पिता यानी बसावन के चाचा बहुत पहले मर चुके थे।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, कर्तृ0, शैलूष–3)

2.5.5.2 "ह" औ "थ्" धातु से निष्पन्न क्रियाओं का प्रयोग भी उनके उपन्यासों में मिलता है:– ये स्वतंत्र व सहायक दोनों रूपों में प्रयुक्त होती हैं–

स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त

"तुम बड़े क्रुएल हो।"

(पु0, एक0, कर्तृ0, वर्त0, गली आगे–150)

मै शैव नहीं हूँ।

(स्त्री, एक0, वर्त0, कर्तृ0, नीलाचांद–283)

रेवती ब्राह्मणी युवती थी।

(स्त्री0, एक0, भूत0, कर्तृ0, शैलूष – 177)

सहायक रूप में प्रयुक्त–संयोगमूलक क्रियाओं के साथ

इसी से मै नहीं आता था यहां।

(पु0, एक0, कर्तृ0, भूत0, अलग–2 वैतरणी–38)

"आनन्द, तुम कुछ जानते हो।"

(पु0, एक0, वर्त0, कर्तृ0, हनोज दिल्ली0– 99)

संयुक्त क्रियाओं के साथ

पश्चिम कगार पर सब्बो नहा रही थी।

(स्त्री0, एक0, (आदर) कर्तृ0, भूत0, शैलूष–18)

दत्तात्रेय को धन्वन्तरि एक तक देख रहे थे।

(पु0, एक0, (आदर) कर्तृ0, भूत0, वैश्वार – 310)

"ह", निष्पन्न क्रियाएं मुख्य क्रिया के रूप में भी प्रयुक्त हैं

मैं पुनः दीपाधार के सामने झिलमिलाती सिद्धेश्वरी की मूर्ति के सामने खड़ा हो गया।

(पु0, एक0, कर्तृ0, भूत0, गली आगे0, पृ0- 133)

तब हमें किसान बनने के लिये विवश होना पड़ा।

(पु0, बहु0, कर्तृ0, भूत0, नीलाचाँद, पृ0- 150)

2.5.5.3. प्रसंगनुसार सहायक और मुख्य क्रिया

वह धीरे से उठा और गाँव की ओर चल पड़ा।

(पु0, एक0, भूत0, कर्तृ0, अलग-2 वैतरणी-108)

मैं सर्वदा सुनयना के व्यवहारों में दोष ढूढ़ता रहा हूँ।

(पु0, एक0, कर्तृ0, वर्तृ0, नीलाचाँद, पृ0- 267)

2.5.6. बलान्वित क्रियामूलक

2.5.6.1.

डॉ0 शिव प्रसाद सिंह ने अपने उपन्यासों में क्रिया अथवा क्रिया- वाक्यांश तथा ही, भी, भर, मात्र, तो, आदि अव्ययों का भी प्रयोग किया है। ये सभी अव्यय क्रिया वाक्यांश में मुख्य क्रिया के बाद तथा सहायक क्रिया के पूर्व आते हैं:-

-ही-

मैं तो केवल आधे लेकर ही आया था।

(पु0, एक0, कर्तृ0, भूत0, हनोज दिल्ली0, पृ0-21)

मैं इस मुकम्मल गैंग को ध्वस्त करके ही दम लूंगा।

(पु0, एक0, कर्तृ0, भवि0, गली आगे0, पृ0- 95)

-भी-

"काका" अपनी बेटी के रहते आपको ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए था।

(पु0, एक0, आदर0, भाव0, वर्तृ0(भूत), नीलाचाँद-282

दोनों अइया तो इसे भाँप भी नहीं पायीं।

(स्त्री0, बहु0, कर्तृ0, भूत0, वैश्वानर, पृ0- 208)

हमने क्या जुर्म किया है कि हमें भूखे-प्यासे सोने की भी आजादी नहीं है?

(उभय0, बहु0, कर्तृ0, वर्त0, शैलूष, पृ0- 181)

तो

कोई हँसने तो नहीं आयेगा।

(उभय0, एक0, कर्तृ0, भवि0, अलग0,- 380)

उसे तोड़ना तो महमूद के लिये भी भारी पड़ा।

(पु0, एक0, कर्म0, भूत0, दिल्ली दूर है, -436)

"सुन लाजो, जरा उठ तो।"

(स्त्री0, एक0, (आज्ञा), कर्तृ0, वर्त0, गली आगे0, 109)

आपने मेरे लिये केवल अपने को संकतों में ही तो डाला है।

(पु0, एक0, (आदर), कर्तृ0, भूत0, वैश्वानर, -277)

2.5.7. कृदन्त वाक्य विन्यास

2.5.7.1. क्रियार्थक संज्ञा

तेरा कहना स्वीकार कर लेगें या नहीं?"

(कर्म0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ - 85)

वह अल्तमश की बेटी रजिया के बुलाने पर आया है।

(करण0, भाव0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 150)

इसे मकान कहना ठीक न होगा।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग-2 वैतरणी, पृष्ठ- 159)

2.5.7.2. कर्तृवाचक संज्ञा

संज्ञाओं की भांति प्रयुक्त

ई पढ़ने वाली किताब नहीं है पंडिताइन।

(कर्म0, कर्तृ0, अलग-2 वैतरणी, पृष्ठ- 243)

रिपोर्ट लिखने वाला अंतिम वाक्य पर एक मिनट सोचता रहा।

(कर्ता0, कर्तृ0, शैलूष, पृष्ठ- 196)

विशेषणों की भांति प्रयुक्त

डा0 शिव प्रसाद सिंह ने कृदन्तों को विशेषणों के रूप में भी प्रयुक्त किया है-

कुल बत्तीस वर्ष की आयु और सम्पूर्ण भारत को उद्वेलित कर देने वाला सन्यासी।

(कर्ता0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ- 180)

तो शायद पाँच सौ रूपये के आकर्षण में फँसकर मै ऊपर-ऊपर से विदेशियों को घुमाने वाला निर्दोष गाइड रहता।

(कर्ता0, कर्तृ0, उ0, गली आगे मुड़ती है, पृ0-240)

एक न एक दिन सहस्त्रों योद्धाओं के सम्मिलित बल वाला कार्तवीर्य हमें निगलने का पूरा प्रयत्न करेगा।

(कर्ता0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ- 195)

पर कहीं–कहीं उन्होंने "वाला" के स्थान पर हार प्रत्यय का प्रयोग किया है–

देखनहरू लोग उपधिया जी के पास गये।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग–अलग वैतरणी, पृ0–212)

2.5.7.3. वर्तमान कालिक कृदन्त

क्रियाओं की भांति प्रयुक्त

मदारी से भी लोग जमूरे की हत्या न करने की प्रार्थना करते हैं।

(हनोज दिल्ली दूर अस्त, पृष्ठ – 92)

सम्राट आकाश से नहीं उतरते।

(नीलाचाँद, पृष्ठ– 119)

संज्ञाओं के रूप में

जब लहरों के थपेड़ों से डूबती–उतराती चचिया को मलकिन की दी हुई लाकेट याद आती रही।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग–अलग वैतरणी, पृ0– 90)

विशेषणों की भाँति

लालकोट के नीचे राय पिथौरा की समाधि पर डूबते सूरज की सुरमई आभा लौट रही थी।

(कर्ता0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 113)

निर्झर से बहती नदी की तरह वह सरिता गयी होगी सिन्धु में।

(कर्म0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृष्ठ– 190)

कनिया जलती दीपशिखा की तरह थी।

(कर्ता0, कर्तृ0, अलग–अलग वैतरणी, पृ0– 126)

क्रिया विशेषणों की भाँति प्रयुक्त

पर वह वैसे ही मुस्कराती हुई बोली।

(स्त्री0, एक0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृष्ठ– 180)

घोड़े से उतरते हुए वाशेक ने पूंछा।

(पु0, एक0, कर्तृ0, दिल्ली दूर है, पृ0–77)

द्विरूक्ति मूलक क्रिया विशेषणों की भांति भी कुछ प्रयोग मिलते हैं–

जुड़ावन के बारे में सोचते–सोचते उसकी आँखें छलछला आयीं।

(स्त्री0, एक0, (आदर) कर्तृ0, शैलूष, पृ0–45)

धन्वंतरि डरते–डरते कक्ष में पहुँचे।

(पु0, एक0, (आदर) कर्तृ0, वैश्वानर, पृ0–203)

2.5.7.4. भूतकालिक कृदन्त

संज्ञा के रूप में

मैं धीरे से हरीबाबू का दिया लिफाफा उठा लेता हूँ।

(कर्म0, कर्तृ0, गली आगे0, पृ0- 234)

पता नहीं यज्ञ-संस्कृति से जुड़े-श्रेष्ठ आर्यजन इस अवसर पर कैसी प्रथा का पालन करते हैं।

(कर्ता0, कर्तृ0, वैश्वानर, पृ0- 336)

विशेषणों की भाँति प्रयुक्त

पठारी धरती पर उन्हें घसीटते रस्सी पकड़े अश्वारोही दौड़ रहे थे।

(अधि0, कर्तृ0, नीलाचाँद, पृ0-458)

हम तो गीली मिट्टी या बालू से भी गनेस बना सकते हैं।

(कर्म0, (करण), कर्तृ0, हनोज दिल्ली0-199)

क्रिया विशेषणों की भाँति प्रयुक्त

परन्तु इस वैभव के अंबार के नीचे किरण की सिसकती हुई जिन्दगी को किसी ने देखा नहीं।

(स्त्री0, एक0, कर्तृ0, भूत0, गली0, पृ0-251)

वह दौड़ती हुई उस कक्ष में पहुँची।

(स्त्री0, एक0, कर्तृ0, भूत0, वैश्वानर, 402)

2.5.7.5. अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त

ये भी क्रिया- विशेषणों की भाँति प्रयुक्त हुए हैं, इनसे मुख्य-क्रिया के साथ होने वाले व्यापार की अपूर्णता सूचित होती है।

रावल-समर रोते हुए बोले।

(भाव0, भूत0, दिल्ली दूर है, पृ0-490)

वे हुक्के के नारियल में ओठों को सटाकर तमाखू सुड़कते हुए कहते।

(कर्तृ0, भूत0, अलग-अलग, वैतरणी, 159)

2.5.7.6. पूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त

दंगल बीते अभी तीन ही दिन हुए थे।

(शैलूष - 165)

उसने न तो रज्जुक के चरण छुए न अभिनन्दन किया।

(नीलाचाँद- 119)

2.5.7.7. तात्कालिक कृदन्त

पर मेरा त्रिगुट आपके सम्बोधन के साथ पितामह अजयहरि देव को प्रणाम करते ही पहचान गया था।

(कर्तृ0, भू0, दिल्ली दूर है, पृ0-459)

विशेष :: इस कृदन्त की पुनरूक्ति से कालगत स्थिति का बोध होता है-

उस वंशी सिंह का साढ़े सात सौ रूपये का हाथी जैसा बैल देखते ही देखते मर गया।

(कर्म0, भूत0, अलग-अलग वैतरणी-166)

2.5.7.8. पूर्व कालिक कृदन्त

शून्य प्रत्यान्त

मैं रूक जाता हूँ।

(कर्तृ0, वर्त0, वैश्वानर, पृ0 400)

मैं शहर के धुँधले आइने अपनी छाया देख रहा हूँ।

(कर्तृ0, वर्त0, गली आगे0, पृष्ठ-176)

रेवती मइया के हुकुम पर कह रही हूँ।

(कर्तृ0, वर्त0, शैलूष, पृ0- 43)

इन अर्न्द्वन्दों के भीतर जो मधु को पा लेता है, उसी का जीवन धन्य है।

(कर्म0, वर्त0, नीलाचाँद, पृष्ठ-117)

प्रत्ययान्त

बस भैया इतना कहके ऊ बन्दर तोप डाले कोठरी में घुस गया।

(कर्त0, भूत0, अलग-अलग वैतरणी-144)

दीप्ति इस दृश्य को देखकर स्वयं सकते में थी।

(कर्तृ, भूत0, दिल्ली दूर है, पृ0-137)

2.5.8. वाच्य :- हिन्दी क्रिया के चारों वाच्यों का उपयोग प्रतिपाद्य उपन्यासों में मिलता है-

2.5.8.1. कर्तृवाच्य

"बुड्ढा फिर आ रहा है।

(पु0, एक0, वर्त0, विधा0, अलग0, पृ0-34)

"मैं सिर्फ एक के सामने नाचना चाहती हूँ।

(स्त्री0, एक0, वर्त0, विधा0, गली0, पृ0-59)

गंगाधर लम्बी-लम्बी सांसें ले रहे थे।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, हनोज0, पृ0-41)

2.5.8.2. कर्मवाच्य

कर्तृ कर्मणि प्रयोग : इसमें डा0 शिवप्रसाद जी ने कर्ता का विकारी रूप दर्शाया है–

"आपने घण्टा क्यों बजाया?

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, वैश्वानर, पृ0–240)

उसने पत्र उठाया और अंगरखे में डाल दिया।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, हनोज0, पृ0–131)

भरत डोम अगस्त्य पुष्प दे गया था।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, नीलाचाँद–374)

कर्म कर्मणि प्रयोग

यहाँ उन्होंने कर्ता को यदि अपेक्षित हो तो करण कारक में अथवा द्वारा शब्द के साथ लाया है–

बाँसुरी वाले को रिझाने में बड़ी तपस्या करनी पड़ती है भइया।

(पु0, एक0, वर्त0, विधा0, गली0, पृ0–162)

उष्णीश को नागदंत खूँटी से उतारकर शिर पर रखा।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, वैश्वानर, पृ0–154)

रिपुंजय सभी स्थितियों में गोमती की आज्ञा मानने लगा था।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, नीलाचाँद–322)

इस लड़के को कबरी चौरा अस्पताल भेजने का बन्दोवस्त करेगें।

(पु0, एक0, भवि0, विधा0, शैलूष– 165)

कमजोर आदमी को नाले में झोंक दिया।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, अलग0, पृ0–281)

द्विकर्मक क्रियाओं के कर्मवाच्य में मुख्यकर्म उद्देश्य और गौणकर्म विकारी है–

ताश के पत्ते चारपाइयों पर बिछे रहें गये।

(पु0, बहु0, भूत0, विधा0, अलग0, पृ0–98)

उसका घर लाखौरी ईंटों से बना था।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, गली0, पृ0–121)

"मेरे घर में तेरे जैसे चौरों को किसने दावत दी?

(पु0, एक0, भूत0, प्रश्न0, दिल्ली0– 269)

सामने की विपणि रूद्राक्ष, तुलसी, चन्दन की मालाओं से भरी थी।

(स्त्री0, एक0, भूत0, विधा0, नीलाचाँद–589)

2.5.8.3. कर्तृ कर्मवाच्य

डॉ0 शिव प्रसाद सिंह ने उन रचनाओं का भी प्रयोग किया है जो विधान की दृष्टि से कर्तृवाच्य होती है, किन्तु अर्थ की दृष्टि से कर्मवाच्य–

कोठरी धुएं से भर गई।

(स्त्री0, एक0, भूत0, विधा0, गली0, पृ0–98)

यह हल एक घरी रात गये नधता है।

(पु0, एक0, वर्त0, विधा0, अलग0, पृ0–19)

तीनों बन्दूकें छीन ली गईं।

(स्त्री0, बहु0, भूत0, विधा0, शैलूष– 34)

पुष्पमाल, स्तवक आदि कक्ष में बिखरे पड़े थे।

(बहु0, भूत0, विधा0, वैश्वानर, पृ0–205)

आज जुझौती संभवतः अंतिम बार युद्ध में रक्त–स्नान करने जा रही है।

(स्त्री0, एक0, वर्त0, विधा0, हनोज0, 137)

2.5.8.4. भाववाच्य

कर्तृभावे प्रयोग

मैं छिपकर चन्दरवाड़ी हो आया हूँ।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, कुहरे0, पृ0–198)

आपने विद्याधरदेव का निमंत्रण ठुकरा दिया था।

(पु0, एक0, भूत0, विधा0, नीलाचाँद– 120)

गंगापार करने की सूचनाएं दिल्ली के कुछ महत्वपूर्ण लोगों ने मंगवाई थीं।

(पु0, बहु0, भूत0, विधा0, दिल्ली0, पृ0–150)

कर्मभावे प्रयोग

ड्राइवर को हुक्म दे दिया गया है।

(पु0, एक0, विधा0, भूत0, शैलूष, पृ0–165)

गाधि को उत्तर से संतोष नहीं हुआ।

(पु0, एक0, भूत0, निषेधा0, वैश्वानर– 380)

2.6. क्रियाविशेषण– वाक्य विन्यास

क्रिया–विशेषण के दोनों प्रकार मूल और यौगिक इनके उपन्यासों में प्रयोग किये गये हैं–

2.6.1. मूल क्रिया विशेषण

"चुप करो, मैं पाली का पाठ पढ़ने नहीं आई हूँ, यहाँ।

(गली आगे मुड़ती है, पष्ठ– 197)

"हाँ, मैंने उसे मुक्त कराया।

(नीलाचाँद, पृष्ठ– 380)

वहाँ घोर आंगिरस भी विद्यमान थे।

(वैश्वानर पृष्ठ– 50)

जरा इनके मुँह को ठंडे पानी से धोओ।

(शैलूष– 44)

2.6.2. क्रिया–विशेषण– द्विरूक्त

अपनी सायकल सहदेवराम चौकीदार को सँभलाकर थानेदार पीछे–पीछे आ रहा था।

(अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ– 256)

पर कभी–कभी जब हम बाप–बेटी झगड़ते थे।

(दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 305)

लोचन उछलता–कूदता सबसे आगे–आगे चल रहा था।

(नीला चाँद पृष्ठ– 283)

दूसरे में ज्यों–ज्यों बड़ा हो रहा था।

(गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ– 167)

अभी–अभी हम अपने समधियाने गये थे।

(शैलूष, पृष्ठ– 97)

2.6.3. क्रिया–विशेषण युग्मक

वह मुझसे बहुत ज्यादा भेदक दृष्टि रखता है।

(शैलूष, पृष्ठ– 118)

वह सब–कुछ जानता है।

(नीला चाँद, पृष्ठ– 510)

मुझे इस दिन चक्रपालित जी के कहे हुए सभी शब्द ज्यों के त्यों याद हैं।

(वैश्वानर, पृष्ठ– 258)

2.6.4. यौगिक क्रिया-विशेषण

2.6.4.1. क्रिया विशेषण + परसर्ग

आपको नहीं मालूम था कि इस साल पीछे से बन्दोवस्त मेरे नाम चल रहा है।"

(अलग-अलग वैतरणी, पृष्ठ- 196)

आज किरण के यहाँ से लौटा तो चित्त उद्विग्न था।

(गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ- 128)

तुम्हारी चुटिया में कौन सा वेद बँधा है।

(नीला चाँद, पृष्ठ- 248)

2.6.4.2. क्रिया विशेषण + विशेषक

तो फिर तुमने यह कबका वैर निकाला?

(अलग-अलग वैतरणी, पृष्ठ- 198)

"कहाँ के रहने वाले हो।"

(दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 335)

2.6.4.3. क्रिया विशेषण (बलान्वित तल अन्तर्निहित)

तभी पिपिहरी की आवाज गूँजी।

(शैलूष, पृष्ठ- 274)

अभी पढ़ाई शुरू नहीं हुई।

(गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ- 18)

मैंने तो तुमसे कभी कहा नहीं।"

(अलग-अलग वैतरणी पृ0- 350)

2.6.4.4. क्रिया विशेषण + बलान्विति मूलक तत्व

-ही-

वैसे ही प्रतर्दन का कार्य बाबा धन्वन्तरि भी नहीं कर पायेगें।

(वैश्वानर, पृष्ठ- 212)

-तक-

मनोबल चाहता तो अब तक धन्ना सेठ बन गया होता।

(शैलूष, पृष्ठ- 207)

-भी-

मिसिराइन अब भी सुबह वाली हँसी के सुगन्धित प्रभाव में खोयी-खोयी थीं।

(अलग-अलग वैतरणी, पृष्ठ- 203)

–तो–

"अब तो चुप हो जाओ।

(शैलूष, पृष्ठ– 281)

वह चौके में पहुँची तो आँसुओं से भीगी माधवी को रोटियाँ बनाते देखा।

(वैश्वानर, पृष्ठ– 218)

–सा–से–सी–

जरी–सी ढ़िलाई हुई नहीं कि बेवफा की तरह हर राजा महाराज, सुलतान, सुलताना को झटकती रही है।

(दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 306)

2.6.4.5 क्रिया विशेषण (द्विरूक्त मध्य सर्गक)

हमें इस युद्ध में कम–से–कम पचीस हजार प्रशिक्षित अश्व मिलने चाहिए।

(नीला चाँद, पृष्ठ– 637)

तुमने कहा था अल्हड़ कि एक बार कभी–न–कभी हर युवती को यह रोग होता है।

(वैश्वानर, पृष्ठ– 93)

2.6.5 अन्य शब्द भेद– क्रिया विशेषण

2.6.5.1. संज्ञाएं– क्रिया विशेषण

क्यों जोगीराज, आज तो बड़ा शुभ दिन है।

(दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 364)

उधर विपिन ने कल रात धीरे से पुष्पा को रूपये थमा दिये।

(अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ– 109)

प्रातःकाल उषा की किरणें सोनजुही के फूलों से प्रकृति की उपासना कर रही थीं।

(वैश्वानर, पृष्ठ– 225)

2.6.5.2. संज्ञाएं + अन्य तत्व – क्रिया विशेषण

दिन भर घिसते–घिसते हाथ कट गया।

(अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ– 218)

रिपुंजय को लेकर संध्या के पहले काशी लौट जाऊँगा।

(नीलाचाँद, पृष्ठ– 167)

बड़ी रात तक मैं छत पर घूमता रहा।

(गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ– 161)

2.6.5.3. सर्वनाम- क्रिया विशेषण

मैंने क्या देखा और क्या मुट्ठी में बन्द किया, यह तो सुबह देखियेगा।

(शैलूष, पृष्ठ- 226)

बाजार में कुछ सामान खरीदे।

(दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 318)

तुम स्वयं क्यों पी गये अल्हड़।

(वैश्वानर, पृष्ठ- 92)

दूर बहुत तल में छिपा कोई मंडवा जल रहा है।

(गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ- 271)

2.6.5.4. सर्वनाम + अन्य तत्व

अन्य तत्व + सर्वनाम - क्रिया विशेषण

महा शिवरात्रि को मध्याह्न में कर्ण अपने को सप्तम चक्रवर्ती बनने की घोषणा करेगा।

(नीलाचाँद, पृष्ठ- 173)

सच बंधुय, तुमने मुझे क्या से क्या बना दिया।

(गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ- 254)

मैं स्वतः इसी बीच जमदग्नीश्वर मन्दिर का शिलान्यास कराऊँगा।

(वैश्वानर, पृष्ठ- 400)

2.6.5.5. विशेषण- क्रिया विशेषण

"पितृव्य, मैं केवल एक प्रश्न करना चाहती हूँ।

(नीला चाँद, पृष्ठ- 175)

"वह ऐसे समझ पाया मातः कि वे जयदेव कवि के गीत गोविन्द का एक गान गा रहीं थीं।

(हनोज दिल्ली दूर अस्त, पृष्ठ- 154)

मगर चेहरे पर कैसी अद्भुत मुस्कराहट थी।

(अलग-अलग वैतरणी, पृष्ठ- 266)

तुमने वचन दिया था कि जुड़ावन के जाने के पहले मैं जाऊँगी।

(शैलूष, पृष्ठ- 141)

अगर ये उनके दरम्यान के रिश्ते को समझते तब तो उन्हें आशिक से ऊँचा कोई शब्द खोजना पड़ता।

(दिल्ली दूर है, पृष्ठ- 204)

2.6.5.6. विशेषण + अन्य तत्व
अन्य तत्व + विशेषण – क्रिया विशेषण

कम–से–कम तू तो ऐसा न किया कर।

(शैलूष, पृष्ठ– 143)

वे सारी बातें तुझे ठीक–ठाक बता सकते हैं।

(नीला चाँद, पृष्ठ– 387)

2.6.5.7. क्रिया – क्रिया विशेषण

पर वह बदस्तूर उत्तर दिशा की ओर छलछलाता बहा जा रहा था।

(गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ– 271)

अब चार घंटे से रोये चले जा रहे हैं।

(वैश्वानर, पृष्ठ – 132)

क्या मै इस मुर्दा जगह के बदलने के बजाय खुद उसी का एक अंग नहीं बनता जा रहा हूँ?

(अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ– 133)

2.6.5.8. क्रिया + क्रिया, क्रिया + अन्य तत्व
अन्य तत्व + क्रिया – क्रिया विशेषण

नारनौल पहुँचते–पहुँचते शाम हो आई।

(दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 271)

प्रतर्दन को अपने जाने–पहचाने गोपनीय स्थानों के ठौर–ठिकानों का ज्ञान बहुत स्पष्ट था।

(वैश्वानर, पृष्ठ– 432)

पेड़ों के हिलते– काँपते पत्ते थिर हो जाते थे।

(अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ– 111)

इसलिये लुक–छिपकर यहाँ आ जाती हूँ।

(शैलूष, पृष्ठ– 159)

2.7. सम्बन्ध सूचक – वाक्य विन्यास

डॉ0 शिव प्रसाद सिंह ने इनका प्रयोग अपने उपन्यासों में वाक्य की इकाइयों में सम्बन्ध स्थापित करने के लिये किया है।

इन सम्बन्ध–सूचकों के पूर्व का–की–के रा–री–रे विशेषक आये हैं। कुछ इन विशेषकों के बिना भी प्रयोग में लाये गये हैं:–

2.7.1. का–की–के, रा–री–रे, के साथ प्रयुक्त

तो क्या अज्ञात वैष्णव साधु की तरह मैं भी वहाँ चेताने जाता हूँ?

(संo–संo– सर्वनाम–क्रियार्थक संo
गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ– 46)

इसी वर्ष हमारी सीमा के भीतर भगवती योगमाया का मन्दिर भी सम्मिलित कर लिया जायेगा।

(संo+संo+संo+भूतकालिक कुदंत)
(वैश्वानर पृष्ठ– 434)

तुम्हारे सामने आदमी की देह होगी, पकाड़ का तना नहीं।

(सर्व – संo – संo, शैलूष– 94)

मैं अब जिन्दा रहने लायक नहीं बचा बेटी।

(के–का लोप कियार्थक संo– संo
दिल्ली दूर है, पृष्ठ– 411)

2.7.2. से– युक्त प्रयोग

कहीं किसी से झगड़ा–वगड़ा हो जाये तो लाठी लेकर सबसे पहले खड़ा हो जाता था।

(सर्वo – क्रिया अलग–अलगo, 161)

2.7.3. स्वतंत्र प्रयोग

एक पल रूक कर वह फिर बोला।

(संo – संo नीलाचाँद, पृo–296)

मैंने अपनी साधना के एक अंश मात्र से एक चुटकी बेसुधी प्राप्त कर ली थी।

(संo – विशेषण + संज्ञा वैश्वानर–385)

आनन्द ने अपनी जेब से एक चौकोर छोटी–सी डिबिया निकाली।

(विशेषण – संo दिल्ली दूर है– 244)

2.7.4. मिश्र स्वतन्त्र प्रयोग

वजीफे के ढ़ाई सौ रूपये तो निश्चित ही मिल जायेंगे।

(सं – क्रिया विo, गली आगेo– 78)

2.8. समुच्चय बोधक – वाक्य विन्यास

डॉo शिव प्रसाद जी ने मूल और यौगिक के साथ कुछ अन्य शब्द भेदों कौं भी समुच्य बोधक अव्ययों की भांति प्रयोग किया है–

2.8.1. मूल

आप मेरी भ्रातृजाया हैं अतः माँ स्वरूपा हैं।

(वाक्य वाक्य वाक्य संकेतक
वैश्वानर, पृष्ठ- 42)

हमारे संस्कारों में इन्द्र बड़ा महत्व रखता है या विष्णु के अवतार राम और कृष्ण?

(वाक्य वाक्य दिल्ली दूर है, -192)

देखिए न यह शंख दक्षिणावर्त है अथवा यह शुक्ति वज्रमणि (हीरे) की तरह चमक रही है।

(वाक्य V वाक्य# वाक्य संकेतक,
नीला चाँद, पृष्ठ- 182)

वह पुत्र सद्पुत्र हो ही नहीं सकता जो पिता के अज्ञान प्रेम से रूष्ट न हो.....।"

(वाक्य V वाक्य# वाक्य संकेतक, हनोज०)

महाकाल की तथा अन्य मूर्तियों के साथ दिल्ली लौट आया।

(वाक्य V वाक्य# वाक्य संकेतक,
कुहरे में युद्ध, पृष्ठ- 33)

बेटे चीरहरण में जब द्रौपदी ने बुलाया तो वे नहीं आये क्योंकि बैकुंठ बहुत दूर था।

(वाक्य V वाक्य V वाक्य# वाक्य संकेत
शैलूष, पृष्ठ- 175)

जमाना बदल गया, मगर आप लोगों का रवैया नहीं बदला।

(वाक्य V वाक्य # वाकय संकेतक
अलग- अलग वैतरणी पृष्ठ- 261)

मैंने सन्तोष की साँस ली, यानि गिरफ्तार होने वालों की लिस्ट में मेरा नाम नहीं है।

(वाक्य V वाक्य # वाक्य संकेतक
गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ- 91)

2.8.4. मूल युग्मक तथा मूल एकाकी विविक्त

सो भी इसलिये कि कहीं कनिया खाना न खाने की बात का कुछ गलत सही अर्थ न लगाने लगे।

(वाक्य संकेतक# वाक्य V वाक्य
अलग-अलग वैतरणी, पृष्ठ- 392)

ऐसी आत्मिक प्यास ही इसका निर्णय करेगी कि तू जिसे प्रेम कहता है वह तेरा अर्धांश है या नहीं?

(वाक्य V वाक्य V वाक्य# वाक्य संकेतक
गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ - 131)

अला <u>या तो</u> वंचना करता है <u>या तो</u> किसी न किसी जुर्म में फंसा देता है।

(वाक्य + वाक्य # वाक्य संकेतक

शैलूष, पृष्ठ– 175)

ब्रह्मपुरी के ये नवयुवक संस्कारहीन <u>इसलिये</u> हुए, <u>क्योंकि</u> उन्होंने देखा <u>कि</u> उनके परिवार के प्रौढ़ <u>अथवा</u> वृद्ध लोग ऐसा ही आचरण करने लगे हैं।

(वाक्य + वाक्य + वाक्य # वाक्य संकेतक

नीलाचाँद, पृष्ठ– 380)

2.8.5. <u>अन्य शब्द भेद– युग्मक</u>

कृपा दृष्टि बरसाते अभय मुद्रा में बाबा धन्वन्तरि की छवि ऐसी लगती थी <u>कि मानों</u> बोल पड़ेगी।

(वाक्यांश + वाक्य + वाक्य # वाक्य संकेतक

वैश्वानर, पृष्ठ– 400)

<u>जैसे</u> इतना किया <u>वैसे</u> एक नकार और सही।

(वाक्य + वाक्य # वाक्य संकेतक

अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ– 396)

2.8.2. <u>मूल– एकाधिक सम विविक्त</u>

नहीं बन्धु, हम <u>या</u> तो पृथ्वी पर बैठते हैं <u>या</u> आस्तरण विहीन काष्ठ के आसन पर।

(वाक्य + वाक्य # वाक्य संकेतक

नीलाचाँद, पृष्ठ– 495)

<u>न</u> उनमें व्यंग्य था, <u>न</u> कटाक्ष, <u>न</u> चालवाजी।

(वाक्य + वाक्य + वाक्य # वाक्य संकेतक

अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ– 113)

हमारी <u>और</u> उनकी सेनाओं का अनुपात पहले एक <u>और</u> दो का था <u>और</u> अब वह एक <u>और</u> चार का हो गया है।

(वाक्य + वाक्य # वाक्य संकेतक

हनोज दिल्ली0,– 158)

2.8.3. <u>मूल– एकाधिक विषम विविक्त</u>

सच तो यही है <u>कि</u> यह जीवन अग्नि <u>और</u> सोम के समन्वय से बनता है।

(वाक्य + वाक्य # वाक्य संकेतक

वैश्वानर पृष्ठ– 269)

पर उसी गरूड़ पर अगर मेरे जैसे सपोले को लादेगा तो यह सिर्फ तेरा नहीं बल्कि पक्षिराज का अपमान होगा।

(वाक्य V वाक्य # वाक्य संकेतक
शैलूष पृष्ठ– 175)

तब तो सोचा कि खाली जयन्ती होगी और चले आए गीत सुनने।

(वाक्य V वाक्य # वाक्य संकेतक
गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ– 182)

2.8.6. अन्य शब्द भेद– एकांकी

"लाओ भाई, रामानन्द का प्रसाद है सो उसकी उसकी प्रतिष्ठा तो रखनी ही होगी।

(वाक्य V वाक्य # वाक्य संकेतक
गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ– 182)

.... सों तू दुलारी है, दुर्ललिते।"

(वाक्य V वाक्य # वाक्य संकेतक
नीला चाँद, पृष्ठ– 245)

सो उस दिन भी जग्गन मिसिर कस्बे के हाईस्कूल से लौट रहे थे।

(वाक्यांश V वाक्यांश # वाक्य संकेतक
अलग–अलग वैतरणी, पृष्ठ– 209)

2.8.7. अन्य शब्द भेद– विविक्त

वरना मैं कौमुद को बुलाकर इसी खाण्डिका (खिड़की) से कुदकर आरोहण करूँगा और कहीं किसी अज्ञात देश में चला जाऊँगा।

वाक्यांश V वाक्यांश V वाक्य # वाक्य संकेतक
वैश्वानर, पृष्ठ– 401)

"श्यामिका जब पहाड़ी रास्ते से चलती है तो वह कहीं से दिख नहीं सकती।

(वाक्य V वाक्य # वाक्य संकेतक
हनोज दिल्ली दूर अस्त– 203)

तब से लेकर अब तक जाने कितना पानी गुजर गया।

(वाक्यांश V वाक्य # वाक्य संकेतक
गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ– 113)

2.8.8. मूल तथा अन्य शब्द भेद – विविक्त

अगर तुमने मुझे दुबारा नौकरानी कहा तो ये नट तुम्हें हिमालय से लेकर विंध्याचल तक और गुजरात से लेकर बंगाल तक कमर पेटी में छुरा खोंसे तक तक ढूढेंगे।

(वाक्य V वाक्यांश V वाक्यांश # वाक्य संकेतक
शैलूष पृष्ठ– 208)

यदि मिल गया तो मेरा प्रचंड मुझे मिल जायेगा।

(वाक्य V वाक्य # वाक्य संकेतक
नीलाचाँद, पृष्ठ– 144)

2.8.9. अन्य शब्द भेद + मूल

यहाँ तक कि देवता उस रहस्यमयी विश्वमाया को नाना रूपों में वर्णित करते हैं।

(वाक्यांश V वाक्य # वाक्य संकेतक
वैश्वानर पृष्ठ– 142)

जब तक बाबू सुरजू सिंह हृदय में लगे मुक्के की बेहोशी से उबरकर कुछ कहने–करने की सोचते, तब तक तो हरिया गली के मोड़ में खो चुका था।

(वाक्य V वाक्य # वाक्य संकेतक
अलग –अलग वैतरणी, पृष्ठ– 99)

2.8.10. निष्कर्ष

इस प्रकरण में संश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास पद स्तरीय अनुशीलन से यह निष्कर्ष निकलता है कि डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों मं संज्ञा पद के सभी भेदों-व्यक्तिवाची, जातिवाची, द्रव्यवाची, समूहवाची, भाववाची और विशिष्ट धर्मिता युक्त व्यक्तिवाची जातिवाची संज्ञा पदों पर आधारित सभी वाक्य संरचनाओं की छानबीन की गयी। ये वाक्य संरचनाएँ सभी लिंग, वचन, कारकों में उपलब्ध होती है। सर्वनाम वाक्य विन्यासों की भी यही प्रायोगिक स्थिति है। डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में सर्वनामों के आधार पर बनी वाक्य संरचनाएँ अपने सभी लिंग, वचन, और पुरुप में उपलब्ध होती हैं। 'गली आगे मुड़ती है' उपन्यास की आत्मकथात्मक शैली के कारण इसमें उत्तम पुरुष वाची सर्वनाम पर आधारित वाक्य संरचनाएँ सर्वाधिक है। वहीं 'अलग-अलग वैतरणी' में अन्य पुरुष वाची सर्वनामों पर आधारित। विशेषण, क्रियाविशेषण, क्रिया तथा अन्य कारकीय संरचनाओं पर आधारित वाक्य विन्यास के सभी रूप हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में मिलते है। यहाँ तक इन्हीं वाक्य संरचनाओं पर विचार किया गया। अगले प्रकरण में संश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास के अन्तर्गत वाक्य स्तरीय संरचनाओं पर विचार किया जाएगा।

❑❑❑

* प्रकरण– 3 *

संश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास

वाक्य स्तरीय

–वाक्य स्तरीय संरचनाएं

–साधारण वाक्य

–मिश्र वाक्य

–संज्ञा उपवाक्य

–विशेषण उपवाक्य

–क्रिया विशेषण उपवाक्य

–उपवाक्य क्रम

–संयक्त वाक्य

–अर्थगत् वर्गीकरण

–काल वाचक

–कारण अथवा परिणाम सूचक उप सम्बन्ध

–विरोध प्रदर्शक

–वाक्य योजना

–वाक्यांश

3.6. प्रयोग एवं वाक् पद्धतियाँ

–कहावतें और लोकोक्तियाँ

प्रकरण – 3

संश्लेषणात्मक वाक्य – विन्यास

वाक्य स्तरीय

3.1. वाक्य स्तरीय संरचनाएं

हिन्दी व्याकरण में वाक्य स्तरीय संरचनाओं का गहन विवचेन हुआ है। वाक्य की परिभाषा, वाक्य का स्वरूप, वाक्य के प्रकारों पर पीछे संकेत रूप में विचार किया जा चुका है। यहाँ अपने विवेचन को सुगम बनाने के लिए उन पर कुछ और विचार किया जा रहा है।

हिन्दी व्याकरण के अनुसार वाक्य, उपवाक्य और वाक्यांश के आधार पर वाक्य स्तरीय संरचनाओं का निर्माण होता है। वाक्यांश वाक्य के वे सक्रिय आधारभूत अवयव हैं, जिनकी व्यवस्थित योजना से वाक्य– संरचना सम्भव होती है। वाक्यांश परस्पर संबद्ध एक से अधिक पदबंधों का वह समूह होता है जिससे पूर्ण विचार का बोध तो नहीं होता किंतु, किसी भी तथ्य का संश्लिष्ट बोध हो जाता है। इन्हीं वाक्यांशों की संयोजित समष्टि से वाक्य का निर्माण होता है।

संरचना की दृष्टि से हिन्दी में तीन प्रकार के वाक्य माने गये हैं। इनके नाम हैं– साधारण वाक्य मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य। वाक्यों का एक वर्गीकरण सरल वाक्य और असरल वाक्य के रूप में भ किया जाता है। सरल वाक्य जिसमें एक उद्देश्य– विधेय हो और एक ही क्रिया पद हो। असरल वाक्य को दो में बाँटा गया है: मिश्रित और संयुक्त।

अगर किसी वाक्य में एक वाक्य स्वतंत्र और मुख्य हो शेष उपवाक्य उसके आश्रित हों तो इसे मिश्रित वाक्य कहेंगे किन्तु, अगर किसी वाक्य में एक से अधिक स्वतंत्र वाक्य हों और वे और, आदि योजक चिन्हों से जुड़े हों तो उसे संयुक्त वाक्य कहेंगे।

3.2. साधारण वाक्य

डॉ० शिव प्रसाद सिंह की वाक्य संरचना पर विचार करने के दौरान सरल वाक्यों पर ही विचार होता रहा है। साधारण वाक्य का महत्व उसी प्रकार से है जिस प्रकार लक्षणा और व्यंजना में अभिधा का। सभी वाक्यों का रूपान्तरण साधारण वाक्यों में सम्भव है। संज्ञा और क्रिया वाक्य के अनिवार्य तत्व हैं। प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी–न–किसी रूप में इन दोनों तत्वों की सत्ता वाक्य में रहती ही है। इन्हीं को उद्देश्य अथवा कर्ता और विधेय नाम दिया जाता है। डॉ० शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में साधारण वाक्यों का प्रचुरता से प्रयोग हुआ है किन्तु जहाँ अन्तर्द्वन्द्व, मन की जटिलता की अभिव्यक्ति का प्रसंग आया है वहाँ उनकी प्रवृत्ति मिश्र अथवा संयुक्त वाक्य-संरचना की ओर मुड़ गयी है। सरल वाक्यों के कतिपय उदाहरण निम्नवत् है:–

– "ऊ तो सिरिया खातिर लेती रही," मंजुशिमा, 15

यहाँ पर "ऊ तो" के बाद "मैं" कर्ता–उद्देश्य लुप्त है और आगे के अंश विधेय है।

– डॉ0 इकबाल नारायण को लोगों ने अपने–अपनी दृष्टियों से देखा होगा।"

मंजुशिमा, पृष्ठ 15

यहाँ पर लोगों ने उद्देश्य, अपनी–अपनी दृष्टियों से कर्ता वाक्यांश विस्तार तथा डा0 इकबाल नारायण को देखा होगा– यह पूरा–का–पूरा अंश विधेय के अन्तर्गत आता है।

– भूतपूर्व कुलपति से मैं कई बार मिल चुका हूँ। मंजुशिमा, पृष्ठ 15

2 1 2

यहाँ पर मैं उद्देश्य है और शेष अंश विधेयांश हैं।

– हिन्दुओं के धर्म को बचाने के लिए खालसा की स्थापना हुई।

2 1

इस वाक्य में "खालसा की स्थापना" वाक्यांश उद्देश्य पद स्थानीय है और शेष वाक्यांश विधेयान्तर्गत आएगा।

डॉ0 सिंह ने कई सरल वाक्यों की योजना ऐसी की है जिनमें उद्देश्य का स्थान नाम वाची संज्ञा ले लेती है। देखने में लगता है जैसे उद्देश्य पद है ही नहीं।

– सब कुछ स्वच्छ धवल लगने लगा। मंजुशिमा पृष्ठ 17

यहां "सब कुछ" उद्देश्य, स्वच्छ, धवल लगने लगा विधेय है।

– मैं 10 नम्बर के बेड के समानान्तर रखी बेंच पर बैठ गया। मंजुशिमा, पृष्ठ 17

इस वाक्य में उद्देश्य पद "मैं" शेष विधेय पद कर्म का विस्तार और क्रिया पद है।

– डॉक्टर शैलेन्द्र चलने में थोड़ा लँगड़ाते थे।

1 2 3

इस वाक्य में उद्देश्य पद डॉक्टर विशेषक के साथ "शैलेन्द्र" संज्ञा पद है और "चलने में थोड़ा लँगड़ाते थे" विधेय है। चलने में कर्म का विस्तार है।

अभी तक के अनुशीलन में साधारण वाक्यों का ही विवेचन होता रहा है इसलिए यहाँ मिश्रित वाक्य संरचना का अनुशीलन किया जा रहा है।

3.3. मिश्र वाक्य

मिश्र वाक्य की संरचना कम–से–कम दो उप वाक्यों से होती है, जिनमें एक मुख्य/स्वतंत्र उप वाक्य होता है और दूसरा गौण/ आश्रित उपवाक्य। मुख्य तथा आश्रित उप वाक्यों में परस्पर आश्रय

आश्रित संबध होता है। विचार मात्र सरल वाक्य के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है किन्तु, शर्त यह है कि विचार मिश्रित व जटिल न हो। जीवन में संघर्ष अधिक, सपाटता कम होती है। जीवन कभी सरल रेखा में गतिशील नहीं होता है, नदी के प्रवाह की तरह इसमें भी कई मोड़ होते हैं। उपन्यास कोई व्याकरण का ग्रन्थ नहीं है कि इसमें सारे काम नियम से ही हों, कुछ नियम से होता है तो कुछ वैनियम भी होता है। लेकिन जीवन की जटिलता की तरह उपन्यास की वाक्य- संरचना भी जटिल और मिश्रित होती है। इसमें व्यक्त विचार दूसरे विचारों पर आश्रित होते हैं इसलिए इन विचारों को प्रधान विचार पर आश्रित उपवाक्य बनाकर व्यक्त किया जाता है। ऐसी स्थिति में वाक्य स्वतः ही मिश्रित हो जाता है। साधारण वाक्यों की अपेक्षा मिश्र वाक्य कुछ विशिष्ट अर्थ देते हैं। अर्थ की दृष्टि से अधीन उपवाक्य का प्रयोजन है, शब्दभेद में निहित अर्थ पर बल देना। मिश्र वाक्य के तीन भेद होते हैं: संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य और क्रिया विशेषण उपवाक्य। इन तीनों प्रकार के उपवाक्यों से मिलकर मिश्रित वाक्य की संरचना होती है।

3.3.1. संज्ञा उपवाक्य

जो उपवाक्य वाक्य में संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो सकते हैं उन्हें संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। प्रायः संज्ञा उपवाक्यों के प्रारम्भ में "कि" योजक का प्रयोग होता है, लेकिन कहीं-कहीं इसका लोप भी दृष्टिगोचर होता है। कहीं लोप वक्ता की इच्छा पर होता है और कहीं-कहीं वाक्य की स्थिति पर। अगर इसका प्रयोग मुख्य वाक्य से पहले हो तो "कि" का लोप ही रहेगा। जैसे:

(1). उसने कहा (कि) गाड़ी छूट गई ("कि" का ऐच्छिक लोप सम्भव)

(2). आप यहाँ के राजा हैं यह कौन नहीं जानता? (कि पर प्रतिबंध)

संज्ञा उपवाक्य सामान्य रूप से वाक्य में कर्ता या कर्म के स्थान पर प्रयुक्त हो सकते हैं लेकिन वितरण- व्यवस्था में वे कभी-कभी कुछ विशिष्ट भाववाचक संज्ञाओं या मात्र "यह" सर्वनाम या "यह" + भाववाचक संज्ञाओं के पूरक (या समानाधिकारण) के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण:

कर्तास्थान (3). लगता है कि वह काफी बीमार है।

(4). यह सच है कि लड़की निर्दोष है। ("यह" का पूरक)

(5). आपकी यह आशा कि मैं घर छोड़कर चली जाऊँगी कभी पूरी नहीं होगी। ("यह आशा का पूरक)

कर्मस्थान (6). उसने कहा कि गाड़ी छूट गई।

(7). मुझे यह विश्वास है कि वह अब नहीं लौटेगा ("विश्वास" का पूरक)

(8). मै यह नहीं जानता कि वह कब फोन करेगा ("यह" का पूरक)

संज्ञा उप वाक्य केवल मुख्य विधेय का ही नहीं बल्कि मुख्य उपवाक्य के किसी कृदंत का कर्म या परसर्गीय पदबंध का पूरक बनकर भी आ सकता है, जैसे:

(9). मैं यह देखकर दंग रह गया कि वे लोग अभी तक यहीं डटे हुए हैं। (कृदंत का कर्म)

(10). वह इस सोच में डूबा हुआ है कि लड़की से केसे पीछा छुड़ायाजाए।

(परसर्गीय पदबंध का पूरक)

कभी–कभी शैलीगत् कारणों से मुख्य उपवाक्य में "ऐसा" या "क्या" सर्वनाम का प्रयोग भी होता है, जैसे:

(11). आलकल ऐसा होता है कि सुबह चार बंजे ही मेरी नींच खुल जाती है।

(12). उस दिन मैंने क्या देखा कि चार–पाँच लोग एक बूढ़े को मार रहे हैं।

डॉ० शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में संज्ञा उपवाक्यों के विविध रूप प्रयुक्त हुए हैं जिनका विवेचन नीचे किया जा रहा है।

मेघनाद जैसा तामसिक व्यक्ति भी स्वीकार करता है कि नारी हन्तव्या नहीं है।

(दिल्ली दूर है, 331)

मैंने पुष्प इसलिये नहीं चढ़ाये कि वे योगी थे।

(वैश्वानर– 310)

3.3.2. संज्ञा उपवाक्य के विविध रूप

–संभवतः कंदार्य की यही इच्छा है कि मैं इस वंश की विध्वंस– सभा का सपापतित्व करूँ।

(कुहरे में युद्ध– 13)

–उन्होंने अपनी पगड़ी इस तरह बाँध रखी थी कि सहसा देखकर किसी तुर्क वजीर का भ्रम भ्रम होता था। (कुहरे में युद्ध – 13)

–यह आपके मुल्क की रवायत है कि शाह को राजयोग कहते हैं। (कुहरे में युद्ध– 11)

–कल को हमारे गुरू–पुत्र कहेंगे कि यवन ज्योतिष के अनुसार तुर्क की बीबी हिन्दु नारी ही बन सकती है।

–मैं नहीं समझता कि जुझौती ने इस बार जिस ढंग से सेनापति आनन्द वाशेक और राजा और राजा अजय हरि के नेतृत्व में तुरूष्कों की छल रणनीति को छल से उत्तर दिया है उसे भूलकर वे बहुत जल्दी जुझौती पर, आक्रमण करने का साहस कर सकेंगे।

कुहरे में युद्ध – 9)

–ऐसा कभी मत सोचना, राजकुमार कि तुम एक न्यासी से अधिक कोई और अधिकार रखते हो। (कुहरे में युद्ध – 46)

–कहा जाता है कि मेरे गुरू वल्लाल सेन ने अमात्य को आज्ञा दी थी कि सही जन्म का समय यदि कहीं से अस्थिर लगे तो योगिनी रामदेवी से गर्भ स्तम्भन के लिए निवेदन करेंगे। (कुहरे में युद्ध – 24)

–अमात्य ने कहा कि देवि अभी जन्म हो तो बालक राज सिंहासन पर बैठ नहीं पाएगा। (कुहरे में युद्ध – 24)

–कौन कब सौन्दर्य का दुर्ग जीत लेगा, कहना असम्भव है। (कुहरे में युद्ध– 25)

इस वाक्य में मुख्य उपवाक्य बाद में आया है और इसमें "कि" लुप्त है। इसका अन्वय यों होगा–

–यह कहना असम्भय है कि कौन कब सौन्दर्य दुर्ग जीत लेगा।

–अगर जन्मांग का फल इतना कलुषित है कि वह मेरी यशः काया को अपवित्र करने वाला है, तो हो। (कुहरे में युद्ध– 25)

–इसमें संदेह नहीं कि जनता को अपार कष्ट हुआ। धन–सम्पत्ति की विपुल हानि हुई। लोगों की चीत्कारों में खर्लाजयों की दुदन्तिता की कहानियाँ रो–रोकर गाई जा रही थीं। (कुहरे में युद्ध – 97)

इस वाक्य में मुख्य उपवाक्य के बाद "कि" योजक से सिर्फ एक उपवाक्य जुड़ा है। शेष उपवाक्य स्वतंत्र से लगते हैं, जबकि वास्तविकता यह नहीं है। यहाँ पर आगे के दोनों उपवाक्यों के पहले "कि" योजक लुप्त है। चूँकि शैली सौन्दर्य कि दृष्टि से हर वाक्य के पहले "कि" योजक की पुनरावृत्ति अच्छी न लगती इसलिए लेखक ने यहाँ संज्ञा उपवाक्य के अधीन दो उपवाक्यों की योजक शब्द से रहित योजना की है।

–मैंने जब अली मेहर से पूछा कि तुमने मुझे बचाने के लिए अपने इतने किशोर द्वादश वर्षीय पुत्र अली सलीम को दाँव पर क्यों लगाया तो उसने कहा कि मीच कबीले में लड़के पाँच वर्ष में ही जवान हो जाते हैं, भोज महाशय!– (कुहरे में युद्ध–154)

इसमें दो आश्रित उपवाक्य हैं और दोनों "कि" योजक से संबद्ध हैं। इस वाक्य की संरचना कर्ता वाक्यांश विस्तार, फिर कर्म वाक्यांश विस्तार के साथ कई पद बंधों के द्वारा की गई है।

–और जब मैंने देवगढ़ में क्रुद्ध सेनापति काका से कहा कि यह सत्य है कि मैंने अनुशासन भंग किया है, पर मैंने देविका जी को ढूँढ़ निकाला –यह क्या उपलब्धि नहीं है– तो, उन्होंने बहुत क्रूर शब्दों का प्रयोग करते हुए कहा– यह आपका अक्षम्य अपराध है। (कुहरे में युद्ध– 154)

इस संज्ञा उपवाक्य में दो आश्रित संज्ञा उपवाक्य हैं, जिनमें "कि" योजक का स्पष्ट प्रयोग हुआ है किन्तु, एक आश्रित संज्ञा उपवाक्य में यह विवक्षा के कारण लुप्त हैं– उन्होंने बहुत क्रूर शब्दों का प्रयोग करते हुए कहा (कि) यह आपका अक्षम्य अपराध था।

–अन्धेरी रात में भोजदेव आपने कैसे जाना कि वहाँ देविका मिल सकती है?

(कुहरे में युद्ध –154)

–वह ऐसे समझ पाया मात: कि वे जयदेव कवि के गीत गोविन्द का एक गान गा रही थीं।

–मैंने सोचा कि इस आटव्य भूमि में गीत गोविन्द गाने वाली कोई विशिष्ट नारी ही होगी।

(कुहरे में युद्ध –154)

आगे दो संज्ञा उपवाक्य ऐसे हैं जिनमें दोनों में "कि" योजक लुप्त हैं किन्तु, उसकी अप्रत्यक्ष सत्ता विद्यमान है।

–अब आप इस वर्णन को बन्द करें भोजदेव, केवल एक शब्द बोलें (कि) वह गीत आपको याद है।

–वे गा रही थीं– (कि) "माधव तव विरहे सा दीना।

–अरे वाह, वत्स आनन्द, इस समाचार से तो मन को ऐसा आह्लाद मिला कि लग रहा है (कि) मेरी अश्वारोही सेना अबाध रूप से तयासी के लश्कर में जब चाहे प्रवेश कर सकती है। (कुहरे में युद्ध– 160)

–तात्पर्य यह कि तू इससे भिन्न कोई और रणनीति भी बना चुका है।

(कुहरे में युद्ध– 160)

–पवन को रोककर आनन्द वाशेक नीचे उतरा कि उसके स्वागत में भोजदेव वहाँ पहुँच गये।

(कुहरे में युद्ध–169)

–जुझौती के शासन प्रबन्ध से जुड़े आप लोगों से मेरा निवेदन है कि आप दुर्ग छोड़कर मेरे साथ कल प्रात: दशार्ण की ओर प्रस्थान करें। (कुहरे में युद्ध पृष्ठ: 168– 169)

जिन संज्ञा उपवाक्यों में क्रिया इच्छा बोधक होती है उनके आश्रित सं0 उपवाक्यों में क्रिया– "ए" परसर्ग युक्त रहती है। "कुहरे में युद्ध" में एक संज्ञा उपवाक्य की सम्पूर्ति में ऐसे कई वाक्यों की समवेत श्रृंखला का प्रयोग किया गया है जिनमें हर एक पहले योजक– चिन्ह "कि" स्वेच्छया लुप्त रखा गया है। इसके लोप का कारण शैली– सौन्दर्य को अक्षुण्ण रखना है:

जुझौती के शासन प्रबनध से जुड़े आप लोगों से मेरा निवेदन है कि आप लोग दुर्ग छोड़कर मेरे साथ कल प्रातः दशार्ण की ओर प्रस्थान करें (कि) नगर में जिनके पास आवश्यकता से अधिक अन्न हो, राजकीय सम्पत्ति घोषित करके छीन लिया जाय (कि) यह कार्य गुल्म नायक हरिकेश के नेतृत्व में पाँच सौ अश्वारोहियों द्वारा अविलम्ब पूरा कराया जाए (कि) यह राज्यानुशासन है।

–(कि) यह अमोध है।

–(कि इसमें) कोई भी व्यक्ति अपवादन माना जाय।

–(कि अब आप लोग) जाइये, अपने–अपने दायित्व को सम्भालिए।

(कुहरे में युद्ध, 169)

डॉ0 शिवप्रसाद सिंह ने ऐसा संज्ञा उपवाक्यों की योजना खूब की है। जब विचारों की श्रृंखला नदी के प्रवाह की तरह चलती है तब ऐसे ही वाक्यों की अनवरत लड़ी द्वारा आवेगों को संप्रेष्य बनाया जा सकता है। इस वाक्य-संरचना में एक मुख्य संज्ञा उपवाक्य में निहित वक्ता की इच्छा ऐसे ही उपवाक्यों, आश्रित उपवाक्यों के द्वारा पूरी होती है। ये वाक्य स्वतंत्र लगते हैं किन्तु, होते नहीं। यहाँ अर्थ का सूत्र पकड़कर वाक्य-विन्यास के विवेचन की अपेक्षा है।

इसी तरह का एक वाक्य– विन्यास और है:

–कभी–कभी परम्परा को जानने की विधि किसी–किसी के मन में इतनी अस्पष्ट होती है कि यदि कहा जाए कि अमुक तत्व था (कि) जिसने हमारे देश की रक्षा की तो अक्सर लोग कह देते हैं (कि) हटाओ भी।

(कुहरे में युद्ध, 170)

–ऐसा है सिपहसालार साहब हुजूर कि इनको कल रात किसी ने गनेस जी की तोड़ी हुई मूरत दिखाई होगी।

–हाथी इस देवता के चेहरे में अपनी सूरत देखकर सोचते हैं कि यह हमारी जाति का अपमान है।

–इस वक्त इन्हें रोकने का यही तरीका है कि जलते हुए गोले इनकी ओर फेंके जायें।

(कुहरे में युद्ध, 177)

–क्या करूँ ताऊ, आपका प्रश्न ही इतना संतोषजनक था कि वह आज तक मेरा पीछा करता आ रहा है। (कुहरे में युद्ध, 320)

–इससे बना घाव ऐसा भयानक होता है कि वह किसी भी जड़ी–बूटी से भर नहीं सकता।

(कुहरे में युद्ध, 320)

–यह घाव इतना दुर्गंधित होगा कि कोई भी व्यक्ति तयासी से सटकर बैठ नहीं सकता।

(कुहरे में युद्ध, 320)

उपर्युक्त संज्ञा उपवाक्यों तथा उनके आश्रित उपवाक्यों की संरचना 'इतना', 'ऐसा' के साथ विशेषण पद-बंध के द्वारा हुई है। उनकी अपेक्षा में ही आगे के आश्रित उपवाक्य की रचना हुई है।

डा० शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों वैश्वानर में संज्ञा उपवाक्यों की योजना कुछ विचित्र रीति से हुई है। इसके कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य है:

"क्यों आर्य", क्यों प्रयोग नहीं होगा उस पर?

"इसलिए वत्स कि वे घोर नहीं हैं। और चूँकि वे आर्यो से रूष्ट हैं, इसलिए औषधि के साथ एक शंका भी पी लेंगी कि एक धूर्त, प्रवंचक, नीच आर्य ने उन्हें मारने का षडयंत्र न किया हो।

(वैश्वानर, पृष्ठ- 84)

"इसलिए वत्स कि"- इस वाक्यांश के साथ ऊपर के वाक्य का अध्याहार करना होगा क्योंकि इसका सान्दर्भिक संबध ऊपर के वाक्य से है: तब यह इस प्रकार होगा:

उस पर प्रयोग इसलिए नहीं होगा वत्स कि वे घोर नहीं हैं।

-यह तो मेरे पूर्वजों के पुण्य का फल है चक्रपालित जी कि सगाई के पश्चात् पिता-पुत्री ने मेरी छोटी-सी विपणिका को यह गौरव दिया। (वैश्वानर, पृ0- 240)

-अब तुम कक्षीवान् और शौनक से कह सकती हो कि वे उसे जाकर उत्तरार्क सूर्य मन्दिर में देख आएं। (वैश्वानर, पृष्ठ- 238)

-मैं तो इस योग्य भी नहीं रहा सरस्वती- पुत्र नाग अश्वतर कि आपसे आँखें मिलाकर बात भी कर सकूँ। (वैश्वानर, पृष्ठ- 296)

-नहीं रहा, रहे, रही, किया, किये, सोचा, सोचे आदि भूतकालिक कृदंत के पहले अगर ऐसा, इतना आदि सर्वनामों का प्रयोग हो तो आगे का वाक्य संज्ञा उपवाक्य होगा। इन उदाहरणों से यही निष्कर्ष निकलता है।

-युवराज तो ऐसा रूठा है कि किसी के मनाने से नहीं मानेगा।

(वैश्वानर, पृष्ठ- 296)

-(मदालता) है तो अश्वतर, पर उसे पता नहीं कि वह कहाँ गया है।

(वैश्वानर, पृष्ठ- 296)

-उन्हें लगता है कि वे हार गये।

(वैश्वानर, पृष्ठ- 296)

-उसी को नारियाँ इस प्रकार सँभाल लेती हैं कि लोग आश्चर्य चकित रह जाते हैं।

(वैश्वानर, पृष्ठ- 296)

–हम कान्यकुब्ज के लोगों का यह विश्वास है प्रभो कि भार्गवी कुछ भी असम्भव नहीं रहने देती। (वैश्वानर, पृष्ठ– 296)

–वर्तमान कालिक कृदंत और विश्वास, आशा, जैसी भाववाचक संज्ञा के संपूरक के रूप में संज्ञा उपवाक्य आता है।

पता होना, पता लगा लेना, स्मरण, सूचना देना, जानकारी मिली आदि कृदंतों और संज्ञार्थक क्रियाओं, साधित भाव वाचक संज्ञाओं के पूरक के रूप में संज्ञा उपवाक्य आते हैं।

–पर यह सत्य है कि दु:सह काल में शापदात्री ही त्राणदात्री भी बनेगी।

(वैश्वानर, पृष्ठ– 299)

–सत्य तो यह है पुत्र कि मानव शत प्रतिशत अज्ञान– कवच में बन्द रहता है।

(वैश्वानर, पृष्ठ– 299)

–पर सच तो यही है न कि अपान में प्राण का हवन अनिवार्यत: सभी को हर प्रात: काल करना पड़ता है। (वैश्वानर, पृष्ठ – 300)

–इससे अच्छा तो यही होता, प्रतू कि तू वैचारिकी सभा बुलाती ही नहीं।

(वैश्वानर, पृष्ठ – 300)

–तू क्यों ज्येष्ठ महर्षियों के सामने झुक कर कह देता कि मेरा अग्निहोत्र पराजय छिपाने का एक बहाना है। (वैश्वानर, पृष्ठ– 300)

–मुनष्य को अध्यात्मिक मानने वाले भूल जाते हैं कि वे प्रात: काल शौच सभी लोगों की भाँति प्राप्त करते हैं। (वैश्वानर, पृष्ठ– 300)

3.3.2. विशेषण उपवाक्य

संज्ञा की विशेषता बताने वाले उपवाक्यों को विशेषण उपवाक्य कहा जाता है। प्राय: विशेषण उपवाक्यों के पहले संबध वाचक सर्वनाम "जो" (या इसके विकारी रूप "जिस", "जिन", आदि) का प्रयोग किया जाता है। सामान्यत: विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के बाद या मध्य में (शीर्ष संज्ञा के बाद) प्रयुक्त होता है। लेकिन कुछ विशेषण उपवाक्य मुख्य में उपवाक्य से पहले भी प्रयुक्त होने की क्षमता रखते हैं।

प्रयोजन तथा संरचना की दृष्टि से विशेषण उपवाक्यों के दो भेद महत्वपूर्ण हैं: वर्णनात्मक तथा निर्देशात्मक।

वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य सामान्य विशेषण की तरह संज्ञा की किसी विशेषता या गुण आदि का वर्णन करता है लेकिन निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य संज्ञा द्वारा संकेतित किसी वस्तु, व्यक्ति या भाव के एक समुच्चय में से किसी एक सदस्य या सदस्य–वर्ग का निर्देश करता है, अर्थात् उस वस्तु आदि की

पहचान स्पष्ट करता है जिसका उल्लेख वक्ता को अभीष्ट है। यह अन्तर लगभग वैसा ही है जैसा सामान्य विशेषण (हरा) तथा विशेषण + वाला (हरा वाला) के बीच रहता है।

इन दोनों उपवाक्यों में कुछ अन्तर और है। वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य के प्रारम्भ में "जो" का प्रयोग होता है और मुख्य उपवाक्य की शीर्ष संज्ञा से पहले "एक", "कोई, "कुछ, "ऐसा" आदि कई प्रकार के निर्धारक शब्द आ सकते हैं। निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य के प्रारम्भ में भी "जो" का प्रयोग होता है, लेकिन उसकी शीर्ष संज्ञा के साथ निर्धारक "वह"/"वे" का प्रयोग होता है।

निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के आदि, मध्य और अंत तीनों स्थानों पर प्रयुक्त हो सकते हैं जबकि वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य केवल मुख्य उपवाक्य के मध्य या अंत में ही प्रयुक्त हो सकते हैं।

निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य में "जो" तथा "वह"/"वे" दोनों के बाद शीर्ष संज्ञा का प्रयोग एक साथ सम्भव है लेकिन वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य में "जो" के बाद शीर्ष संज्ञा का प्रयोग सम्भव नहीं।

आर्थी इकाई की दृष्टि से वर्णनात्मक विशेषण उपवाक्य प्रायः अपने मुख्य उपवाक्यों पर अपेक्षाकृत कम आश्रित रहते हैं। इनके बीच में "और" योजक का प्रयोग कर इन्हें संयुक्त वाक्य में आसानी से रूपान्तरित किया जा सकता है, जबकि निर्देशात्मक विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य पर पूर्णतया आश्रित रहते हैं।

डॉ० शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में विशेषण उपवाक्यों का प्रयोग प्रचुरता से हुआ है।

–कनिया जलती दीपशिखा की तरह थी जिनकी ज्योति के आगे वह घुग्घू की तरह आँखे मुलमुला लेता। (अलग–2, वैतरणी–126)

–इसका निर्माण उन शिल्पियों ने किया था जो आनुवंशिक परम्परा से स्थापत्य को शिवाराधन मानकर साधना करते रहे। (नीलाचाँद, पृष्ठ–121)

–जो उस ब्रह्म को नहीं जानते उनके लिए ऋचा क्या करेगी।

–और जो ज्ञान बेकार है वे सभी के सभी उसी में समाए हुए हैं।

(वैश्वानर, पृष्ठ – 102)

इन दोनों विशेषण में उपवाक्यों में मुख्य विशेषण उपवाक्य बाद में आया है और आश्रित उपवाक्य पहले।

इन दोनों वाक्यों के क्रम को बदलने से अर्थ में कोई परिवर्तन न आएगा।

–उनके लिए ऋचा क्या करेगी जो उसी ब्रह्म को नहीं जानते।

–वे सभी के सभी (लोग) उसी में समाये हुए हैं जो ज्ञान बेकार है।

–सचमुच मैं कैसी पागल हूँ जो तुमसे लगातार बात करती रहती हूँ।

(गली आगे मुड़ती है,67)

–शायद ही कोई गुजराती लड़की हो जो गरवा के नाम पर थिरक न उठती हो।

(गली आगे मुड़ती है, 67)

–मैं बहुत देर तक सोचता रहा कि आखिर ऐसा सौभाग्य शाली वह कौन है सिर्फ जिसके सामने ही किरण– नृत्य हो सकता है। (गली आगे मुड़ती है, 68)

–अभी जो गोली दिया है न, बस रामबाण है।

(गली आगे मुड़ती है,75)

–जो कुछ मगज में भरा है वह धीरे–धीरे निकल रहा है।

(गली आगे मुड़ती है,75)

–एक भारी छेद बीचों बीच थीं, जिसे हम लोगों ने लत्ते ठूँसकर बंद कर दिया था।

(गली आगे मुड़ती है,76)

–जानते हो उस सख्स को, जिसने जिंदगी भर जहर पिया, खालिस जहर और सबको अमृत बाँटता रहा।

–हाँ झूरी, उसी से छुटकारा मिले इन काशीवासियों को, जो प्लेग में मरकर गंगा में उतरा रहे थे। (गली आगे मुड़ती है,78)

–इसलिए तो कहा था कि जो मनुष्यों के लिए नहीं है, वह तुम्हारे काम आएगा।

(गली आगे मुड़ती है, 79)

इस विशेषण उपवाक्य में मुख्य उपवाक्य बाद में आया है पहले आश्रित उपवाक्य आया है।

–पर जिसने बनारस की दुर्गा पूजा देखी है, वह साक्षी देगा कि भाव, ज्योति और नृत्य की जो त्रिवेणी यहाँ वहती है, वह अन्यत्र कहीं शायद ही दिखे।

(गली आगे मुड़ती है, 80)

इसमें दो प्रधान विशेषण उपवाक्य और दो विशेषण आश्रित उपवाक्य हैं। इसमें एक संज्ञा उपवाक्य भी है।

कही–कहीं संयुक्त वाक्य के साथ विशेषण उपवाक्य का भी प्रयोग डा0 शिव प्रसाद सिंह ने किया है:

–टिम्बर वर्क्स शॉप के आगे से लेकर चौमुहानी तक और चौमुहानी से लेकर घाट तक ज्योति का एक कोण था जो गंगा के समानान्तर आसमान में टँगा हुआ दुर्गा के आने के मार्ग–सूचक जैसा लग रहा था।

(गली आगे मुड़ती है, 80)

–गोल मॉडली में जाने के लिए चार फाटक थे बाँस के, जो बनारसी रेशमी साड़ियों में लिपट कर अजीब चकाचौंध पैदा कर रहे थे

(गली आगे मुड़ती है, 82)

–मेरे हाथ में हरे कागज की तिकोनी झंडी, जिसके सिरे पर लेई लगी थी, थमाती हुई किरण बोली। (गली आगे मुड़ती है, 82)

–एक रसोई के लिए किले बंदी थी, जिसमें कोई नहीं घुस सकता था।

(गली आगे मुड़ती है, 83)

–यह मेरा नैवेद्य मंत्र था जिसे मैंने मन ही मन दुहराया।

(गली आगे मुड़ती है, 84)

–मैं खाना खाकर उस कमरे में आ गया था। जिसमें मैं किरण को पढ़ाया करता था।

(गली आगे मुड़ती है, 84)

–रह रहकर कुछ ऐसा था जो हृदय में खुदक्के जैसा उठता, जो बार–बार मुझे कह जाता। तू अपरिचित है बाहरी है, अपनों के भीतर का ही एक हिस्सा बनने की कोशिश न कर।

(गली आगे मुड़ती है, 84)

इस वाक्य में दो आश्रित विशेषण उपवाक्य हैं।

–पर मेरे भीतर इस पारिवारिक उत्तर दायित्व से भी परे कुछ है जो किसी को खोज रहा है।

(मुख्य विशेषण उपवाक्य+
आश्रित उपवाक्य, गली0 87)

–मैं कुछ इस तरह की मिट्टी की बना हूँ जयंती, जो शायद अवसाद में ही मन की तृप्ति पाता है।

(प्र. वि. उ. वा. +योजक+
आश्रित वि. उ. प. वा.
गली आगे मुड़ती है, 88)

–इसे साहसहीनता कह लो, कायरता कह लो, पर एक सत्य है, जिसे विद्रोही से विद्रोही नारी भी कभी झुठला नहीं सकती कि वह प्रकृति की ओर से कमजोर बनायी गयी है। (कि) वह सहने के लिए बाध्य है।

(साधारण वाक्य प्र. वि. उ. वा
योजक/आश्रित वि. उ. वा.
संज्ञा उ. प. वा., संज्ञा लुप्त
गली आगे मुड़ती है, 88)

–क्या जयंती ने ऐसा कुछ देखा है जिससे उसे लगा है कि मैं अपने निर्माण के बीच ही किसी बाधा या लोभ के कारण मार्गच्युत हो जाऊँगा।

(प्र.वि.उ.वा.+योजक+
आश्रित वि.उ.वा.+योजक+
संज्ञा उपवाक्य।
गली आगे मुड़ती है, 89)

3.3.3. क्रिया विशेषण उपवाक्य

जो उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताते हैं उन्हें क्रिया विशेषण उपवाक्य कहा जाता है। सामान्य क्रिया विशेषण की तरह कभी–कभी क्रिया विशेषण उपवाक्य भी विशेषण या क्रिया विशेषण की विशेषता बताते हैं, जैसे:

(1). जब मैं कलकत्ते में था तो खुद खाना बनाता था। (तब: क्रिया की विशेषता)

(2). वह इतना कमजोर है कि चल भी नहीं सकता (न चल सकने योग्य: विशेषण की विशेषता)

क्रिया विशेषण उपवाक्यों के निम्नलिखित भेद सम्भव हैं:

(क). समय वाची क्रिया विशेषण उपवाक्य:
जिनके प्रारम्भ में जब.... (तो/तब), ज्योंही..(त्योंही), जैसे ही....(वैसे ही) आदि का प्रयोग होता है।

(ख). स्थानवाची क्रिया विशेषण उपवाक्य: जिन उपवाक्यों में "जहाँ"–"वहाँ", "जिधर–... "उधर" आदि का प्रयोग होता है।

"क" उपवाक्य के उदाहरण :

(1). जब मैं कलकत्ते में था तो खुद खाना बनाता था। (तब: क्रिया की विशेषता बताता है।)

(2). ज्योंही बिजली आई बल्ब फ्यूज हो गया।

(3). जैसे ही उसने मुझे देखा (वैसे ही) वह रफू चक्कर हो गया।

"ख" उपवाक्यों के उदाहरण :

(1). जहाँ आपका मकान है वहाँ शायद आपका पुराना मन्दिर भी है।

(2). जिधर वह बस जा रही है उधर निकल जाओ।

क्रिया विशेषण उपवाक्यों के प्रारम्भ में लगने वाले संयोजकों का प्रयोग सामान्य रूप से अनिवार्य होता है, किन्तु मुख्य उपवाक्य में लगने वाले सहयोगी संयोजकों को ऐच्छिक लोप भी सम्भव है, जैसे, तो, तब, त्योंही, वैसे ही।

(ग). रीतिवाची क्रिया विशेषण उपवाक्य : जैसा, वैसा, जैसे.... वैसे, मानो, ज्यों.. त्यों इत्यादि संयोजकों से प्रारम्भ होने वाले:

(1). जैसा मैं कहूँ वैसा ही करना।

(2). जैसे शराब में नशा है वैसे पैसे में भी नशा है।

(3). वह ऐसे बोलता है यहाँ का राजा हो

(घ). कारणवाची क्रिया विशेषण उपवाक्य: क्योंकि, चूँकि, इसलिए, इसलिए कि, आदि।

(1). मैं कल बैठक में नहीं आ सकता क्योंकि मैं बीमार हूँ।

(2). चूँकि मैं बीमार हूँ इसलिए कल बैठक में नहीं आ सकता।

(3). पीताम्बर इसलिए दिल्ली जाना चाहता है कि वहाँ उसकी ससुराल है।

(ड.). परिणाम वाची क्रिया विशेषण उपवाक्य: इतना...कि आदि।

(1). वह इतना कमजोर है कि चल भी नहीं सकता।

(च). प्रयोजन वाची क्रिया विशेषण उपवाक्य: ताकि, जिससे, आदि।

(1). कुछ पैसे और रंख लो ताकि कम न पड़ें।

(2). मशीन जल्दी ठीक करा लो जिससे काम का हर्जा न हो।

(छ). शर्तवाची क्रिया विशेषण उपवाक्य: यदि, अगर...तो, जो आदि।

(1). यदि/अगर तुम पहले उठ जाओ तो मुझे भी उठा देना।

(2). जो तुम मेरा कहा मानो तो आज यहीं रह लो।

(ज). रियायतवाची क्रिया विशेषण उपवाक्य: यद्यपि...तथापि, हालांकि...फिर भी, तो भी, चाहे आदि।

(1). यद्यपि वह पद में बड़ा है फिर भी सबका आदर करता है।

(2). हालाँकि मैं ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं हूँ फिर भी तुमसे ज्यादा ही जानता हूँ।

(3). चाहे तुम जितना कर लो (तो भी) रहोगे गँवार के गँवार।

डा0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में क्रिया विशेषण उपवाक्यों का प्रयोग किया गया है। पीछे मैंने संकेत किया है कि डा0 सिंह उपन्यास लिख रहे थे कोई व्याकरण का ग्रन्थ नहीं। इसलिए इनके उपन्यासों में वाक्य-संरचना की जो प्रवृत्ति मिलती है मेरा अनुशीलन उसी पर आधारित है। व्याकरणिक नियमों का व्यक्रिम भी हो सकता है। क्रिया विशेषण उपवाक्यों के विन्यास की जहाँ तक बात है यह प्रयुक्ति भाषा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण इकाई है। जब भावों की जटिलता, अवचेतना के संघर्ष के अभिव्यक्ति की बात आती है "भाषा" अपने आप वक्र होकर असाधारण मार्ग ग्रहण कर लेती है। क्रिया विशेषण उपवाक्यों की

संरचना उसी के आधार पर होती है। अब देखना यह है कि डॉ0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में क्रिया विशेषण उपवाक्यों की योजना कितने रूपों में हुई है।

डॉ0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में क्रिया विशेषण उपवाक्यों की प्रायोगिक स्थिति:

—"चुप रहिए हरी बाबू"! रामानंद बोला, "थोड़ी देर में शर्मा जी मेरे आगे हाथ फैलाकर भविष्य जानना चाहेंगे तो सारी कलई खुल जाएगी।

(गली आगे मुड़ती है, 175)

उपर्युक्त वाक्य क्रिया विशेषण उपवाक्य है। इसके मुख्य उपवाक्य में काल वाची संयोजक "जब" का इच्छा पूर्वक लोप किया गया है।

इसका वांछित रूप इस प्रकार है:

"थोड़ी देर में (जब—लुप्त) शर्मा जी मेरे आगे हाथ फैलाकर भविष्य जानना चाहेंगे तो सारी कलई खुल जायेगी।"

इसी तरह का एक वाक्य— विन्यास और है:

"मैंने सोचा कि कोई ब्राह्मण अपने लड़के का नाम दादू लाल रखता है तो जरूर किसी दादू पंथी महात्मा की संगत में आया होगा।"

(गली आगे मुड़ती है, 175)

यहाँ पर भी वही प्रवृत्ति है। इसमें भी "जब" संयोजक स्वेच्छया लुप्त रखा गया है। असल में यह लोप भाषा सौन्दर्य और वाक्य विन्यास के लय सौन्दर्य की रक्षा के लिए किया जाता है। व्याकरणिक नियमों का पालन व्याकरण में सन्निविष्ट संरचनाओं में ही किया जाता है। इस वाक्य का वास्तविक रूप इस प्रकार होगा:

—मैंने सोचा कि (जब— लुप्त संयोजक) कोई ब्राह्मण अपने लड़के का नाम दादू लाल रखता है तो जरूर किसी दादू पंथी महात्मा की संगत में आता होगा।

क्रिया विशेषण उपवाक्यों की संरचना के सन्दर्भ में यह तथ्य ध्यातव्य है कि इनमें यत्किंचित परिवर्तन करके इन्हें बड़ी आसानी से विशेषण उपवाक्यों में परिवर्तित किया जा सकता है। इसलिए किसी—किसी क्रिया विशेषण उपवाक्यों की संरचना विशेषण उपवाक्यों की संरचना जैसा रूप धारण कर लेती है। इसी तरह का एक उदाहरण और लिया जा रहा है:

—हमेशा आँख—कान खोलकर चलना चाहिए, पर मैं तुमको क्या उपदेश दूँ, जब मैं स्वयं ऐन मौके पर अंधा बन गया और साला मेरी आँख में धूल झोंक कर रफू चक्कर हो गया।

(गली आगे मुड़ती है, 174)

इस वाक्य में भी समय वाची संयोजक लुप्त रखा गया है, इस वाक्य की आर्थी दृष्टि से संरचना इस प्रकार होगी :

—जब मैं स्वयं ऐन मौके पर अंधा बन गया, (ब) मैं तुमको क्या उपदेश दूँ (कि) हमेशा आँख —कान खोलकर चलना चाहिए पर, (तब)....

बोलने के आवेग में प्रयुक्ति के स्तर पर डॉ0 सिं के उपन्यासों में इस प्रकार की वाक्य संरचना होना स्वाभाविक है। एक और उदाहरण दृष्टव्य है:

—पेट की आग सही नहीं जाती तो लड़कों को भूँज कर खा जा, मुँह झौंसा कहीं का।

(अलग—अलग वैतरणी, 183

यहाँ भी मुख्य क्रिया विशेषण उपवाक्य में संयोजक "जब" का स्वेच्छया लोप है। इसका परिवर्तित अथवा आर्थी दृष्टि से रूप इस प्रकार होगा:

—पेट की आग (जब= लुप्त संयोजक) सही नहीं जाती, तो (तब) लड़कों को भूँज के खा जा, मुँह झौंसा कहीं का।

—एक लात जगजितवा ने गट्टा चढ़ा के पीठ पर दिया तब नाहीं शेखी बघारनी आयी। तब तो रौंड औरत की नाईं कलप रहे थे— काट डालो बाबू, काट डालो बाबू।

(अलग—अलग वैतरणी, 183)

—रोते हुए जब वह चमरौटी की गली में घुसा तो (ब) धनेसरी बुढ़िया दरवाजे पर वैसे ही टाँग पसारकर बैठी थी।

(अलग— अलग वैतरणी, 182)

—रूलाई भी कई तरह की होती है। धनेसरी बुढ़िया को इस रूलाई में कोई खास बात दिखी होगी तभी तो डुगुरते—डुगुरते गली में आ गयी।

(अलग—अलग वैतरणी, 183)

—अब देखो न, जब तोहरे बच्चा मरे, तो (तब) हमरे आगे पीछे कौन?

(अलग—अलग वैतरणी, 184)

यहाँ पर भी पहले क्रिया विशेषण उपवाक्य की संरचना में पहले वाक्य— एक लात जगजितवा ने..... में मुख्य क्रिया विशेषण उपवाक्य में "जब" संयोजक का लोप है। आर्थी दृष्टि से इसका रूप इस प्रकार होगा:

(जब) जगजितवा ने एक लात गट्टा चढ़ा के पीठ पर दिया, तब नाहीं शेखी बघारनी आयी। तब तो रौंड़ औरत की नाईं कलप रहे थे।

दूसरे वाक्य की संरचना में भी "जब" लुप्त है।

–धनेसरी बुढ़िया को इस रुलाई में (जब) कोई खास बात दिखी होगी, तभी तो डुगुरते–डुगुरते गली में आ गयी।

(अलग–अलग वैतरणी, 184)

जो हो, जब भी अपने को संकट में समझो, मेरे पास आ जाना।

आगे गली मुड़ती है, (उपन्यास पृष्ठ 138) का यह वाक्य भी संरचना की दृष्टि से उसी प्रकार का है। इसमें भी "तो" अथवा "तब" संयोजक का ऐच्छिक लोप है। आर्थी अपेक्षा के अनुसार वाक्य का विन्यास इस प्रकार अपेक्षित है: जो हो, जब भी अपने को संकट में समझो, (तब–तभी तो) मेरे पास आ जाना।

–मैं चलने को हुआ तो मैंने जयंती के दोनों हाथ पकड़ लिये।

(वही पृष्ठ – 139)

इस वाक्य की प्राकृतिक रचना में भी लोप की प्रवृत्ति विद्यमान है: मैं (जब) चलने को हुआ तो मैंने जयंती के दोनों हाथ पकड़ लिये। वाक्य इसी प्रकार होना चाहिए।

–जब ऊ हमरे पर पहली दफा हाथ उठायेस तो हम गम खा गएस।

(गली आगे मुड़ती है, 149)

–लड़की जब ससुरे की देहली पार करके भीतर जाती है तब बाहर उसकी लाश ही निकलनी चाहिए।

(गली आगे मुड़ती है, 149)

–लाजो देखने में जितना मासूम लगती है, शायद उतनी न हो।

(गली आगे मुड़ती है, 149)

–वह जितना ही ऊपर घटी घटना में अपने को अलग करना चाहता, उतना ही अपने दिमागी पंक में धँसता चला जाता।

(गली आगे मुड़ती है, 150)

–बानर से जब तू एतना डरते हो तो ओन्ह बनमानुसन से कइसे लड़िहौं, जौन तोहरे पीछे पड़े हैं।

(गली आगे मुड़ती है, 154)

–बस जहाँ देखा एक दूसरे की निन्दा।

(अलग–अलग वैतरणी, 115)

इस वाक्य में भी स्थान वाचक क्रिया विशेषण "वहाँ" संयोजक दूसरे आश्रित उप वाक्य में लुप्त हैं।

–अब की उसके चेहरे पर सिर्फ कुहरे का सिर्फ कुहरे का रंग ही नहीं छाया बल्कि एक दर्दनाक पीड़ा का भाव भी उभर आया।

(अलग–अलग वैतरणी, 115)

–यह परिणाम वाची क्रिया विशेषण उपवाक्य है।

–आदमी यदि हर स्थिति में अपने को खुश रखना ही चाहे तो कठिनाई कैसी।

(अलग– अलग वैतरणी, 116)

यह वाक्य शर्त पर आधारित है।

–परन्तु सेवा ही से तो पेट नहीं चलेगा।

(अलग–अलग वैतरणी, 117)

–अगर भाग्य ने साथ दिया तो बाद में कस्बे के बारे में भी सोचेंगे।

(अलग–अलग वैतरणी, 118)

–शर्तवाची क्रिया विशेषण वाक्य।

–यदि इसके लिए कोई छोटा–मोटा युद्ध भी हुआ तो कनिया उसमें लक्ष्मीबाई का पार्ट अदा करने के लिए पूरी तरह तैयार है।

(अलग–अलग वैतरणी, 125)

–विपिन ने कनिया को अक्सर ममतालु माँ के रूप में ही देखा है किन्तु, परेशानी और संकट के क्षणों में वे सभी रहस्य समझने वाली, तटस्थ व्याख्या और निर्णय देने वाली मित्र भी लगती हैं।

(अलग–अलग वैतरणी, 124)

–विपिन यह सारा दृश्य एक ऐसी भाव–भंगी के साथ देख रहा था, जिसमें आदमी परेशानी की स्थिति से निकलने की जितनी कोशिश करता है, उतना ही अधिक फँसता जाता है।

–ऐसे क्रिया विशेषण उपवाक्यों की रचना किसी परिणाम की अपेक्षा के विपरीत परिणति दिखाने के लिए किया जाती है।

(अलग–अलग वैतरणी, 125)

–कहीं कनिया आगे कुछ और न कहें, इसलिए वह आँखें तरेरकर उनकी ओर देख रही थी। यह भी परिणाम वाची क्रिया विशेषण उपवाक्य है।

—सबकी हँसी में हँसी मिलाने के लिए हँसना जरूरी है किन्तु, विपिन की आँखें निरन्तर पुष्पा के चम्पई बदन की लरजती मरोड़ों में अँटक रही थी।

(अलग-अलग वैतरणी, 125)

दो विपरीत क्रियाओं का ऐक्य ही संयोजक "किन्तु" के सहारे इस क्रिया विशेषण उपवाक्य में साधित हुआ है। इसी तरह का एक और वाक्य दृष्टव्य है किन्तु, वह परिणाम वाची है:

—कनिया जानती है कि बुझारत की आँखों में इतना ताव नहीं कि वह उनकी ओर देख सके।

((अलग-अलग वैतरणी, 126)

कुछ वाक्य-विन्यास ऐसे भी हैं जिनमें मुख्य क्रिया विशेषण उपवाक्य के साथ तो योजक चिन्ह का प्रयोग हुआ है किन्तु, उसके आश्रित उपवाक्य के साथ का योजक चिन्ह लुप्त है।

—नहीं, इसमें चिन्तित होने का प्रश्न ही कहाँ रहा दीप्ति जब तुम्हारे जैसा पारिजात वृक्ष आँखों में, नासिका में, मन में, सुगन्धि और सौन्दर्य को समवेत जगा दिया हो।

इस वाक्य का प्रारम्भ ऐसा होना चाहिए था:

—नहीं (तब) इसमें चिन्तित होने का प्रश्न ही कहाँ रहा दीप्ति........

(दिल्ली दूर है, 320)

—अगरचे आप इन पर इत्मीनान करते हैं तो मैं इन्हें खुशी से फौजों के साथ चलने की इजाजत देती हूँ।

(दिल्ली दूर है, 317)

यह उपवाक्य शर्तवाची क्रिया विशेषण उपवाक्य है। कहीं-कहीं ऐसे वाक्यों में भी योजक चिन्ह के लुप्त रहने की प्रवृत्ति दृष्टिगत् होती है जैसे:

—कोई नई जाकारी मिली है तो हमारी अधूरी जानकारी से आगे जाकर दुश्मन के हमले को नाकाम किया है।

(दिल्ली दूर है, 316)

इस वाक्य के प्रारम्भ में (अगर उन्हें) कोई नई जानकारी मिली है तो हमारी अधूरी...... लोप की इस प्रवृत्ति का मुख्य कारण शैली सोन्दर्य है। कोई उपन्यासकार जब रचनात्मक विद्या में अपने गद्य की रचना करता है तो उसका मुख्य उद्देश्य व्याकरणिक नियमों का यथातथ्य पालन करना उतना नहीं रहता है जितना शैली सौन्दर्य की रक्षा, अभिव्यक्ति की सहजता और अपने कथ्य को बिना किसी अटकाव के पाठकों तक संप्रेषित कर देना रहता है।

–भाई मेरे मुझे मल्के आलिया ने यहां आने का हुक्म दिया है अगर उन्हें दिक्कत न हो तो मेरे आने की खबर कर दो।

(दिल्ली दूर है, पृ0 315)

–जब–जब तराजू के पलड़े पर इस्लाम के लिए मरने वालों का खून और उलेमा की स्याही रखी जाती है, स्याही ही भारी पड़ती है, खून नहीं।

कालवाची क्रिया विशेषण वाक्य विन्यास के प्रमुख वाक्य के प्रारम्भ में तो संयोजक का प्रयोग किया गया है किन्तु, इसमें आश्रित उपवाक्य के साथ इसे स्वेच्छा से लुप्त रखा गया है। आर्थी दृष्टि से वाक्य का गठन ऐसा होना चाहिए:

–जब जब तराजू के पलड़े पर इस्लाम के लिए मरने वालों का खून और उलेमा की स्याही रखी जाती है, (तब तब) स्याही ही भारी पड़ती है, खून नहीं।

–मैं वाशा की बात टालने की जुर्रत नहीं कर सकता क्योंकि तब अम्मी हुजूर वाशा के सामने मेरे कान पकड़कर ऐंठ देंगी।

(दिल्ली दूर है, पृ0 314)

कारण वाची क्रिया विशेषण इस वाक्य में काल वाची संयोजक "तब" का भी जुड़ाव है कारण वाची संयोजक "क्योंकि" के साथ। वहीं एक वाक्य में पुनः संयोजक का लोप है:

–पर याद रहे उस जगह का नाम जाहिर किया तो चिड़िया उड़ जाएगी।

इस क्रिया विशेषण वाक्य के मुख्य वाक्य के साथ परिणाम वाची संयोजक का लोप है। वाक्य ऐसा होना चाहिए:

–पर याद रहे (कि अगर) उस जगह का नाम जाहिर किया तो चिड़िया उड़ जाएगी।

(दिल्ली दूर है, पृ0 314)

–आप हिन्दु खान की मस्ती का एक कतरा भी रखते तो इतना परेशान न होते।

–सुराही लबरेज भर चुकी है तो उसमें दो बूंद डालो तो, दो घड़े पानी डालो तो खुले आम बहेगा।

इन दोनों ही क्रिया विशेषण वाक्यों के प्रधान क्रिया विशेषण वाक्यों में योजक चिन्ह लुप्त है। वाक्यों के अर्थ को देखें तो इनके अन्वय ऐसे होंगे:

–(अगर) आप हिन्दु खान की मस्ती का एक कतरा भी रखते तो इतना परेशान न होते।

–(अगर) सुराही लबरेज भर चुकी है तो उसमें दो बूंद डालो तो दो घड़े पानी डालो तो खुले आम बहेगा। (दिल्ली दूर है, 307)

–हमें हिन्दुस्तान पर तब तक तो यकीन करना ही चाहिए जब तक ये आपके दुश्मन साबित नहीं हो जाते।

(दिल्ली दूर है, 299)

–इन्होंने अगर संगीन मौके पर आपको सही बात बताई है तो आगे भी सभी मवाके पर ये पहले जैसी ही ईमानदारी से पेश आएँगे।

(दिल्ली दूर है, 299)

–याकूत तो पहले से ही जजिया की अमानवीय यातना के घृणित रूप से परिचित होगा। इसीलिए उसके मन पर पड़ने वाली परछाई उतनी गहरी नहीं थी जितनी रजिया की लगी।

(दिल्ली दूर है, 298)

–गाँव के किसी हिन्दू की बेटी खूबसूरत है तो उसे बेइज्जत किया जाता है जब तक कि वह भिखारी नहीं बन जाता।

(दिल्ली दूर है, 296)

क्रिया विशेषण इस वाक्य में भी संयोजक शब्द का प्रयोग लुप्त है। इस वाक्य का अपेक्षित रूप यह होना चाहिए:

–गाँव के किसी हिन्दू की बेटी (अगर) खूबसूरत है तो उसे (तब तक) बेइज्जत किया जाता है जब तक कि वह भिखारी नहीं बन जाता।

–मैं अगर काबिल हूँ तो यह हिन्दू होने का नतीजा है। मैं हिन्दू हूँ मल्के आलिया इसलिए हर फर्द को अपने मन पसन्द तरीके से हक और खुदा से रिश्ता जोड़ने की आजादी की बात कर सकता हूँ। हमारे मजहब में तो किसी गैर–मजहबी का मजहब बदलवाने की बात तक नहीं होती।

(कुहरे में युद्ध, 294)

–अगर यह खबर हमारे आदमी ने पहुँचाई होती तो अभी आप तक पहुँच ही नहीं पाती, क्योंकि बखूबी सारे पहलूओं को जाने–समझे बिना मैं आपको आगाह ही नहीं करता।

(दिल्ली दूर है, 293)

–तुमको अपनी बात पर कायम रहने का उतना ही हक है जितना मेरा।

(दिल्ली दूर है, 336)

–जहाँ से तुम आए हो वहीं से मैं आया हूँ।

(दिल्ली दूर है, पृ0 336)

–निडर तो कुछ देखे भी हैं किन्तु, कभी ऐसे शख्स नहीं देखे जिसके चेहरे पर इस तरह का अजहर छाया हो।

(दिल्ली दूर है, 336)

–यहाँ की दरियाओं में सिर्फ जल नहीं पाकीजगी का सुरूर भी भरा–भरा रहता है।

(दिल्ली दूर है, 337)

इस वाक्य में भी योजक चिन्ह लुप्त हैं। होना चाहिए:

–यहाँ की दरियाओं में सिर्फ जल नहीं (किन्तु) पाकीजगी का सुरूर भी भरा भर रहता है।

(दिल्ली दूर है, 337)

–खैर जब कहा है वाशा ने तो उनका वक्त पर पहुँचना उतना ही सच है जितना कल सूरज का निकलना।

(दिल्ली दूर है, पृ0 351)

–जैसा होना था वैसा ही हुआ।

(दिल्ली दूर है, पृ0 359)

–मैं कह रहा था कि मैं तो वाशेक को बचा नहीं पाया सुनिए, पर वाशेक ने मुझे मौत के मुँह में जाने से बचा लिया। छल का सहारा भी लेता है तो छल करने से निबटने के वास्ते।

(दिल्ली दूर है, पृ0–361)

इसमें भी लोप की प्रवृत्ति– (अगर वह) छल का सहारा भी लेता है तो छल करने के वास्ते।

–जब तक दक्षिणा पाकर जग्यं का पुण्य तुम्हारे हाथ में नहीं पकड़ते तब तक इस जग्यं का फल तुम्हें नहीं मिलेगा।

(शैलूष, पृष्ठ सं0– 95)

–संदेश मौखिक हुआ करते हैं युवराज किन्तु पत्र तो साक्षात् प्रमाण के साथ प्रस्तुत राजाज्ञा की सूचना देते हैं।

(हनोज दिल्ली दूर0–148)

3.3.4. उपवाक्य क्रम

मिश्र वाक्य परियोजना को सम्भावित रूप से पाँच वर्गों में रखा जा सकता है।

3.3.4.1. <u>प्रधान उप वाक्य + अधीन उप वाक्य</u>

–मैं तो सोचता था कि तुम नियुक्ति रुकवाने की अर्जी देने आए हो।

(अलग–अलग वैतरणी, 129)

–मैं तो सोचता था। 1 +

कि तुम नियुक्ति रुकवाने की अर्जी देने आए हो। 2

–यदि तुम ऐसी अर्जी दोगे। 1 +

तो मैं अपनी ताकत भर तुम्हारी बात मनवाने की कोशिश करूँगा। 2

–अभी वह हैडमास्टर से मिल भी नहीं सका था। 1 +

कि स्कूल में पढ़ने वाले कुछ जीवित घोखों ने घेर लिया। 2

(अलग–अलग वैतरणी, 128)

–तुम चचिया चाहे न हो। 1 +

पर, हमने तुमको बेगाना बनाने के लिए कुछ घोड़ा नहीं। 2

(अलग–अलग वैतरणी, 126)

–पुष्पा यह जानकर खुशी से भरी थी। 1+1

कि बुझारथ लौट गये हैं। 2

(अलग–अलग वैतरणी, 126)

–फिर पुष्पा से जो चाहेगा 1 +

वही मिलेगा 2

(अलग–अलग वैतरणी, 108)

–आज अइया जीती होतीं 1 +

तो शायद कुर्की आती ही नहीं 2

(अलग–अलग वैतरणी, 108)

–नई दुलहिन को पहला तोहफा यह मिला। 1

कि उसका पति फेल हो गया। 2
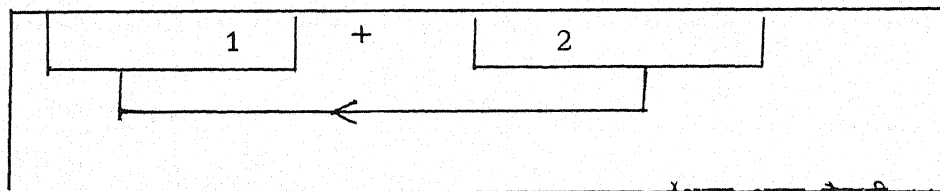
(अलग–अलग वैतरणी, 146)

–स्वर्णरवचित भुजबन्ध उतना
मसृण नहीं होगा [1]

जितना हीरक चूर्ण और बीच बीच में लघु– लघु माणिक्य दोनों से बना हुआ हो सकेगा [2]
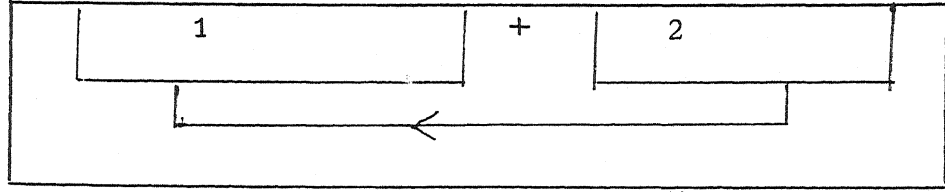
(वैश्वानर, पृ0 – 210)

3.3.4.2. <u>अधीन उपवाक्य + प्रधान उपवाक्य</u>

–जिस कमरे में साक्षात् राधाभाव की मूर्ति का भी वर्तमान हों। [1] +
मैं उसे छोड़कर कहीं दर्शन करने नहीं जाऊँगा । [2]
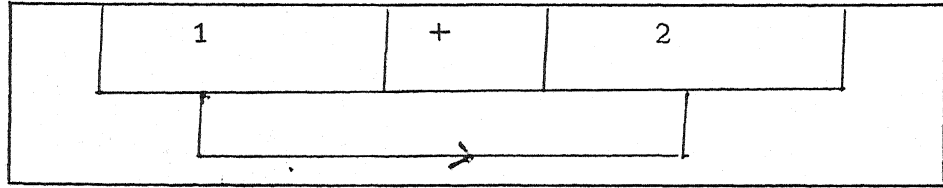
(गली आगे मुड़ती है,)

–यह बेवकूफी तुम करोगे। [1] +

मुझे यकीन नहीं आता [2]
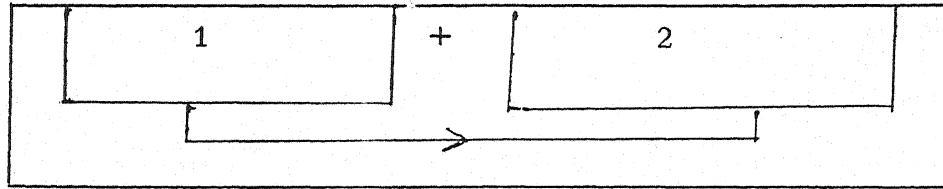
–मुझे यकीन नहीं आता (कि) यह बेवकूफी तुम करोगे।

(कुहरे में युद्ध, 35)

–हम इस जाति के लोगों को प्रणाम करते हैं [1] +

<u>क्योंकि</u> तुम्हारे पूर्वजों ने सत्य के प्रकाश को सही दिशा दी है [2]
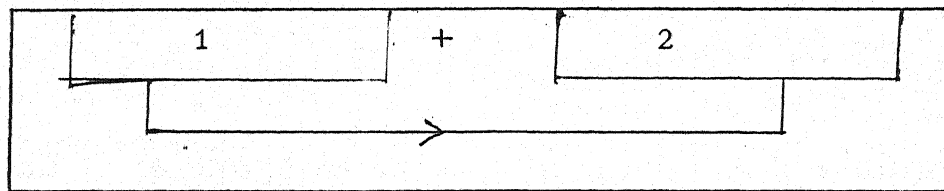
(कुहरे में युद्ध– 36)

अतिथि कुत्सा भी करें [1] + तो भी देवता ही होता है। [2]
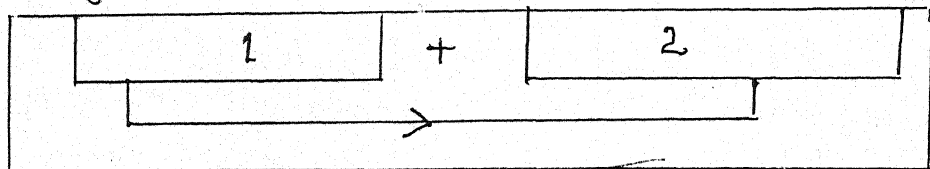
(कुहरे में युद्ध, 38)

–जब तक इससे अच्छा कोई अन्य तन्त्र नहीं बनता [1]
इस रूढ़ि के निर्वाह में ही कुशल है। [2]
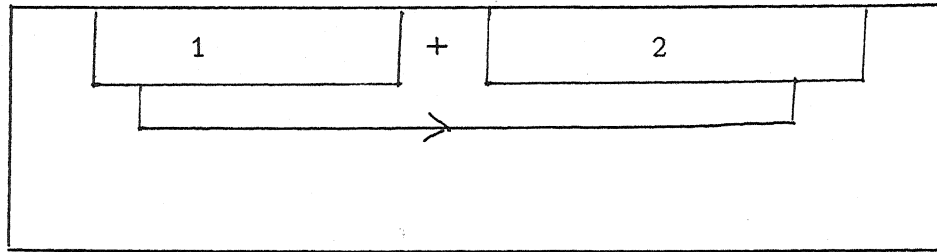
(हनोज दिल्ली0, पृ0–218)

3.3.4.3. प्रधान उपवाक्य + एक या एकाधिक अधीन उपवाक्य

–मैं जानता हूँ [1] + कि आर्यावर्त ही मेरी अस्मिता है। [2] + (कि) यही मेरी जननी है। [3]+ (कि) यही मेरी गति है। [4] + (कि) यही जीवन का आदि [5] + और (यही) अन्त है[6] + (और) यही मेरी पूज्या है [7] + (और) यही मेरी नमस्या है। [8] + (और) यही मेरी रक्त के हर कण में व्याप्त जीवनी शक्ति है। [9]
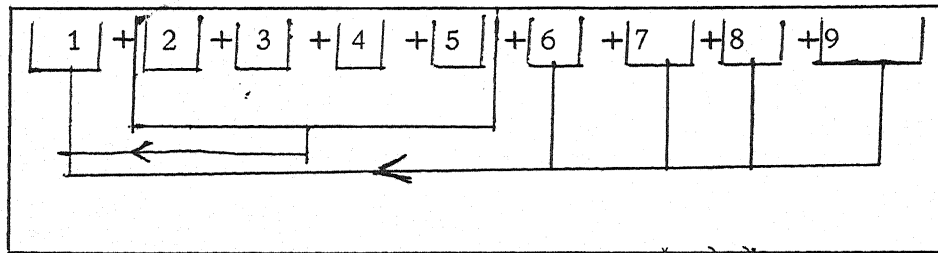
(कुहरे में युत्र, पृ0 –66)

–बड़े भैया मानते हैं [1] + कि सुफल्क चन्देल और कालंजर के संन्यासी इतने बड़े जन हैं [2] + कि उनके विरूद्ध राजा से कहना अपने को छोटा बनाना होगा। [3]
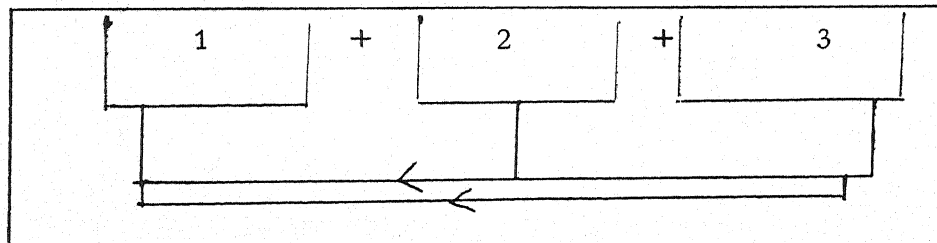
(कुहरे में युद्ध, 103)

–जो जर्जर हैं [1] + उन्हें तोड़ दूँगा [2] + जो नये कल्ले फूट रहे हैं [3] + उन्हें किसी भी खंडहर की गर्म हवा में कुम्हलाने का अवसर देना जुझौती के प्रति अन्याय होगा [4]
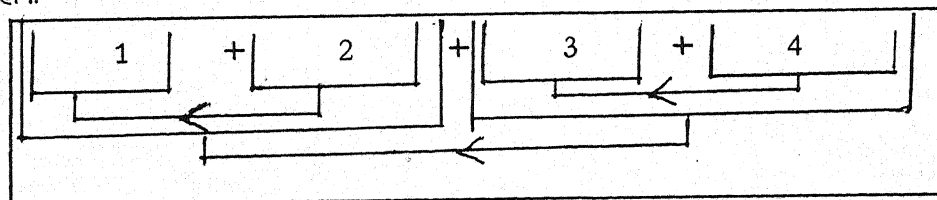
(कुहरे में युद्ध, 102)

–वेत्र वल्ली तट से ढिल्लिका की यात्रा निश्चित सी

आनन्द वाशेक के जीवन की वह घड़ी थी।[1]

जिसे नियति ने बहुत पहले निश्चित कर दिया था +[2]
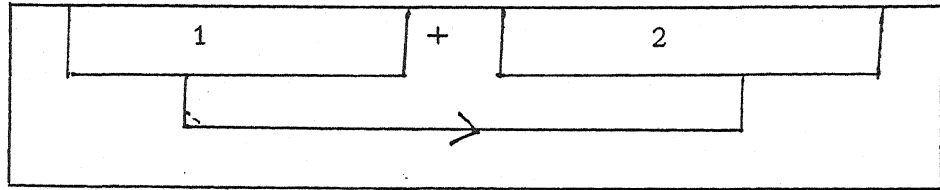
(कुहरे में युद्ध, 46)

–चाहे अल्तमश के सेनापति तलकी मलकी कहकर उपहास करें।[1] +

मैं अपनी सीमा जानता हूँ।[2]
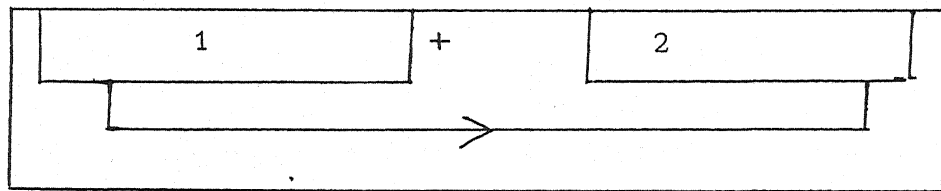
(कुहरे में युद्ध, 47)

–कल मुझे बहुत अच्छा लगा था कालंजर के भावी महामात्य[1] +

<u>जब तुम</u> बिना किसी शिकार के मुँह लटकाए लौटे थे[2]
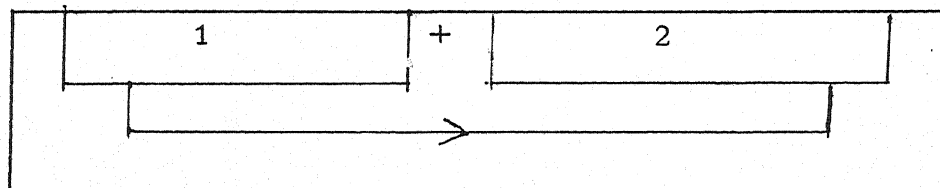
(कुहरे में युद्ध, 49)

–इस बीच क्या वह वही आनन्द रह गया।[1] +

जो वह कभी होना चाहता था।[2]
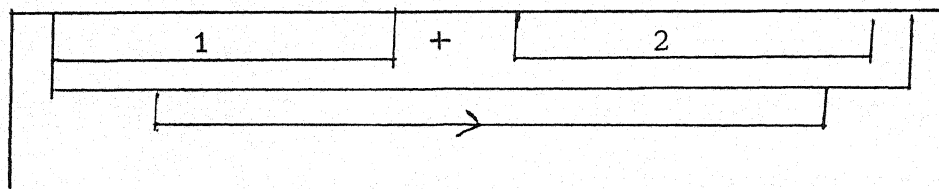
(कुहरे में युद्ध, 49)

3.3.4.4. <u>प्रधान उपवाक्य + अधीन उपवाक्य + अधीनाधीन उपवाक्य</u>

–किरण और मेरे बीच एक ऐसा रिश्ता था [1] + जो बैलून की डोरी में लिपटा–लिपटा आसमान की ओर उठता था [2] + और एक खास ऊँचाई पर जाकर अपने आप खुल जाता था [3] + जिसमें से ढेर सारी गुलाब की पंखुरियाँ बिखरती थी। फ्ले मिंग सन सेट[4] + उस "यमल पत्र" पर सिर्फ एक शब्द सुनहले अक्षरों में लिखा होता "प्यार" [5]
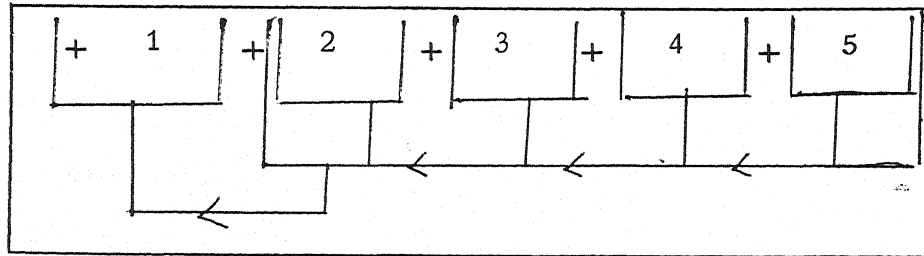
–निश्चिंतता के बाद मन फिर एक बार <u>उसी</u> छिलके में घुसने की कोशिश करने लगा[1] + जिसमें बेफिक्रों, खुशदिल छोटी–छोटी मौसमी चीजों से लगाव (था) [2] + और (जिसमें) किशोर दुनिया की रंगीनी कें सपने एक में एक मिले–जुले कुलवला रहे थे [3] + मगर लाख परिक्रमा और चक्कर के बाद भी जग्गन मिसिर उस पुरानी स्थिति में लौट नहीं पाये[4] + क्योंकि हर बार प्रवेश के प्रयत्न के बाद लगता [5] + कि वह छिलका किसी मुर्दा पशु की खाल की तरह सिकुड़ गया है [6] + कि उसमें जाने के सभी रास्ते बन्द हो गये हैं [7] + और फिर यदि चले भी गये उसके भीतर [7] + तो वहाँ शायद ही कुछ ऐसा मिले [8] + जिसे पाने की लालसा मन को मथती रहती है [9]

(अलग–अलग वतरणी, 210)
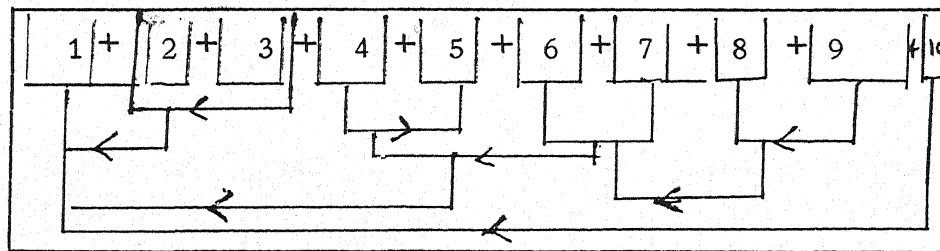
–मेरे दादा–पड़दाता नज्म गाया करते थे[1] + जिसमें आदमी और जानवरी को मिलाकर बने एक घोड़े का जिक्र है[2] + जिसका सिर घोड़े का और धड़ आदमी का था।[3]
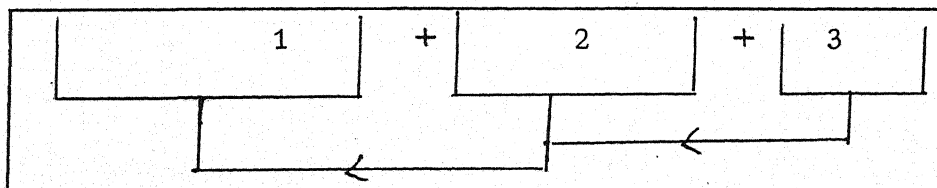
(दिल्ली दूर है, 370)

–मैं प्रसन्न हुआ [1] + कि अम्मा धीरे–धीरे अपनी अफाट निराशा और चिंता की पिछौरी फेंककर थोड़ी खुली हवा में आ गयी है [2]
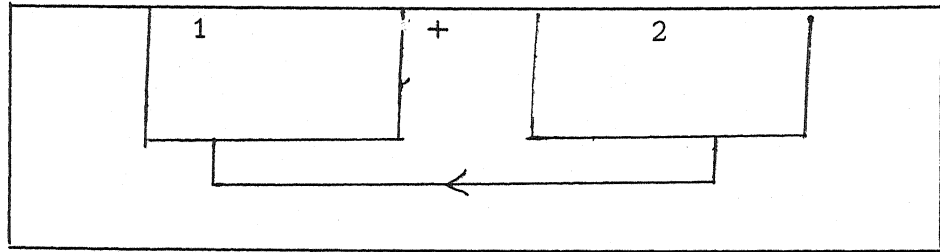
(गली आगे मुड़ती है, 204)

–स्वयं मुझको लगता था [1] + कि मेरे अस्तित्व को एक दूसरे अस्तित्व की स्वतंत्रता ने इस कदर बाँध लिया है [2] + कि मैं बँधा होकर भी खुला हूँ [3] + (कि) नौकर होकर भी नौकर नहीं हूँ [4] + (कि) पैसा लेते हुए भी पैसा नहीं लेता हूँ। [5]
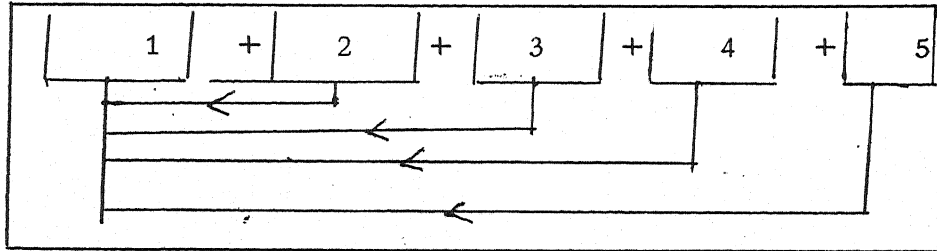
(गली आगे मुड़ती है, 204)

–तुम्हारे इस विचार को देखकर मैं पूछती हूँ विद्या [1] +

कि कठोपनिषद् का यह मंत्र [2] +

कि इस शरीर में एक अपने कर्म (का) भोग करता है। [3]
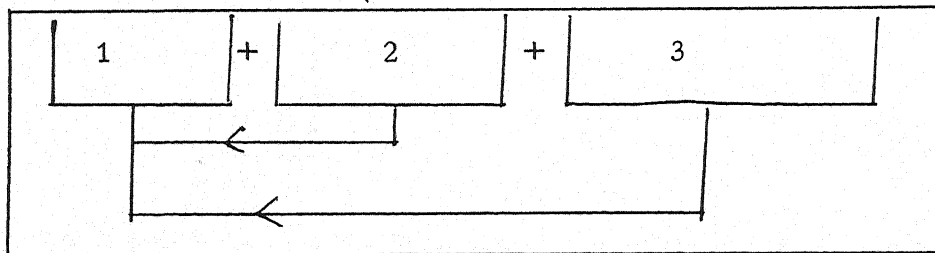
(नीलाचाँद, पृ0– 343)

–सवाल है। [1] +

कि यह पता चले [2] +

कि इस वक्त दोनों कहाँ है। [3]
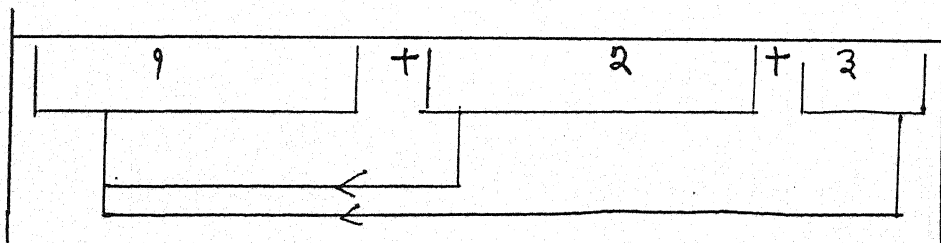
(गली आगे0, पृ0 158–59)

3.3.4.5. <u>प्रधान उपवाक्य + अधीन उपवाक्य + अधीनाधीन उपवाक्य + अधीन उपवाक्य + अधीनाधीन उपवाक्य</u>

–एक अँधेरा <u>ऐसा</u> भी होता है [1] + जो कुछ समय के लिए ही सही, तन–मन पर इस कदर छा जाता है [2] + कि आदमी उसके भीतर एक विचित्र स्वीकृति और समर्थन का अनुभव करता है [3] + जैसे दीवालें सिर्फ सुरक्षा का आधार ही नहीं है[4] + बल्कि किसी सचेत सत्ता की तरह अपनी भूरी–भूरी अँगुलियों से एक स्याह, ममतालू पर्दा उढ़ाकर थके, दुःखी लोगों के क्षणिक सुख की चौकसी करने लगी हैं [5]
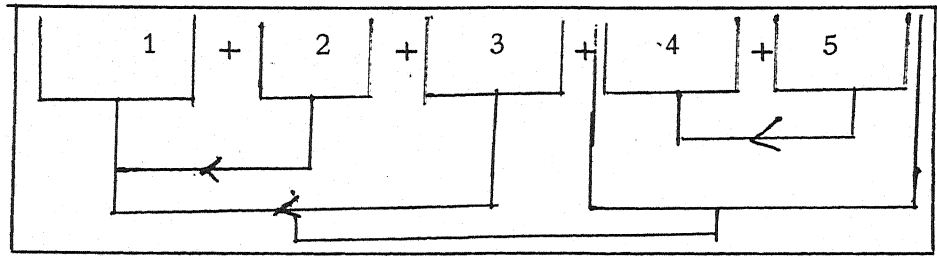
अलग–अलग वैतरणी, 222 ‌)

–वे सहज ढंग से सब काम धाम करती रहतीं [1] + पर उनको देखते ही मालूम हो जाता [2] + कि वे किसी और दुनिया में घूम रही हैं [3] + जो कहीं से भी पकड़ में नहीं आती [4] + पर हमेशा ही उनके तन–मन को अपने क्रूर शिकंजे में दबोचकर मसलती जा रही है [5]

(अलग–अलग वैतरणी, 225)
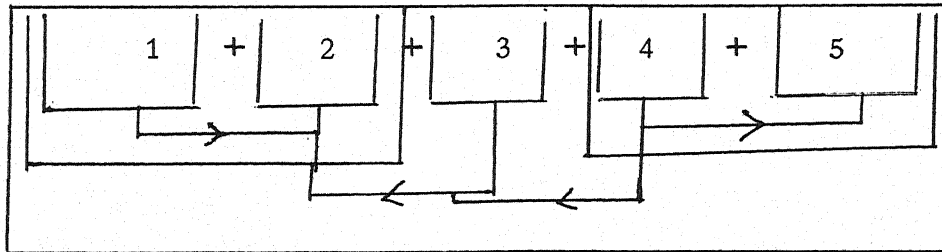
–वे मौजी के झुके चहेरे को देख रहे थे[1] + (उसमें) तनिक लज्जा थी[2] + पर इसमें भी कुछ ऐसा रहस्यात्मक था[3] + कि अचानक उनकी ठुड्डी पहले से अधिक नुकीली और सुन्दर लग रही थी[4] + जैसे गेहूँ की बारीक भूसी की एक महीन परत सट गयी है वहाँ[5] + जिसे हल्की अँगुली से छूकर साफ कर देने की इच्छा होने लगती है मन में[6]
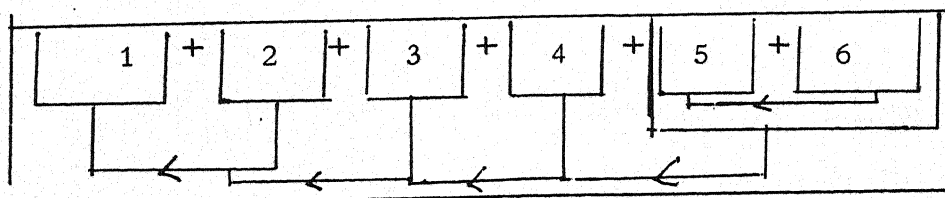
(अलग–अलग वैतरणी, 224)

–हम लोग, यानी मैं और पितृत्व्य रज्जुक जब विंध्याचल से लौट रहे थे [1] + तो आटव्य जनपद की राजधानी के पास दो सौ आत्मघाटी अश्वारोही खड़े थे [2] + जो इसलिए जुझौती आ रहे थे [3] + कि एक पखवाड़े में जैसे भी हो कालंजर को लूट लेना है[4] + ताकि उस पर्वतीय दुर्ग को घेरने वाली कर्ण की विजय वाहिनी को काशी बुलाया जा सके[5]
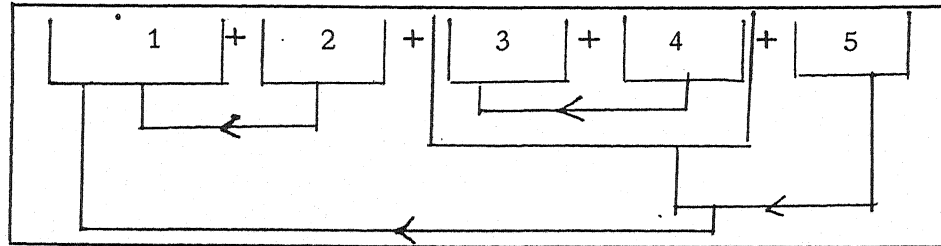
(नीलाचाँद, पृ0– 183)

–जब भी तुमने इस तरह की चीजों को घटते देखा होगा [1] + और उसके बाद (अगर) मेरी बातों पर गौर किया होगा [2] + (तो) तुम्हें मालूम होगा [3] + कि सही वहीं होता है [4] + जहाँ पूरा वाकया तुम्हारे खानदान, बी अल्ला रक्खी, मुर्तजा बगैरह के इर्द–गिर्द का होता है। [5]
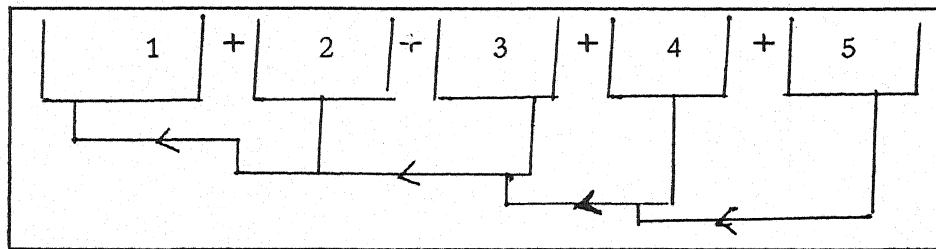
(दिल्ली दूर है, 187)

–पर, सारा नगर जानता है [1] + कि तांत्रिक की महायोगिनियों को मुक्त कराने के पीछे प्रतर्दन का भय था [2] + जिसकी वह तांत्रिक धमकी दे आया था [3] + अगर कोई मनुष्य उस स्थान पर प्रतर्दन जैसे योद्धा को धमकी दे सकता था[4] + तो आपको और सिंधुजा की क्या हस्ती थी [5] + कि आप निडर वहाँ से स्मरण सुनते रहें [6]
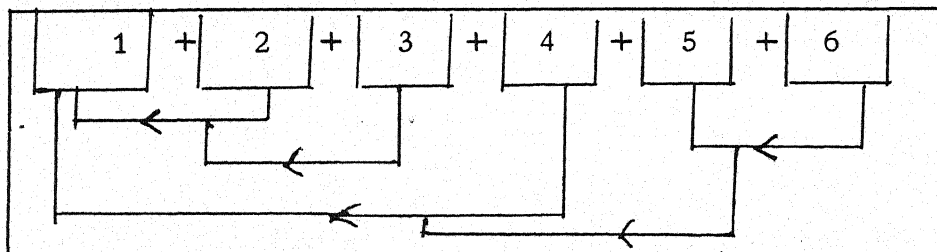
(वैश्वानर, पृ0– 162)

हिन्दी वाक्य संरचना का क्रम क्या तो इस सन्दर्भ में मान्य नियम यही है कि पहले प्रधान उप वाक्य आये, अधीन उपवाक्यों का क्रम उसके बाद ही प्रारम्भ होता है किन्तु, यह कोई ऐसा नियम नहीं है कि जिसमें उलट–फेर न हो सकता हो।

वाक्य के पद क्रम में जिस प्रकार उलट–फेर हो सकता है उसी प्रकार वाक्यों के क्रम में भी। कई बार संवेगों, अन्तर्द्वन्द्वों के संप्रेषण के दबाव में वाक्यों का क्रम उलट सकता है। पहले अधीन उपवाक्य आ सकता है। बाद में प्रधान उपवाक्य। हालांकि अब तक डा0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों की वाक्य–संरचना का जो अनुशीलन किया गया उसमें वाक्यों के क्रम में व्यतिक्रम बहुत कम देखने में आया है। आश्रित उपवाक्यों या मिश्र वाक्यों के संयोजक चिन्हों के लोप की प्रवृत्ति तो भूरिशः उपलब्ध होती है किन्तु, आश्रित उपवाक्य पहले आये हों और मुख्य बाद में इस प्रकार की प्रवृत्ति अधिक नहीं मिलती है। जो भी उदाहरण मिले हैं वे अपवाद हैं।

हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में संज्ञा उपवाक्य के प्रयोग की प्रवृत्ति सर्वाधिक है। यदि बारंबारता के उदाहरण एकत्र किये जायें तो संज्ञा उपवाक्य हर पृष्ठ पर मिल जाएंगें। उसका कारण है। जो भी घटना घटित होती है वह प्रायः प्रत्यक्ष रूप से घटित होती है। दो पात्र आमने–सामने रहते हैं और उन्हीं में वार्तालाप चलता है। जहाँ कहीं अवचेतन में द्वन्द्व चलता है वहाँ क्रम भंग भी हो सकता है और ऐसे स्थानों पर विशेषण उपवाक्यों या क्रिया विशेषण उपवाक्यों की प्रवृत्ति अधिक हो सकती है। हिन्दी में वाक्यों की दृष्टि से ऐसा अध्ययन अभी प्रतीक्षित है जिसमें कुछ मानक उपन्यास कारों की वाक्य-संरचना का इस दृशिट से अनुशीलन किया जाए कि किस उपन्यासकार में किस प्रकार के वाक्यों की रचना की अधिक प्रवृत्ति है। अर्थ की दृष्टि से यदि अधीन उपवाक्य पर जोर देना हो तो वह प्रमुख उपवाक्य से पहले आ सकता है। कभी–कभी प्रधान उपवाक्य तोड़ दिया जाता है और उसके बीच में आश्रित उपवाक्य रख दिया जाता है। ऐसा भी होता है कि अधीन उपवाक्य के अधीन उपवाक्यों की श्रृंखला के बाद मुख्य उपवाक्य के अधीन उपवाक्य आ सकता है। निष्कर्ष यह है कि वाक्य के अन्तर्गत पदों के क्रम में जिस प्रकार परिवर्तन हो जाता है उसी प्रकार वाक्यों के क्रम में भी परिवर्तन हो सकता है।

3.4. संयुक्त वाक्य

3.4.1.1. संयुक्त वाक्य में संरचना के स्तर पर दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य वाक्य होते हैं, जिनमें परस्पर समानाधिकरण या समस्तरीय संबध होता है। वे अर्थ की दृष्टि से एक–दूसरे से आश्रित नहीं होते हैं। बाह्य संरचना के स्तर पर ये उपवाक्य, यथावश्यक, समानाधिकरण, समुच्चय बोधक अव्ययों (और, या लेकिन आदि) द्वारा संबद्ध रहते हैं, जैसे, बाहर बारिश हो रही है और लोग इधर–उधर भाग रहे हैं।

3.4.1.2. कभी–कभी संयुक्त वाक्यों के दो या अधिक उपवाक्य आंशिक रूप से एक–दूसरे में विलीन हो जाते हैं और बाह्यतः उन्हें संयुक्त रूप में पहचानना कठिन हो जाता है, जैसे, सतीश और दीपक सुबह व्यायाम करते हैं, "आप कल आये थे या परसों?" इन संयुक्त वाक्यों में दो–दो स्वतंत्र उपवाक्य आंशिक रूप से एकाकार हो गए हैं:

(1). सतीश सुबह व्यायाम करता है और दीपक सुबह व्यायाम करता है।

(2). आप कल आये थे (या) आप परसों आए थे?

ये वाक्यों के आभ्यन्तर वाक्य हैं जो वाक्य की आंतरिक संरचना के स्तर पर तो मौजूद रहते हैं, लेकिन बाह्य संरचना के स्तर पर इनके कुछ अंशों का लोप हो जाता है।

3.4.1.3. <u>अर्थगत् वर्गीकरण</u>

संयुक्त वाक्यों की रचना करने वाले उप वाक्यों के बीच समानाधिकरण संबध रहता है लेकिन यह संबध हमेशा पूर्णतः समस्तरीय नहीं कहा जा सकता। किसी वाक्य के दो संरचक सदस्यों को तभी निरपेक्ष रूप से समस्तरीय कहा जा सकता है जब दोनों सदस्य बिना केन्द्रीय अर्थ को भंग किए क्रम विपर्णय की क्षमता रखें। उदाहरणार्थ, निम्नलिखित संयुक्त वाक्यों के उपवाक्यों के बीच परस्पर समस्तरीय संबध कहा जा सकता है क्योंकि उपवाक्यों के क्रम–विपर्यय होने पर भी वाक्य की अर्थ संगति भंग नहीं होती, केवल "थीम" या विषय की प्राथमिकता में परिवर्तन होता है:

(1). रात सुनसान थी और चारों ओर अँधेरा था।

(1क). चारों ओर अँधेरा था और रात सुनसान थी।

(2). लोहा पिघल जाएगा या अपनी जगह छोड़ देगा।

(2क). लोहा अपनी जगह छोड़ देगा या पिघल जाएगा।

इसके विपरीत, प्रसंग के सूत्र से जुड़े होने के कारण कुछ संयुक्त वाक्यों के उपवाक्यों में पूर्वापर संबध (कार्य–कारण, कालक्रम आदि) महत्वपूर्ण होता है और इसलिए बिना अर्थ–संगति को भंग किए इनमें स्थान विपर्यय नहीं हो सकता, जैसे:

(1). चिड़िया को गोली लगी और वह नीचे आ गिरी।

(1क). चिड़िया नीचे गिरी और उसे गोली लगी।

(2). वह उठा लेकिन लोगों ने उसे बिठा दिया।

(2क). लोगों ने उसे बिठा दिया लेकिन वह उठा।

संरचक उपवाक्यों के बीच विद्यमान संबधों के आधार पर संयुक्त वाक्यों के निम्नलिखित अर्थगत भेद संभव हैं:

(क). संयोजक संबध :

जब सुंयक्त वाक्य के संरचक उपवाक्य दो या अधिक घटनाओं, स्थितियों या कार्य व्यापारों के संगह या संयोजन का भाव व्यक्त करते हैं तो उनके बीच संयोजक संबध माना जाता है। इस प्रकार के संबध को व्यक्त करने के लिए दो उपवाक्यों के बीच प्राय: निम्नलिखित समुच्चय बोधक अव्यय प्रयुक्त होते हैं: और (एवं, तथा), फिर, ही नहीं, बल्कि। उदाहरण:

(1). रात सुनसान थी और चारों ओर अँधेरा था।

(2). चिड़िया को गोली लगी और वह नीचे आ गिरी।

(3). वह थोड़ी देर रूकी फिर वह चली दी।

(4). उसने रिक्शे वाले को गाली ही नहीं दी बल्कि पीटा भी।

(ख). विभाजक संबध :

जब संयुक्त वाक्य के संरचक उपवाक्य दो या अधिक घटनाओं, स्थितियों या कार्य –व्यापारों में से किसी एक के ग्रहण या दोनों के त्याग की सूचना देते हैं तो उनके बीच विभाजक संबध माना जाता है। यह संबध संयोजक संबध का विलोम है। प्रमुख विभाजक समुच्चय बोधक अव्यय हैं: या (अथवा), या.... या, न....न, नहीं तो (अन्यथा), चाहे....... न कि, कि (या)। उदाहरण:

(1). लोहा पिघल जाएगा या अपनी जगह छोड़ जाएगा।

(2). या तुम स्वयं चले जाओ या मुझे चले जाने दो।

(3). न वह मुझे जानता है न मैं उसे।

(4). जल्दी चले जाओ नहीं तो वह यहीं आ जाएगा।

(5). चाहे तुम यहाँ रहो चाहे ससुराल।

(6). मैं आपसे अपना वेतन माँग रहा हूँ न कि भीख।

(7). तुम पढ़ते हो कि नहीं?

(ग). विरोधवाची संबध :

जब संयुक्त वाक्य के दो संरचक उपवाक्य दो घटनाओं, स्थितियों या कार्य व्यापारों के बीच विरोध या विराधाभास की सूचना देते हैं तो उनके बीच विरोधवाची संबध माना जाता है। इसमें प्राय: प्रथम वाक्य के निषेध या उसकी सीमा का संकेत होता है। इसप

वर्ग के दोनों उपवाक्यों में पूर्वापर संबध होता है, अतः बिना केन्द्रीय अर्थ को क्षति पहुँचाए इनमें स्थान– विपर्यय संभव नहीं। प्रमुख विरोध वाची समुच्चयबोधक अव्यय हैं: लेकिन (किन्तु, परन्तु, मगर, पर) बल्कि, प्रत्युत।

(1). वह उठा लेकिन लोगों ने उसे बिठा दिया।

(2). उसने मुझे पैसे नहीं लौटाए बल्कि मुझसे कुछ और पैसे ले लिए।

(घ). परिणाम वाची संबंध :–

जब संयुक्त वाक्य के दो संरचक उपवाक्य रचना या आर्थी इकाई की दृष्टि से एक–दूसरे पर आश्रित न होते हुए भी कार्य और कारण का बोध कराएं तो उनके बीच परिणामवाची संबध माना जाता है। प्रमुख परिणामवाची समुच्चयबोधक अव्यय है: इसलिए, अतः, अतएव, सो। उदाहरण:

(1). मैं बीमार हूँ इसलिए मैं बैठक में नहीं आ सकता।

डा0 सूरज भान सिंह ने अपने ग्रन्थ हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण [1] में वाक्य संरचना और उनके वर्गीकरण का गहन अनुशीलन कर एक महनीम कार्य किया है। अपने प्रतिपाद्य के विवेचन के लिए कहीं–कहीं मैंने उन्हीं की स्थापनाओं को आधार बनाया है। मिश्र वाक्य संरचना की तरह उन्होंने संयुक्त वाक्य संरचना पर भी विचार किया है।

संयुक्त वाक्यों के विवेचन में डा0 सुधा कालरा का कहना है: संयुक्त वाक्य के योजक सहयोगी उपवाक्य एक–दूसरे के आश्रित नहीं होते, किन्तु, वृहत्तर अर्थ योजना की दृष्टि से वे परस्पर सम्बद्ध अवश्य होते हैं। इन्होंने संयुक्त वाक्यों के उपवाक्यों के बीच तीन प्रकार के संबध माने हैं: संयोजक, विरोध दर्शक और विभाजक[2]।

एकाकार उपवाक्य

–वह बहुत दुरंदेश और चालाक काइयाँ आदमी है।

(कुहरे में युद्ध, 10)

–वाशेक बुगरा खाँ बड़ा समझदार और काइयाँ तुर्क था।

(कुहरे में युद्ध, पृ0–10)

–गोसाईं महाराज बनारस से लौटे तो उनके झोले में बा विश्वनाथ के "परसाद" की जगह छोटा सा तिरंगा झंडा और दो–चार गाँधी टोपियाँ थी।

(अलग–अलग वैतरणी, 45)

–टोपी और झंडा झोले में ही पड़े रहे।

(अलग–अलग वैतरणी, 45)

डा0 सूरज भान सिंह, हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण, पृष्ठ 30

डा0 सुधा कालरा, हिन्दी वाक्य विन्यास अध्याय–3

उपर्युक्त वाक्यों में दो वाक्यों का एक ही में विलीनीकरण हो गया है। इन संयुक्त वाक्यों की प्रकृत संरचना इस प्रकार है:

1–वह बहुत दुरंदेश आदमी है।

–वह बहुत चालाक काइयाँ आदमी है।

2–वाशेक, बुगरा खाँ बड़ा समझदार तुर्क था।

–वाशेक बुगरा खाँ बडा काइयाँ तुर्क था।

3–गोसाई महाराज बनारस से लौटे तो उनके झोले में बाबा विश्वनाथ के "परसाद" की जगह छोटा–सा तिरंगा झंड़ा था।

–और दो–चार गाँधी टोपियाँ थीं।

4–टोपी झोले में पड़ी रही।

–झंडा झोले में पड़ा रहा।

प्राय: संयुक्त वाक्य संयोजक "और," "तथा," "अथवा," से जुड़े रहते हैं। ऐसे वाक्यों के प्रयोग की प्रचुरता प्रतिपाद्य उपन्यासों में खूब मिलती है:

–प्रात:कालीन वातावरण की यह विशेषता है <u>अथवा</u> बुआ माता की?

(नीलाचाँद, पृ0– 313)

–कोई उसे भ्रष्ट कर रहा था (और) कोई उसे अनोखे जीव वाली औरत कह रहा था

(शैलूष, पृष्ठ सं0– 40)

–सभी जीप पर बैठे और कमालपुर की ओर चल दिये।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 25)

–उनकी दृष्टि सिर्फ दो बिन्दुओं पर टँगी थी। रेवती मइया की परती पर और सावित्री जैसी खानगी औरत से बदला।

(शैलूष, पृष्ठ सं0– 26)

–बिहारी बहुत बेचैन हुआ और सँझावाली बस पर बैठकर बनारस चला गया।

(शैलूष पृष्ठ सं0–29)

–तभी प्राय: घुरफेंकन तिवारी उधर से निकले और चमारों के सिर पर छाया न देखकर उनका हियरा पसीज गया।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 27)

–कभी जाइये और देखिये।

(गली आगे मुड़ती है,97)

–पर्दे के सामने कुछ होता है (और) भीतर कुछ।

(शैलूष पृष्ठ–46,)

–लो बहन जी ये तीस पैसे और यह रहा तुम्हारा अखवार।

(शैलूष पृष्ठ– 46,47)

–जुड़ावन करार पर से कूदा और सब्बो के पास खड़ा हो गया।

(शैलूष पृष्ठ सं0–19)

–जिन्दा आदमी कब मुरदा बन जाता है और मुरदा कब जिन्दा कहना मुश्किल है।

(कुहरे में युद्ध, पृ0–11)

–राजा को हमारे यहाँ ईश्वर का प्रतिनिधि कहा जाता है और सूर्य को ज्योतिष का राजा।

(कुहरे में युद्ध, 11)

–पुष्पी के चेहरे पर साँझी सूरज मुट्ठी भर अबीर विखेर देता। (और) उसके छोटे–छोटे गाल लाज से थरथरा उठते। (और) वह कटोरे को बिप्पी के पास ही चारपाई पर रखकर दूसरे खण्ड में भाग जाती।

(अलग–अलग वैतरणी,78)

–उन्होंने बाँस के डण्डे में झंडा लटकाया। (और) सर पर गाँधी टोपी लगायी और चिल्ला पड़े। इन्कलाब जिन्दाबाद।

(अलग–अलग वैतरणी,45)

–घर में अकेले वे हैं और सत्तर साल की बूढ़ी माँ है।

(अलग–अलग वैतरणी,3)

–उनका चेहरा बुल्ले मछली की तरह मासूम और भोला है इसीलिए।

(अलग–अलग वैतरणी,3)

–वे दें तो भी जै (और) न दें तो भी जै।

(गली आगे मुड़ती है,66)

–मैंने झुलनी बुढ़िया से कहा और ज्योंही आगे बढ़ने को हुआ रामकीरत दास कमरे से निकला।

(गली आगे मुड़ती है,73)

–तेरा तिरिया चरित्तर शाह जी भी जानते थे (और) मैं भी जानता हूँ।

(गली आगे मुड़ती है,73)

–अरे आपन अपनै है भौजी, (और) पराया पराये है।

(गली आगे मुड़ती है,75)

–तुमको अपनी रबड़ी की पड़ी है और तुम्हारे सामने पड़ी है बनारस की जनता।

(गली आगे मुड़ती है,77)

–रिक्शा लिया और सोनारपुरा जा पहुँचा।

(गली आगे मुड़ती है,78)

–जयंती खिल खिलाकर हँसी और हँसती रही।

(गली आगे मुड़ती है,79)

3.4.1. कालवाचक

इसमें एक ही काल में दो क्रियाएं सम्पन्न होती हैं।

3.4.1.1. युगपत कालिक सम्बन्ध

–ऊ तो अपनी मैतारी के सगे मौज उडावे है और हियाँ अपन जान पै आन बनी है।

(गली आगे मुड़ती है,71)

–ऐसे भोले–भाले छोरे का नाम लिखाय दीन्ह ससुरे ने पुलिस माँ अउर तुम सब उहिका पच्छ धरती हौ।

(गली आगे मुड़ती है,71)

–दोनों में पहले वाग युद्ध चला, फिर हाथों से हवा में दोनों चरखा कातती रहीं, आखिरकार एक–दूसरे से गुँथ गयीं। सिर्फ दो कंठों से पैदा होने वाली इतनी ढेर सारी आवाजें मैंने कभी नहीं सुनी थी। (और) दोनों एक–दूसरे के "चरित्तर" का बेलौस बखान कर रही थीं और नारी शरीर के विभिन्न अंगों की ऐसी अद्भुत प्रशंसा कर रही थीं कि मन तिलमिलाने लगा।

(गली आगे मुड़ती है,72)

–सचिन्ना चाहता नहीं पर झूलनी बुढ़िया के साथ घिर गया है। भगतिन चाहती नहीं पर पुजारी के साथ घिर गयी है।

(गली आगे मुड़ती है,76)

–रिक्शा लिया और सोनार पुरा जा पहुँचा।

(गली आगे मुड़ती है,78)

–जाओ तुम्हें भोजन करना है उसके पहले वैतरणी भी लाँघनी है।

(गली आगे मुड़ती है,79)

–बड़ी मुश्किल है बेटा। घर में न किरासन का तेल है, न नमक है।

(गली आगे मुड़ती है, 72)

–ये रोते हैं या गाते हैं इसमें मुझे कोई अन्तर ही मालूम नहीं होता।

(गली आगे मुड़ती है, 81)

–सभी प्रतिमा दृश्यावलियों में महिष के शरीर पर लगा देवी का विराट त्रिशूल और महिष के घायल अंग से गिरते रक्त का दृश्य था, किन्तु एक प्रतिमा सचमुच ही आकर्षक थी, जिसमें युद्ध चल रहा था और महिष को मारने के लिए दुर्गा ने अपना त्रिशूल खींच लिया था और उनके अधरों पर अद्‌भुत कनकोत्तम कांति मुस्कान छाई हुई थी।

(गली आगे मुड़ती है, 81)

–सौन्दर्य का प्रकाशन है, विक्रय है, विनिमय है और जाने क्या–क्या है जिसके कीचड़ को अपने गर्भ में छिपाये गंगा वैसे ही बहती चली जा रही है।

(गली आगे मुड़ती है, 82)

–मैं सुतली में झंडी सौंट रहा हूँ और मुड़कर देखता हूँ।

(गली आगे मुड़ती है, 82)

–मुझे जाफरानी के साथ नीले का संयोग जाने क्यों अच्छा लगता है, इसीलिए सभी खंभों को मैंने नीले रंग की साड़ियों से ही रचा है।

(गली आगे मुड़ती है, 83)

–सोफे पर लेट जाओ (और) कमरा बन्द कर लो भीतर से।

(गली आगे मुड़ती है, 84)

–मेरे लिए तो नील रंग उन्माद की अंतिम अवस्था भी है और उपराम की गहराई भी।

(गली आगे मुड़ती है, 84)

–कनिया धीरे से उठीं (और) भंडारघर में चली गयीं।

(अलग–अलग वैतरणी, 76)

–वशीर ने आमने–सामने शेर बब्बरों को (न केवल) ललकारा है, (बल्कि) जहन्नुम रशीद भी किया है।

(शैलूष पृ०सं०–148)

–खुशियों का रंग पानी–सा नीला है (और) मन उसमें एक सोने की होडली है।

(गली आगे मुड़ती है, 56)

–अगले हाथी ऐरावत द्वितीय के स्तर में कुंत चुभा (और) रक्त की धार उसके सूंड पर बहने लगी।

(हनोज दिल्ली0, 177)

–उन्होंने किसी भाषा में भृत्य से कुछ कहा (और) मंदिर की ओर चल पड़े।

(नीलाचाँद, पृ0– 344)

–प्रात:काल ब्राह्ममुहूर्त में प्रतर्दन ने शैया छोड़ी (और) नित्यकर्मो से छुट्टी पाकर गंगा और गोमती के संगम में स्नान कर रहा था।

(वैश्वानर, पृष्ठ– 405)

इन सारे संयुक्त वाक्यों में एक ही काल की क्रिया होने से युगपद कालिक सम्बन्ध है।

3.4.1.2. <u>कारण अथवा परिणाम सूचक उपसम्बन्ध</u>

ऐसे सम्बन्ध वाले संयुक्त उपवाक्य ऐसे सहयोग उपवाक्यों से बनते हैं जिनमें पूर्ववर्ती उपवाक्य में कारण विद्यमान हो और परवर्ती उपवाक्य में उसका परिणाम सूचित हो रहा हो। डा0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में ऐसी वाक्य योजना भी मिलती है।

–वे तुम्हारे गाइड हैं, गुरू हो सकते हैं (पर) मैं सिर्फ तुम्हारी बंधु हूँ। <u>इसलिए</u> मुझे तुम्हारी प्रतिमा से मोह है। मैं चाहती हूँ कि तुम नयी–नयी निकलती अमोली आम्र गाछ की तरह बढ़ते रहो और वह एक दिन मोजरों से लद जाए और तुम्हारी मादक सुगंध से दुनिया भाव–विभोर हो उठे।

(गली आगे मुड़ती है,90)

–बोलो महामात्य वाशेक, अब तो धन भी नहीं बचा है (इसलिए) कुटुम्ब– कबीले को घास की रोटियाँ भी तोड़नी पड़ सकती हैं।

(कुहरे में युद्ध, 12)

–जो हो, गुरू पुत्र के पुत्र हो, ब्राह्मण हो, <u>अत:</u> जो भी हो, हमारे लिए आदरास्पद हो।

(कुहरे में युद्ध, 14)

–मुझे जाफरानी के साथ नीले का संयोग जाने क्यों अच्छा लगता है, <u>इसीलिए</u> सभी खंभों को मैंने नीले रंग की साड़ियों से ही रचा है, और अगर ध्यान से देखो किरण तो लगेगा कि बीच की वर्तुल मॉंडली के ऊपर की सारी झंडियाँ भी बैंगनी रंग की ही हैं।

(गली आगे मुड़ती है,83)

–धरमू सिंह बीमार थे (वरना) कब का ये रूपये फेंक आये होते।

(अलग–अलग वैतरणी, 92)

–तू आरती के पास राखी बँधवाने नहीं जाएगा (इसलिए) शायद शोभना जीजी की याद आ जाए।

(गली आगे0, 244–245)

–आदिवासियों से निबटने का उनका प्रयास भी सराहनीय था, (अन्यथा) वे आपके जन्मजात शत्रु हो जाते।

(वैश्वानर पृष्ठ– 319)

–दौनों खातन हैं, (इसलिए) इस हिसाब से कोई फर्क नहीं है।

(दिल्ली दूर है, 236)

3.4.1.3. **अर्थ विस्तारक उप संबध**

इस प्रकार के वाक्यों में परवर्ती उपवाक्य में पूर्ववर्ती उपवाक्य के विषय में कोई अतिरिक्त सूचना दी जाती है।

–नाव पर एक प्रौढ़ व्यक्ति खड़ा था और लम्बी साँसें खींचकर अपने फेफड़ों को सुगंधित हवा से भर रहा था।

(कुहरे में युद्ध, 9)

–कालंजर एक पहाड़ी दुर्ग ही नहीं (बल्कि) वह हिन्दुस्तान की संस्कृति की ध्वजा है।

(कुहरे में युद्ध, 9)

–या खुदारा ये कमान से निकले तीर हैं या हँसा–हँसाकर मौत में सुला देने वाली दवा की पुड़ियाँ।

(कुहरे में युद्ध, 10)

–वैसे मैं देखने में तुमसे दो–तीन साल छोटा ही लगता हूँगा, पर हिमाला के उस पार रहने की वजह से अक्सर हलचलें देखता रहा हूँ।

(कुहरे में युद्ध, 11)

–अंगरक्षक, आवश्यकता पड़ने पर साथ छोड़ देने के लिए विवश हो सकता है, पर अपने स्वामी की सुरक्षा को संकट में नहीं डाल सकता, प्रभु।

(कुहरे में युद्ध, 120)

–कनिया ने बाप के रिश्ते का धागा तोड़ दिया पर वे सास से रिश्ता न तोड़ सकीं।

(अलग–अलग वैतरणी, 79)

–सुखदेव रामजी बहुत उदास हो जाते। (और) उनको सारा गाँव बेवकूफी की आँच में लहराता नजर आता।

(अलग–अलग वैतरणी, 43)

–मैं इस अधम मिस्सर के यहाँ पाँच बजे सुबह की आयी हूँ (और) मुझे पूछने वाला भी यहाँ कोई नहीं है।

(नीलाचाँद, पृ0– 249)

–लतछौंहे सूरज का उजास पानी में थिरक उठता है (और) वे किसी बीते दिन के माया– सरोवर में नहाकर चंचल किशोरी बनफर मचल उठती हैं।

(अलग–अलग वैतरणी, 124)

3.4.1.4. विरोध सूचक तुलनात्मक उप संबंध

इस तरह का उप संबंध उपवाक्यों के स्वतंत्र अर्थ पर निर्भर रहता है। दोनों उपवाक्यों की रचना समान रूप से होती है।

–जरीदा बनते हैं मात्र लूट–पाट के सामानों में अपना हिस्सा लेने के वास्ते और ये हिन्दू जरीदा लड़ते हैं उन स्वामियों के लिए जो इन्हें धीरे–धीरे खिला–पिलाकर, पाल–पोसकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं।

(कुहरे में युद्ध, 123)

–कृष्ण का अर्थ काला वर्ण जरूर है किन्तु काला हमेशा निकृष्ट ही नहीं होता।

(गली आगे मुड़ती है, 64)

–वह हमारे हृदय को भय से धक्का नहीं मारता बल्कि अपनी चुम्बकीय शक्ति से अपनी ओर खींचने लगता।

(गली आगे मुड़ती है, 65)

–रात दिन तुम्हें रटती रहती हूँ, पर तुम्हारा नाम नहीं जानती।

(गली आगे मुड़ती है, 67)

–इस जिन्दगी का आदि–अन्त कुछ है या नहीं पर तुमसे जुड़कर अचानक वर्तमान सार्थक हो गया है।

(गली आगे मुड़ती है, 67)

–याद रखना बर खुरदार, मौत की एक शक्ल हजारों हैं, पर नाकाम जिन्दगी की सिर्फ एक शक्ल है।

(कुहरे में युद्ध, 11)

–एक ही नदी के दो किनारे फिर भी मिल न पाने के लिए विवश।

(कुहरे में युद्ध, 127)

–हम उनके मार्ग में बाधक नहीं बनना चाहते, पर हम उन्हें मनमानी करने की छूट भी तो नहीं दे सकते।

(कुहरे में युद्ध, 45)

–जब राजा की आज्ञा तो महल का सुख (और) जब उसकी अवज्ञा तो पांथशाला।

(दिल्ली दूर है, 441)

–वही नारी आज दुर्दशा की अन्तिम अवस्था झेल रही है (और) उससे उबरने का संकल्प खो चुकी है।

(वैश्वानर पृष्ठ– 251)

–हिन्दुस्तान में सब डरपोक और भगेडू ही नहीं हैं (और) न तो तुर्कों में सभी सिकन्दरे आजम हैं।

(हनोज दिल्ली0, 119)

3.4.1.5. <u>मन:स्थिति अनुमान वाचक उपसम्बन्ध</u>

इस तरह के सम्बन्ध में परवर्ती उपवाक्य के व्यापार के सम्बन्ध में अनुमान लगाया जाता है।

–आपके तेज के सामने जब वत्तीस वर्षीय रघुनन्दित व्याघ्र, कुत्ते की तरह तलबे चाटता है और पूँछ हिलाता है तो उस बूढ़े, खूसट तिरलोकी के पास ऐसा साहस कहाँ है छोटे सरकार कि वह आपके विरूद्ध खड्ग उठाये।

(कुहरे में युद्ध, 121)

–पुष्पी के चहेरे पर साँझी सूरज मुट्ठी भर अबीर बिखेर देता। (और) उसके छोटे–छोटे गाल लाज से थरथरा उठते। (और) वह कटोरे को बिप्पी के पास ही चारपाई पर रखकर दूसरे खण्ड में भाग जाती।

(अलग–अलग वैतरणी,78)

–बुझारत से उन्हें घृणा थी, पर काली रात में जब बच्चे सो जाते और कनिया के चारों तरफ अकेलेपन की डरावनी छायाएँ नाचने लगतीं, (फिर) वे रातें रो–रोकर बिता देतीं।

(अलग–अलग वैतरणी, 79)

–मैं दरवाजे से बाहर निकल आया। (फिर वह) मुझे सड़क पर जाते देखती रही।

(गली आगे मुड़ती है, 62)

–मै उसे आवश्यकता से अधिक मन लगाकर पढ़ाता था, और वह अब नये विश्वास से इस तरह भरी थी कि मुझे पूरा इत्मीनान था कि यदि फर्स्ट क्लास न भी ला सकी तो बहुत अच्छा तो करेगी ही।

(गली आगे मुड़ती है, 66)

–अंगरक्षक आवश्यकता पड़ने पर साथ छोड़ देने के लिए विवश हो सकता है, पर अपने स्वामी की सुरक्षा को संकट में नहीं डाल सकता, प्रभु।

(कुहरे में युद्ध, 120)

3.4.1.5. मनः स्थिति अनुमान सूचक उपसंबंध

–यह लट्ठमार प्रन प्रतर्दन से सहा नहीं गया (और) उसका मुखमण्डल क्रोध से आरक्त हो उठा।

(वैश्वानर, पृ0–247)

–मैं इस अभिनय में ही फँस गई (और) कम्मू के नाम पर मेरा गला रूँध गया।

(गली आगे मुड़ती है, 261)

–उसमें जीने की ख्वाहिश है (और) अपने मन मुताबिक जीने के लिए वह कोई भी कदम उठा सकती है।

(अलग–अलग वैतरणी, 60)

–मामू ने तो एक ऐसी बात लिखी है कि कहते खुशी भी होती है (और) लाज भी लगती है।

(शैलूष पृष्ठ सं0–244)

3.4.2 विरोध प्रदर्शक

विरोध प्रदर्शक सम्बन्ध बोध कराने वाले संयुक्त वाक्यों से प्रतिकूलता वाचक, व्याप्ति मर्यादित, तुलनात्मक अर्थ विस्तारक और मनः स्थिति अनुमान वाचक उपसम्बन्धों का बोध होता है।

3.4.2.1 प्रतिकूलता वाचक उप सम्बन्ध

अननुकूलता सूचक

–जवानी सबको आती है, पर ऐसा कभी–कभी ही होता है जब वह किसी एक के शरीर में अपने होने का प्रमाण देने आती है।

(अलग–अलग वैतरणी, 25)

–महाचार्य की बातें सुनकर मेरी गरदन झुकी जा रही थी, पर वे बोलते गये।

(गली आगे मुड़ती है, 62)

–वह हमारे हृदय को भय से धक्का नहीं मारता, बल्कि अपनी चुम्बकीय शक्ति से अपनी ओर खींचने लगता है।

(गली आगे मुड़ती है, 65)

–हम हर बार प्रयत्न करते हैं, पर हर बार असफल हो रहे हैं।

(कुहरे में युद्ध, 9)

–मैं तो जान नहीं सका, पर मेरे पौत्र ने जान लिया।

(कुहरे में युद्ध, 124)

–मुझे गुस्सा नहीं होना चाहिए लेकिन हुआ।

(गली आगे मुड़ती है, 76)

–इस बदलाव को तो रोक नहीं सकते, पर हमें गफलत में नहीं रहना चाहिए।

(शैलूष पृष्ठ सं0–19)

–मैंने बहुत प्रयत्न किया कि तुम्हें मन से बाहर कर दूँ (पर) लगातार हारती रही।

(दिल्ली दूर है, 132)

–यद्यपि देवता ने आश्वासन दिया है कि उसे स्वस्थ करके ही अन्तिम सांस लेगें, परन्तु आज मेरा सारा विश्वास हिल गया है।

(वैश्वानर पृ0– 287)

–हमें आगे नहीं बढ़ने दिया जा रहा है (परन्तु) हम पीछे भी हटने वाले नहीं हैं।

(गली आगे मुड़ती है, 85)

<u>शुद्ध प्रातिकूलता सूचक</u>

–एक ही नदी के दो किनारे फिर भी मिल न पाने के लिए विवश।

(कुहरे में युद्ध, 121)

–लू में खुनकी अब भी थी, मगर वह हवा दिन भर झुलसे हुए शरीर को काफी अच्छी लगती थी।

(अलग–अलग0, 108)

–हरिया चला तो घर के लिए, मगर उसके पैर धरमू सिंह के मकान के दरवाजे पर रुक गये।

(अलग–अलग 0, 108)

–उसे आशा थी कि पुष्पा यह बात सुनकर दरवाजे पर दौड़ी आएगी, मगर पुष्पा जब अपनी जगह से नहीं उठी तो वह चुपचाप उबलता– उफनता छावनी की ओर चल पड़ा।

(अलग–अलग0, 108)

–कनिया को क्या वह जानता नहीं, मगर वह करे क्या?

(अलग–अलग0, 109)

–वह किल्ला कोई तोड़ नहीं सकता, (मगर) हमरा राजा करण ने विज्जे के वंश का कामे तमाम कर दिया।

(नीलाचाँद पृ0– 69)

–गुटका तो मंगा देगी, (मगर) वे बीस साल कहाँ से मंगाओगी।

(शैलूष पृ0 सं0– 221)

3.4.2.2 <u>व्याप्ति मर्यादित विरोध प्रदर्शक उप सम्बन्ध</u>

ऐसे वाक्यों में कहीं–कहीं परवर्ती वाक्य में पूर्ववर्ती उपवाक्य की बातों का विरोध होता है।

–आप मुसलमान हैं, मगर आपके दोस्त मुसलमान नहीं लगते।

(नीलाचाँद पृष्ठ– 313)

–नाटक ही रचाओ, लेकिन ऐसा नहीं कि दो रूल लगते ही तुम्हारे जमूरे हाथ जोड़कर तुम्हारे चेहरे को बेनकाब कर दे।

(शैलूष पृ0 सं0– 25)

–काका, हमने ताड़ी पी यह सच है, लेकिन वह ताड़ी नहीं थी।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 18)

–काँटे से पैर लहुलुहान हो गया था (मगर) चेहरे पर कैसी अद्‌भुत मुस्कराहट थी।

(अलग–अलग0, 266)

–मैं तुम्हेंयहाँ से हटाना नहीं चाहता (पर) अगर तुमने दुबारा ऐसा काम किया तो मुझे तुम्हारे पिता से कहना पड़ेगा।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0–121)

3.4.2.3. तुलनात्मक विरोध प्रदर्शक उप सम्बन्ध

इसे व्यक्त करने वाले वाक्यों में सहयोगी उपवाक्यों के किन्हीं अवयवों की तुलना की जाती है। डा0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में अन्य संयुक्त वाक्यों की योजना की तरह ऐसे वाक्यों की भी योजना हुई है।

–शारदीय नवरात्र के लिए कलकत्ते का नाम लिया जाता है, पर जिसने बनारस की दुर्गा पूजा देखी है वह साक्षी देगा कि भाव, ज्योति ओर नृत्य की जो त्रिवेणी वहाँ बहती है वह अन्यत्र कहीं शायद ही दिखे।

(गली आगे मुड़ती है, 80)

–हिन्दी और दर्शन में भी मैं जा सकता था, पर मुझे संस्कृत खींच रही थी।

(गली आगे मुड़ती है,44)

–मैं किसी की सलाह को माथा टेककर मान लूँ ऐसा नहीं है, पर कुछ विषय ऐसे हैं जिनमें बहस अच्छी नहीं लगती।

(गली आगे मुड़ती है,41)

–मंगा और माला ने भी छुरे फेंके, (पर) वे रूपा के स्तर को छू नहीं पाये।

(शैलूष पृष्ठ सं0–94)

–दीनबन्धु मेरे पिता थे, (पर) पुत्रबन्धु बिल्कुल नहीं थे।

(गली आगे मुड़ती है,167)

3.4.2.4 अर्थ विस्तारक उप सम्बन्ध

–पानी अभी इतना नहीं बढ़ा था, पर काफी मटमैला हो गया था।

(गली आगे बढ़ती है, 32)

–पसीने की बूँदें ललाट पर भर गयीं, पर सुबोध को यह सब अच्छा लग रहा था।

(गली आगे मुड़ती है, 33)

–नहीं, सुबोध आ तो गया, पर उसको लगता है, वह अपनों से अलग एक अजीव किस्म का निर्वासन भोग रहा है।

(गली आगे मुड़ती है, 35)

–सब उसे मानते हैं, पर कुछ ऐसा भी है– एक अपाट अन्तराल, एक अलगाव जो उसे गाँगुली परिवार से अलग रखता है।

(गली आगे मुड़ती है, 35)

–सभी, पर कोई नहीं,

(वही पृष्ठ, 35)

–लहरें पालतू हिरण की तरह पैरों में टुन्ना नहीं दे रही थीं, बल्कि रह–रहकर भेड़ें की तरह टककर भी मारने लगी थीं।

(गली आगे मुड़ती है, 36)

–वैसे तो पानी गंगा दशहरे से ही चढ़ने लगा था, पर पिछली पच्चीस जुलाई को जो करारी वारिश हुई, उसने गंगा को अपनपौ की हद से निकालकर ऊधमी प्रकृति का हिस्सा बना दिया था।

(गली आगे0, 36–37)

–पूर्वी क्षितिज पर थोड़े सिलेटी बादल थे, पर वे लाख कोशिश के बाजूद आसमान में उछलते लाल रंग के फब्बारे को रोकने में असमर्थ थे।

(गली आगे मुड़ती है, 37)

–मामूली तैलाक्त पत्थर आग तो लगा सकते थे (पर) ऐसा तभी होता जब वे उल्के की तरह जलते पत्थर किले के भीतर जाते।

(दिल्ली दूर है, 359)

–खून के छींटे दर्द की शहादत के लिए काफी होते हैं, (पर) आज तो प्रभुन और काली सिंध के बीच खून की एक छोटी नाली बह रही थी।

(हनोज दिल्ली0, 314)

–पुष्पा की गरदन से नीचे तक के सारे हिस्से पर साँवली छाया थी, (पर) मुख पर ढलते सूरज की गेरूई रोशनी पड़ रही थी।

(अलग–अलग0, 266)

3.4.2.5 मन: स्थिति अनुमान सूचक उप सम्बन्ध

–भगवान के दिये दो–दो गबरू जवान बेटे हैं, पोते हैं, पर यह सब सूना– सूना लगता है।

(शैलूष पृष्ठ सं0–19)

–सुना आज बहुत बड़ा जुलूस आने वाला है, पर भैया जान लो कि आज तुमने लौटने में देरी की तो अम्मा कोप– भवन में नहीं। मठिया के कुएँ में गिरेंगी।

(गली आगे मुड़ती है,127)

–आज की आदमी विज्ञान की रोशन में बहुत कुछ देख सकता है, पर बुरी शंकाओं, बहमों में तूफानों में घिर गया है।

(मंजुशिमा, पृ0– 44)

–मैं जाने कहाँ–कहाँ तुझे खाजती फिरी, पर तूने तय किया था कि सलमा को सताऊँगा और तूने सताया।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 62)

–मैं मानती हूँ कि नट जराइम पेशा माने जाते हैं, पर कभी भी नटों ने मासूम बच्चों का कतल नहीं किया।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 64)

–सलमा तुमसे मुहब्बत करती है, करती रहेगी, पर वह कभी भी तुम्हारे साथ बंदरिया की तरह नाचती नहीं फिरेगी।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 64)

–मैंने तुमसे शर्त बदी थी कि तन, मन, धन सब तुम्हारा, पर मुझे बच्चे नहीं चाहिए। लोग बच्चलन कहेंगे इसकी मुझे चिंता नहीं, पर मैं यह नहीं सह पाऊँगी कि मेरे बच्चों को लोग दोगला कहें।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 66)

–मैं तुझे जालिम तो नहीं कहूँगी सब्बा, पर तू निर्मोही जरूर है।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 67)

–यह सही है कि मैं जुड़ावन के मासूम चेहरे से खिंचकर वामनी से गिरकर नटिनी बनी, पर अब मैं जान गयी हूँ कि वह सब मेरा घमंड था।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 69)

–हमारा कबीला करीमन भाई की तरह खुशहाल और अमीर तो नहीं है, पर हम इस तरह के भी नहीं है कि किसी अतिथि के सत्कार से घबड़ाएं।

(शैलूष, पृष्ठ सं0– 75)

–वे स्नेह के दो वाक्य कहना चाहते थे उस अभागिनी कन्या के लिए, पर उन्हें प्रतू के हृदय की इस अमापनीय गहराई ने मूक बना दिया।

(वैश्वानर, पृष्ठ– 321)

–आपने मेरा रक्षा– सूत्र उतार कर फेंका न होता तो यह अनर्थ शायद रूक जाता। पर उसमें सम्भवतः आपका विश्वास नहीं था।

(वैश्वानर पृष्ठ सं0–322)

–अर्थ तो है, पर तुमने ध्यान दिया ही नहीं।

(कुहरे में युद्ध, 40)

–मैं देव पर विश्वास करने वाला आदमी नहीं हूँ, पर नियति के लेख को वज्रलेख कहकर दासता स्वीकार करने के पहले युद्ध में मरना बेहतर समझता हूँ।

(कुहरे में युद्ध, 44)

–रूपा चाची के गंभीर चेहरे से कुछ भांप तो नहीं पायी, (पर) उसे लग रहा था कि कोई–न–कोई संगीन मामला है।

(शैलूष, पृष्ठ सं0–47)

–प्रचंड को मरते हुए देख सकता हूँ (पर) आर्य रज्जुक के ऊपर आने वाली विपत्ति को सह नहीं सकता।

(नीलाचाँद, पृष्ठ–145)

–यहाँ बुझी लुकाठी के पीछे जुलूस बनाकर कीर्तन करने वाले हजारों हैं, पर सत्य की चिनगारी को सहने की क्षमता वाले बहुत कम हैं।

(गली आगे मुड़ती है, 173)

3.4.2.6. परिणाम सूचक उप सम्बन्ध

–उसने जो कुछ भी कहा है हेमवर्ण जी युवराज के प्रति अपनत्व के कारण कहा है अन्यथा वह युवराज की प्रशंसा में किसी स्तुति गायक अथवा चारण से कम नहीं है।

(वैश्वानर पृष्ठ– 244)

–अब तू ही बता कितने लोग हैं यहाँ जो चाँदी के तन्के से जियादा इनाम देते हैं। "चाँदी वाले भी कभी–कभी। वरना देने के नाम पर ठन ठन ठनठन गोपाल..।

(दिल्ली दूर है, 76)

–मुझे मृत्यु के मुख से मेरा पुत्रवत् प्रतू ही निकालकर लाया अन्यथा घोर आंगिरस के साथ मेरी भी बलि हो गयी होती।

(वैश्वानर पृ0– 448)

–कनिया शीला और बुट्टन की दुनिया में अपने को भुला सकीं तो केवल सास की ममता के कारण ही (वरना) कनिया के बाप ने जाने कभी बेटी को नीचों की छाया से दूर कर दिया होता।

(अलग–अलग वैतरणी, 79)

3.4.3. विभाजक

सामान्य रूप से विभाजक समुच्चय बोधकों से योजित सहयोगी उपवाक्य विभाजक सम्बन्ध द्योतित करते हैं।

–करैता गाँव में कोई शादी–व्याह हो, (या) कोई मुण्डन–जनेऊ हो, (या) कोई व्रत–त्योहार हो, या कोई उत्सव–समारोह हो, दयाल महाराज उसमें सबसे पहले तैयार दिखेंगे।

(अलग–अलग वैतरणी, 3)

–उन्होंने साफ कहा था, "बिहारी, भोजपुर हो <u>या</u> रोहतास, बिहार का पश्चिमी क्षेत्र हो <u>या</u> उत्तर प्रदेश का पूर्वी क्षेत्र, उसमें बंदर बाँट वाली लड़ाई बेकार होगी।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 29)

–वे रोते हैं <u>या</u> गाते हैं, इसमें मुझे कोई अन्तर ही मालूम नहीं होता।

(गली आगे मुड़ती है,81)

–या खुदारा ये कमान से निकले तीन तीर हैं <u>या</u> हँसा– हँसाकर मौत में सुला देने वाली दवा की पुड़ियाँ।

(कुहरे में युद्ध, 10)

–तुम विसश्रवा को <u>या</u> तो जानते नहीं <u>या</u> तो वह शत्रु के हाथ में बिक गया।

(कुहरे में युद्ध, 121

–सब इंस्पेक्टर जागर देखो या अपने अमला सिपाहियों से उठवाकर अस्पताल भिजवाओ।

(शैलूष पृष्ठ सं0– 25)

–चलो रामलखन, देखो तो वह सामने पड़ी लाश सचमुच में लाश है <u>या</u> लाश का ढोंग रचाया गया है।

(शैलूष, पृष्ठ सं0–25)

–अभी–अभी रवेतीपुर के प्रसिद्ध पुरोहित घुरफेंकन जी बोल रहे थे। इनके पास प्रतिवर्ष अगहनी और चैती फसलों के कटते ही टट्टुओं से लादकर गेहूँ– जौं <u>या</u> धान–बाजरा आता है, <u>या</u> कहिए, महाराज जी कारिंदों को भेजकर वसूलवाते हैं। क्या ब्राह्मण को प्राप्त अग्रहार केवल व्यक्ति की थाती होती है <u>या</u> यह उसे पाठशालाएं, अतिथि–गृह, मंदिर– निर्माण आदि के कार्यो में खर्च करने के लिए मिलता है?

(शैलूष, पृष्ठ सं0– 99)

–देखिए न यह शंख दक्षिणावर्त है (अथवा) यह शुक्लि वज्रमणि (हीरे) की तरह चमक रही है।

(नीलाचाँद, 182–183)

–हमें केवल तीन मंजनीकों को ही ध्वस्त कर देना है (या) आपने कुछ और उत्तरदायित्व सौंपे हैं मुझे।

(हनोज दिल्ली0, 158)

–प्रजा को बचाने के लिये तो एक राजा चाहिए (चाहे) वह अभद्र ही क्यों न हो।

(दिल्ली दूर है, 452)

3.4.4 वाक्य योजना

3.4.4.1 एकाधिक साधारण वाक्यों के संयोग से

–उसेन कमरे में जाकर चरणोदक लिया [1] +
और माथा झुकाकर बैठ गया। [2]

(गली आगे मुड़ती है, 3)
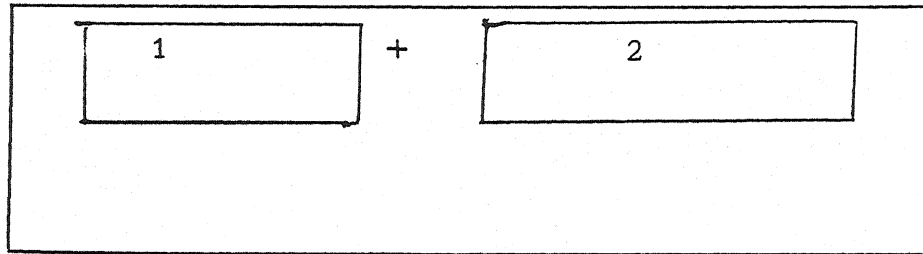
–पानी अभी उतना नहीं था [1] +
पर काफी मटमैला हो गया था। [2]

(गली आगे मुड़ती है,32)
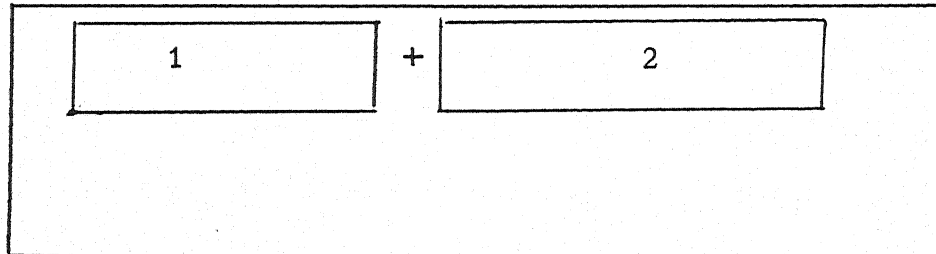
–एक कमीज डाली [1] + और झोला लेकर चौमुहानी की ओर चला [2]

(गली आगे मुड़ती है,72)

1 + 2
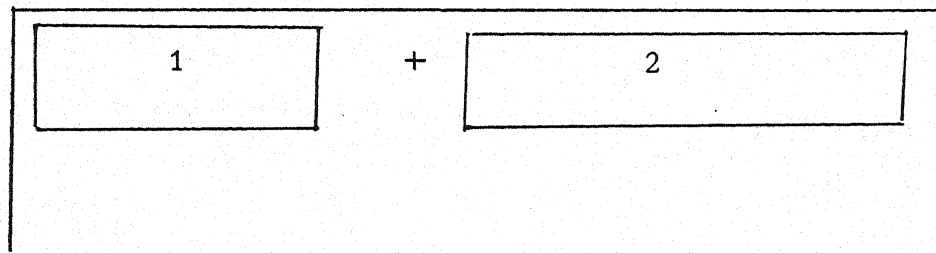
–मैं तो फटी पैजार बन चुकी हूँ सफी साहेब [1] + आप मुझे उस जालिम से बचाइए 2 + और हमोर खानदान के इस छोटे से नशेमन को इस खूँखार करगसों के जहरी ले पंजों से उजड़ने से बचा लीजिए[3] + मैं आपकी जूती खोलने वाली वाँदी बनने को तैयार हूँ [4] + पर हमें बचाइये [5]

(दिल्ली दूर है, 108)
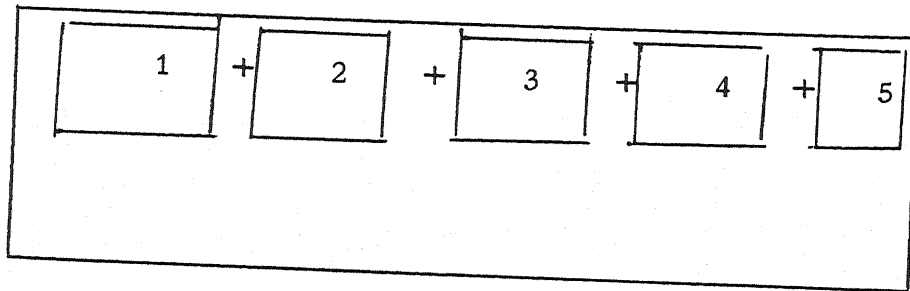
–मेरी आपा मेरी माँ जैसी हैं [1] + पर मैं शैतानियत की पुड़िया ही बनी रही [2]

(दिल्ली दूर है, 109)
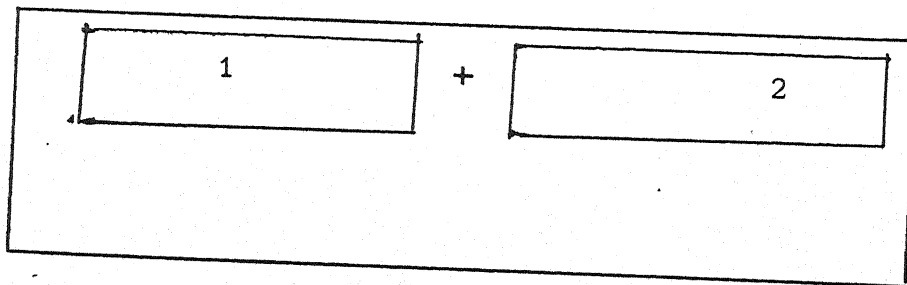
–मेरे लिए तो खास नहीं है, वाशा [1] +

मगर मेरी बीबी के वास्ते खास ही नहीं अहम है। [2]

(दिल्ली दूर है, 110)
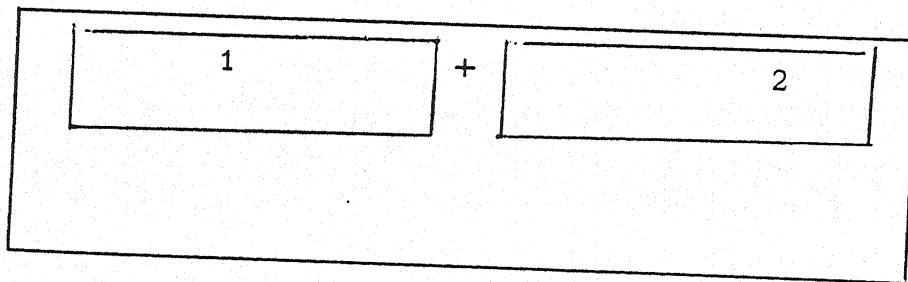
–याकूत ने अपना तेग खींचा [1] + और वाशेक की तलवार पर झटका दिया[2]

(दिल्ली दूर है, 215)
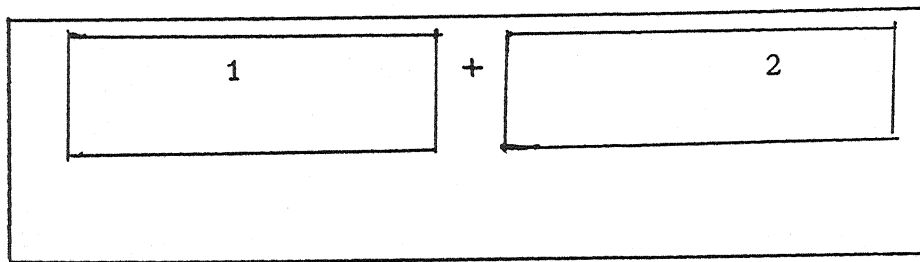
–मैं रणनीति नहीं जानती [1] + मैं दाँव–पेंच के बारे में शून्य बराबर ज्ञान रखती हूँ[2] + पर तूने न जाने कितना देखा [3] + और पढ़ा है [4] + सिर्फ आयु में ज्येष्ठ होने से ही तो दण्डरक्षिता हर व्यक्ति के कार्य का निर्णय नहीं कर पाएगी[5] + जानती हूँ [1] + जानती हूँ [1] + पर डर लगता है[2] + इसलिए मैं हर बार तुम्हारे नये कदम पर घबरा जाती हूँ [3] + पर लगता है [4] + जैसे कदार्य का यही निर्णय है[5]

(दिल्ली दूर है, 214)
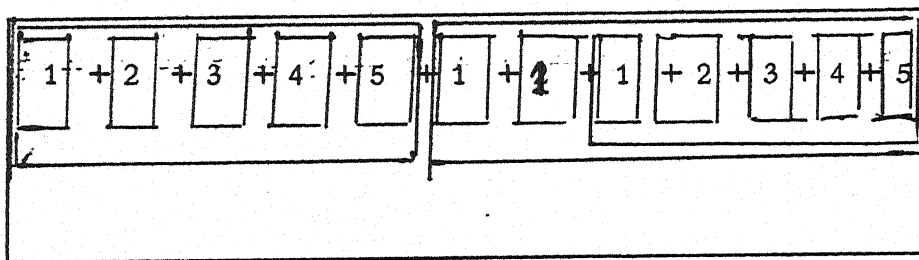
–अँग्रेजी में थोड़ा नम्बर पा जाती हो ना[1] + इसलिए वकालत करती हो[2]

(गली आगे मुड़ती है, 127)
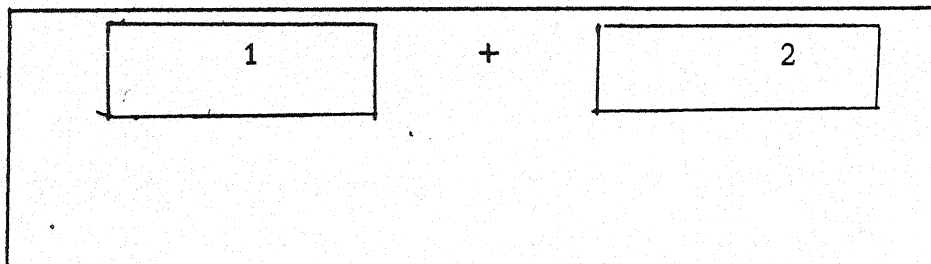
—मैं कोई गुंडों— शोहदों के जुलूस में नहीं जाता [1] + और न तो यह राजनीतिक जूलूस है [2]
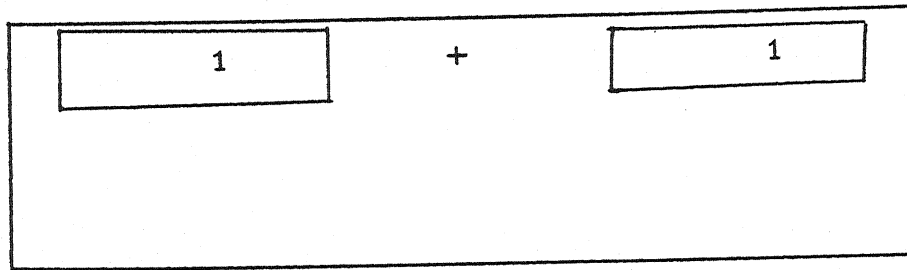
—तुम तो ऐसे ही बुखार में हो [1] + (इसलिए) यहीं नहा लेते हैं[2]

(गली आगे मुड़ती है, 126)
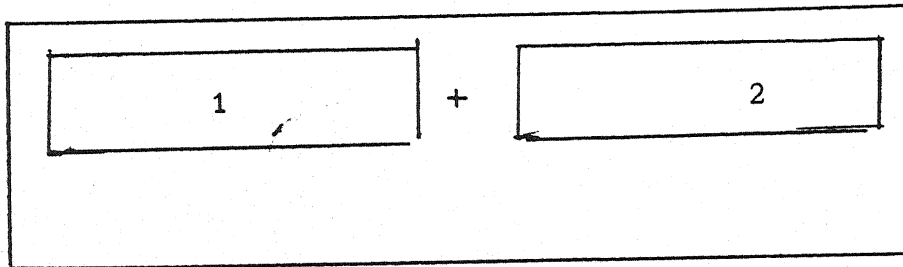
—मैंने शीशी ब्हिस्की के अद्धे के पास मुँह लगाकर भर दी[1] + बिट्टो अपने कमरे में थी [2] + अम्मा शायद रसोई में थी[3] + मैंने शीशी का ढक्कन बन्द कर दिया[4] + और अद्धे को ट्रंक में वैसे ही रख दिया[5]

(गली आगे मुड़ती है, 127)
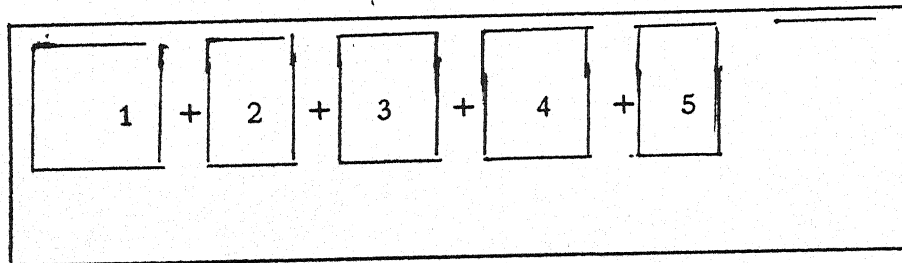
—वह गिरोह काफी उत्तेजित था[1] + और भट्टाचार्य को पीट देना चाहता था[2] + और तभी देवनाथ ने देख लिया[3] + और मुझे और माथुर को भेजा [4] + और हम लोगोंने पूरी नाकेबंदी तोड़ दी[5] + और लड़कों को तितर-बितर कर दिया[6]

(गली आगे मुड़ती है, 129)
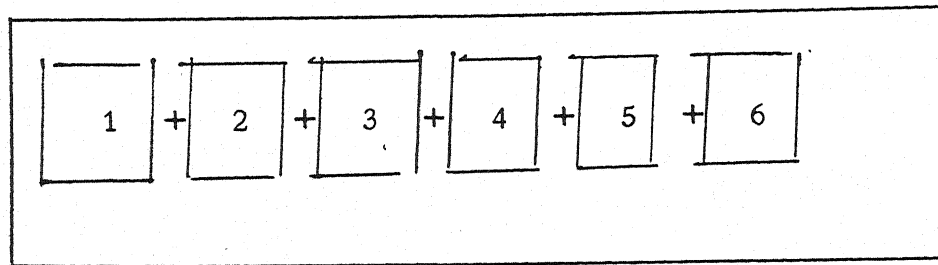
–भग्गू शाह ने आधा दरवाजा चिपकाकर बन्द कर रखा था[1] + और डर के मारे उनको कँपकँपी छूट रही थी[2]
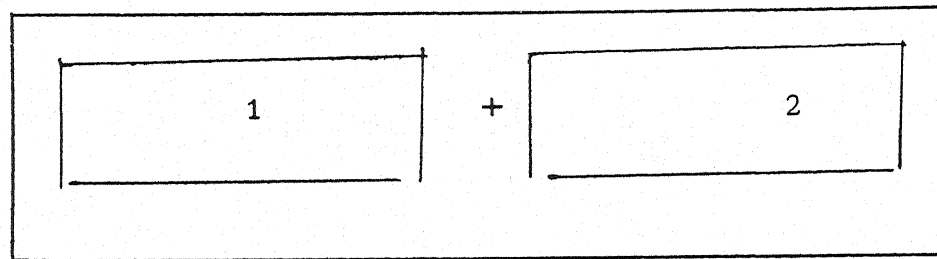
–मैंने न तो कभी जासूस रखे[1] + न कभी उनकी बातें सुनी[2]

(शैलूष, पृष्ठ, 22)
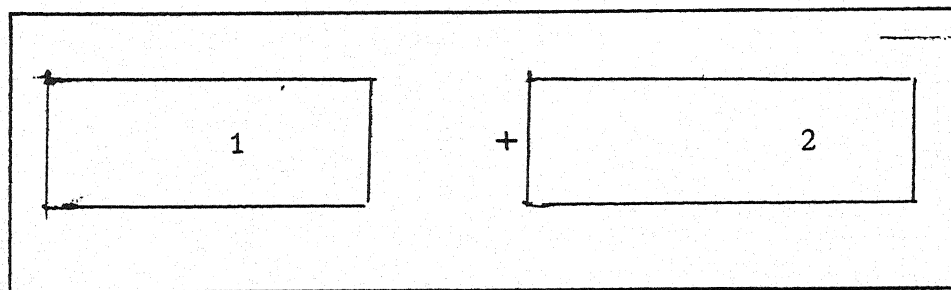
–धूप चिलचिलाने लगी थी[1] + यद्यपि यह चैत का महीना था[2]
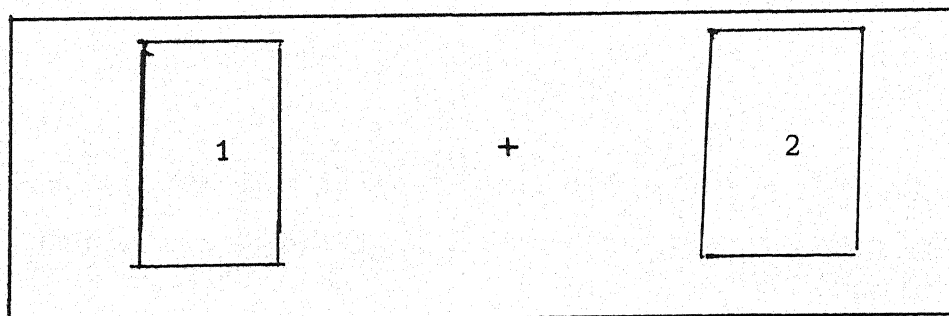
–बिहारी न तो क्रान्तिकारी था[1] + और न सच्चा जन सेवक[2]

(शैलूष, पृष्ठ, 29)

1 + 2
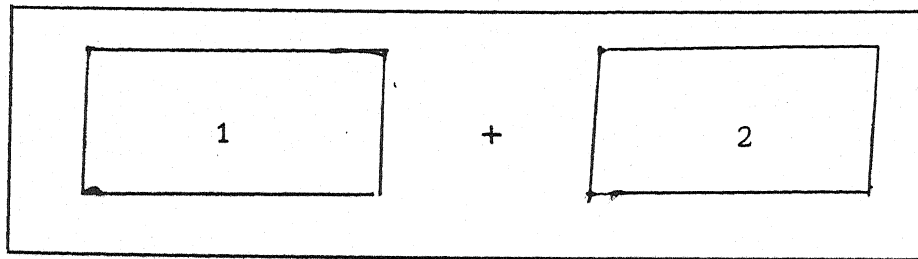
–बात करने का न समय है बाबू[1] + और न, असंबद्ध स्वप्न को सत्य कहकर बताने की आवश्यकता[2]

(शैलूष, पृष्ठ, 29)
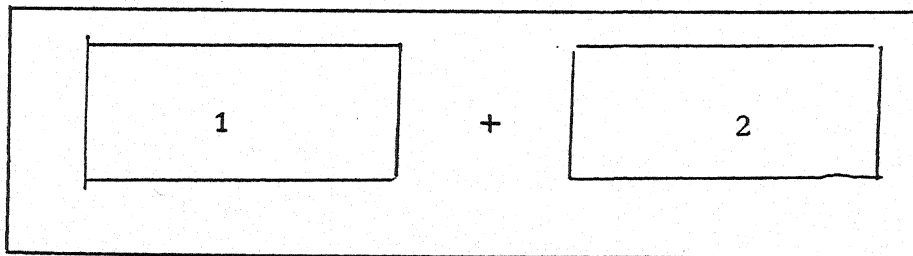
–सेनायें आमने–सामने खड़ी थीं[1] + पर किसी को चिंता नही थी[2]

(शैलूष, पृष्ठ, 30)
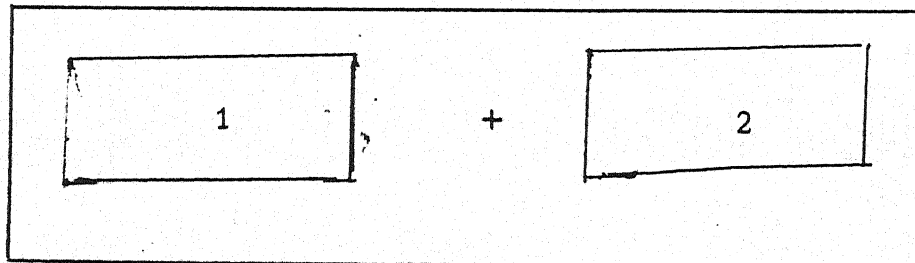
–परजा आपको गुरू मानने लगी है[1] + और धन्न–धन्न कर रही है[2] + और आप जाकर सुमेर बनिया के यहां से लड्डू ले आइये[3] + और सबको बांट दीजिये[4]

(शैलूष, पृष्ठ 34)
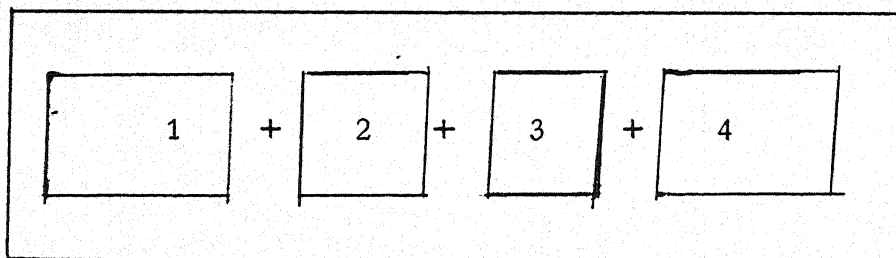
केश कंक्ली ने आसन छोड़कर पास ही गड़ा त्रिशूल उठाया[1] + और उसे उसने घोर आंगिरस पर लक्ष्य साधकर फेंका [2] + इसे प्रतर्दन देख रहा था [3] + और उसने धन्वा पर दीर्घ मुखी अयस वाण चढ़ाकर लक्ष्य भेद दिया[4] + और त्रिशूल लक्ष्य से एक हाथ दूर पृथ्वी पर गिर पड़ा[5]

(वैश्वानर पृष्ठ सं0–158)
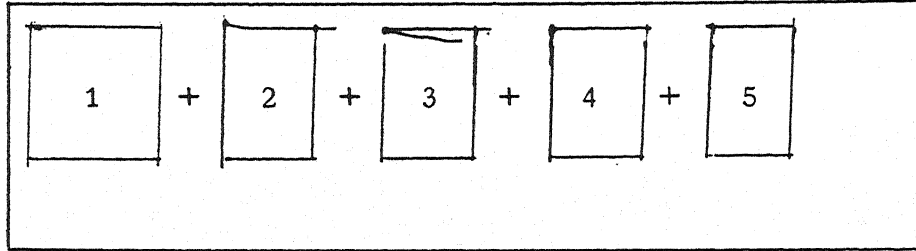
लड़की को संस्कृत से एलर्जी है [1] + इसलिए संस्कृत पर ज्यादा ध्यान दो।[2]
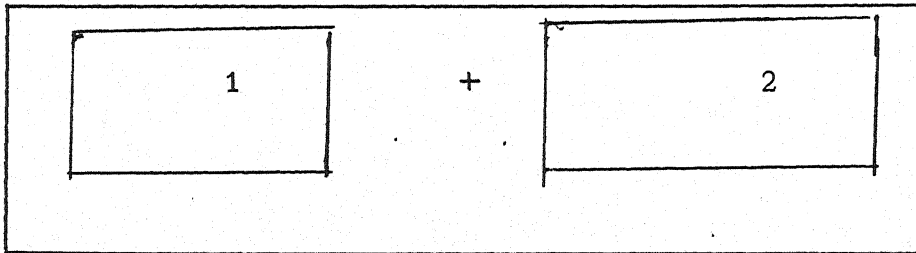
(गली आगे मुड़ती है, 45)

जाने क्या था उस हृदय में[1], वर्षों की यादों [2] + कल्पनाओं और सपनों से बुना हुआ[3] + जो जैसे रूलाई और हिचकियों में ही अपनी अभिव्यक्ति पा सकता था[4]

X 1 + 2 + 3 + 4

(अलग–अलग0, 121)
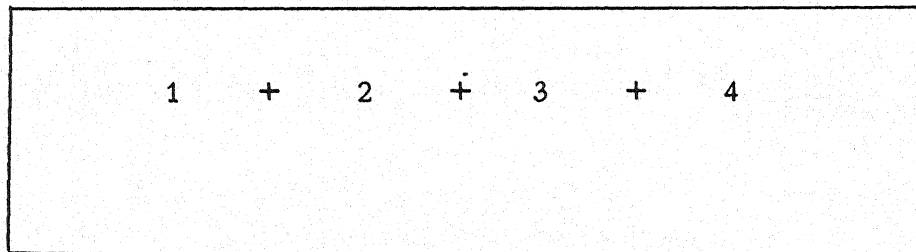
3.4.4.2. एकाधिक मिश्र वाक्यों के संयोग से

–लोग कहते हैं[1] + कि जब सहजन में फूल ऐसा खिलें[2] + जैसा वे कभी न खिलते हों[3] + तो सच मानिए[4] + कि डाल टूटेगी[5] + वह सब होना था[6] + वरना देवपाल उनके घर में जन्म ही क्यों लेता[7] + जब जन्मा [8] + तो इतना सुन्दर क्यों हुआ [9] + कि पीछे की सात पीढ़ियों में उनके खानदान में वैसी गठन–बनावट का कोई कभी हुआ ही नहीं[10]

(अलग–अलग0, 25)
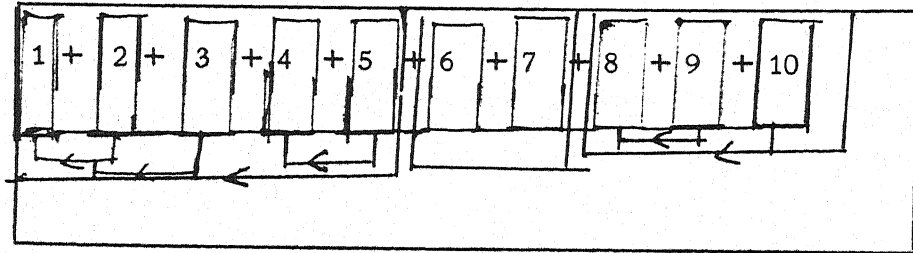
–इन लोगों ने न केवल करैता गाँव के जमींदार को हमेशा परेशान किया [1] + बल्कि ईसा खाँ ने पूरी कोशिश की [2] + गाँव मीरपुर के बबुआनों के हाथ न बेचा जाय [3] + (और) इसके बाद तो इन टुकड़हों ने हाथों से टक्कर लेने की जैसे कसम ही खा ली[4]

(अलग–अलग वैतरणी, 24)
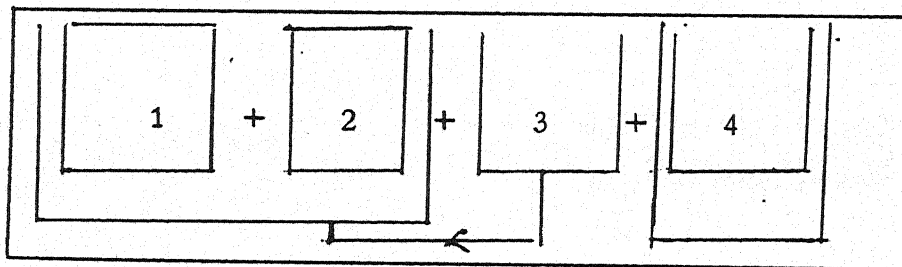
–कितनी बार उसने मौसी का आँचल पकड़कर विपिन की शिकायत की [1] + पर अचानक एक दिन विपिन ने (जब) उसके होने का अनुभव किया [2] + तो उसे बड़ा अचम्भा अनुभव हुआ [3] + कि पुष्पी कितनी बड़ी हो गयी है [4]

(अलग–अलग वैतरणी, 78)
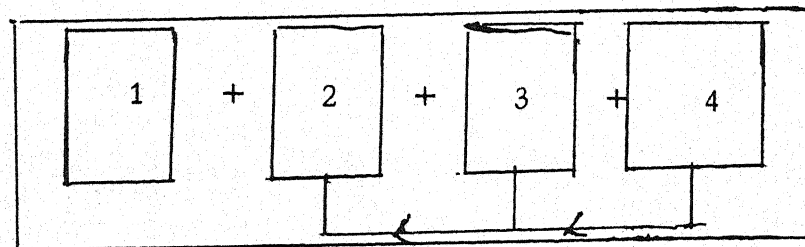
–नगाड़ा डम्– डम् की आवाज की लकीर खींचता गलियों में घूम रहा था [1] + और दरवाजों के भीतर से औरतें डरती–डरती इस अशुभ बाजे की ओर देखतीं [2] + और फिर दरवाजे बन्द कर लेतीं [3] + कि कहीं कोई उनके वदन की मैली पैबन्दों से भरी साड़ी न देख लें। [4]

(अलग–अलग वैतरणी, 83)
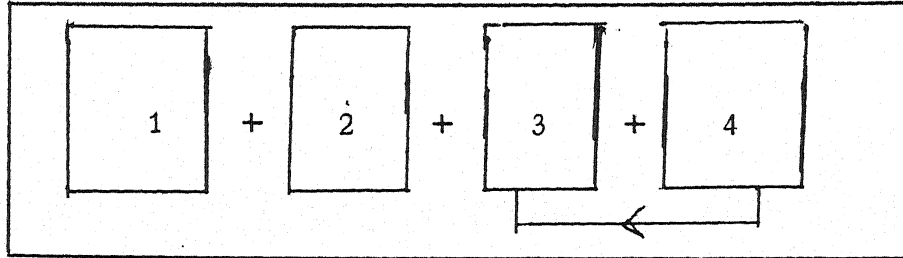
–आवाज गाँव की गलियों में घूम रही थी [1] + यह आवाज कितनी नाचीज है [2] + न क्रम, न लय..., न मिठास, न आकर्षण [3] + कुछ भी तो नहीं है इसमें [4] + पर गाँव में विद्यमान कोई भी नहीं है ऐसा [5] + जो दरवाजे से, बरामदे से आँगन या छज्जे से इस आवाज को सुनकर चौंकता न हो [6] + चौंककर इसके अर्थ पर सोचने की फिकर कितनों को होती है। [7]

(अलग–अलग वैतरणी, 83)
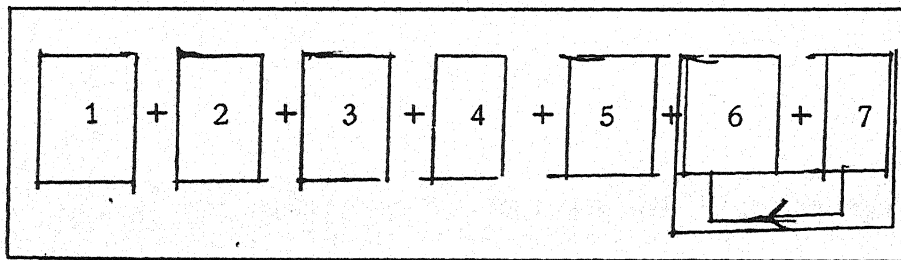
–उनकी इच्छा होती है [1] + कि वे धीरे–धीरे उस औरत के पास पहुँच जायें [2] + और उसकी पीठ की ओर खड़ी होकर एक झटके से उसका घूँघट खींच दें [3] + भर आँखों एक बार मुँह तो देख लें [4] + जग्गन के तन–मन पर पूरी तरह छा जाने वाली औरत को अच्छी तरह देखने का उनका हक तो है ही [5]
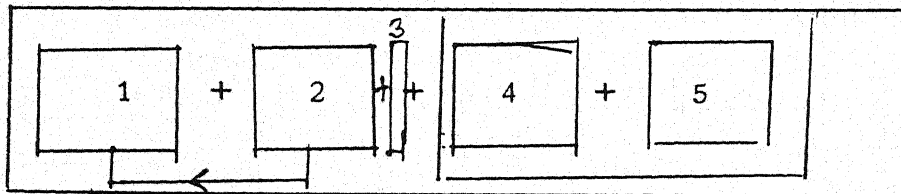
–उस रोज खाना खाकर वे उठे [1] + मुँह–हाथ धोकर जाना ही चाहते थे [2] + कि बड़ी सलहज ने कहा [3] + (कि) बबुआ जरा बैठ जाव [4] + (और) पान–पत्ता खा लो [5] + इतनी जल्दी का है [6]

(अलग–अलग0 215)
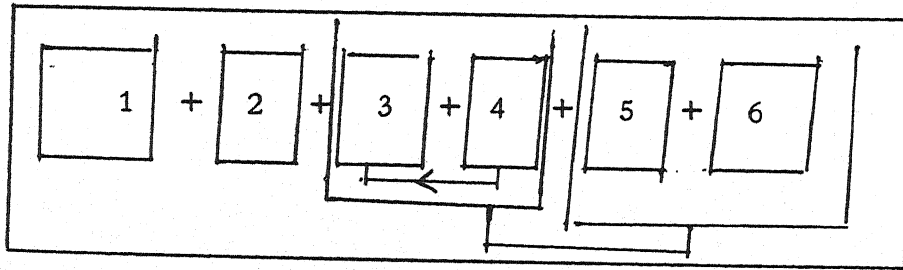
–इससे तो भला है [1] + कि शुरू में ही बात टूट गयी [2] + जो मुँह फुलाये[3] + वो अपने घर [4] + (और) मैं अपने घर [5] + मैं किसी के दरबज्जे पर रोटी टुकड़ा माँगने तो नहीं जाती [6]

(अलग–अलग0, 216)
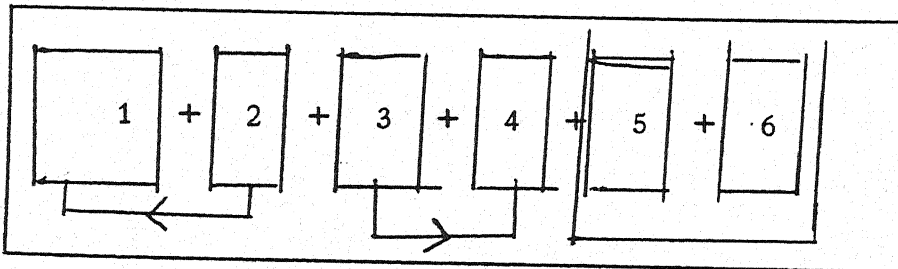
–यह जरूर हुआ [1] + कि जग्गन की शादी की बात चलती [2] + तो वे उदास हो जाती [3] + इधर उधर पड़ोसियों के घर या अगुवाई करने वालों से इस विषय की चर्चा होते ही वे खूब सचेत– सावधान हो जातीं [4] + और इस ढंग से बोलतीं–बतियातीं [5] + कि सुनने वाले जग्गन के प्रति उनकी शुभेच्छा से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते [6]

(अलग–अलग वैतरणी,216
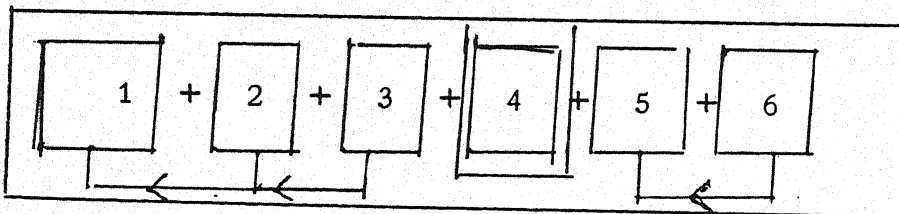
–यह कोई इत्तफाक नहीं था [1] + कि टीकरों को समतल बनाने का कार्य उन्हें ही सौंपा गया था [2] + जो जिन्दगी में हमेशा समतल जीवन चाहते रहे [3] + और पा न सके [4]
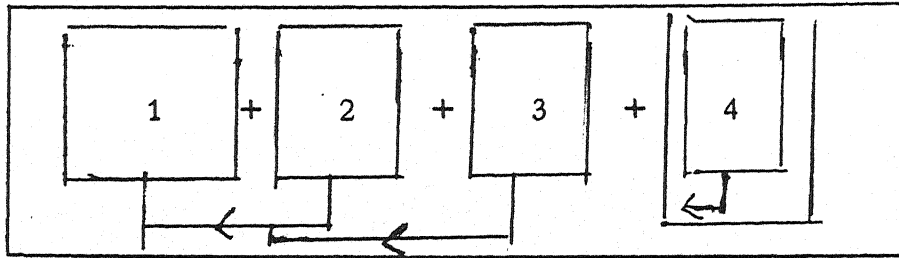
(शैलूष, पृ0सं0– 73)

3.4.4.3. एक या एकाधिक साधारण और एक या एकाधिक मिश्र वाक्यों के योग से

–मिसराइन की बातें सुनकर लोग स्वीकृति में सिर हिलाते [1] + और चतुराई की तारीफ करते [2] + पर इन प्रसंगों के उठ जाने पर मिसराइन जरूर अस्थिर ही रहती[3] + मन की धड़कनें बढ़ जातीं [4] + जग्गन के प्रति उदारता और परोपकार की भावना जहाँ मन को थोड़ा उत्साहित और खुश करती [5] + वहीं लगता [6] + कि औरत आते ही जग्गन पराये हो जायेगें [7] + (और) उन पर मेरा अधिकार न रहेगा [8] + और सहसा मिसराइन के सीने में सुई की नोंक की तरह कोई चीज लगातार टुप–टुप करती चली जाती [9] + उन्हें लगता [10] + कि कोई कलेजे को सिलाई मशीन के नीचे रखकर पैडल हिला रहा है [11] + और दर्द भरी चुभन की अटूट कतार में बखिया लगती चली जा रही है [12]

(अलग–अलग0,216,217)
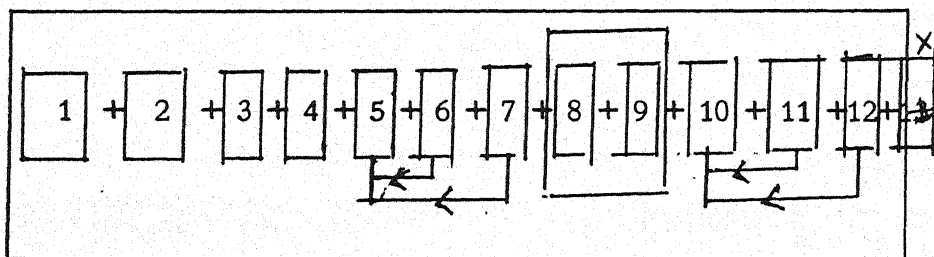
–अब तो भई माँ–बाप, भाई–भौजाई जो भी कहो [1] + सब मैं ही हूँ जग्गन की[2]+ एक देवरान आ जाएगी [3] + तो घर मनसायन हो जाएगा [4] + अकेले–अकेले बखरी जैसी काटने दौड़ती है[4] + उनके आ जाने से मेरा भी कुछ काम हल्का

हो जाएगा [6] + उसके बेटे-बेटियों को मल-धँस, धो-नहवाकर मेरा भी जनम सुफल सारथक लगेगा [6] + बाकी बिना जाने माछी निगलने की तो भैया हिम्मत नहीं अपने में [8] + साल-दो साल देर भले हो जाये [8] + जानी-पहचानी, देखी-भाली लड़की ही लाऊँगी मैं तो [10]

(अलग-अलग0, पृ0-216)
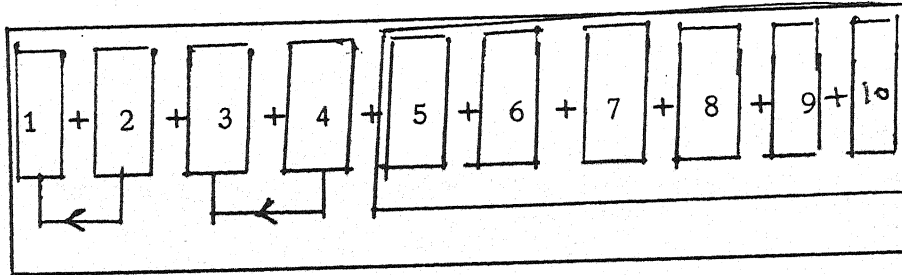
-वे चबूतरे पर फैलायी घास पर उठंग कर बैठ गयीं [1] + कातिक की सूखी घासें एक अजीब सोंधी- सोंधी सुवास से भर जाती हैं [2] + माटी सूखने के बाद माटी कड़ी हो जाती है [3] + और धूप से पत्तियों का रस गाढ़ा होकर तरह-तरह की खुशबू से भर उठता है [4] + और फिर जब यह लहलही घास काटकर दरवाजे पर सूखने के लिए डाल दी जाती है [5] + तो लगता है [6] + जैसे किसी ने मीठी-मीठी भीनी गंधों में गरम कालीन ही बिछा दी है [7] + मिसरायन इस बेशुमार गन्ध के बीच जैसे डूबती जा रही थीं [8] + उन्होंने घास का एक तिनका उठाया[9] + और मुँह में डालकर दाँतों से कुटकने लगीं [10] + एक हल्की खुशबूदार मिठास से जीभ झनक उठी [11] + तभी मिसरायन को लगा [12] + कि उन्होंने महीनों से अपने मुँह और बाँहों पर हाथ नहीं फेरा है [13]
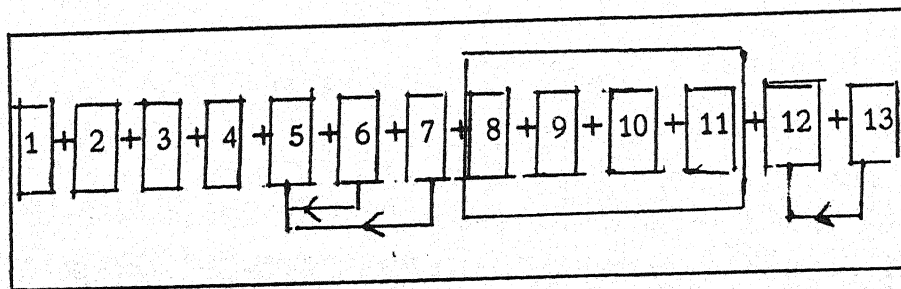
(अलग-अलग, पृ0-217)

-क्या इसका है[1] + क्या अपना है [2] + कभी सोचा भी नहीं [3] + पर आज कैसा उखड़कर बोली [4] + कि यह मत समझना [5] + कि अपना हिस्सा भी उस मुँह झौंसी के लिए छोड़ जाऊगी [6] + अभी भी उसे विश्वास नहीं हुआ[7] + कि

कोई दूसरी मुँह झौंसी इस घर में नहीं आएगी [8] + जिसके चौगिर्द अपने जीवन को इस तरह बाँध लिया [9] + कि एक निश्चित वृत्त में घूमने के अलावा कोई उद्देश्य ही नहीं रहा [10] + वही आज बन्धन खोलकर मुक्ति दे रहा है[11] + और जग्गन हैं [12] + कि उन्हें लगता है [13] + कि यह मुक्ति उनके गले में फँसरी की तरह झूल रही है [14] + और निरन्तर कसती चली जा रही है[15]

(अलग–अलग, पृ0–220)
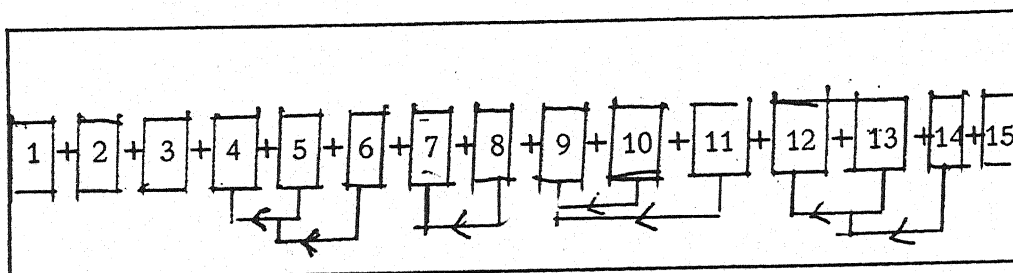
–सौ दफा मना किया [1] + कि उतने सबेरे उठकर नहाया न करो [2] + कसरत कसरत से छुट्टी पाकर दाना–पानी करके काम पर जाओ [3] + दोपहर को लौटकर नहाओ–धोओ [4] + पर मेरी बात कौन सुनता है [5]

(अलग–अलग, पृ0 220)
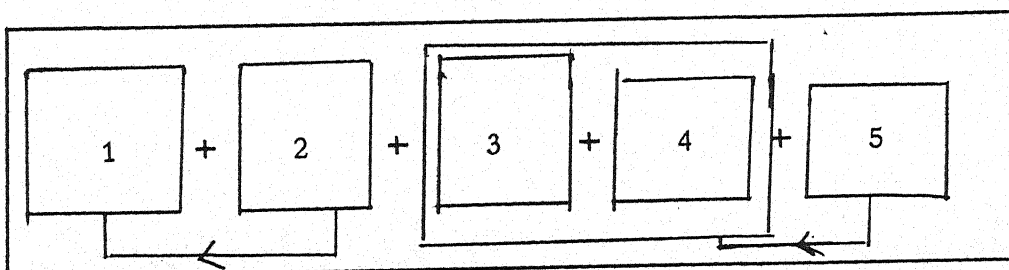
–यकायक मिसरायन की ममता पिघलने लगी थी [1] + और वे हाथ का लोटा और गुड़ की भेली नीचे रखकर जग्गन के पास बैठ गयी थी [2] + बाहरी निकसार का दरवाजा भिड़ा हुआ था [3] + खुला भी होता [4] + तो शायद मिसरायन को चिन्ता न होती [5] + क्योंकि वे एक अबूझ विश्वास के साथ जग्गन के सिर को दबा रही थी [6] + जग्गन वैसे ही बैठे रहे [7] + ममतालु हथेलियों के कवच में आते ही सिर का दर्द आश्वस्त होकर ऊँघने लगा था [8] + बाहरी यातना से पीड़ित शिशु को जैसे माँ की गोद मिल गयी हो [9] + दर्द की टीस बन्द हो गयी थी [10] + पर अब भी कभी–कभी टपकन हो जाती [11] + जैसे बच्चा खूब आश्वस्त होकर भी हुड़क पड़ता है।[12]

(अलग–अलग0, पृ0–220)
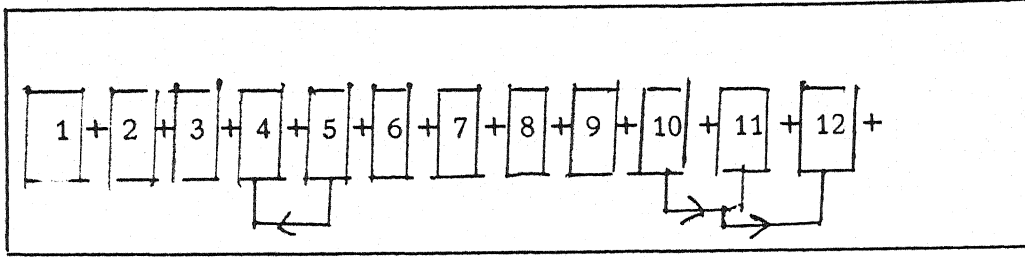
–एक अंधेरा ऐसा भी होता है [1] + जो कुछ समय के लिए ही सही, तन–मन पर इस कदर छा जाता है [2] + कि आदमी उसके भीतर एक विचित्र स्वीकृति और समर्थन का अनुभव करता है [3] + जैसे दीवालें सिर्फ सुरक्षा का आधार ही नहीं हैं[4] + बल्कि किसी सचेत सत्ता की तरह अपनी भूरी–भूरी अँगुलियों से एक स्याह ममतालु पर्दा चढ़ाकर थके दुःखी लोगों के क्षणिक सुख की चौकसी करने लगी हैं[5]

(अलग–अलग, पृ0–222)
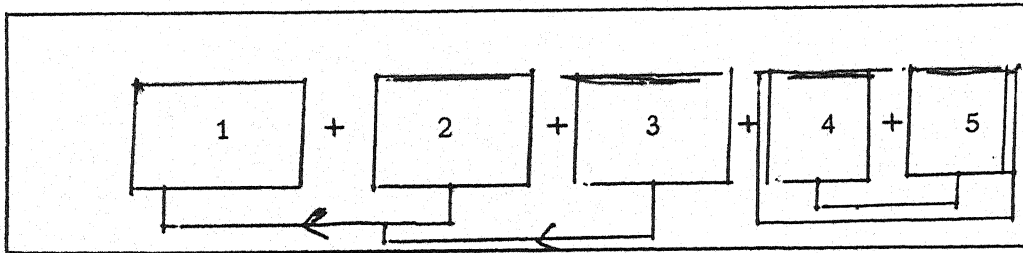
–ताप और वाष्प की आँधी के बीच जग्गन को अचानक लगा था [1] + कि वे किसी भारी अबूझ पदार्थ की लपेट में फँस गये हैं [2] + जो उनके सारे अस्तित्व को निरर्थक और बेवस किये दे रहा है [3] + उन्हें हठात् अपना पुरूषत्व आहत सा प्रतीत हुआ [4] + इस नई चेतना ने उन्हें एक झटके से भँवर जाल को तोड़कर अलग होने के लिए प्रेरित किया [5] + वे सक्रिय चेतन पिंड की तरह सम स्तर से ज्यों ही हटे [6] + कि भाभी की भुजाएं उन्हें पुनः सहारा देती–सी प्रतीत हुईं [7] + उन्हें हल्का आश्चर्य भी हुआ [8] + कि कोई अपने को विजित करने वाली योजना में सहायक कैसे हो सकता है [9] + यह आश्चर्य किंचित गर्व और विपुल खुशी से भरा–भरा कुछ इस कदर उनके शरीर से लिपटता गया [10] + कि वे सम स्तर से अलग होकर भी अपने को जल के भारी थपेड़ों से अलग न कर सके। [11]

(अलग–अलग, पृ0–222)
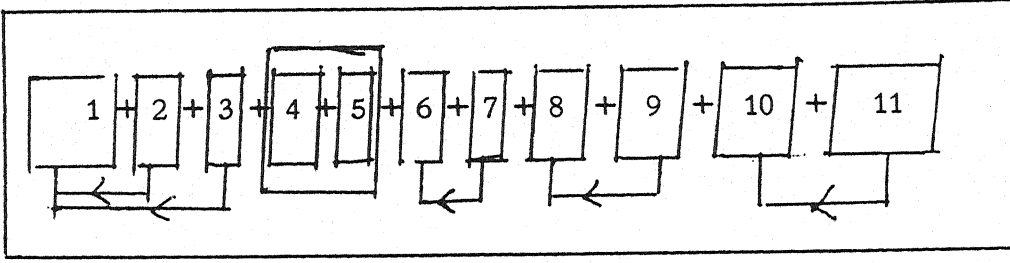
–मैंने मन के शंवर को पराजित करके मन के भीतर ही विद्यमान वैश्वानर से [1] + या अन्य शब्दों में इन्द्र से कहा था [2] + कि अगर आप मुझे इस विजय पर कुछ देना ही चाहते हैं [3] + तो मेरी मानव जाति को प्राणशक्ति से भरपूर ऊर्जस्वित बनाने की कृपा करें [4] + मैंने कहा था [5] + ऋषिगण, मैने कहा था [6] + कि प्राणशक्ति का चुनाव इसलिए कर रहा हूँ [7] + क्योंकि उससे बड़ी पूंजी मनुष्य के पास कुछ भी नहीं है [8]

(वैश्वानर पृ0– 267)
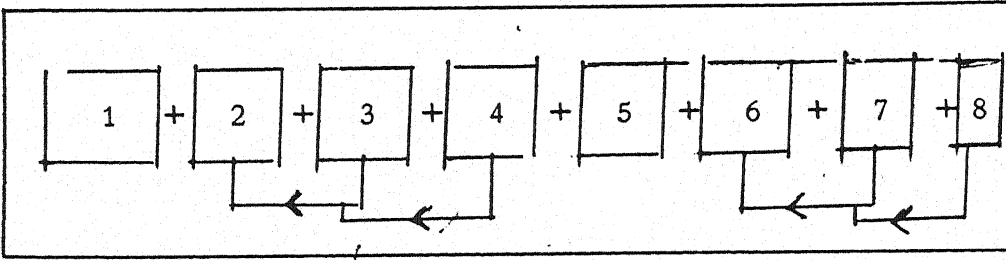
3.5. वाक्यांश

पीछे कहा जा चुका है कि उपवाक्य से छोटी इकाई वाक्यांश या पद बंध है। वाक्यांशों अथवा पदबंधों से मिलकर उपवाक्य बनते हैं। पदबंध या वाक्यांश वाक्य में निर्धारित व्याकरणिक प्रकार्य पूरी करने वाली इकाइयाँ हैं जिनका अस्तित्व केवल वाक्य के अन्तर्गत सम्भव है, वाक्य के बाहर नहीं।

प्रत्येक वाक्य में कर्ता, कर्म, पूरक, अव्यय तथा क्रिया आदि के निर्धारित स्थान होते हैं जहाँ पर प्रयुक्त होकर संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण, क्रिया आदि शब्द वाक्य में कुछ निश्चित भूमिकाएं निभाते हैं और निर्धारित प्रकार्य सम्पन्न करते हैं। इन स्थानों को प्रकार्य स्थान (slot) कहते हैं और इन प्रकार्य स्थानों पर जो शब्द या शब्द–समूह प्रयुक्त होते हैं या होने की क्षमता रखते हैं उन्हें वाक्यांश या पद बंध कहते हैं। इस दृष्टि से वाक्यांश एक शब्द का भी हो सकता है और एक से अधिक शब्दों का भी। निम्नलिखित वाक्य द्रष्टव्य है:

(1). लड़की शाम को लौटेगी।

(2). मेरी लड़की कल शाम को लौटेगी।

(3). मेरी सबसे बड़ी लड़की कल या परसों शाम को लौटेगी।

वाक्य (1) में "लड़की" एक वाक्यांश है, "शाम का" दूसरा और "लौटेगी" तीसरा ये क्रमशः कर्ता, क्रिया विशेषण और क्रिया के प्रकार्य स्थान पर प्रयुक्त हैं। वाक्य (2) और (3) में इन्हीं वाक्यांशों का विस्तार है। इसका निष्कर्ष यह है कि न्यूनतम वाक्यांश के विस्तार के लिए जितने भी विशेषक प्रयुक्त होंगे वे सभी उसे अंग होते जाएंगे।

वाक्य में वाक्यांश जो प्रकार्य करते हैं उनके आधार पर हम वाक्यांशों की प्रकार्यात्मक कोटियाँ बना सकते हैं, जैसे कर्ता वाक्यांश, कर्म वाक्यांश, पूरक वाक्यांश, क्रिया विशेषण वाक्यांश और क्रिया वाक्यांश। इन प्रकार्यो के लिएप्रयुक्त वाक्यांशों के संरचनात्मक स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए इनकी संरचनात्मक कोटियाँ निर्धारित की जा सकती हैं: जैसे संज्ञा वाक्यांश सर्वनाम वाक्यांश, विशेषण वाक्यांश, क्रिया विशेषण वाक्यांश तथा क्रिया वाक्यांश।

यह ध्यान देने की बात है कि जिन वाक्यांशों दो या अधिक शब्द प्रयुक्त होते हैं उनके शब्द अर्थ की दृष्टि से एक दूसरे से घनिष्ठतम रूप से सम्बद्ध होते हैं। वाक्यांशों के ये शब्द (या घटक) एक-दूसरे के <u>निकटतम अवयव</u> कहलाते हैं और इनके बीच का यह संबध <u>निकटतम अवयव का संबध</u> कहलाता है। वाक्य (2) में "मेरी" और "लड़की" एक दूसरे के निकटतम अवय हैं, लेकिन "लड़की" और "कल" नहीं यद्यपि ये दोनों शब्द भी एक-दूसरे के निकट हैं। अतः "मेरी लड़की" को वाक्यांश हो सकता है, लेकिन "लड़की कल" नहीं।

<u>वाक्यांश का संरचनागत् वर्गीकरण</u>

आंतरिक संरचना या विन्यास के आधार हिन्दी वाक्यांशों के निम्नलिखित भेद किये जा सकते हैं:-
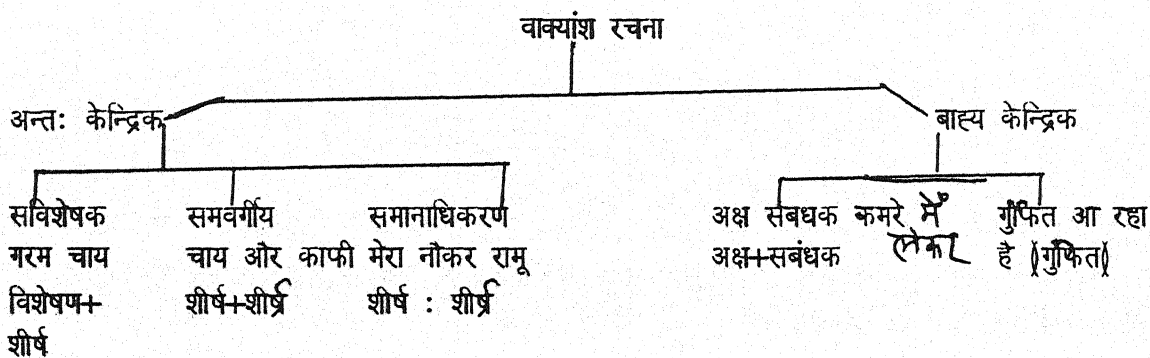
<u>अंत केन्द्रिक रचना</u>

यदि किसी वाक्यांश का कोई घटक अपने संपूर्ण वाक्यांश का कार्य करने की क्षमता रखता हो, तो ऐसे वाक्यांश को अंतः केन्द्रिक रचना कहते हैं, जैसे, "मैने इस लम्बे जीवन में सामूहिक

दु:ख को उमड़ते हुए देखा है (वैश्वानर, पृष्ठ 21), वाक्य में "इस लम्बे जीवन में" वाक्यांश के स्थान पर केवल "जीवन में" वाक्यांश भी काम कर सकता है अर्थात् "इस लम्बे जीवन में" के स्थान पर केवल "जीवनमें" वाक्यांश का प्रयोग करने पर मूल वाक्य बना रह सकता है। इस वाक्यांश में केवल एक ही घटक "जीवन में" सम्पूर्ण वाक्यांश के स्थान पर प्रयुक्त होने की क्षमता रखता है, दूसरा घटक "इस लम्बे" नहीं। अब दूसरा वाक्य लीजिए, आपके नाम के साथ रोगियों की वेदना और चीखें, पुकारें, गुहारें इस तरह जुड़ी हैं, जैसे मयूर से उसका लम्बा आकर्षक पुच्छ" (वैश्वानर, पृष्ठ 21), इस वाक्य में "वेदना", "चीखें", "पुकारें", "गुहारें" शब्दों में, से कोई भी शब्द अकेले स्वतंत्र रूप से "वाक्यांश" या "पदबंध" होने की क्षमता रखता है, अर्थात् इनमें से केसी के भी प्रयुक्त होने पर मूल वाक्य की संरचना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। जिन वाक्यांशों को स्थानापन्न नहीं किया जा सकता वे बाह्य केन्द्रिक रचनाएं होती हैं और जो अकेले ही प्रयुक्त होने की क्षमता रखते हैं वे अन्तः केन्द्रिक वाक्यांश होते हैं।

वाक्यांश का वह घटक जो सम्पूर्ण पदबंध या वाक्यांश के स्थान पर प्रयुक्त होने की क्षमता रखता है "शीर्ष" (head) कहलाता है, जैसे उक्त वाक्यांश में "वेदना", "चीखें", आदि। वाक्यांश का वह घटक जो "शीर्ष" की विशेषता बताता है या व्याख्या करता है विशेषक (Modifier) कहलाता है। जैसे पहले वाक्य में "इस लम्बे" वाक्यांश। विशेषक सम्पूर्ण वाक्यांश का प्रकार्य अकेले पूरा करने की क्षमता नहीं रखता। "शीर्ष" वाक्यांश का अनिवार्य घटक होता है और विशेषक ऐच्छिक। विशेषक के अभाव में भी शीर्ष बिना मूल वाक्य को भंग किये वाक्यांश के स्थान पर प्रयुक्त हो सकता है, लेकिन "शीर्ष" के बिना विशेषक अकेला संपूर्ण वाक्यांश को स्थानापन्न कभी नहीं हो सकता।

अन्त: केन्द्रिक वाक्यांश में कम से कम एक घटक शीर्श पदबंध होगा और शेष विशेषक या अतिरिक्त शीर्ष। शीर्षों की स्थिति के आधार पर अंत: केन्द्रिक पदबधों के तीन भेद संभव हैं:

(क) सविशेषक वाक्यांश (Attributive Phrase)

सविशेषक पदबंध में एक शीर्ष तथा एक या अधिक विशेषक होते हैं, जैसे, "लम्बे जीवन में"। "जीवन में" शीर्ष है और "लम्बे" विशेषक है। "जीवन में" शीर्ष और वाक्यांश का अनिवार्य घटक है, "लम्बे" विशेषक है, और ऐच्छिक घटक है। एक शीर्ष के साथ "वाक्यांश" में एक से अधिक ऐच्छिक विशेषक प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे "आपके इस लम्बे जीवन में" वाक्यांश में "आपके", "इस", "लम्बे" तीन–तीन शब्द विशेषक पदबंधों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं, ये तीनों ऐच्छिक हैं। ऐसे वाक्यांशों में जहाँ एक से अधिक विशेषक होते हैं, विशेषकों के संयोजन में एक विशिष्ट विन्यास या स्तरीकरण देखा जाता है। कुछ विशेषक सीधे शीर्ष की विशेषता बताते हैं, किन्तु, कुछ विशेषक किसी अन्य विशेषक की भी विशेषता बता सकते हैं।

ऐसे पदबंधों या वाक्यांशों को जिनके शीर्ष संज्ञा (या सर्वनाम) होते हैं, संज्ञा वाक्यांश कहलाते हैं। विशेषण वाक्यांशों में शीर्ष विशेषण होते हैं, और विशेषण की भी विशेषता बताने वाले पदबंध विशेषक हो जाते हैं, जैसे– "बहुत गरम चाय" में वाक्य स्तर पर "बहुत गरम" विशेषण पदबंध है, जसमें "गरम" शीर्ष है और "बहुत" विशेषक पदबंध है।

(ख). समवर्गीय वाक्यांश

समवर्गीय वाक्यांशों में दो या अधिक शीर्ष होते हैं किन्तु विशेषक नहीं होते जैसे "किन्तु, वत्स इसमें मेरा, घोर का या धन्वन्तर का अपराध क्या है।" इस वाक्य में "मेरा", "घोर", और "धन्वन्तरि" तीन शीर्ष पदबंध हैं, इनमें से कोई भी शीर्ष अकेला ही वाक्य में प्रयुक्त होने की क्षमता रखता है। संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण वाक्यांशों के बीच में "और", "एवं", अथवा "या" संयोजक का प्रयोग अवश्य होता है।

(ग). समानाधिकरण वाक्यांश

समानाधिकरण वाक्यांश में भी दो या अधिक शीर्ष होते हैं लेकिन वे परस्पर समानाधिकरण संबध में जुड़े होते हैं, जैसे, "वाम पार्श्व में नागरीवा के कलचुरि मंडलेश्वर विजय सिंह आसीन थे" इस वाक्य में "नागरीवा के कलचुरि", "मडलेश्वर" तथा "विजय सिंह" पद बंध समानाधिकरण संबध से युक्त हैं। वाक्य में ये तीनों ही अकेले ही वाक्यांश शीर्ष के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे: "नागरीवा के विजय सिंह" आसीन थे, "नागरीवा के कलचुरि विजय सिंह आसीन थे", "विजय सिंह आसीन थे", "मंडलेश्वर आसीन थे"– (कुहरे में युद्ध, 75)

यह ध्यान देने की बात है समवर्गीय तथा समानाधिकरण पदबधों या वाक्यांशों में सविशेषक रचना का मिश्रण रहता है जैसे इसी वाक्य में "नागरीवा के", "कलचुरि मडलेश्वर" पदबंध जो विजय सिंह शीर्ष पदबंध की विशेषता बताते हैं।

बाह्य केन्द्रिक रचना

वाक्य स्तरीय जो भी रचना अन्तः केन्द्रिक नहीं है वह बाह्य केन्द्रिक है। यदि किसी वाक्यांश का कोई एक घटक अपने संपूर्ण वाक्यांश का कार्य करने की क्षमता नहीं रखता तो ऐसे वाक्यांश की रचना को बाह्य केन्द्रिक रचना कहते हैं। दूसरे शब्दों में बाह्य केन्द्रिक वाक्यांश के दोनों घटक अनिवार्य होते हैं। बिना मूल वाक्य को भंग किये इनमें से किसी भी घटक को नहीं निकाला जा सकता। उदाहरण के लिए, "मैं तो घुरफेंकन के भाग्य की सराहना करने आया हूँ" (शैलूष पृ0– 95) इस वाक्य में "घुरफेंकन के" वाक्यांश की संरचना बाह्य केन्द्रिक है। "घुरफेंकन के" पदबंध इस वाक्य में स्वतंत्र रूप

से प्रयुक्त होने की क्षमता नहीं रखता। इन्हें यदि स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त किया जाय तो मूल वाक्य की संरचना में बदलाव आ जाएगा।

सामान्यतः हिन्दी में ऐसे वाक्यांशों की रचना जिनके अंत में परसर्ग का प्रयोग होता है बाह्य केन्द्रिक होती है, जैसे "भाग्य की", "भूरी आँखों में", "में मौत का", "खुदा का", "शिवजी के" आदि पदबंधों में।

बाह्य केन्द्रिक रचना वाले पदबंधों में न कोई शीर्ष होता है, और न विशेषक, लेकिन घटकों के अन्तः सबंधों के आधार पर इनके दो प्रमुख भेद संभव हैं:

(क). अक्ष– संबधक पदबंध

यद्यपि बाह्य केन्द्रिक रचना में कोई शीर्ष नहीं होता लेकिन आन्तरिक विन्यास की दृष्टि से कुछ वाक्यांशों में एक घटक, जो प्रायः संज्ञा पदवाच्य होता है, सम्पूर्ण रचना के "अक्ष" या धुरी की तरह होता है और दूसरा घटक जो प्रायः परसर्ग होता है इस अक्ष से जुड़ा रहता है और वाक्य के अन्य घटकों के साथ अक्ष के संबध को व्यक्त करता है, जैसे "आँखों में" वाक्यांश में "आँखों" अक्ष है और "में" संबंधक।

यहाँ यह स्मरणीय है कि जहाँ एक ओर "का" परसर्ग अंतः केन्द्रिक वाक्यांश में विशेषक का निर्माण करता है (जैसे राम का मकान), वहाँ दूसरी ओर वाक्य स्तर पर विशेषण वाक्यांश के अंत में प्रयुक्त होने पर यह बाह्य केन्द्रिक रचना का निर्माण करता है, जैसे "वह मकान राम का है", और "ये सभी चिट्ठियाँ पैसा माँगने वालों की हैं", में "राम का" तथा "पैसा माँगने वालों की" वाक्यांश बाह्य केन्द्रिक रचनाएं हैं।

(ख). गुम्फित वाक्यांश

कुछ बाह्य केन्द्रिक वाक्यांशों के घटक इस प्रकार परस्पर गुंफित रहते हैं कि उनमें न शीर्ष विशेषक का संबध मिलता है और न स्पष्टता अक्ष संबंधक का। संरचनात्मक कोटि तथा अर्थवत्ता की दृष्टि से वे एक ही परिवार से संबद्ध रहते हैं, जैसे आँसुओं की धारा बह रही थी (शैलूष पृष्ठ 59), जुड़ावन बोल नहीं पा रहा था (शैलूष, पृष्ठ 59), दहेज चाहिए या नहीं (शैलूष, पृष्ठ 83)। हिन्दी के क्रिया वाक्यांशों को इसी के अन्तर्गत लिया जा सकता है।

वाक्यांशों का प्रकार्यात्मिक वर्गीकरण

संरचनात्मक प्रकार्यों की दृष्टि से वाक्यांशों को सामान्यतः पाँच वर्गों में बाँटा जाता है: संज्ञा वाक्यांश, सर्वनाम वाक्यांश, विशेषण वाक्यांश, क्रिया विशेषण वाक्यांश (या अव्यय वाक्यांश) और क्रिया

वाक्यांश। व्याकरणिक प्रकार्यों के आधार पर इन्हीं वाक्यांशों को कर्ता वाक्यांश, कर्म वाक्यांश, पूरक वाक्यांश अव्यय वाक्यांश (क्रिया विशेषण वाक्यांश) और क्रिया वाक्यांश वर्गों में रखा जाता है।

<u>संज्ञा वाक्यांश</u>

संज्ञा वाक्यांश में संज्ञा एक अनिवार्य घटक होती है जिसके साथ ऐच्छिक रूप से विशेषकों का प्रयोग हो सकता है। इस रूप में संज्ञा वाक्यांश एक अन्त: केन्द्रिक रचना है जिसका शीर्ष एक संज्ञा पद होता है। हिन्दी में प्राय: संज्ञा से पूर्व ही विशेषक का प्रयोग होता है, जैसे, "हरा कपड़ा हिलाया" (कुहरे में युद्ध, 164), क्रुद्ध हाथी की टक्कर से (वही पृष्ठ 164), "कई हजार घोड़ों को" (वही पृ0 164), "जाहिर जानवरों की तरह" (वही पृ0 165), "अष्टमी की रात्रि" (165, वही), "प्रसाद के द्वार पर" (वही, 165)। कभी–कभी कुछ विशिष्ट प्रकार की अभिव्यक्तियों में विशेष बल देने के लिए इसे संज्ञा के बाद भी रख दिया जाता है, जैस, "उसने लड़की सुंदर छाँटी है", "राधा ने साड़ी नीली वाली पहन ली"।

हिन्दी में संज्ञा के विशेषक कई प्रकार के हो सकते हैं।

गुणवाचक: बड़ा, अच्छा, सुंदर (घर), सबसे लम्बा, लाल–सा कपड़ा

कृदंत/वाला: बहता (पानी), टूटी (कुर्सी), तीन बजे छूटने वाली (गाड़ी)

सार्वनामिक : कोई (काम), कुछ (बहाना), कौन–कौन (लोग), यह (लड़का)

संख्या/परिणाम : चार, चारों, दुगुन, पहला (कुछ लोग), थोड़ा (विश्राम)

का– विशेषक : राम का (लड़का), मेरा (जूता)

समानाधिकरण : मेरा भाई रमेश, हिमालय प्रदेश

आदरार्थ उपाधि : श्री रामलाल, डाक्टर बोस, वर्मा जी, निदेशक महोदय।

"जी" तथा "महोदय" विशेषकों का प्रयोग संज्ञा के बाद होता है। मुहावरेदार प्रयोगों में कुछ संज्ञा पदबंधों की असामान्य रचना भी मिलती है, जैसे, "शहर का शहर उजड़ गया", "परेशानी में परेशानी" सामने आ रही है।

एक से अधिक विशेषक वाले संज्ञा वाक्यांशों में शब्दों का सामान्य क्रम प्राय: इस प्रकार रहता है:

का– विशेषक + संकेतक + संख्या0 + गुण0 + संज्ञा (आपकी ये तीनों नीली साड़ियाँ)। "ये" तथा "आपकी" के बीच संदर्भ विशेष में क्रम–विपर्यय सम्भव है (ये आपकी तीनों नीली साड़ियाँ)।

संज्ञा वाक्यांश वाक्या में उन सभी स्थानों पर (कर्ता, कर्म, पूरक) प्रयुक्त हो सकते हैं जहाँ सामान्य संज्ञा शब्द प्रयुक्त हो सकते हैं। कर्ता तथा कर्म रूप में प्रयुक्त होने पर हिन्दी संज्ञा वाक्यांशों के अंत में आवश्यकतानुसार "ने", "को", "से" कारक चिह्न भी प्रयुक्त हो सकते हैं।

(1). प्रोफेसर ने/सभी लड़कों को बुलाया।

(2). राधा से/ नहीं चला जाता।

<u>सर्वनाम वाक्यांश</u>

सर्वनाम वाक्यांश भी एक अन्तः केन्द्रिक रचना है जिसका शीर्ष एक सर्वनाम होता है, जो प्रायः विशेषक से पूर्व प्रयुक्त होता है, जैसे, "वह बेचारा कर ही क्या सकता", "तुम लोग कहाँ जाना चाहते हो"। इनमें "वह" तथा "तुम" शीर्ष है तथा "बेचारा" और "लोग" विशेषक।

<u>विशेषण वाक्यांश</u>

विशेषण वाक्यांश भी एक अंतः केन्द्रिक रचना है जिसका शीर्ष एक विशेषण होता है। अन्य घटक इसकी विशेषता बताते हैं। "बहुत सुंदर" एक पदबंध है जिसमें "सुंदर" शीर्ष और "बहुत" विशेषक है।

विशेषण वाक्यांश की एक विशेषता यह है कि वह वाक्य के एक स्वतंत्र वाक्यांश के रूप में भी प्रयुक्त हो सकता है (जहाँ यह "विधेय विशेषण" कहलाता है) और संज्ञा वाक्यांश के एक विशेषक के रूप में भी, जैसे:

(1). उसका काम बहुत सुंदर है। (विधेय विशेषण)

(2). उसने बहुत सुंदर काम किया है। (विशेषक)

वाक्य (1) में "बहुत सुंदर" वाक्य के एक पृथक वाक्यांश के रूप में पूरक के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है। वाक्य (2) में "बहुत सुंदर" संज्ञा वाक्यांश के एक विशेषक मात्र के रूप मे प्रयुक्त हुआ। जिसका शीर्ष "काम" है।

हिन्दी विशेषण वाक्यांशों में शीर्ष के विशेषक कई प्रकार के हो सकते हैं, जैसे अत्यन्त, विशाल, बहुत अच्छा (तीव्र गुणवाची), तुमसे बड़ा, सबसे छोटा (तुलनावाची), आप जैसा शरीफ (उपमावाची), लाल–सा (सादृश्यवाची), लगभग हजार, कोई तीन सौ (लगभगवाची) आदि।

<u>क्रिया विशेषण वाक्यांश</u>

हिन्दी में क्रिया विशेषण वाक्यांश की रचना कई प्रकार से सम्भव है। सामान्यतः यह संज्ञा तथा परसर्ग/ अव्यय के योग से बनता है, जैसे कमरे में, घर के बाहर आराम से, जनवरी से मार्च

तक, दिन भर आदि। संज्ञा के स्थान पर क्रियार्थक संज्ञा भी प्रयुक्त हो सकती है, जैसे उठने से पहले, जाने से लिए आदि। कुछ स्थितियों में क्रिया विशेषण वाक्यांशों से परसर्गों का लोप भी सम्भव है, जैसे हम घर गये, मैं कल रात नहीं सो सका।

केवल एकल या युगल क्रिया विशेषण शब्द भी क्रिया विशेषण वाक्यांश की रचना कर सकते हैं, जैसे, यहाँ, रोज ऐसे, किसी तरह, कभी–कभी आदि। कृदंत भी क्रिया विशेषण वाक्यांश की रचना करने में समर्थ हैं, जैसे, हँसकर, पढ़ते हुए, चलते हुए आदि। कभी–कभी संज्ञा शब्दों की आवृत्ति से भी क्रिया विशेषण वाक्यांश बनते हैं जैसे, जगह–जगह, घर–घर (वह घर–घर बोट मागने जाएगा)।

दो या अधिक घटकों से मिलकर बनने वाले क्रिया विशेषण वाक्यांशों की रचना बाह्य केन्द्रिक होती है, अर्थात् उनके बीच विशेषक शीर्ष का संबध न होकर अक्ष– संबंधक का संबध होता है (कमरे में जाने के लिए)। वाक्यांश में इनमें से न संज्ञा (अक्ष) को ऐच्छिक रूप से हटाया जा सकता है, और न परसर्ग (संबंधक) को।

क्रिया विशेषण वाक्यांश अधिकांश वाक्यों में ऐच्छिक घटक के रूप में ही प्रयुक्त होते हैं। उन्हें वाक्य से निकाल देने पर भी वाक्य की मूल व्याकरणिक संरचना बरकरार रहती है, जैसे, वह (कमरे में) पढ़ रहा है। कहीं–कहीं वाक्यांश में ये अनिवार्य घटक के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं

ऐच्छिक घटक के रूप में क्रिया विशेषण वाक्यांश वाक्य में अतिरिक्त या नई सूचना देते हैं तथा वाक्य विस्तार में सहायक होते हैं। क्रिया विशेषण वाक्यांश मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रकार की सूचनाएं देते हैं, जो कुछ विशिष्ट परसर्गों, प्रत्ययों, अव्ययों, क्रिया विशेषणात्मक शब्दों द्वारा व्यक्त होते हैः

(1). स्थानवाचीः ऊपर, यहाँ, चारों ओर, आसपास, में, पर आदि।

(2). समयवाचीः आज, रोज, कभी–कभी, के बाद, (सोमवार) को–से तक आदि।

(3). रीतिवाचीः (आराम) से, की तरह, ऐसे (हंस) का, ध्यान पूर्वक के अनुसार।

(4). कारणवाचीः के कारण, के मारे, (प्यास) से, पढ़ते–पढ़ते आदि।

(5). प्रयोजनवाचीः के लिए, वास्ते, (खाने) को, अर्थ (सहायतार्थ) आदि।

(6). सहाचर्यवाचीः के साथ, से, सहित, साथ–साथ आदि।

(8). भाव–अभाववाचीः के बिना, के बावजूद, के होते हुए भी आदि।

<u>अव्यय वाक्यांश</u>

वाक्य में कुछ ऐसे वाक्यांश भी संभव हैं जो पारिभाषिक दृष्टि से क्रिया विशेषण के अन्तर्गत नहीं आते। जैसे, सकारात्मक, नकारात्मक अव्यय (हाँ, जी, नहीं, जरूर आदि), समुच्चय बोधक

शब्द, (लेकिन, और, फिर भी, तथापि, मानो, आदि तथा विस्मयादि बोधक शब्द (वाह, हाय आदि) पर इनका वाक्य स्तरीय महत्व होता है। ये भी क्रिया विशेषण की तरह ऐच्छिक घटक होते हैं। इन्हें तथा क्रिया विशेषण दोनों को ही सामान्यतः अव्यय पदबंध के अन्तर्गत रखा जाता है। अतः ऐसे सभी अव्यय पदबंध के अन्तर्गत रखा जाता है। अतः ऐसे सभी अव्यय वाक्यांशों को जो संज्ञा वाक्यांश, सर्वनाम वाक्यांश, विशेषण वाक्यांश तथा क्रिया वाक्यांश न हों, अव्यय वाक्यांश कहलाते हैं, जिसमें क्रिया विशेषण वाक्यांश भी शामिल हैं।

क्रिया वाक्यांश

हिन्दी में क्रिया वाक्यांश मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया के योग से बनता है और सामान्य स्थितियों में वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होता है, जैसे, पढ़ सकता है, "लिखा जा सकता है", "चला गया", "दिखाई दे रहा था" आदि। हिन्दी क्रिया वाक्यांश बाह्य केन्द्रिक रचना है इसलिए इसके सभी घटक अनिवार्य घटक होते हैं, ऐच्छिक नहीं।

डॉ0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में वाक्यांश स्तरीय सभी रचनाओं का प्रचुरता से प्रयोग हुआ है जो हमारे अगले विवेचन से स्पष्ट हो जाएगा।

3.5.1. संरचनात्मक दृष्टि से वाक्यांश को उन्होंने पांच वर्गो में रखा है।

3.5.1.1. समशब्दभूद मूलक वाक्यांश

वाक्यांशों में एक ही वर्ग के शब्द रहते हैं:– संज्ञा + संज्ञा– संज्ञावाक्यांश:परसर्ग रहित

सामने दुर्गा–मन्दिर था।

(गली आगे मुड़ती है, 26)

एक पखवारे के भीतर ही ग्राम पंचायत की मीटिंग बुलायी गयी।

(अलग–अलग0, पृ0–56)

हम तो श्रेष्ठि समाज में मुँह दिखाने योग्य भी नहीं रहे।

(हनोज दिल्ली0, 219)

आज वह आर्यावर्त की सबसे बड़ी अश्वारोही सेना का नायक था।

(नीलाचाँद, पृ0– 218)

सर्वनाम + सर्वनाम – सर्वनाम वाक्यांश : परसर्ग रहित

मैंने शत्रु नगर में जो कुछ किया वह उद्घोषित था।

(वैश्वानर पृ0–148)

विशेषण + विशेषण – विशेषण वाक्यांश : परसर्ग रहित

आज वे भी रंगीन साड़ी में बहुत चटक लग रही थीं।

(अलग–अलग, 266)

मैं बहुत लज्जित हूँ जयन्ती।

(गली आगे मुड़ती है, 90)

क्रिया विशेषण + क्रिया विशेषण – क्रिया विशेषण वाक्यांश : परसर्ग रहित

धीरे–धीरे अजयगढ़ प्रासाद पर शाम उतरती जा रही थी।

(हनोज दिल्ली0, 271)

नहीं बड़े भाई आपके आँसू गिरेंगे तो लाहौर पर बार–बार ऐसा ही कहर टूटेगा।

(दिल्ली दूर है, 411)

परसर्ग सहित

वे दिन भर इधर से उधर घूमतीं रहीं।

(अलग–अलग0, 255)

क्रिया + सहायक क्रिया – क्रिया वाक्यांश

जब तक तू श्रीविद्या को नहीं जानता भगवान कृष्ण की संवित्– स्वरूा अष्टभुजा को भी नहीं जान सकता।

(नीलाचाँद, पृ0– 347)

यह सब तो मैं कह चुकी हूँ नौजादिक।

(शैलूष, पृ0– 143)

3.5.1.2. विषम शब्द भेद मूलक वाक्यांश

विशेषण + संज्ञा – संज्ञा वाक्यांश

इस वर्ग के वाक्यांशों में भिन्न शब्द– भेदों से केन्द्रिक शब्द के अनुरूप वाक्यांश–रचना होती है।

उसके हृदय की उच्छल पीड़ा का स्त्रोत गीत की वेदना में फूट पड़ा।

(वैश्वानर, पृ0– 323)

गोधूलिबेला की अकुलाहट और धूमिलता अँधेरे में घुल गयी थी।

(अलग–अलग वैतरणी, 93)

पहली बार कीरत ने मन की दुर्भेद्य अन्तश्चेतना में अपने सेनापति के लिये उठती हुई पीड़ा और खुशी का ऐसा अनुभव किया।

(नीलाचाँद, पृ0–323)

क्रियार्थक संज्ञा + विशेषक +संज्ञा – संज्ञा वाक्यांश

पिंजड़े को तोड़ने की कोशिश में कभी–कभी सारी चोंच, मुंह लहूलुहान हो जाता है पंछी का।

(शैलूष पृ0 सं0– 69)

जन्म– जन्मांतर साथ रहने की कसम खाई है हमने।

(गली आगे मुड़ती0, 166)

महामात्य ने सन्देशिया भेजने की आज्ञा मांगी थी।

(हनोज दिल्ली0, 153)

विशेषण + क्रियार्थक संज्ञा – संज्ञा वाक्यांश

उन्हें अनुचित होते हुए भी क्षमा करना अग्रज का कर्तव्य है।

(वैश्वानर, पृ0– 262)

प्रजा से जुड़ना राजा से विरोध लेना भी कहा जा सकता है।

(नीलाचाँद, पृ0– 220)

हम गोवर्धन पूरा करना तो सीख गये, पर परमदैवतम् भगवान श्री कृष्ण के गीतोपदेश को भुला बैठे।

(हनोज दिल्ली0, 92)

भूतकालिक कृदन्त + संज्ञा – संज्ञा वाक्यांश

आँखों में झर–झर आँसू बरसाती अम्मा किवाड़ के पास खड़ी है।

(गली आगे मुड़ती है, 88)

पढ़ी–लिखी लड़कियों से बातचीत करने की आदत होगी, पर मैं तो वही गँवर पुष्पी हूँ।

(अलग–अलग वैतरणी, 74)

जहरीले तीर का घाव भरा भी नहीं था कि हठ करके युद्धभूमि में चला गया।

(दिल्ली दूर है0, 138)

वर्तमान कालिक कृदन्त + संज्ञा – संज्ञा वाक्यांश

उसके सामने झिलमिलाती एक तस्वीर थी।

(शैलूष, पृ0 सं0–193)

गगन में उड़ती एक सारिका ने बताया।

(वैश्वानर, पृ0- 309)

बड़बड़ाता चौहान एक ओर चला गया।

(हनोज दिल्ली0, 187)

क्रिया विशेषण + क्रियार्थक संज्ञा – संज्ञा वाक्यांश

मैंने शान्त भाव के कहना शुरू किया।

(गली आगे मुड़ती है, 16)

विपिन काम की बात करके जल्दी चला जाना चाहता था।

(अलग-अलग वैतरणी, 74)

सर्वनाम + क्रियार्थक संज्ञा – संज्ञा वाक्यांश

आपका कहना उचित है।

(दिल्ली दूर है, 300)

मेरे डरने का प्रश्न कहाँ उठता है बहन।

(नीलाचाँद, पृ0- 351)

उससे परिचित होने का किसी ने प्रयत्न किया।

(वैश्वानर पृ0- 196)

संज्ञा + विशेषण – विशेषण वाक्यांश

देख रहा हूँ कि तस्वीर अच्छी है।

(गली आगे मुड़ती है, 71)

आज वासंतिक नवरात्रि की सातवीं रात थी।

(शैलूष पृ0सं0- 72)

अट्टालिका के ऊपरी भाग से निसृत ध्वनि इतनी प्रखर थी।

(वैश्वानर पृ0- 124)

संज्ञा + क्रिया/ क्रिया वाक्यांश – क्रिया वाक्यांश

वृद्धा ने ढ़ेरों मिठाइयों से उसका आंचल भर दिया।

(नीलाचाँद, पृ0- 242)

मगर बाशा तुम मुझे अम्मी से राय बात करने का मौका तो दोगे न।

(दिल्ली दूर है, 314)

देखती नहीं, विप्पी को नाश्ता– पानी देने में कितनी खुशी होती है इन्हें।

(अलग–अलग वैतरणी,78)

विशेषण + क्रिया / क्रिया वाक्यांश – क्रिया वाक्यांश

पता नहीं जुड़ावन किस तरह तकलीफ झेल रहा होगा।

(शैलूष, पृ0 सं0– 46)

अमात्य बेसुध हो गये हैं।

(दिल्ली दूर है, 138)

क्रिया विशेषण / क्रिया विशेषण वाक्यांश + क्रिया

उसकी माँ खिलखिलाकर हंस रही थी।

(नीला चाँद, पृ0– 310)

ऐसे दधिक्राष्ण अश्वों का प्रबन्ध तुरन्त करना होगा।

(वैश्वानर, पृ0 सं0–115)

मेवाती बुरी तरह भयभीत होकर भागे।

(दिल्ली दूर है, 121)

मुख्य किया (धातु) + सहायक क्रिया / क्रियाएं – क्रिया वाक्यांश

पंचगंगा घाट पर नाव से उतरा तो वही साधु मिल गया।

(गली आगे मुड़ती है,129)

यह सब तो मैं कह चुकी हूँ नौजादिक।

(शैलूष, पृ0 सं0–143)

"देवि, ये नये सेनापति, अश्वपति आदि हमारी पुरानी रणनीति को भी हमारी ही तरह निकृष्ट मानकर छोड़ चुके हैं।

(हनोज दिल्ली0, 153)

क्रियार्थक संज्ञा + सहायक क्रिया / क्रियाएं – क्रिया वाक्यांश

जैपाल सिंह घबड़ाकर उठना चाहते हैं।

(अलग–अलग वैतरणी,66)

मै अपने जीवन के बारे में अंतिम निर्णय लेना चाहती हूँ।

(नीलाचाँद, पृ0– 234)

आप रूद्रोपासना करना चाहते हैं।

(वैश्वानर, पृ0– 325)

वर्तमान कालिक कृदन्त + सहायक क्रिया / क्रियाएं – क्रिया वाक्यांश

रजुल्ली बाहर गया और जाने दोनों में क्या–क्या बातें होती रहीं।

(गली आगे मुड़ती है, 146)

आनन्द के जीवन में सुन्दरी नवयुवतियों की प्रतिस्पर्धाएं अनवरत चलती रहीं।

(हनोज दिल्ली0, 193)

हाथ से उठा–उठाकर बाबा जलती हुई लपटों वाली कपूर वीटिकाएं निगलते रहे।

(दिल्ली दूर है, 58)

भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया / क्रियाएं – क्रिया वाक्यांश

तालाब की लहरें उन्हें काई के साथ धकेलकर किसी कोने में लगा आती हैं।

(अलग–अलग वैतरण, 324)

अगोरी पहाड़ी पर बना हुआ दुर्ग अविजेय माना जाता है।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–292)

पूर्वकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया / क्रियाएं – क्रिया वाक्यांश

प्रतर्दन कूदकर पास खड़े अश्व पर बैठा।

(वैश्वानर, पृ0सं0–278)

सारी भीड़ लल्लू काका को घेरकर बैठ गयी।

(शैलूष पृ0 सं0–143)

किसी को भेजकर पता लगाओ।

(हनोज दिल्ली0, 125)

क्रियार्थक संज्ञा + पूर्वकालिक कृदन्त – संज्ञा वाक्यांश

हथियापायक को आया देखकर भी वह अपनी कुर्सी से उठा नहीं।

(दिल्ली दूर है, 225)

उनके मरने की खबर सुनकर बाबू जी सुध–बुध खो बैठे।

(अलग–अलग वैतरणी, 67)

विशेषण + क्रिया विशेषण – किया विशेषण वाक्यांश

बेगुनाह लोगों की जिन्दगी से खेलना बहुत मुश्किल होता है।

(शैलूष पृ0 सं0– 104)

आपका क्रोध ठण्डा हो जायेगा।

(दिल्ली दूर है, 255)

3.5.1.3. अव्यय मूलक वाक्यांश

संज्ञा + अव्यय – संज्ञा वाक्यांश

लाजो भी उनको बेचैन देखकर भाँप गई।

(गली आगे मुड़ती है, 110)

स्तोत्र भी बड़ा होता है।

(वैश्वानर, पृ0सं0– 44)

दिन भर काम करते–करते शरीर थक जाता है।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–240)

बस्तियां ही नहीं छोड़ी हैं।

(हनोज दिल्ली0, 98)

संज्ञा + परसर्ग + अव्यय : संज्ञा + अव्यय + परसर्ग

संज्ञा + अव्यय + परसर्ग + अव्यय – संज्ञा वाक्यांश

खारे पानी को तो का–पुरूष पीते हैं यानी कायर लोग।

(शैलूष, पृ0सं0– 206)

वीर योद्धा भी तो एकत्र करने हैं।

(दिल्ली दूर है, 221)

महीने भर से तैयारी हो रही है।

(अलग–अलग वैतरणी, 50)

सर्वनाम + अव्यय – सर्वनाम वाक्यांश

वाह, तू तो सचमुच की दुलारी है

(नीलाचाँद, पृ0सं0–245)

उसके भी सिर पर अब गरबी थी।

(गली आगे मुड़ती है, 58)

हम तो अंग की राजधानी चम्पा से सार्थ के साथ आ रहे हैं।

(वैश्वानर, पृ0सं0–205)

विशेषण + अव्यय – विशेषण वाक्यांश

हरिया के जाने के बाद उनका आधा उत्साह तो ऐसे ही टूट चुका है।

(अलग–अलग0, 251)

मैं व्यर्थ ही ऋतध्वज से झगड़ रहा था।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–347)

मन ही मन बुराई भी कर रहे होंगे।

(हनोज दिल्ली0, 78)

क्रिया विशेषण + अव्यय – क्रिया विशेषण वाक्यांश

वह तुम्हें कभी भी वशीभूत नहीं कर सकता।

(वैश्वानर पृ0– 175)

पिछली बार भी तुम केवल जनमाष्टमी समारोह देखने आयी थी।

(नीलाचाँद, पृ0– 360)

धूतपापा काशी के यात्रियों का पाप धोती अथवा उन्हें पापमें धुत रखती वैसे ही बहा करेगी।

(गली आगे मुड़ती है, 262)

क्रियार्थक संज्ञा + अव्यय – संज्ञा वाक्यांश

खुदा का आना तो फरिश्तों को भी खुशियों से भर देता है।

(दिल्ली दूर है, 119)

मैं उन्हें यह करने भी नहीं दूंगा।

(शैलूष पृ0सं0– 146)

खुदा का <u>आना तो</u> फरिश्तों को भी खुशियों से भर देता है।

(दिल्ली दूर है–119)

मै उन्हें यह <u>करने भी</u> नहीं दूँगा।

(शैलूष – 146)

मगर <u>खोलना ही है</u> तो क्यों न कस्बे में खोलें।

(अलग–2 वैतरणी–118)

यहां तो सब कुछ <u>बचाना ही</u> विकट कर्म बन गया है।

(हनोज दिल्ली0अस्त–79)

<u>भूतकालिक कृदन्त + अव्यय + क्रिया – क्रियावाक्यांश</u>

पर आज वह <u>रूठे भी</u> तो किससे।

(अलग–2 वैतरणी–105)

प्रतीक्षा से <u>घबड़ा तो</u> नहीं गये, सेनापति।

(नीलाचांद– 123)

एक पात्र को उन्होंने उठाया और <u>पीने ही वाले थे</u> कि–

(वैश्वानर – 92)

<u>वर्तमान कालिक कृदन्त + अव्यय – क्रिया विशेषण वाक्यांश</u>

कक्ष में <u>घुसते ही</u> आनन्द ने खांड़ा खींचकर उसे चूमते हुये कहा।

(हनोज दिल्ली0"60)

वह <u>जानता ही नहीं</u> कि दुनियां के तीन बटे चार लोगों को रोटी मयस्सर नहीं होती।

(शैलूष – 72)

<u>वर्तमानकालिक कृदन्त + अव्यय + क्रिया, क्रियावाक्यांश</u>

पता नही कौन आदमी है, जो यहां से <u>निकलते ही मेरा पीछा करता है</u>

(गली आगे.–126)

राजा सम्बोधन <u>सुनते ही उदास हो गया</u>।

(वैश्वानर – 374)

तुम लोग तथा कथित श्रेष्ठ वर्णों को तिलांजलि <u>दे सकती तो</u> वह नये युग का प्रकाश देने वाला प्रभात होता

(नीलाचांद – 352)

पूर्वकालिक कृदन्त + अव्यय + क्रिया विशेषण वाक्यांश

नही भौजी, मै तो बाबू का हाल देखकर ही घबड़ा गया।

(अलग–2 वैतरणी–266)

हमें अगर तुम्हारी कृपा पाकर भी दास बनकर रहना पड़ेगा।

(नीलाचांद–286)

3.5.1.4. शब्द भेद + समुच्चय बोधक अव्यय + शब्द भेद

कोई बनाव–सिंगार नहीं, फिर भी वह कितनी स्वस्थ और प्रफुल्लित लगती है।

(वि0 वाक्यंश गली आगे–71)

हिन्दु और मुसलमान दोनों हैं तेरे कबीले में।

(संज्ञा वाक्यांश शैलूष–114)

इनकी कोई अलग सभ्यता या संस्कृति नहीं है।

(संज्ञा वाक्यांश हनोज0–35)

3.5.1.5. शब्द भेद + मारे, बिना, सिवा (मारे, बिना, सिवा, मारे, बिना, सिवा,)

आनन्द वाशेक के बिना कोई भी भारतीय नरेश एक भी युद्ध जीत नहीं सकता।

(संज्ञा वाक्यांश दि0दूर–440)

बिना द्वारा के तो सांसे ही घुट जायेंगी।

(संज्ञा वाक्यांश वैश्वानर–23)

पर ऐसे समय में तुम्हारे सिवा मुझे कोई दूसरा दिखाई भी तो नहीं देता।

(बिशे0वाक0अलग–2वैतरणी–74)

3.5.2. स्वतंत्र वाक्यांश

जब संयुक्त वाक्य में कृदन्त मूलक वाक्यखंड का सम्बन्ध मुख्य क्रिया के कर्ता से न होकर किसी अन्य कर्ता से होता है, तब वह वाक्य – खण्ड स्वतंत्र वाक्यांश कहलाता है और उसके अन्वयी कारक को स्वतंत्र–कारक कहते हैं।

सामान्यतः डॉ0 शिव प्रसाद सिंह ने इसका प्रयोग वाक्य के आदि में किया है लेकिन कभी–कभी वाक्य के मुख्य कर्ता अथवा उद्देश्य के बाद वाक्य के मध्य में भी यह रचना आई है।

अश्वारोहियों के पहुँचते ही महाप्रतिहारी ने कहा।

(नीलाचांद – 260)

आपके कहने से ये वेदपाठी यहां आये।

(वि0+क्रियार्थक संज्ञा+परसर्ग संज्ञा वाक्यांश–शैलूष–95)

उसे देखते ही एक सैनिक बढ़कर अश्वा की वल्गा थाम ली।

(सर्व0वर्त0कृ0+क्रिया बि0 वाक्यांश वैश्वानर–165)

साढ़े सात बजते–बजते नगाड़े की आवाज गांव गलियों में घुमड़ने लगी।

(वर्त0कृ0–दिरुक्त–क्रिया बि0वा0अलग–2वैतरणी–82

दूसरे दिन प्रात:काल होते–होते एक प्रहरी रौंज राज राजेश्वरी वेला के द्वार पर पहुँचा।

(सं0+वर्त0कृ0–दिरुक्त क्रिया बिशेषण वाक्यांश हनोज दिल्ली दूर अस्त–180

3.5.3. केन्द्रिकता और वाक्यांश

वाक्य के स्तर पर सबसे छोटी इकाई वाक्यांश है प्रकृत्या वाक्यांश की रचना दो प्रकार की होती है–अन्त: केन्द्रिक और बाह्य केन्द्रिक।

3.5.3.1. अन्त: केन्द्रिक रचना में अभिमुखता आभ्यंतरिक होती है, अर्थात रचना के अन्तर्गत सदस्य पद एक दूसरे का स्थान भी ले सकते हैं। ये दो प्रकार की होती है–

अधीन और सहयोगी

अधीन अन्त: केन्द्रिक

इसमें एक पद केन्द्र रहता है और अन्य पद अधीन।

कल्पू वंशी काका का एक लौता लड़का है।

(अलग–2 वैतरणी–114)
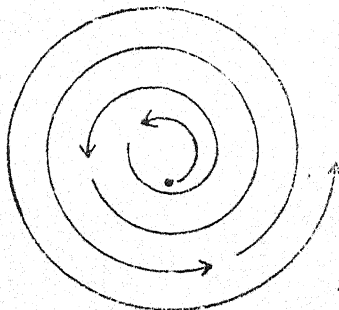
<u>शंवरासुर</u> तमस का प्रतीक है।

(वैश्वानर– 267)
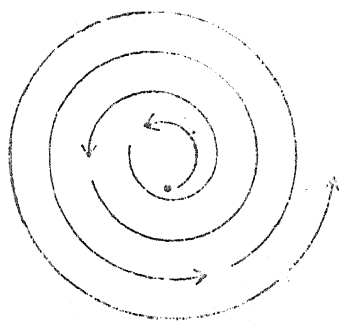
यह <u>काशी</u> भी अद्‌भुत नगरी है।

(नीलाचांद – 103)
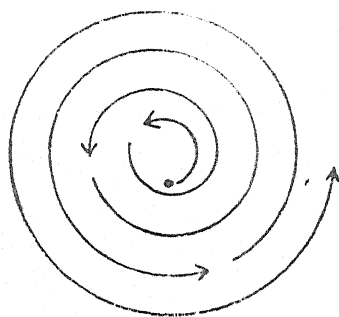
यह <u>बुढ़िया</u> तो विचित्र प्राणी है।

(शैलूष – 80)
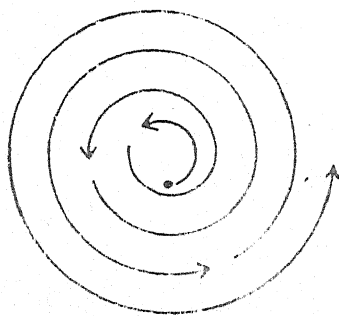
<u>आनन्द वाशेक</u> तो हमारी रणनीति का अन्तिम पत्ता है।

(हनोज दिल्ली दूर0–88)
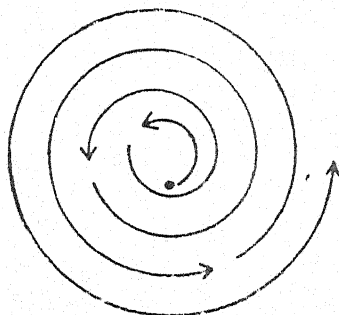
दीपावली हर शहर–गांव के लिये अपना महत्व रखती ही है।
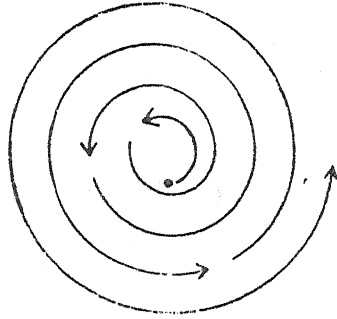
(गली आगे मुड़ती है–185)

सहयोगी अन्तःकेन्द्रिक

इस रचना में एकाधिक केन्द्र–पद होते हैं और कोई पद अधीन नहीं होता। इनमें एक या एकाधिक समुच्चय–बोधक अव्यय जुड़ते हैं। इनमें अर्थ–प्रेषण की दृष्टि से केन्द्रिक पद ही मुख्य होता है।

सिद्ध पुष्प और मुनि पुष्प अगस्त्य के फूल को कहते हैं।

(नीलाचांद– 360)
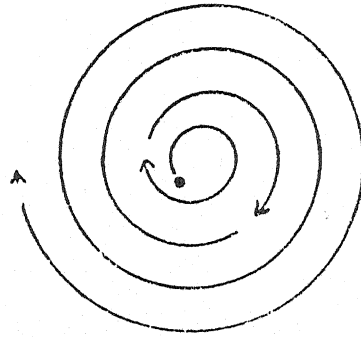
वैद्यक या यूनानी नहीं अंग्रेजी जो तुम्हारे अधजले अंगों को मक्खन की तरह चिकना कर देगी।

(शैलूष – 240)
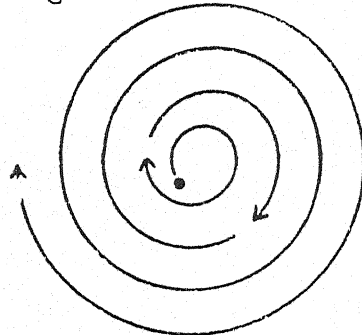
शरीर और आत्मा युग्मपक्षी की तरह एकत्र रहते हैं।

(वैश्वानर– 268)

दीपावली हर शहर–गांव के लिये अपना महत्व रखती ही है।
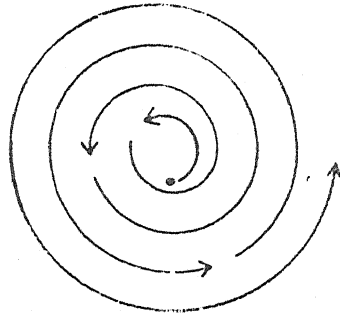
(गली आगे मुड़ती है–185)

सहयोगी अन्त:केन्द्रिक

इस रचना में एकाधिक केन्द्र–पद होते हैं और कोई पद अधीन नहीं होता। इनमें एक या एकाधिक समुच्चय–बोधक अव्यय जुड़ते हैं। इनमें अर्थ–प्रेषण की दृष्टि से केन्द्रिक पद ही मुख्य होता है।

सिद्ध पुष्प और मुनि पुष्प अगस्त्य के फूल को कहते हैं।

(नीलाचांद– 360)
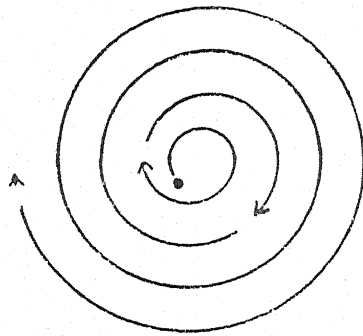
वैद्यक या यूनानी नहीं अंग्रेजी जो तुम्हारे अधजले अंगों को मक्खन की तरह चिकना कर देगी।

(शैलूष – 240)
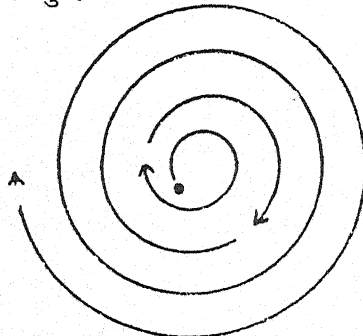
शरीर और आत्मा युग्मपक्षी की तरह एकत्र रहते हैं।

(वैश्वानर– 268)
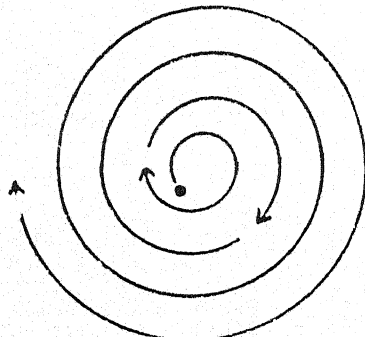
ईसाई और यहूदी को छोड़कर बाकी किसी को भी खुदाई किताबें नहीं मिली हैं।

(दिल्ली दूर है–284)
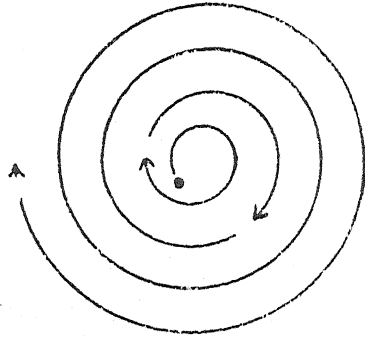
मै और अम्मा एक रिक्शे पर बैठे।

(गली आगे0 – 159)
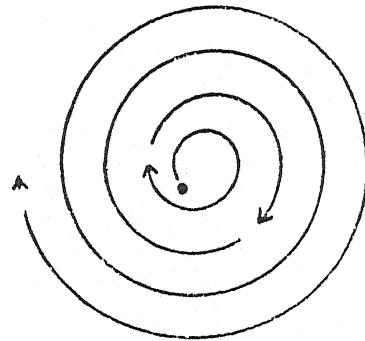
3.5.3.2. **बाह्यकेन्द्रिक रचना**

इसमें योजक सदस्य परस्पर स्वतंत्र होते हैं। वे एक–दूसरे का स्थान नहीं ले सकते उनका समुच्चित अर्थ योजक–तत्वों के अर्थ से भिन्न होता है। इनमें दोनों सदस्यों का समान महत्त्व रहता है।

बाह्य केन्द्रिक रचना में अर्थ की नाभि अन्यत्र होती है, जबकि अन्तःकेन्द्रिक संरचना में अर्थ नाभि योजक–सदस्यों में ही रहती है।

अन्तःकेन्द्रिक और बाह्यकेन्द्रिक रचनाओं में बचन एवं लिंगमूलक एकता रहती है इनमें कालमूलक एकता का होना आवश्यक नहीं। दो विभिन्न कालों के पदों, अथवा भिन्न प्रकार के कृदन्तों के योग से भी इस प्रकार की रचनायें हो सकती हैं।

ईसाई और यहूदी को छोड़कर बाकी किसी को भी खुदाई किताबें नहीं मिली हैं।
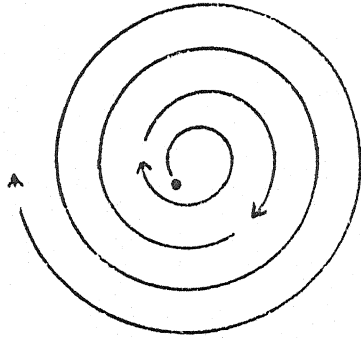
(दिल्ली दूर है–284)

मै और अम्मा एक रिक्शे पर बैठे।

(गली आगे() – 159)

3.5.3.2. बाह्यकेन्द्रिक रचना

इसमें योजक सदस्य परस्पर स्वतंत्र होते हैं। वे एक–दूसरे का स्थान नहीं ले सकते उनका समुच्चित अर्थ योजक–तत्वों के अर्थ से भिन्न होता है। इनमें दोनों सदस्यों का समान महत्व रहता है।

बाह्य केन्द्रिक रचना में अर्थ की नाभि अन्यत्र होती है, जबकि अन्त:केन्द्रिक संरचना में अर्थ नाभि योजक–सदस्यों में ही रहती है।

अन्त:केन्द्रिक और बाह्यकेन्द्रिक रचनाओं में बचन एवं लिंगमूलक एकता रहती है इनमें कालमूलक एकता का होना आवश्यक नहीं। दो विभिन्न कालों के पदों, अथवा भिन्न प्रकार के कृदन्तों के योग से भी इस प्रकार की रचनायें हो सकती हैं।

- बाह्य केन्द्रिक रचना - क ख > ग
- वह मेरे चेहरे पर एकटक देखती रही।

क ख > ग
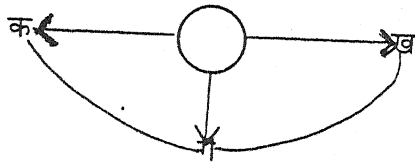
(गली आगे मुड़ती है-89)

- दो वर्षों से मैं चिकित्सा करती रही।
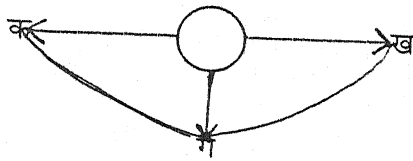
क ख > ग

(नीला चांद-319)

3.6. <u>प्रयोग एवं वाक् पद्धति</u>

3.6.0.

वाक्य–विन्यास के क्रम में वाक्पद्धतियों–मुहावरों और कहावतों का विवेचन अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मेरे प्रतिपाद्य उपन्यासों की वाक्य संरचना वाक् पद्धतियों अथवा मुहावरों और कहावतों से अत्यन्त समृद्ध है।

यहां मुहावरों अथवा वाक् पद्धतियों के प्रयोग के महत्व पर विचार कर लेना आवश्यक है। शब्द–रचना पर गहराई से विचार करने वाले श्री माई दयाल जैन ने लिखा है:–

"सुभाषि, सूक्ति, लोकोक्ति या कहावतें और मुहावरे किसी जाति की सम्मिलित सम्पत्ति और किसी भाषा का भूषण ही नहीं, बल्कि प्राण रहे। ये समाज के जीवन और अनुभवों की अभिव्यक्ति, ज्ञान का भण्डार और पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आने वाली बपौती होती है। इनमें गागर में सागर या कूजे में दरिया बन्द होता है"।[1]

कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से वाक्य संरचना में जीवंतता आ जाती है। संवादों में चुटीलापन मुहावरेदार भाषा से आता है। वाक् पद्धतियों के प्रयोग से वाक्य विलक्षण अर्थों से फड़क उठता है, उसमें चुस्ती आ जाती है। डॉ0 शिव प्रसाद सिंह ने अपनी वाक्य संरचना में कहावतों, मुहावरों तथा सूक्तियों का भरपूर उपयोग किया है।

3.6.0.1.

कहावतों और मुहावरों में एक अन्तर होता है, जिसे गुलाबराय जी ने इस प्रकार दिखाया है:–

"कहावत में एक पूर्ण सत्य या विचार की पूरी अभिव्यक्ति हो जाती है। वह दूसरे वाक्य का अंश नही बनती, वरन् एक स्वतंत्र वाक्य होती है। मुहावरा स्वतंत्र नहीं होता है, वह किसी वाक्य में रखे जाने का मुहताज होता है।[2] "खेती खसम सेती, नहीं तो रेती" कहावत है और "हाथ का मैल" "लकीर का फकीर होना" मुहावरे हैं। मुहावरे में कम से कम दो पद होते हैं और वह व्याकरण का अतिक्रमण नहीं करता। मुहावरों के प्रयोग में एक बात के खास ध्यान रखने की बहुत आवश्यकता है, कि मुहावरा अपने शब्दों में किसी प्रकार की कमी, बढ़ोत्तरी और हेरफेर के हस्तक्षेप को सहन नहीं करता।

---

1. हिन्दी शब्द रचना, माई दयाल जैन, पृष्ठ–289
2. हिन्दी लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पीठिका, पृष्ठ "ख"

वह ज्यों का त्यों और खास अवसर पर प्रयुक्त किया जाता है। "आखें लगना" के स्थान पर "चक्षु" लगना कहा अशुद्ध है।

3.6.0.2.

शब्दों के समान नये-नये मुहावरे और कहावतें निरंतर निर्मित होते रहते हैं।[1] इनके बनाने में सभी वर्गों और अंगों का योग होता है। शरीर के अंगो, प्रकृति, ऋतुओं, पशु-पक्षी, भिन्न-भिन्न व्यवसायों और पारिभाषिक शब्दों के आधार पर अनेक कहावतें और मुहावरे प्रचलित हो गये हैं।

मुहावरे की परिभाषा करते हुये प्रसिद्ध कोशकार श्री रामचन्द्र वर्मा ने लिखा है- शब्दों या क्रिया-प्रयोगों के योग से कुछ बिशिष्ट पद बन जाते हैं। जो "मुहावरे" कहलाते हैं। अर्थात "मुहावरा" उस गठे हुये पद को कहते हैं। जिससे कुछ बिशिष्ट लक्षणा वाला अर्थ निकलता है और जिसकी गठन में किसी प्रकार का अन्तर होने पर वह लक्षणा वाला अर्थ नहीं निकल सकता।

3.6.0.3.

ऊपर कहा जा चुका है कि हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में मुहावरों का प्रयोग भरपूर किया गया है। क्योंकि मुहावरे और कहावतों वाक्य संरचना के अन्तर्गत आते हैं इसलिये इनका विवेचन भी उनके अन्तर्गत वांछनीय है। "मुहावरे" एक प्रकार से वाक्यांश के ही अंग हैं। इसलिये इनका विवेचन वाक्यांशों के विवेचन के क्रम में ही यहां किया जा रहा है।

डॉ0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में यूँ तो मुहावरों या वाक् पद्धतियों का प्रयोग थोड़े-या-अधिक रूप में हर उपन्यास में मिल जाता है किन्तु, संख्या और प्रयोग की दृष्टि से देखा जाये तो मुहावरों का सर्वाधिक प्रयोग अलग-अलग वैतरणी उपन्यास में उपलब्ध होता है। अन्य उपन्यासों में इनकी स्थिति "गली आगे मुड़ती है" तथा "शैलूष" के बाद आती है। मुहावरों के प्रयोग की स्थिति वहीं बनती है जहां पर फड़कती हुयी भाषा या संवादों के प्रयोग के अवसर अधिक आते हैं। इस दृष्टि से कुहरे में युद्ध (हनोज दिल्ली दूर है) या दिल्ली दूर है उपन्यासों में भी उर्दू बहुल भाषा होने के कारण मुहावरों के प्रयोग के अन्य उपन्यासों की तुलना में अधिक अवसर आये हैं। "नीलाचांद" और "वैश्वानर" की भाषा संस्कृत तत्सम या वैदिक संस्कृत के निकट होने के कारण मुहावरों के प्रयोग की इनमें कम ही स्थिति बनी है। मुहावरे प्राय: बोली की उपज होते हैं। बोली से ही ये साहित्य में पहुँचते हैं। मुहावरों की निर्मिति के श्रोत क्या हैं। इसका विवेचन भी महत्वपूर्ण और रोचक है किन्तु, यह बिषय हमारे प्रतिपाद्य बिषय से बाहर हैं।

---

1. अच्छी हिन्दी, पृष्ठ- 161

3.6.0.4.

यहां पर डॉ0 शिव प्रसाद सिंह द्वारा प्रयुक्त कुछ मुहावरों को उद्धृत किया जा रहा है। जिससे यह पता चलेगा कि लेखक की प्रवृत्ति किस प्रकार की वाक् पद्धतियों के प्रयोग की है। उसके बाद इन वाक् पद्धतियों को वर्गीकृत कर उनके कुछ उदाहरण भी दिये जायेंगे। इन वाक् पद्धतियों के अनुशीलन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि हर वाक् पद्धति के अन्त में क्रियार्थक संज्ञा का प्रयोग होना, करना, लगना, उठना, लेना अथवा संज्ञा पद का प्रयोग अवश्य हुआ है। कोई मुहावरा अपने परिवर्तित रूप में भी मिलता है जैसे– प्रचलित मुहावरा है दूध लजाना पर डॉ0 सिंह ने उसका प्रयोग "खून लजाने" के साथ किया है। "ब्रह्म लेख होना"– पर लोक प्रचलित प्रयोग है "बज्र लेख होना"।

3.6. प्रयोग एवं वाक् पद्धति (मुहावरा)

3.6.1. वाक्पद्धति

भाषा का प्रारम्भिक रूप अभिधात्मक रहता है। भाषा के प्रसार और सम्पन्नता के साथ ही वाक्पद्धतियों का विकास होता है।

जन साधारण के भाव, विचार, अनुभाव आदि सहज प्रयोगों के रूप में व्यक्त न होकर वाक् पद्धतियों में ढल जाते हैं। इनका अर्थ सामान्य भाषा से अधिक प्रभावशाली और बिम्ब ग्राह्य होता है।

इन वाक्यपद्धतियों के प्रयोग द्वारा डॉ0 शिवप्रसाद सिंह ने अपने उपन्यासों की भाषा को सजीवता, सूक्ष्मता, रोचकता एवं चुस्ती प्रदान की है। इनके मूल में छिपा अर्थ सामान्य पदों या वाक्यांशों से बिशिष्ट होता है।

3.6.2. प्रयोग–

परम्परागत प्रयोग में आये हुये शब्दों या वाक्यांशों की संज्ञा प्रयोग है। प्रयोग और वाक्पद्धति में एक निश्चित अन्तर होता है। वे शब्द या वाक्यांश जिनमें बोध का सर्वथा वैशिष्ट्य न हो प्रयोग है, वाक्पद्धति नहीं।

"दुनीचन्द जी के अनुसार–

"किसी भाषा का ऐसा प्रचलित शब्द अथवा वाक्यांश जो किसी बिशेष ढंग से प्रयुक्त होकर अपने साधारण (अमिधेय) अर्थ से विलक्षण अर्थ प्रकट करता हो, मुहावरा या वाक् पद्धति कहलाता है।"

शैली को प्रभाव सौन्दर्य, शक्ति और प्रवाह प्रदान करने के लिये ही डॉ सिंह ने इनका प्रयोग किया है।

3.6.3. रचनात्मक दृष्टि से वाक्पद्धति

रचना की दृष्टि से प्रत्येक वाक् पद्धति का अन्तिम पद क्रियार्थक संज्ञा होता है यह अकेली भी वाक्पद्धति के रूप में प्रयुक्त हो सकती है।

3.6.3.1. प्रतिपाद्य उपन्यासों में वाक् पद्धतियाँ

मरदई दिखाना :– ऐसे सब लोग बड़ी मरदई दिखाते हैं।

(अलग0– 82)

जवान बन्द होना :– बाकी असल मौके पर जबान बन्द हो जाती है।

(अलग0 – 82)

सटर–सटर बतयाना :– यहां सटर–सटर बतायाने से क्या फायदा।

(अलग0 – 82)

धींगा–मुस्ती करना :– आपस में धींगा–मुस्ती करते छोकरे इस तरह बहे जाते गोया कहीं खुशी की मिठाइयाँ बँटने वाली हैं।

(अलग0 – 82)

बिना मौसम की शहनाई बजना :– यह बिना मौसम की शहनाई काहे बजाई जा रही है।

(अलग–अलग0 82)

खिल उठना :– लोगों के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे।

(अलग0 – 45)

झूम उठना :– गोगई महाराज इस परम सत्य को समझकर झूम उठे।

(अलग–अलग वैतरणी–45)

अंजन लगा देना :– तुमने तो मइया मेरे नैनों में गियान का आँजन लगा दिया।

(अलग–अलग वैतरणी–45)

हौसला पस्त होना :– भीड़ के इस निर्णय से गोगई महाराज का हौसला पस्त नहीं हुआ।

(अलग–अलग0–45)

जमीन तैयार होना :– अब काहे नहीं जमीन तैयार होगी।

(अलग–अलग0– 45)

चुटकियों में ठीक करना:– देखना चुटकी बजाते सब ठीक कर दूँगा।

(अलग–अलग वैतरणी–59)

चुटकियाँ लेना :– ससुराल के लोगों की चुटकियाँ लेती रहीं।

(अलग–अलग वैतरणी–60)

बीहड़ रास्ता :- यह तो भाई बीहड़ रास्ता है।

(अलग0 - 47)

चहल-पहल :- गांव के स्कूल पर उस दिन काफी चहल-पहल थी।

(अलग-अलग वैतरणी-47)

घूरे से उठाकर गोद में लेना :- मालकिन ने पुष्पों को घूरे से उठाकर गोद में उठा लिया।

(अलग0 - 78)

तारा हाथ लगना :- तप करने से कहीं आसमान का तारा हाथ आता है बेटी।

(अलग-अलग वैतरणी-79)

लौ बुझ जाना :- तेज झोंका आया और दीये की लौ काँपकर बुझ गयी।

(अलग-अलग वैतरणी-79)

खून पी जाना :- मै मार-मार कर तुम्हारा खून पी जाऊँगी।

(अलग-अलग वैतरणी283)

घिग्घी बँध जाना :- दयाल महाराज की घिग्घी बँध गई।

(अलग-अलग वैतरणी285)

गहराकर गिर जाना :- बड़ा भाई मार भी दे तो उसका कुछ भी जबाब न देने की परम्परा आज अचानक गहराकर गिर गयी।

(अलग0 - 287)

काजल की कोठरी में कालिख लगना (कहावत):- कोजल की कोठरी में घुसकर बाहर आने में भ कालिख लगती है।

(अलग-अलग वैतरणी-288)

मरम्मत करना :- मैंने बुट्टन की भी अच्छी मरम्मत कर दी है।

(अलग वैतरणी- 288)

खून लजा देना :- इस कमी ने छोकरे ने तो खून ही लजा दिया।

(अलग-अलग वैतरणी-288)

जलभौंरी की ताह घूमना :- मन जलभौंरी की ताह एक ही बिन्दु पर घूम रहा था।

(अलग पृष्ठ - 289)

आँधी घुमड़ना :- पुष्पी के मन में अचानक आँधी ही घुमड़ी।

(अलग-अलग वैतरणी-292)

गले पर छुरी चलाना :– मीठी–मीठी बात करके गले पर छुरी चलाने की तैयारी कर रही है चुड़ैल।

(अलग–अलग वैतरणी–292)

गीध कौवों का भोजन होना :– विपिन के अलावा आ तक जिस शरीर को कोई छू भी नहीं सका है, वह गीध–कौवों का भोजन हो गया होता।

(अलग–अलग वैतरणी–293)

दलदल में डुबोना :– मुझे भी दलदल में डुबो रही थी।

(अलग–अलग वैतरणी–293)

नंगई करना :– जो देखते हो, वहीं खरीदने के लिये नंगई करते हो।

(अलग–अलग वैतरणी–2)

कोल्हू का बैल :– मै कोल्हू के बैल की तरह इस मेले में चक्कर नहीं काटता रहूँगा।

(अलग–अलग पृष्ठ–2)

सरपट दौड़ना :– मेले में इतनी चीजें आयीं, उन्हें छोड़कर सरपट कैसे दोड़ा जा सकता है।

(अलग–अलग वैतरणी–5)

चौपट होना :– सारा माल चौपट हुआ परसाल।

(वही, पृष्ठ–5)

उलट फेर होना :– ई उलट–फेर काहे!

(वहीं पृष्ठ–5)

बंटाढार करना :– मिठाई की दुकान लगाकर बंटाढार करें।

(अलग–अलग वैतरणी–5)

पपड़ी पड़ना :– सालों के चेहरे पर पपड़ी पड़ी है।

(अलग अलग – 5)

टेंट करना :– हमारी तो टेंट कर गयी।

(अलग अलग पृष्ठ–6)

बधिया बैठना :– हमारी तो बधिया बैठ गयी।

(अलग–अलग पृष्ठ– 6)

रेला–पेला मचना :– देख भीड़ का रेला–पेला मच जाता है कि नहीं।

(अलग–अलग वैतरणी–6)

<u>पेट काटना</u> :– मेरा पेट क्यों काटते हो।

(अलग– अलग पृष्ठ–6)

<u>गारत होना</u> :– इसी से तो यह देश गारत हो रहा है।

(अलग–अलग वैतरणी–6)

<u>तबियत खिलना</u> :– ऊचुर चुराती जायकेदार है कि तबीयत खिल जायेगी।

(अलग–अलग वैतरणी–7)

<u>ठठाकर हंसाना</u> :– ठठाकर हंसान बौंमन।

(अलग–अलग पृष्ठ–9)

<u>मलाई कटना</u> :– काहे शीतला! आज तो बेटा, खूब मलाई कटी होगी।

(अलग–अलग वैतरणी–11)

<u>ठन–ठन गोपाल</u> :– बाकी दच्छिना के नाम पर ठन–ठन गोपाल।

(अलग–अलग वैतरणी–11)

<u>हियरा फटना</u> :– चने की भिगोई घुघरी देने में भी जब हियरा फटता है ठकुराइन लोग का।

(अलग अलग वैतरणी–11)

<u>लसड़–फसड़ करना</u> :– माई का परसाद पहनकर करो लसड़–फसड़ और पुरबो मनोकामना।

(अलग–अलग वैतरणी–11)

<u>बानरी सेना</u> :– ई बानरी सेना पेड़ के पत्ते भी चाट जायेगी।

(अलग–अलग वैतरणी–11)

<u>बौराना</u> :– तबीयत बौरा गयी है जान लो।

(वहीं, पृष्ठ – 11)

<u>हियरा फटना</u> :– पुजारी की दच्छिना देने में हियरा फटता है।

(अलग–अलग पृष्ठ–12)

<u>चकरी–भौंरा खेलना</u> :– लगे कि तबीयत चकरी–भौंरा खेल रही है।

(अलग–अलग वैतरणी–12)

<u>चेहरा खिलना</u> :– बस्ती की ओर नजर उठायी तो चेहरा खिल गया।

(अलग–अलग पृष्ठ – 12)

<u>पसर जाना</u> :– "का हो बल्लू महाराज" वह बड़ी अदा से मुस्करायी–आप तो लड़कोरी महरारू की तरह सीढ़ी पर पसर गये हैं।

(अलग–अलग वैतरणी–13)

सिवान–सिवान डाँकना :– तू तो कलोर की तरह सिवान–सिवान डाँकना।

(अलग–अलग वैतरणी–13)

जवान लड़ाना :– किस्मत की खराब है नहीं तो चमर पिल्ली हम से जवान लड़ाती।

(अलग–अलग वैतरणी–13)

दो का चार लगाना :– कोई देख ले, और जाकर अन्हरी माई से दो का चार लगा दे तो चौके में हेलने न देगी बुढ़िया।

(अलग–अलग वैतरणी–14)

भण्डा फोड़ना :– उसका सरेआम भण्डा वे ही फोड़ते हैं, जिन्हें इसे खुल जाने से चिन्ता होती है।

(अलग–अलग वैतरणी–14)

महराकर गिरना :– लगा, जैसे किसी बाढ़ की नदी में बांसों ऊँची कगार महराकर गिर गयी हो।

(अलग–अलग वैतरणी–14)

चमर पंथी करना :– अपने मेले में हमीं खुद चमर पंथी करते हैं।

(अलग–अलग वैतरणी–15)

नाक कटा देना :– बाकई साले शोहदों ने गांव की नाक कटा दी।

(अलग–अलग वैतरणी–16)

पैंतरा बदलना :– झब्बू लाल ने पैंतरा बदल दिया था।

(अलग–अलग वैतरणी–16)

मजा किरकिरा करना :– इतना ही मजा क्या कम है। इसे भी कौन किरकिरा कराये।

(अलग–अलग वैतरणी–17)

मन मारना :– वे घुर बिनवा के साथ देवीधाम वाले छवरे पर मन मारे चलते रहे।

(अलग–अलग पृष्ठ–17)

डंका पीटना :– महुआ की रोटी और कंसारी की दाल खाकर दुनिया भर में डंका काहे पीटती हो?

(अलग–अलग वैतरणी–18)

नाक पर मच्छी न बैठने देना :– "चल–चल"! भौजी को नाक पर माछी बैठने देना भी पसन्द न था।

(अलग0 पृष्ठ – 20)

धाक जमाना :– परजा पर धाक जमाने के लिये हाथी का हिरदा चाहिये।

(अलग–अलग वैतरणी–20)

कमर झुक जाना :– बाकी, दिनभर दौड़ धूप करते–करते कम भी झुक गयी।

(अलग – अलग पृष्ठ–29)

<u>फूटी आंख न सुहाना</u> :- इनकी चाल-चलन बुढ़ऊ की फूटी आंख भी न सुहाती थी।

(अलग पृष्ठ - 29)

<u>कसम खाना, हाथी से टक्कर लेना</u> :- इसके बाद तो इन टुकड़हों ने हाथी से टक्कर लेने की जैसे कसम ही खा ली।

(अलग-अलग वैतरणी-24)

<u>मन मे समा जाना</u> :- भोली-भाली कजरारी आँखे सबके मन में समा जाती हैं।

(अलग-अलग वैतरणी-25)

<u>स्याह को सफेद करना</u> :- तुम अपनी ताकत के बल पर स्याह को सफेद नहीं कर सकते।

(अलग-अलग वैतरणी-27)

<u>पैंतरा लेना</u> :- देवपाल ने एक पैंतरा और लिया।

(अलग-अलग वैतरणी-27)

<u>साँकल डाल देना</u> :- पर लाज ने पैरों में साँकल डाल दी।

(अलग-अलग वैतरणी-28)

<u>नमक-मिर्च लगाकर कहना</u> :- लोग खूब नमक-मिर्च लगाकर बखान करते।

(अलग-अलग वैतरणी-29)

<u>सिर पीटना</u> :- बाबू जैपाल सिंह ने सिर पीट लिया।

(अलग-अलग वैतरणी-29)

<u>तराजू चढ़ा देना</u> (दांव पर लगा देना <u>:- उसने देवीचरन की वैश मर्यादा को तराजू पर चढ़ा दिया।</u>

<u>पगड़ी उछालना</u> :- उसने बबुआनों की पगड़ी ही उछाल दी।

(अलग-अलग वैतरणी-29)

<u>धूल में मिलाना</u> :- देवाल ने तो बबुआन की वह सारी प्रतिष्ठा ही धूल में मिला दी।

(अलग-अलग वैतरणी-29)

<u>जले पर नमक छिड़कना</u> :- क्या आये तो जले पर नमक छिड़कने।

(अलग0 पृष्ठ- 30)

<u>ऊसर की बीज की तरह निष्फल</u> :- पर उनकी यह आशा भी ऊसर के बीज की तरह निष्फल हो गयी।

(अलग-अलग वैतरणी-30)

बह जाना– जब से मियवा का साथ हुआ है तबसे तो और भी बह गया।

(अलग–अलग, वैतरणी, 36)

एक तो तितलौकी फिर नीम चढ़ी। (कहावत)

(अलग–अलग वैतरणी, 36)

बरम लेख हो जाना– एक बात कह दी कभी किसी ने। बस वह बरम लेख हो गयी।

(अलग–अलग वैतरणी, 38)

मति मारी जाना– असल में मेरी मति मारी गयी कि आप जैसे खब्ती आदमी को बाजार भेजा।

(अलग–अलग वैतरणी, 39)

भेद भरी मुस्कराहट से देखना– भोलू साह भेद भरी मुस्कराहट से हरखू की ओर देखते हुए बोले।

(अलग–अलग वैतरणी, 39)

फटी–फटी आँखों से देखना– हरखू सरदार ने एक बार उनकी ओर फटी–फटी आँखों देखा।

(अलग–अलग वैतरणी, 39)

गर्दन झुक जाना, चेहरा स्याह पड़ जाना– आज भी जब हरखू सरदार उस क्षण के बारे में सोचते हैं तो उनकी गर्दन अपने–आप झुक जाती है। चेहरा स्याह हो जाता है।

(अलग–अलग वैतरणी, 39)

दुम हिलाते कुक्कुर को दुलत्ती मारना– कितने– कितने अच्छे काम किये, उसकी कोई चर्चा नहीं। याद पड़ी तो बस कस्बे गली बात इसे ही कहते हैं दुम हिलाते कुक्कुर को दुलत्ती मारना।

(अलग–अलग वैतरणी, 40)

बात लगना, ताड़ जाना– जैपाल सिंह ताड़ गये कि हरखू को बात लग गयी है।

(अलग–अलग वैतरणी, 40)

फेफरी पड़ना– जेवा से बड़े–बड़े लोगों के चेहरे पर फेफरी पड़ गयी है।

(अलग–अलग वैतरणी, 41)

तलवा चाटना– जिन्दगी भर जैपाल का तलवा चाटते रहे।

(अलग–अलग वैतरणी, 41)

गच्चा खाना– जेवा से न खाये गच्चा तो कहिएगा।

(अलग–अलग वैतरणी, 41)

बंटाढ़ार करना– इस बार खड़े होकर फिर करेंगे बंटाढार।

(अलग–अलग वैतरणी, 41)

नारून का फल होना– मलकिन बुझारथ को नारून का फल कहती थी सुन्दर पर विषैला।

(अलग–अलग वैतरणी, 79)

हें–हें करना– मै किसी के आगे, चाहे वह मेरा कोई भी हो, हें हें नहीं करना चाहता।

(गली आगे मुड़ती है, 13)

दाँत निपोरना– दाँप निपोरा और सुन्न हो गये।

(गली आगे मुड़ती है, 14)

चाबी भरना– दूसरे बुत में भी जैसे किसी ने चाबी भरी।

(गली आगे मुड़ती है, 14)

मुँह फट होना, बकना– मुँहफट है, जो आया बक दिया।

(गली आगे मुड़ती है, 15)

डींग हाँकना– डींग हाँकता है ठाकुर– बामन की तरह

(गली आगे मुड़ती है, 15)

जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना (कहावत)– गाँजे की दम मारने की लिए दाँत निपोरे यहाँ आते हैं और जिस पतरी में खाते हैं उसी में छेद करते हैं।

(वही पृ0सं0– 15)

आँखे गीली हो जाना– अध्यापकी आँखे इस ऋचा को पढ़ते वक्त गीली हो गयी थी।

(गली आगे मुड़ती है, 16)

लाल पीला होना– उनका रखवारा लाला पीला हो रहा था।

(गली आगे मुड़ती है, 17)

कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी (कहावत)– तुम माँ–बेटे सभी एक जैसे हो। कुत्ते की दुम को हजार साल नलकी में रखो, वह टेढ़ी की टेढ़ ही रहेगी।

(गली आगे मुड़ती है, 18)

धेले के मोल बेचना– इतने गहरे सौन्दर्य को धेले के मोल बेच रही थी।

(गली आगे मुड़ती है, 19)

कन्नी काटना– वह मुझे देखकर हमेशा कन्नी काट जाता है।

(गली आगे मुड़ती है,66)

घाट–घाट घूमना– अपनी किस्मत उठाये इस घाट से उस घाट घूमता रहता था।

(गली आगे मुड़ती है,68)

मनौती मनाना– आप लोग न होते तो हम तो मनौती करते गंगा मैया से उमड़ घुमड़ के पलट दो महारानी ई अधरम के किला हाँ।

(गली आगे मुड़ती है,68)

पटना– सिचन्ना की बुढ़िया से बहुत पटती थी।

(गली आगे मुड़ती है,69)

राम नाम सत्य होना– भैया, तुम महाराजिन को जल्दी जगाओ, नहीं तो सच्ची वह सोये–सोये राम नाम सत्य हो जाएगी।

(गली आगे मुड़ती है,70)

मौज उड़ाना– ऊ तो अपनी मैतारी के संगे मौज उड़ावे है और हियाँ अपन जान पे आन बनी है।

(गली आगे मुड़ती है,71)

करोज सांत होना– मुसटंडे को गंगा मैया अपने दहाने ले जायें तो करेजा सांज हो।

(गली आगे मुड़ती है,71)

जान पे बनना, करेजा शांत होना तथा मौज उड़ाना इन तीन मुहावरों का प्रयोग एक ही स्थल पर किया गया है।

सीख देना– तू तौ अइसी सिखावन यह रही है कि अपन कोठरिया से तो हाथ धाऊँ ही, ऊ पुजारी का पिल्ला मोर वरतन झँडा भी विरलाय देव दारी जा।

(गली आगे मुडती है,71)

शह पाना–

चिउँटी के पंख निकलना– बिना शह पाये कहीं चिऊँटी के पाँखे निकलती हैं क्या?

(गली आगे मुड़ती है,73)

मजा चखना– हमारी शह का मजा चख चुके हो कीरत दास।

(गली आगे मुड़ती है,73)

कहीं–कहीं एक ही वाक्य में कई मुहावरों का एक साथ प्रयोग किया गया है जैसे– तूँ ओका देवता के मन्दिल माँ पधराय के पैर पूज, बलैया लैं, आरती कर।

(गली आगे मुड़ती है,73)

नाम घसीटना– साहू जी बेचारे का नाम करहे घसीटता है।

(गली आगे मुड़ती है,73)

कोई चिरई के पूत झाकै न आवा– (गली आगे मुड़ती है,75)

चिरई का पूत, झाँकने आना।

चूल्हे में जाना
भाड़ में जाना | ऊ जायँ चूल्हे– भाड़ में।

(गली आगे मुड़ती है,75)

मातम छाया रहना– जिनगी भर उनके चेहरे पे मातमै छावा रहता है।

(गली आगे मुड़ती है,75)

ठप्प हो जाना– भौजाई सब बात साँचै कहन लगें तब तो दुनिये ठप्प हुई जाई।

(गली आगे मुड़ती है,75)

समाई होना– मोर तो समाई

परत जमाना– मैने धीरे–धीरे लत्तों की परत जमा दी।

गली आगे मुड़ती है,76)

बरछी मार देना– मन में बरछी मार देने जैसी सूल उठती है।

(गली आगे मुड़ती है,77)

वैतरणी पार करना– मुझे अपने घ्रं से निकलने के लिए हर बार वैतरणी पार करनी पड़ती है।

(गली आगे मुड़ती है,78)

कूल–किनारे टूट जाना– नये पानी की ऐसी आमद हो रही है कि सब कूल किनारे टूट गये।

(गली आगे मुड़ती है,79)

चीं–चपड़ करना– आप विश्वास कीजिए तिवारी बाबू ऐसी बुढ़ियों से ज्यादा चीं–चपड़ करने वाली कोई चिड़िया मैने अपनी जिंदगी में नहीं देखी।

(गली आगे मुड़ती है,97)

दुधारू गाय हांथ लगना– तुम्हें तो इस लौंड के रूप में दुधारू गाय हाथ लग गयी है।

(गली आगे मुड़ती है,103)

चेहरा फक्क पड़ जाना– अगरवाल का चेहरा फक्क पड़ गया।

(गली आगे मुड़ती है,102)

फुंट खोलना– वह कमरे में बैठा लड़ाई का दूसरा फुंट खोलने की तरकीब सोच रहा होगा।

(गली आगे मुड़ती है,102)

काठ का उल्लू होना– जी हाँ जनाब, काठ के उल्लू लाजो वही है,

(गली आगे मुड़ती है,103)

टर्राना– अपने बाप से कह देना मुझसे ज्यादा टर्राया न करे।

(गली आगे मुड़ती है,103)

पल्ले न पड़ना– हम लोगों के पल्ले कुछ न पड़ा।

(गली आगे मुड़ती है,103)

दाने–दाने को मुहताज– हम सेठियों के मारे दाने–दाने को मुहताज हो रहे हैं।

(गली आगे मुड़ती है,105)

पैंतरा लेना– दो महुअर वाले घूम–घूमकर एक दूसरे को चैलेंज करते हुए पैंतरा ले रहे थे।

(गली आगे मुड़ती है,106)

पैंतरा बदलना– तभी बड़े वाले महुअर खिलाड़ी ने तेजी से पैंतरा बदलते हुए आसमान की ओर देखा।

(गली आगे मुड़ती है,106)

तेली के बैल की तरह चक्कर काटना– तु मुझे हुक्म देगी और मैं तेली के बैल की तरह आँख पर अटौतल लगाये लगाये चक्कर काटता रहूँगा।

(शैलूष, पृ0सं0– 12)

फाके करना, ज्वार–भाटे देखना– लल्लू नट अनुभवी थे, जाने कितने फाके किये, जाने किने ज्वार भाटे देखे।

(शैलूष, पृ0सं0– 12)

अकल भैंस चरने जाना– स्साली, एक लड़के की माँ हुई और अकल गई भैंस चरने जाने।

(शैलूष, पृ0सं0– 13)

पगड़ी नीलाम होना– आपकी पगड़ी अब गुजरात से बंगाल के नट कबीलों में कौडी के मोल नीलाम होगी।

(शैलूष, पृ0सं0– 17)

खुला आसमान चाहना– वह सिर्फ चहार दीवारी तोड़कर बाहर निकले हुए पंछी की तरह खुला आसमान देखना चाहती है।

(शैलूष, पृ0सं0– 14)

पर्दा डालना– आपकी इन दोनों बेटियों को देखकर लगता है कि कुछ लोग सारे वाकयात पर पर्दा डाल रहे हैं।

(शैलूष, पृ0सं0– 114)

लिपा पुती करना– लिपा पुती कर रहे हैं।

(वही, पृष्ठ 114)

लक्ष्मण रेखा लाँघना– वह परिवार के किसी भी सदस्य को लक्ष्मण रेखा लाँघने की अनुमति नहीं देती थी।

(शैलूष, पृ0सं0– 116)

लक्ष्मण रेखा तोड़ना– वह लक्ष्मण रेखा तोड़ने वालों को इस तरह कंपित कर देती थीं।

(वही पृ0सं0– 116)

आठ–आठ आँसू रोना– परिवार तो आठ–आठ आँसू दामोदर शास्त्री का रो रहा था।

(शैलूष, पृ0सं0– 118)

फूल की छड़ी उठाना– सिर पर कफन बाँधना– लल्लू काका पर तुमने फूल की छड़ी भी उठायी कुबेर, तो मेरे खानदान को दोजख में भेजने के लिए सिर पर कफन बाँधे नट रात–दिन तुम्हारा और तुम्हारे भाई, बेटों, माँ, मौसी, बहनें, साले, सबका पीछा करने लगेंगे।

(शैलूष, पृ0सं0– 120)

चैन की सांस न लेना– जब तक तुम्हारे वंश का नामोनिशान नहीं मिटता, नट चैन की सांस नहीं लेगें।

(शैलूष, पृ0सं0– 120)

घोड़े के सामने इक्का खड़ा करना– भूखे पेट सोने वालों को जरायम पेशा छोड़ने की शपथ दिलाना घोड़े के सामने इक्का खड़ा करना है।

वैतरणी पार करना– आज या तो हम वैतरणी पार कर लेगें या उसी में डूब जायेगें।

(शैलूष, पृ0सं0– 121

टेढ़ी खीर बनना– आपकी बातें जितनी उलझती हैं, भविष्य उतना ही टेढ़ी खीर बन जाता है।

(शैलूष, पृ0सं0– 121)

छुट्टी में पिलाना – यही तुम्हारी छुट्टी में लगातार पिलाया गया है।

(शैलूष, पृ0सं0– 122)

वज्र गिरना– मुझे कुछ भी नहीं मालूम कि तुम पर कौन सा वज्र गिरेगा।

(शैलूष, पृ0सं0– 125)

आँख में धूल झोंकना– धानापुर के थानेदार की आँख में धूल झोंकर जिला अधिकी के पास कैसे पहुँचे?

(शैलूष, पृ0सं0– 125)

कानोंकान खबर न होना– इनकी कानों कान खबर तक न मिली।

(शैलूष, पृ0सं0–125)

दूध की मक्खी समझना– आपने कमालपुर के नायब साहब को दूध की मक्खी समझने की गलती की है हुजूर!

(शैलूष, पृसं0– 125)

पारा चढ़ जाना– परताप को देखते ही कुबेर का पारा चढ़ चुका था।

(शैलूष, पृ0सं0– 126)

उलट–फेर हो जाना– यह सब उलट फेर कैसे हो गयी?

(शैलूष, पृ0सं0– 127)

झंडा गाड़ना– तूने सौ एकड़ की बियाबान परती पर नटों का झंडा गाड़ दिया।

(शैलूष, पृ0सं0– 129)

नौटंकी करना– नौटंकी ही करनी है तो करो धुरफेंकन, पर इस तरह करो कि कोई तुम्हारी मदद कर सके।

(शैलूष, पृ0सं0–135)

कड़वा घूँट पीना– हम बेइज्जती का कड़वा घूँट पीकर छत्तीस घंटे हुए यहाँ आए हैं।

(शैलूष, पृ0सं0–137)

पोल खुलना– सारी पोल खुल चुकी है।

(शैलूष, पृ0सं0– 137)

गाज गिरना– नासिरूद्दीन की मौत ने दिल्ली पर गाज गिरा दी थी।

(दिल्ली दूर है, 9)

खुदा का प्यारा होना– नासिरूद्दीन तो खुदा को प्यारे हुए। (दिल्ली दूर है, 9

पैंतरा लेना– वाह–वाह क्या पैंतरा लिया हमारे मलिक्कुईद नासिरूद्दीन ने (दिल्ली दूर है, 10)

गुल खिलाना– वह कोई गुल खिलाने वाली है। (दिल्ली दूर है, 10

हेकड़ी भुला देना– मैं तुम्हारी सारी हेंकड़ी भुलवा दूँगी। (दिल्ली दूर है, 19)

डंगा बजना– तुम्हारी विजय की डंका बजा होगा जुझौती में (दिल्ली दूर है, 22)

रीढ़ तोड़ना– वे राजा तलक–मलकी की रीढ़ तोड़ देने की तैयारियाँ कर रहे थे। (दिल्ली दूर है, 33)

3.6.4. वाक्‌पद्धितियों के आधार

इनके विभिन्न आधार है– मानव शरीर, तत्कालीन–वातावरण, चेतन जगत, अमूर्त पदार्थ, स्वभाव, रीति–रिवाज, अन्ध विश्वास तथा इतिहास, धर्म और परम्परा।

3.6.4.1. मानव शरीर पर आधारित वाक्‌पद्धतियां

पांचों उंगलियां घी में होना। (चारों ओर से लाभ मिलना) हां, तुम्हारी पांचों उंगलियां भइया घी में हैं।

(संज्ञा, शैलूष पृष्ठ–102)

आँखे तरेरना (गुस्से से देखना) कहीं कनिया आगे कुछ और न कहें, इसलिये वह आँखे तरेरकर उनकी ओर देख रही थी।

(क्रिया वि0) अलग–2
वैतरणी–)

आँखे चौंधियाना ( ) एक हिन्दुआनी औरत के सतीत्व का इतना मूल्य देखकर तेरी आँखे चौंधिया जायेंगी।

(संज्ञा) हनोज दिल्ली0–43)

3.6.4.2. तत्कालीन वातावरण पर आधारित वाक् पद्धतियां

पत्थर की मूरत होना (संज्ञा शून्य हो जाना)
नयी मां आंगन में पत्थर की मूरत की तरह खड़ीं थीं।

(बिशेषण, गली आगे–170)

छट्ठी का दूध याद दिलाना ( )
उन्होंने सुद्ध पंडा को पीट–पीटकर छट्ठी के दूध की याद दिला दी।

(नीलाचांद पृष्ठ–356)

आग में अंगुलि डालना (जानबूझकर खतरा मोल लेना)
पर अतुलनीय बलावल का अन्तर न करना तो आगे में अगुंलि डालने जैसा है।

(वैश्वानर–458)

न घर का न घाट का (कहीं का न रहना)
उस म्लेच्छ आनन्द वाशेक ने तो हमें न तो घर का रखा न घाट का।

(संज्ञा हनोज दिल्ली–212)

3.6.4.3. चेतन जगत पर आधृत वाक्पद्धतियां

एक ही थैली के चट्टे बट्टे होना (समान होना)

सुरजू और बुझारथ एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं।

(बिशे0अलग–2वैतरणी–86)

बाल भी बांका होना (रंचमात्र भी चोट पहुँचना)

राजेश्वरी का अगर बाल भी बांका हुआ तो मै पूरी काशी को रक्त की होली में झोंक दूँगा।

(संज्ञा, नीलाचांद–406)

3.6.4.4. अभूर्त पदार्थों पर आधारित वाक्पद्धतियां

हवा से बात करना (कल्पनाओं में खो जाना)

कहाँ पिछले हफ्ते मेरा बैलून हवा से बातें कर रहा था।

(क्रिया बि0गली आगे0–115)

काटों से भर जाना (असीम वेदना होना)

सारा शरीर काटों से भर गया था और तभी वह सिसककर रो पड़ी थी।

(बिशे0अलग–2वैतरणी–121

छाया पड़ना (प्रभाव पड़ना)

मै जिस गलत माहौल में पली, उसी की छाया पड़ गयी बकुल पर।

(संज्ञा शैलूष–68)

3.6.4.5. स्वभाव रीति रिवाज और अन्ध विश्वास पर आधृत वाक्पद्धतियां

चरण छूना (बिशेष रूप से सम्मानित करना)

गोमत ने झुककर कीरत के चरण छुये ही थे।

(क्रिया नीलाचांद – 422)

मृग मारीचिका के पीछे दौड़ते रहना ( )

मै उन लोगों में नहीं हूँ जो मृग मारीचिका के पीछे दौड़ते रहते हैं।

(नीलाचांद–327)

अरण्य रोदन लगना (निरर्थक, प्रभावहीन)

जिन्होंने ब्रह्माण्ड नायिका के वर्म को धारण कर रखा है, उस पर मारण, मोहन आदि के अभिचार अरण्य रोदन ही लगते हैं

(बिशे0 नीलाचांद–373)

दूज का चांद होना (दर्शन दुर्लभ व्यक्ति)

बहुत दिन हुए यार, तुम तो दूज का चांद हो गये हो।

(संज्ञा–विशेषण, गली० 153)

3.6.4.6. इतिहास कल्पना और परम्परा पर आधृत वाक् पद्धतियाँ

महाभारत होना (युद्ध) लड़ाई छिड़ जाना।

हमारे लाख न चाहने पर भी महाभारत हो जायेगा।

(संज्ञा, शैलूष, पृ०–175)

हरिश्चन्द्र बनना (सत्यवादी बनना)

"कौन जाने वह सत्य हरिश्चन्द्र बन रहा हो।"

(संज्ञा, दिल्ली दूर०, 537)

3.6.4.7. एकपदीय वाक् पद्धतियाँ

लुढ़कना (मृत्यु हो जाना)

संतरी रायफल के साथ लुढ़क गया।

(क्रिया, शैलूष, पृ०–215)

नाचना (हर्षित होना) असल्ल उत्साह की सीमा तोड़कर नाचने लगा।

(क्रिया, दिल्ली दूर०, 473)

3.7. कहावतें या लोकोक्तियाँ

जन साधारण की विशेष अर्थ में एक अथवा परम्परागत उक्तियों को कहावतें या लोकोक्तियाँ कहा जाता है। ये अनेक दैनिक अनुभवों और कार्य व्यापारों पर आधृत होती है।

कहावतें भाषा का अंग बनकर उसे नई अभिव्यंजना और अर्थवत्ता प्रदान करती हैं।

निर्धारित और सामान्यीकरण कहावतों की मुख्य विशेषता है। निर्धारण द्वारा कहावत में निहित सत्य अथवा तथ्य एक निश्चयात्मक रूप ग्रहण करता है। यही निश्चयित रूप लोकमानस के सहज बोध से सम्बद्ध होने के कारण अनायास लोक स्वीकृति प्राप्त कर सामान्यीकृत हो जाता है।

इनके चार वर्ग इस प्रकार हैं–

3.7.1. धार्मिक काल्पनिक और ऐतिहासिक तथ्यों की ओर संकेत करने वाली कहावतें

एक तो तितलौकी फिर नीमा चढ़ी

जब से मियवा का साथ हुआ है तब से तो और भी बह गया। एक तो तितलौकी फिर नीम चढ़ी।

(अलग–अलग वैतरणी, 36)

विदुर नीति (युद्ध के पहले ही हथियार डाल देना)

परमर्दिदेव ने विदुर नीति अपनाई और उनका वध हुआ।

(संज्ञा, हनोज0, 17)

बड़ी मछली फँसना (किसी अमीर आदमी को फँसना) अधिक लाभ की संभावना होना।

"कोई बड़ा महत्व फंसा है कि चलवे सिधरियाँ ही"

(संज्ञा, नीलाचाँद, 438)

कृष्ण जैसा सारथी हो तो भय कैसा

"आर्य, जिसके रथ की बल्गा स्वयं वासुदेव ने संभाल ली हो, उसकी प्रसन्नता का अन्त कहा।

(नीलाचाँद, पृ0– 501)

काशिराज का घोड़ा ( )

यह तो काशिराज के घोड़े से भी ज्यादा खतरनाक है।

(संज्ञा, गली आगे0, 193)

3.7.2. अभिधार्थ में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ

कुछ कहावतों का अर्थ एकान्ततः अभिधात्मक होता है। ये केवल उस निश्चित अर्थ में ही प्रयुक्त हो सकती हैं, अन्य किसी अर्थ में नहीं। अपनी प्रभाव क्षमता और यथातथ्यता के कारण ही इनका अस्तित्व आज भी है।

काला अक्षर भैंस बराबर (अशिक्षित होना)

अब हम मास्टर जी से का–का पूछैं। करिया अच्छर भइस बरोबर।

(अलग–अलग0, 360)

दूधो नहाओ पूतो फलो (आर्शीवाद)

आँजन बदेत दूध मिलत नहिंनी, तू नहाय के वरदान थोप दिहो।

अपने के जब घर–दुआर नहिंनी, तो पूतों फल का

(गली आगे0, 111)

सारी ऊंगलियाँ घी में होना (चारों ओर से लाभ होना)

क्यों सब्बीर मियाँ आपकी तो सारी ऊंगलियाँ घी में हैं।

(दिल्ली दूर है, 283)

3.7.3. रूपकात्मक लोकोक्तियाँ

व्यंजना क्षमता के कारण इनका अस्तित्व अधिक समय तक रहता है। इनमें से अधिकांश अभिधार्थ में प्रयुक्त नहीं हो सकतीं।

बाप न मारी मेढ़की, बेटी तीरंदाज

"ससुर हाँ से सिपाही गीरी का रोब दिखाते हैं, हमारा चरित्तर देखते हैं। बाप न मारी मेढ़की, बेटा तीरंदाज।

(अलग-अलग0, 252)

3.8. उद्देश्य -विधेय

प्रत्येक वाक्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में उद्देश्य और विधेय विद्यमान रहते हैं। उद्देश्य वाक्य का आधार है, विधेय उद्देश्य के बारे में किया गया कथन है।

3.8.1. पद- उद्देश्य

कर्तृवाच्य

सुबोध भट्टाचार्य आज बहुत विगलित थे।

(संज्ञा, गली आगे0,21)

आप आराम के लिये आयी ही नहीं हैं मांजी।

(सर्वनाम, शैलूष,173)

चंचल नदियों के मन में समुद्र या नद से मिलने की ऐसी तीव्र आकांक्षा क्यों जन्म लेती है।

(विशेषण-विशेष्य,
वैश्वानर पृष्ठ सं0- 122)

लजाना-शर्माना ठीक नहीं।

(क्रियार्थक संज्ञा)
(अलग-अलग0, 130)

भयानक खड्ग युद्ध आरम्भ हो गया।

(विशेषण - विशेष्य)
हनोज दिल्ली0, 122)

कर्मवाच्य

तुमने भारत-विख्यात सम्राट विद्याधर देव का नाम तो सुना ही होगा।

(संज्ञा, नीलाचाँद, 19)

उन्होंने एकलिंग देव पर फूलों के साथ अपना कटा अंगूठा भी चढ़ा दिया।

(संज्ञा, दिल्ली दूर0,505)

मैंने बाँसुरी वाले का ध्यान किया।

(संज्ञा,गली आगे0,175)

मैंने भय से कंपित होकर तुझे मुक्त किया।

(सर्वनाम, वैश्वानर,184)

हमसे किसी का कुछ छुपा नहीं है।

(सर्वनाम, अलग0, 167)

कर्तृकर्म वाच्य

भूर्जपत्र निकाला।

(संज्ञा, नीलाचाँद,374)

नाव घाट पर लगी।

(संज्ञा, गली आगे0,223)

रज्जु अधिकतर कसाव कंधों पर डालती थी।

(संज्ञा, वैश्वानर, 186)

यहाँ रोना-धोना क्यों शुरू हो गया।

(क्रियार्थक संज्ञा)
दिल्ली दूर है, 122)

दोनों तलवारें टकराईं।

(संज्ञायें, हनोज0, 117)

3.8.1.2. उद्देश्य द्वय

वाक्य में जब एक ही वस्तु या व्यक्ति सूचक उद्देश्य पदों का पृथक- पृथक प्रयोग होता है तब उन्हें उद्देश्य-द्वय संज्ञा से अभिहित किया जाता है।

कर्तृ वाच्य

वाह जीजी, तुम तो मायारानी हो।

(संज्ञा, सर्वनाम)
गली आगे मुड़ती है,245)

आप इस नगर के अत्यन्त प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

(सर्वनाम, संज्ञा)
वैश्वानर, पृ0सं0– 170)

आप आश्चर्य में क्यों पड़े हैं वैद्यराज?

(सर्वनाम, संज्ञा)
नीलाचाँद, पृ0सं0 –387)

कर्मवाच्य

उसने तुम्हारा अपमान किया है काका

(सर्वनाम, संज्ञा, शैलूष, 281)

मैंने उस दर्जी से कहा।

(सर्वनाम, संज्ञा, गली0, 237

प्रतर्दन ने सेनापति श्रुतधन्वा को इंगित किया।

(संज्ञा+संज्ञा, वैश्वानर, 182)

3.8.1.3. एकाधिक पद उद्देश्य

वाक्यों में एकाधिक उद्देश्य आने पर क्रिया की स्थिति अनिश्चित हो जाती है। एकाधिक पुर्ल्लिंग उद्देश्य होने पर क्रिया पुर्ल्लिग बहुवचन में और एकाधिक स्त्रीलिंग उद्देश्य होने पर स्त्रीलिंग बहुवचन में रहती है।

पुर्ल्लिग और स्त्रीलिंग दोनों के उद्देश्य होने पर क्रिया या तो तो अन्तिम पढ़ के अनुरूप रहती है या पुर्ल्लिग बहुवचन में।

कर्तृवाच्य

प्रचंड और रिपुंजय दोनों पोत पर सवार हो गये।

(संज्ञा+संज्ञा, नीलाचाँद, 83)

मैं और अम्मा एक रिक्शे पर बैठे।

(सर्वनाम+संज्ञा, गली0, 159

चचिया और पुष्पा एक क्षण वैसे ही बैठी रहीं।

(संज्ञा+संज्ञा, अलग0, 127)

मयूख, मलय और दोनों पीलुपति ठहाका लगाकर हँसे।

(संज्ञा+संज्ञा, हनोज0, 180)

तुम बज्रहृदय और अजात शत्रु कहलाते हैं।

(सर्व + विशेषण +विशेषण वैश्वानर, पृ0 सं0-330)

इनका पोहना और माला में बदल पाना असंभव है।

(दिल्ली दूर है, 354)

कर्मवाच्य

दयाल महाराज ने नाले में उतरकर सुरजू और सिरिया की लाठियाँ उठा लीं।

(संज्ञा+संज्ञा, अलग0, 272)

महायोगिनी शीलभद्रा ने किस कुल और जाति को अपनी लीला से अलंकृत किया है।

(संज्ञा+संज्ञा, नीलाचाँद, 295

आपने धन को कर्ण और महाराज बलि की तरह लुटाया।

(संज्ञा+संज्ञा, शैलूष, 218)

3.8.1.4. वाक्यांश + उद्देश्य

कर्तृवाच्य

सामने वही कृष्णकाय साधु खड़ा है।

(संज्ञा वाक्यांश, गली0, 74)

कइसे जाहिल लोगों से पाला पड़ा है।

(विशेषण वाक्यांश अलग-अलग, वैतरणी, 233)

हम सब कच्ची मिट्टी के खिलौने हैं।

(सर्व0 + विशेषण वाक्यांश शैलूष, पृ0सं0- 249)

यज्ञ- मण्डप दर्शनीय था।

(संज्ञा वाक्यांश वैश्वानर, पृ0सं0- 264)

समूची पृथ्वी तमसपूर्ण कलिल जल में निमग्न हो जाती है।

(संज्ञा वाक्यांश नीलाचाँद, पृ0सं0-371)

आनन्द घबड़ा गया।

(संज्ञा वाक्यांश,
दिल्ली दूर है, पृ0- 298)

कर्मवाच्य

मैंने ऐसा रूप और ऐसा वाग्वैभव अब तक नहीं देखा।

(
दिल्ली दूर है, 320)

उन्होंने कहारों को रूकने और शिविका भूमि पर रखने की आज्ञा दी।

(एकाधिक संज्ञा वाक्यांश
वैश्वानर, पृ0सं0- 238)

मैंने काशी छोड़ दी।

(संज्ञा वाक्यांश,
नीलाचाँद, पृ0सं0- 348)

जाने कितनी बार देखा है इस लड़की को।

(
अलग-अलग वैतरणी, 266)

कर्तृ कर्मवाच्य

प्रातः काल पूजा आरम्भ हो गयी।

(संज्ञा वाक्यांश
नीलाचाँद, पृ0सं0- 366)

धर्म कोई भीड़ नहीं बनाता।

(संज्ञा वाक्यांश
दिल्ली दूर है, 320)

दिन बीतते गये।

(संज्ञा वाक्यांश,
अलग-अलग वैतरणी, 225)

3.8.2. विधेय

वाक्य की वह इकाई विधेय कहलाती है जो उद्‌देश्य के बारे में कुछ कहती है। क्रिया विधेय का मुख्य अंग है। विधेय पद, एकाधिक पद, वाक्यांश सभी रूपों में रहता है।

3.8.2.1. पद- विधेय

कर्तृवाच्य

नन्दकिशोर बोला।

(क्रिया, गली आगे0, 124)

रामदेवी नारी रत्न थीं।

(क्रिया, हनोज0, 24)

पर मृत्यु अटल है।

(क्रिया, वैश्वानर, 334)

बुढ़िया हुई।

(क्रिया, शैलूष, 93)

आनन्द हँसा।

(क्रिया, दिल्ली0, 443)

कर्मवाच्य

भूर्जपत्र निकाला।

(क्रिया, नीलाचाँद, 374)

आग डाली।

(क्रिया, शैलूष, 131)

सांकल खड़खड़ाई।

(क्रिया, दिल्ली दूर0, 446)

कर्तृ कर्मवाच्य

क्रोध भी उपजा।

(क्रिया, वैश्वानर, पृ-351)

कमंद फेंके

(क्रिया, शैलूष, 91)

वध किया।

(क्रिया, दिल्ली दूर0, 447)

3.8.2.2. एकाधिक पद- विधेय

कर्तृवाच्य

मैं हाटकेश्वर की मनौती मनाती हूँ।

(संबध+क्रिया, गली0, 127)

मैं ईश्वर में विश्वास नहीं करता।

(अधि० + क्रि०वि०+क्रिया/
नीलाचाँद, पृ०सं०- 214)

कर्मवाच्य

मैंने दरवाजे की कुंडी खटखटाई।

(कर्ता + क्रिया
गली आगे मुड़ती है०,248)

मैंने एक योजना बनाई है।

(कर्ता + कर्म + क्रिया
हनोज दिल्ली०, पृ०-44)

मैंने अपने एक भक्त को आज्ञा भिजवा दी है।

(कर्ता + कर्म + क्रिया/
नीलाचाँद, पृ०- 270)

कर्तृ कर्म वाच्य

पूजा समाप्त हो गई

(कि० वि० + क्रि०/
नीलाचांद-227)

गाड़ी मालवीय पुल पर थी।

(अधि०-क्रिया गली आगे-8)

भाव वाच्य

रज्जुक ने मदनचन्द्र को रज्जु से मुक्त किया।

(कर्ता+कर्म+अपा०+क्रि०वि०
+क्रिया नीलाचांद-231)

3.8.2.3. वाक्यांश/पद-विधेय

कर्तृ वाच्य

वह अपनी चारपाई पर जाकर बैठा।

(संवांश-कर्म+क्रि०वि०)
अलग-2 वैतरणी-76)

हम आपकी व्याख्या का समर्थन करते हैं।

(सांवांश–कर्म+क्रि0वि0+
क्रिवांश वैश्वानर–249)

कर्म वाच्य

मैने आपका फोटो दैनिक में देखा है।

(सावांश–कर्म+अधि0+क्रि0
क्रिवांश, शैलूष – 204)

उसने सारी अर्थर्ववेदी मान्यताओं के अज्ञान में आस्था रखकर अपने आस्तित्व को नकारा है।

(संवांश+कर्ता+
वैश्वानर – 250)

कर्तृकर्मवाच्य

पंजाब मेल पेड़ों को हिलाती–झकझोरती झइयम्म–झांय करती निकल आई।

(क्रिवांश गली आगे–171)

कपाट खुले।

(क्रिवांश, नीलाचांद–246)

कहीं धरती सूखी है।

(क्रिवांश वैश्वानर–254)

भाव वाच्य

मैने शील को कितना रुलाया है।

(कर्ता + कर्म + किवांश
नीलाचांद–347)

आपने मुझे माफ कर दिया है।

(कर्ता + कर्म + किवांश
अलग–2 वैतरणी–336)

सुमेधा के नेत्रों से खुशी के आँसू छलछला उठे।

(वैश्वानर – 255)

वह तुमसे डरता बहुत है।

(सांवांश–कर्ता+कर्म+क्रि0वि
क्रिवांश हनोज दिल्ली–52)

3.8.2.4. विधेय – पूरक

कुछ वाक्यों में कर्ता कर्म आदि रहते हुये भी वाक्य अधूरा रहता है ऐसी कियायें अपूर्ण कियापद कहलाती हैं। तब अर्थ–प्रतीति के लिये जो पद या वाक्यांश आते हैं। उन्हें विधेय पूरक कहते हैं।

लड़की तेज है।

(वि० – पूरक + क्रिया, गली आगे० – 25)

मैनवां हरिजन कन्या थी।

(वि – पूरक + क्रिया, शैलूष – 31)

पूजा–आराधना आत्मा के संस्कार हैं।

(वि० – पूरक + क्रिया नीलाचांद – 353)

जुलूस आगे निकल गया।

(वि – पूरक –क्रि०वि० वाक्यांश दिल्ली दूर है–182)

गोधा की बातें बहुमूल्य हैं।

(क्रियार्थक संज्ञा–पूरक+क्रि० वि०+क्रिया वैश्वानर–271)

3.8.2.5. विधेय – योग

पूर्ण विधेय वाली क्रिया के साथ कभी विधेय–योग भी आते हैं। ये विधेय–योग विधेय संज्ञा, विधेय–बिशेषण, या विधेय मूलक वाक्यांश होते हैं।

ये विधेय क्रिया से पूर्व क्रिया के पश्चात और उद्देश्य तथा विधेय क्रिया के मध्य में आ सकते हैं।

विधेय क्रिया–पूर्व

तू अपनी ईमानदारी का दण्ड पायेगा।

(गली आगे०–133)

वे उसे जीवन भर भूल नहीं पायेंगे।

(शैलूष– 202)

झूठे सपने अपना ही उपहास करते से प्रतीत होते।

(अलग-2 वैतरणी-121)

भारत-विख्यात खड्ग चालक के मेदुरमन की कल्पना ही निराधार है।

(नीलाचांद- 374)

विधेय क्रियापश्चात्

वह पतली छरहरी, भरे मुख की युवती थी। बड़ी-बड़ी आखें, सुती हुई नासिका।

(गली आगे - 45)

उद्देश्य और विधेय क्रिया के मध्य

वे जी खोलकर हँसे।

(गली आगे0 - 238)

बायस्कोप वाला अधीर होकर बोला।

(अलग-2 वैतरणी- 248)

कारणी विधि और प्रयोजन आदि के लिये विधेय-योग के रूप में कुछ वाक्यांश या उपवाक्य भी डॉ0 सिंह ने प्रयुक्त किये हैं।

इतने बड़े परिवार में माई ही ऐसी थी। जो उसके मन की पीड़ा को बिना बताये समझ जाती थी।

(कारण/
अलग-2 वैतरणी-287)

काशिक जन के लिये अविमुक्तेश्वर अधिक प्रिय थे क्योंकि उन्होंने प्रलयकाल में भी काशी न छोड़ने की प्रतिज्ञा की थी।

(प्रयोजन, नीलाचांद-292)

वाक्य की व्याख्या अथवा वस्तुस्थिति बोध के रूप में भी विधेय-योग प्रयुक्त होते हैं। ऐसे प्रयोग प्रधान-उपवाक्य के पहले या बाद में आते हैं। कभी-कभी मुख्य उपवाक्य के उद्देश्य और क्रिया के मध्य भी आ जाते हैं:-

वह एक ऐसा व्यक्ति है, जिसने भाई से लड़ाई करके उसे नाले में झोंक दिया।

(अलग-2 वैतरणी-278)

याकूत और रजिया इतिहास के उस काले पृष्ठ में खोजे जाने वाले हैं, जिसे वर्तमान तो नहीं भुला सकता पर भविष्य शायद ही पूछे।

(मध्य, दिल्ली दूर है-240)

3.8.26. निष्कर्ष

डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में यहाँ तक वाक्य स्तरीय संरचनाओं की जो विवेचना की गयी उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होंने साधारण वाक्य विन्यास मूला संरचनाओं में संज्ञा उपवाक्यों पर आधारित वाक्य संरचनाओं का व्यवहार सर्वाधिक किया है। जटिल वाक्यों का प्रयोग वहीं हुआ है जहाँ पात्रों की मन: स्थिति विभिन्न संवेगों में ऊभ-चूभ करने वाली बनी हो। उन्होंने मिश्रित उपवाक्यों की रचना सर्वत्र संज्ञा, विशेषण और क्रिया विशेषण उपवाक्यों के संयोग से की है। संयुक्त उपवाक्य स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त हुए है और मिश्रित उपवाक्यों के साथ भी। डॉ. सिंह के उपन्यासों में वाक्य स्तरीय संरचनाएँ स्वतंत्र और आश्रित दोनों उपवाक्यों के रूप में मिलती हैं। वाक्य के स्तर पर उनकी संरचनाएँ अत्यन्त व्यंजनापूर्ण और लाक्षणिक हैं।

संयुक्त उपवाक्यों की ऊपर की गयी विवेचना से इस निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन नहीं है कि संयुक्त वाक्य मूला संरचनाओं में युगपत कालिक, कारण अथवा परिणाम सूचक, अर्थ विस्तारक विरोध सूचक तुलनात्मक, मन-स्थिति अनुमान वाचक, विरोध प्रदर्शक प्रतिकूलता वाचक उप सम्बन्ध, व्याप्तिमर्यादित विरोध प्रदर्शक उपसम्बन्ध उपलब्ध होता है। मिश्रित उपवाक्यों की तरह संयुक्त उपवाक्यों की योजना भी मिश्रित और आश्रित उपवाक्यों के साथ हुई है। विशुद्ध संयुक्त वाक्य सिर्फ व्याकरण शास्त्र में मिल सकते हैं। कथा साहित्य में संयुक्त वाक्यों के बीच मिश्रित उपवाक्यों का आना उतना ही सहज है जितना मिश्रित उपवाक्यों के मध्य संयुक्त उपवाक्यों का आना। ऊपर की विवेचना से तो यही निष्कर्ष निकलता है।

वाक्य मूला संरचनाओं की विवेचना के बाद वाक्यांशों और वाक् पद्धतियों का जो विवेचन किया गया है उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वक्ता की इच्छा, उसके आवेगों की अभिव्यक्ति के लिए डॉ. सिंह ने वाक्य मूला संरचनाओं में विभिन्न वाक्यांशों और कहावतों-मुहावरों का पुष्कल प्रयोग किया है। ऐसा करने से उनकी अभिव्यक्तियाँ जीवन्त और अपने अभिप्राय को व्यक्त करने में सक्षम हुई हैं। उद्देश्य-विधेय पद वाक्य संरचना के महत्वपूर्ण अंग होते हैं। ऊपर जो विवेचन किया गया उससे इस निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन नहीं होगा कि डॉ. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में उद्देश्य विधेय पद संरचनाओं के क्रम में कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य मूला वाक्य संरचनाएँ खूब उपलब्ध होती हैं। इन सब वाक्य मूला संरचनाओं की विवेचना के उपरान्त अगले प्रकरण में विश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास के अन्तर्गत खंडीय तथा अतिखंडीय तत्वों की विवेचना की गयी है।

❑❑❑

विश्लेषणात्मक वाक्य– विन्यास

खंडीय तत्व

–बीज वाक्य

–बीज वाक्य बीज पद, कर्ता विस्तार, क्रिया विस्तार

–कर्म पूरक विस्तार

–पद विस्तार

–सर्वनाम

–विशेषण– विशेष्य

–कर्ता विस्तार, कर्तृ वाचृय, कर्म प्रयोग

–सर्वनाम

–विशेषण– विशेष्य

–कर्तृ वाच्य, क्रिया प्रयोग

–क्रिया विस्तार

–भाव वाच्य

–विशेष रूपकात्मक प्रयोग

प्रकरण :: 4

विश्लेषणात्मक वाक्य – विन्यास

खंडीय – तत्व

4.1. बीज वाक्य

बीज वाक्य भाषा की न्यूनतम इकाई है। सामान्यतया प्रत्येक बीज वाक्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में कम से कम एक नामपद तथा एक आख्यात पद की अपेक्षा होती है। लेकिन कतिपय ऐसे प्रयोग भी होते हैं, जिनमें नामपद अथवा आख्यात पद का होना अनिवार्य नहीं होता। ये मात्र अव्यय होते हैं और वाक्य के प्रयोजन की पूर्ति करते हैं।

अतः इन्हें अबीज वाक्य कहना समीचीन है।

बीज वाक्य में दो अव्यव अनिवार्य होते हैं– कर्ता अथवा उद्देश्य और विधेय।

4.1.1. बीज वाक्य – बीज पद (कर्ता + क्रिया)

4.1.1.1 कर्ता विस्तार

लड़के पढ़ते हैं।

(अलग–अलग वैतरणी, 56)

छोटे राजा चित्रकूट के वाशिष हैं।

(हनोज दिल्ली0, 11)

सम्पूर्ण जीवन के रहस्यों के ज्ञाता, योगिराज दत्ताश्रेय के मानस–पुत्र का अभिनन्दन है।

(वैश्वानर, पृ0–270)

एक बहुत शांत और गंभीर–सी लगने वाली वृद्धा ने टट्हर हटाकर पूंछा।

(शैलूष, पृ0सं0–24)

इस प्रकार यहाँ कर्ता का विस्तार विशेषण तक ही सीमित है। विशेषण अपने मूल रूप में किसी भी प्रकार के हो सकते हैं।

4.1.1.2 क्रिया विस्तार

इसकी दो प्रमुख प्रविधियों का डा0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में प्रयोग हुआ है।

1. शुद्ध क्रियाविस्तार वाली
2. क्रिया विशेषण के योग से विस्तुत होने वाली

शुद्ध क्रिया विस्तार से अभिप्राय है वे विस्तारात्मक अव्यय–योग, जिनसे क्रिया वाक्यांश निर्मित होते हैं। इसे क्रिया का अन्तः विस्तार कह सकते हैं।

इनमें विस्तारात्मक अव्यय मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के बीच में है। यह विस्तार बाँए से दाहिने होता है।

क्रिया विशेषण के योग से विस्तुत होने वाली क्रियाएं द्विविध होती हैं–

1. कृमिक विस्तार वाली

2. बाधित विस्तार वाली

कृमिक विस्तार वाली क्रियाएं वे होती हैं, जिनमें क्रिया विशेषण क्रिया के पास रहता है।

बाधित विस्तार वाली वे क्रियाएं हैं, जिनमें क्रिया विशेषण और क्रिया के बीच में अन्य पद आ जाते हैं।

क्रिया विशेषण वाला विस्तार डा0 शिव प्रसाद सिंह ने अपने उपन्यासों में बाह्य तथा अन्तर बाह्य दोनों प्रकार से दर्शाया है।

शुद्ध क्रिया विस्तार (-->)

पृथ्वी ढकी ही थी।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–93)

यज्ञ चलता ही रहा।

(शैलूष, पृ0सं0– 95)

शाप तो सच होता ही है।

(दिल्ली दूर हे, 503)

क्रमिक एकद्रिक् क्रिया विस्तार (<–)

देवपाल लोगों की आँख बचाकर रोज शाम को दक्खिन पट्टी जाता है।

(अलग–अलग वैतरणी, 30)

कई नरेश सोचते हैं।

(वैश्वानर, पृ0सं0–283)

मैं चिट्ठी पढ़कर हिचक–हिचक कर रो पड़ा।

(गली आगे मुड़ती है, 240)

कृमिक द्विदिक् क्रिया विस्तार (<–>)

हाकिम कहता था।

(हनोज दिल्ली0, 47)

पियाऊ रोज शाम को बादाम की ठंडई पीता था।

(अलग–अलग वैतरणी, 31)

वाधित क्रिया विस्तार (<- (·····)··->)

नर्स मुस्कराती है।

(गली आगे मुड़ती है, 93)

4.1.2. बीज वाक्य (उद्‌देश्य + पूरक + क्रिया)

4.1.2.1. पूरक विस्तार

आप अर्धनारीश्वर हैं।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–269)

धन्वन्तरि साक्षात् विष्णुदेवांश अवतार हैं।

(वैश्वानर, पृ0सं0–169)

अल्लारक्खी व्यवहारिक और सतेज महिला थी।

(दिल्ली दूर है, 190)

देवू असली वेदपाठी ब्राह्मण बालक है।

(गली आगे मुड़ती है, 79)

4.1.3. बीज वाक्य – बीज पद

(कर्ता +समानाधिकरण + क्रिया)

रूपा एक खतरनांक बिच्छू बन गयी है।

(शैलूष, पृ0सं0–72)

घोर आंगिरस प्रज्वलित आर्य हैं, अग्निस्तोम का प्रतीक है।

(वैश्वानर, पृ0सं0–249)

देवा बदमाश है।

देवा चोर और बदमाश है।

देवा नम्बरी चोर और बदमाश है।

(अलग–अलग वैतरणी, 59)

ताराचरण महाशय ऐंग्लो– बंगाली स्कूल में संस्कृत के अध्यापक हैं।

(गली आगे मुड़ती है, 18)

4.1.4. बीज वाक्य – बीज पद (कर्ता + कर्म + क्रिया)

आपने पत्र लिखा था।

आपने व्यक्तिगत् पत्र लिखा था।

आपने जो व्यक्तिगत् पत्र लिखा था।

(हनोज दिल्ली0, पृ0–173)

दोनों कक्ष की ओर चल पड़े।

दोनों बाबा धन्वन्तरि के कक्ष की ओर चल पड़े।

(वैश्वानर, पृ0सं0–198)

उसने धोती पहन रखी थी।

उसने रेशमी धोती पहन रखी थी।

उसने तंजारी रेशमी धोती पहन रखी थी।

उसने तांबिये रंग की तांजोरी रेशन धोती पहन रखी थी।

(शैलूष, पृ0सं0– 99)

कनिया के मन में शंकाएं न थीं।

कनिया के मन में कम शंकाएं न थीं।

कनिया के मन में ससुर के विषय में कम शंकाएं न थीं।

कनिया के मन में ससुर के शरीर के विषय में कम शंकाएं न थीं।

कनिया के मन में ससुर के टुटते हुए शरीर के विषय में कम शंकाएं न थीं।

(अलग–अलग वैतरणी, 66)

4.1.5. बीज वाक्य – बीज पद (कर्ता + कर्म + कर्मपूरक + क्रिया)

4.1.5.1. कर्मपूरक विस्तार

बुट्टू मुसकरा रहे थे।

बुट्टू बाबू मुसकरा रहे थे।

बुट्टू बाबू माला को नाक में लगाकार मुसकरा रहे थे।

बुट्टू बाबू झूलती माला को नाक में लगाकर मुसकरा रहे थे।

बुट्टू बाबू गले में झूलती गेंदे की माला को नाक में लगा–लगाकर मुसकरा रहे थे।

(अलग–अलग वैतरणी, 51)

सूरज अबीर बिखेर देता।

साँझी सूरज अबीर बिखेर देता।

पुष्पी के चेहरे पर साँझी सूरज अबीर बिखेर देता।

पुष्पी के चेहरे पर साँझी सूरज मुट्ठी भर अबीर बिखेर देता।

(अलग-अलग वैतरणी, 78)

4.1.6. बीज वाक्य – बीज पद (कर्ता + गौण + मुख्य कर्म + क्रिया)

4.1.6.1. मुख्य कर्म का विस्तार

विपिन ने कनरवी से देखा कि पटनहिया भाभी के चेहरे का आधा हिस्सा कोरा लग रहा था।

विपिन ने कनरवी से देखा कि पटनहिया भाभी के चेहरे का आधा हिस्सा, जिसे कि दरवाजे से आती रोशनी उजागर कर रही थी, कोरा लग रहा था।

विपिन ने कनरवी से देखा कि पटनहिया भाभी के चेहरे का आधा हिस्सा, जिसे कि दरवाजे से आती रोशनी उजागर कर रही थी, भुवनेश्वर की पत्र लेखिका की तरह कोरा हुआ लग रहा था।

विपिन ने कनरवी से देखा कि पटनहिया भाभी के चेहरे का आधा हिस्सा, जिसे कि दरवाजे से आती रोशनी उजागर कर रही थी, भुवनेश्वर की पत्र-लेखिका के मुख मण्डल की तरह सुडौल, चिकना और बारीकी से कोरा हुआ लगा रहा था।

(अलग-अलग०, 336)

4.1.6.2. गौण कर्म विस्तार

उसे झोपड़ियों में आकर सुकून मिला।

उसे नटों की झोपड़ियों में आकर सुकून मिला।

उसे परती पर नटों की झोपड़ियों में आकर सुकून मिला।

उसे रवेतीपुर की परती पर नटों की झोपड़ियों में आकर सुकून मिला।

(शैलूष, पृ०सं०- 193)

वैशाख के शुरू हफ्ते की शाम फैल गयी।

वैशाख के शुरू हफ्ते की शाम बियावान खेतों पर फैल गयी।

वैशाख के शुरू हफ्ते की शाम बियावान खेतों पर, कटे हुए पौधों की सफेद खुत्थियों पर मटमैली बँसवारियों पर, सीवान के हाशिए पर, टँकी कँटोली झाड़ियों पर एक अजीब तरह की उदासी में डूबी-डूबी फैल गयी।

(अलग-अलग वैतरणी, 437

4.2. पद विस्तार

4.2.1 कर्तृ वाच्य – कर्ता प्रयोग

4.2.1.1. संज्ञा

–मान मन ही मन मगन था।

(शैलूष, पृ0सं0– 130)

–तभी नथिया उसके गूदड़ पर चढ़ गयी।

(शैलूष, पृ0सं0– 130)

–पलाश के फूल, झरबेरी की मादक गंध और करौदा माहुल, इंगोट के फूलों की खुशबू गर्म गर्म साँसों में डूब रही थी।

(शैलूष, पृ0सं0– 130)

–प्रतर्दन युद्ध पर जा रहा है।

(एक कर्ता, वैश्वानर, 52)

–शौनक, कक्षीवान, भीमरथ और सिंधुजा ने साथ–साथ मंत्र पढ़े।

(एकाधिक कर्ता
वैश्वानर, पृ0सं0– 53)

4.2.1.2. सर्वनाम

–मैं आज बाहर रहूँगा।

(एक कर्ता, गली0, 138)

–वे मुझसे और मैं उनसे प्रेम करते थे।

(एकाधिक, नीलाचाँद, 378)

4.2.1.3. विशेषण – विशेष्य

–आप बड़े अफसर हैं।

(एक कर्ता, गली0, 67)

–अब दो ही चार घर तो रह गये हैं।

(अलग–अलग वैतरणी, 4)

–तरह–तरह की रंगीन साडियों में लिपटी, साज–पटार किये माथे पर अँगूठे के बराबर निशान का बुन्दा लगाये, कलाइयों में चूड़ियाँ और गहने झमकाती, भीड़ में एक–दूसरे का रंग छूटने की आशंका से परेशान चीखतीं– चिल्लाती माथे की गठरियों को सँभालतीं, धक्के देने वालों पर गुर्राती– खिजलाती औरतें।

(एकाधिक, अलग0, 1)

4.2.1.4. कर्ता विस्तार

–माँ की कुटिया के सामने आचार्य बलदेव ओझा, आचार्य वशिष्ठ त्रिवेदी, भुवन रत्नेश शर्मा, बन्धुजीव और उसके चार–पाँच सहयोगी पंक्ति बद्ध खड़े थे।

(एकाधिक, नीलाचाँद, 375)

4.2.2. कर्तृवाच्य – कर्म प्रयोग

4.2.2.1. संज्ञा

–मैं आधुनिक भीम को प्रणाम करता हूँ।

(एककर्ता, हनोज0, 84)

–आज तक हम परस्पर विद्वेष और छोटी–छोटी भावनाएं लेकर अपने में लड़ते रहे।

(एकाधिक, हनोज0, 84)

–अज्ञात को न जानने की अभिशप्तता मेरे लिये स्वीकार्य है।

(कर्म, एक0/वैश्वानर, 276)

–तुने एक पहरेदार को दीनारों का लालच देकर हाशिम को बुन्देली बेगम के पास जाने से रोकने की साजिश की है।

(एक, दिल्ली दूर0, 108)

–उन्होंने एक क्षण गोमती के केशों और उसकी आँखों को देखा।

(एकाधिक कर्म,
नीलाचाँद, पृ0सं0– 282)

4.2.2.2 सर्वनाम

–भोलूसाह यह सब अपने एक ग्रामवासी–बंधु की भलाई के लिये कह रहे हैं।

(एक कर्म0, अलग0, 40)

–तुम्हें देखने के लिये सहस्त्रों लोग हाथ में पुष्प मालायें लिये व्याकुल प्रतीक्षारत् हैं।

(वैश्वानर, पृ0सं0–63)

–इन्हें मानबाबा और नथिया को चढ़ाकर सबको बाँट देना।

(शैलूष, पृ0सं0– 13)

4.2.2.3 विशेषण – विशेष्य

–बड़े मियाँ, एक प्याला दूध और एक खस्ता गरमागरम नान देना।

(दिल्ली दूर है, 161)

–घुरविनवा कौड़े के पास बैठकर अपने ठिठुरे हुए हाथों को उलट–पलट कर सेंकते हुए ठंडी आँखों से बहते पानी को गरम–गरम हथेली से सुखवाता।

(एकाधिक, अलग0, 159)

4.2.2.4. कर्म विस्तार

–कबीले की सजा है– रवंता।

–कबीले की पुरानी सजा है रवंता।

–कबीले की बहुत पुरानी सजा है रवंता।

(शैलूष, पृ0सं0– 133)

–मिसराइन दूध की दूध हंड आँचल लगाकर दोनों हाथों से उठाये हुए आयीं।

–मिसराइन खौलते हुए हुए की दूध हंड आँचल लगाकर दोनों हांथों से उठाये हुए आयीं।

(अलग–अलग वैतरणी, 89)

4.2.3. कर्तृवाच्य – क्रिया प्रयोग

4.2.3.1. क्रिया

–गोमी बोली।

(एकक्रिया, नीलाचाँद, 238)

–पुष्पी इस बीच कितनी बार रोयी–हँसी, लड़ी–झँगड़ी।

(एकाधिक, अलग0, 78)

4.2.3.2. क्रिया विस्तार

–वाशेक आरूढ़ हो गया।

–वाशेक घोड़े पर आरूढ़ हो गया।

–वाशेक उछलकर घोड़े पर आरूढ़ हो गया।

(दिल्ली दूर है, 230)

4.2.4. कर्म वाच्य – कर्म प्रयोग

4.2.4.1. <u>संज्ञा</u>

–त्रिलोक्य मल्ल ने <u>बल्गा</u> पकड़ी।

(हनोज दिल्ली0, 107)

–मैंने इस <u>गढ़ी</u> से निकलने के चारों <u>रास्ते</u> बन्द कर दिये हैं।

(हनोज दिल्ली0,112)

4.2.4.2. <u>सर्वनाम</u>

–किसी ने <u>फटा–पुराना</u> कपड़ा दिया।

(एकाधिक,अलग0, 155)

–चलते वक्त एक टीन का <u>टूटा सन्दूक</u> भी उठा लिया था उसने।

(अलग–अलग वैतरणी,136)

4.2.4.4. <u>कर्म विस्तार</u>

ऐसे <u>संकट प्रिय व्यक्ति</u> को समझाना तो व्यर्थ ही होगा।

(वैश्वानर,पृ0सं0–241)

–उन्होंने <u>किरण</u> देखी थी।

–उन्होंने <u>एक विलक्षण किरण</u> देखी थी।

–उन्होंने <u>रात में भी एक विलक्षण किरण</u> देखी थी।

–उन्होंने <u>उस अमावस्या की रात में भी एक विलक्षण किरण</u> देखी थी।

–उन्होंने <u>कीर्ति वर्मा के चेहरे में उस अमावस्या की रात में भी एक विलक्षण किरण</u> देखी थी।

(हनोज दिल्ली0,49–50)

4.2.5. <u>कर्मवाच्य – कर्ता प्रयोग</u>

4.2.5.1 <u>संज्ञा</u>

–जुड़ावन ने नोटों की गड्डी उठा ली।

(शैलूष, पृ0सं0–246)

–<u>भाई</u> ने दस हजार तिलक के रूप में दिया।

–<u>लड़की के सगे भाई</u> ने दस हजार तिलक के रूप में दिया।

–<u>बिना माँ–बाप की लड़की के सगे भाई</u> ने दस हजार तिलक के रूप में दिया।

–<u>बिना माँ–बाप की लड़की के सगे भाई ने अपनी मशक्कत की कमाई का सर्वस्व</u> दस हजार तिलक के रूप में दिया।

(अलग–अलग वैतरणी,146)

4.2.5.2. सर्वनाम

–तुमने तो गुप्तचरी के सभी मानदण्ड तोड़ दिये।

(वैश्वानर, पृ0सं0–254)

–उसकी बातें हम दोनों ने और कक्षीवान ने स्वतः सुनीं।

(वैश्वानर, पृ0सं0–177)

–आपने मुझे शीतल जल दिया, दुग्ध दिया और मैंने अपने अभिमान के कारण उसी सूत्र को काटने का अपराध कर दिया, जो हमें आप लोगों से जोड़ने का काम कर रहा था।

(नीलाचाँद, पृ0–311)

4.2.5.3. विशेषण – विशेष्य

–तीन–चार हट्टे–कट्टे आदमियों ने उन्हें जबरदस्ती बन्द कर दिया था एक घर में।

(अलग–अलग वैतरणी, 31)

–भीतर के पंछी ने पंख फैलाये।

(मंजुशिमा, पृ0– 17)

–क्षमा तो आचार्य पुत्र, महाकाल से भी किसी चन्देल नरेश ने नहीं माँगी।

(हनोज दिल्ली0, 39)

–बड़ी पुत्र वधू कल्पलता ने पूँछा।

(हनोज दिल्ली0, 51)

4.2.5.4. कर्ता विस्तार

–बहीउद्दीन ने गुस्से में कहा।

–मुल्ला बहीउद्दीन ने गुस्से में कहा।

–स्कन्धावार के मुल्ला बहीउद्दीन ने गुस्से में कहा।

–तयासी के स्कन्धावार के मुल्ला बहीउद्दीन ने गुस्स में कहा।

–सिपहसालार तयासी के स्कन्धावार के मुल्ला बहीउद्दीन ने गुस्से में कहा।

(हनोज दिल्ली0, 171)

4.2.6. भाव वाच्य – कर्ता प्रयोग

4.2.6.1. संज्ञा

–महाराज पृथ्वीराज प्रवंचना से मारे गये।

(एकर्ता, हनोज0, 180)

4.2.6.2. सर्वनाम

–उनसे मिले बिना रहा न गया।

(हनोज दिल्ली0, 272)

–बाबू की बेबसी उससे देखी न गयी।

(अलग–अलग0, 105)

–मुझसे अपराध हो गया।

(शैलूष, पृ0सं0– 80)

4.2.6.3. विशेषण – विशेष्य

–बड़ी कोशिश से उन आँसुओं को बरजोरी रोक लिया।

(अलग–अलग0, 105)

4.2.7. भाव वाच्य– कर्म प्रयोग

4.2.7.1. संज्ञा

–उन्होंने युवराज को मुखाग्नि देने का आदेश दिया।

(एककर्म0,वैश्वानर,312)

–वाशेक ने पवन को पुकारा।

(एककर्म, हनोज0, 173)

–गरम–गरम रोटियाँ जो बाजरे और चने की दाल पीसकर बनायी गयी थी।

(एकाधिक,नीलाचाँद,148)

4.2.7.2. सर्वनाम

–इसे करने से मैंने कभी इंकार नहीं किया।

(नीलाचाँद, पृ0– 351)

4.2.7.3. विशेषण – विशेष्य

–प्रचंड भ्रियमाण हो गया।

(नीलाचाँद, 155)

–वह कई–कई सिफतें इकट्ठा पा गया।

(दिल्ली दूर है0,236)

4.2.7.4. कर्म विस्तार

–तूने शिवाला तोड़ा है।

–तूने एक शिवाला तोड़ा है।

–तूने हिन्दुओं का एक शिवाला तोड़ा है।

(हनोज दिल्ली–174)

4.3 क्रम

4.3.1. साधारण वाक्य में पद क्रम और वाक्यांश क्रम

4.3.1.1. कर्ता + क्रिया

–सावित्री बोली।

(कर्ता उ0क्रिया शैलूष–51)

–नाव किनारे लगी।

(उ0क्रिया गली आगे–107)

लेकिन यदि इन वाक्यों में पदों और वाक्यांशों का स्थानान्तरण हो जाये तो ये विधानार्थक के स्थान पर प्रश्नार्थक हो जाते हैं।

–यही थी + किरण?

(क्रिया, कर्ता उ0 ?
गली आगे मुड़ती है–187)

–क्या बतायें + वह ?

(क्रिया उ0 ?)
(अलग–2 वैतरणी–295)

भाव वाच्य में भाव के ही उद्‌देश्य होने के कारण क्रिया के आदि अवस्था में आ जाने से वाक्य प्रश्नार्थक, संशयात्मक अथवा विस्मयात्मक हो जाता है।

–उससे देखी न गयी।

(करण क्रिया)
अलग–2 वैतरणी–105)

–इस बची हुयी राष्ट्र–लक्ष्मी को ?
कौन बचायेगा लुटने से ?

(क्रिया करण)
(दिल्ली दूर है – 437)

डॉ0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में सम्बोधन और विस्मया बोधक अव्यय प्रायः वाक्य के प्रारम्भ में आये हैं। लेकिन कभी-कभी इनका स्थान वाक्यांत में भी आया है। यथा-

-आओ + सी री।

(क्रिया, सम्बोधन,
(अलग-2 वैतरणी- 81)

-प्रहरी! देखो!

(सम्बोधन/क्रिया वि0क्रिया
(वैश्वानर - 154)

-"पीछा? सेनापति का ?"

(वि0बो0क्रि0वि0सं0,
(हनोज दिल्ली दूर-101)

-"चुप रह + गुरूदोही!"

(वि0बो0क्रिया वि0सम्बोधन,
(नीलाचांद - 379)

4.3.1.2. <u>कर्ता + समानाधिकरण + क्रिया</u>

-राम हरख, हरिजन बोला।

(कर्ता, समा0क्रिया)
(शैलूष - 30)

-मन को पढ़ना जानते हैं <u>ऋषि शौनक</u>।

(क्रिया, समाना0, कर्ता,
(वैश्वानर - 111)

4.3.1.3. <u>कर्ता + पूरक + क्रिया</u>

-सूपकार रसिक है।

(कर्ता0, पूरक, क्रिया,
(नीलाचांद - 245)

-क्या अद्भुत लीला है कंदार्य की।

(पूरक, क्रिया, कर्ता,
(हनोज दिल्ली0- 266)

4.3.1.4. <u>कर्ता + कर्म + क्रिया</u>

<u>कर्तृवाच्य</u>

–तू अइसी किताब पढ़ता है।

(कर्ता उ0, कर्म0, क्रिया,
(अलग–2 वैतरणी– 242)

–प्रतर्दन युद्ध पर जा रहा है।

(कर्ता उ0 कर्म, क्रिया
(वैश्वानर – 52)

–उस प्रच्छद को गोमती ने खोला।

(कर्म उ0, कर्ता, क्रिया,
(नीलाचांद – 236)

<u>कर्मवाच्य</u>

–मैने चि0 गंगाधर को समझाया है।

(कर्ता, कर्म, क्रिया,
(हनोज दिल्ली दूर– 38)

–मलकिन की मौत ने बखरी को वीरान कर दिया।

(कर्ता, कर्म कर्म क्रिया,
(अलग–2 वैतरणी–79)

–ये गहने तेरे दादा ने बनवाये थे।

(कर्म, कर्ता, क्रिया,
(गली आगे0 – 28)

4.3.1.5. <u>कर्ता + गौण कर्म + मुख्य कर्म + क्रिया</u>

–मैने भूमिधरी के कागज बेच दिये हैं।

(कर्ता+गौण0+मुख्यकर्म+
क्रिया शैलूष– 139)

–सिंह–शावक कष्टों के कंटकों में ही चलते हैं।

(कर्ता+गौण कर्म+मुख्यकर्म
+ क्रिया दिल्ली दूर–441)

4.3.1.6. कर्ता + कर्म + कर्मपूरक + क्रिया

–युवराज ने रज्जु को अश्वारोही को सौंपा।

(कर्ता+कर्म+कर्मपूरक+ क्रिया, वैश्वानर, 183)

–महिपाल को मैं आर्य शिवनाग का प्रसाद समझता था।

(मुख्यकर्म+कर्ता+गौण कर्म +क्रिया, नीलाचाँद, 347)

4.3.1.7. कर्ता + करण + क्रिया

–बुन्देली बेगम की आँखों से आँसू टपकने लगे।

(कर्ता+अपादान/करण + क्रिया दिल्ली दूर है, 173)

–मिसिर गली से आ रहे हैं।

(कर्ता + करण + क्रिया अलग–अलग वैतरणी, 251)

4.3.1.8. कर्ता + अपादान + क्रिया

–बहू के गले से मंगलसूत्र और माला उतार ली है।

(कर्ता + अपादान +क्रिया नीलाचाँद, पृ0– 203)

4.3.1.9. कर्ता + अधिकरण + क्रिया

–मैंने अपने जीवन में पहली बार अनुभव किया।

(कर्ता + अधि0+ क्रिया वैश्वानर, पृ0– 386)

–उसे स्वागत में भोजदेव वहाँ पहुँचे।

(अधि0 +कर्ता+ क्रिया हनोज दिल्ली0, पृ0–169)

–हथौड़े से घण्टे पर तीन बार प्रबल प्रहार किया।

(कर्ता +अधि0 +क्रिया हनोज दिल्ली0, पृ0–178)

4.3.1.10. कर्ता + कर्म + करण + क्रिया

–विपिन जब कस्बे के स्कूल से घर लौटता।

(कर्ता+कर्म+करण+क्रिया
अलग–अलग वैतरणी, 78)

–बगल की झोपड़ी से सिर पर साड़ी सरकारी सुन्दर नट की औरत आयी।

(करण+कर्म+कर्ता+क्रिया
शैलूष, पृ0सं0– 140)

4.3.1.11. कर्ता + अपादान + कर्म + क्रिया

–वह सुराही से गिलास उतारती है।

(कर्ता+अपादान+कर्म+क्रिया
गली आगे मुड़ती है, 93)

–बहू के गले से मंगलसूत्र और माला उतार ली है।

(कर्ता+अपादान+कर्म+क्रिया
नीलाचाँद, पृ0सं0– 203)

4.3.1.12. कर्ता + कर्म + अधि0 + क्रिया

–कौमूद हवा में उड़ता शिविर की ओर चल पडा।

(कर्ता+अधि0+कर्म+क्रिया
वैश्वानर, पृ0सं0– 160)

–उन्होंने रस को सिंधुजा की नाक के छिद्रों में बूँद–बूँद डाला।

(कर्ता+कर्म+अधि0+क्रिया
वैश्वानर, पृ0सं0–160)

4.3.2. विशेषण + विशेष्य

4.3.2.1. विच्छेद्य वाक्यांश (विशेषण + विशेष्य)

–कुल्पू, वंशी काका का, एकलौता लड़का है।

(उ0 कर्ता0, पूरक वि0,
क्रिया, अलग–अलग0, 114)

–ग्रामणी, विजय श्रुत ने, कहा।

(समाना0, कर्ता0, क्रिया,
वैश्वानर, पृ0सं0–246)

4.3.2.2. अविच्छेद्य वाक्यांश (विशेषण + विशेष्य)

–जनक यादव + कह रहे थे।

(संवांश क्रिवांश, शैलूष, 31)

–एक हिन्दू कैदी + मिला था।

(संवोश क्रिवांश, दिल्ली दूर है, 75)

4.3.3. कर्ता + क्रिया विशेषण + कर्म + क्रिया

–मैंने जोर से कुंडी खटखटाई

(कर्ता+क्रियावि0+कर्म+ क्रिया, गली आगे0, 49)

–बड़ी भयानक गर्जना के साथ +अजय हरिदेव के + अश्वारोही गुल्म ने + धावा बोल दिया।

(क्रियावि0+कर्ता+कर्म+ क्रिया, हनोज0, 314)

4.3.4. बलान्वित अव्यय (भी, तो, ही, भर, मात्र)

4.3.4.1. कर्ता + क्रिया

–आप तो, रचनाकार हैं।

(नीलाचाँद, पृ0सं0– 213)

–प्रजा का तो कहना है।

(बलान्वित कर्ता+पूरक क्रिया हनोज दिल्ली0, 12)

–इसे उधर ही बैठाओ।

(कर्ता+बलान्वित कर्म+ क्रिया, दिल्ली दूर0, 279)

लड़की भी सिगरेट पी सकती है।

(बलान्वित कर्ता+कर्म+ क्रिया, गली आगे0, 141)

4.3.4.2 कर्ता + समानाधिकरण + क्रिया

–सुमेधा आयी तो बाबा शौनक के आश्रम गयी हैं।

(कर्ता+बलान्वित समाना0+ कर्म+क्रिया, वैश्वानर, 291)

4.3.4.3. कर्ता + पूरक + क्रिया

–कोई दे दीजिए, सभी अच्छी ही हैं।

(कर्ता+बलान्वित पूरक+ क्रिया, अलग–अलग0, 156)

–दिदिया ऐसे ही कह देती हैं।

(बलान्वित कर्ता पूरक, क्रिया, अलग–अलग0, 156)

–सचमुच दिदिया यह तेरी जैसी ही लग रही है।

(कर्ता+बलान्वित पूरक+ क्रिया,)

–काम करने के बाद ही पारिश्रमिक लेना ठीक रहेगा।

(कर्ता+बलान्वित पूरक+ क्रिया, गली आगे0, 63)

4.3.4.4. कर्ता + कर्म + क्रिया

–खेतीपुर तो, बसरूह पर है।

(बलान्वित कर्ता+कर्म+ क्रिया, शैलूष पृ0– 105)

4.3.4.5. कर्ता + कर्म + कर्मपूरक+ क्रिया

–मेरे अमात्य शिवनाग ने मुझे देखते ही कहा।

(कर्मपूरक+कर्ता+कर्म+ बलान्वित क्रिया, नीलाचाँद– 347

4.3.4.6. कर्ता + गौण कर्म + मुख्य कर्म + क्रिया

–भाभी जू उसी तरह गीले वस्त्रों में ही उस कक्ष में पहुँची।

(कर्ता+बलान्वित गौण कर्म+ मुख्य कर्म + क्रिया हनोज दिल्ली0, 191)

4.3.5. प्रश्नमूलक वाक्य रचना

प्रश्नवाचक क्रिया विशेषणों के योग से और सामान्य वाक्य में अतिखंडीय तत्वों के योग से प्रश्नमूलक वाक्य बनते हैं।

डा0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में क्या, कब, कैसे, क्यों, कहाँ आदि के प्रयोग द्वारा प्रश्नमूलक वाक्य रचना देखने को मिलती है–

4.3.5.1. क्या

–क्या यह सामने वाला मुजरिम है?

(दिल्ली दूर है, 15)

–मुझे क्या पता, आर्य सेनापति।

(हनोज दिल्ली दूर0, 190)

–तो मैं क्या करूँ।

(अलग–अलग वैतरणी, 17)

4.3.5.2. क्यों

–संपत्ति बटोरने का लोभ क्यों करूँ?

(वैश्वानर, पृ0सं0–472)

–फिर क्यों नाखुश हैं आप?

(अलग–अलग0, 119)

4.3.5.3. कैसे

–अब धरम–करम निबाहें तो काम कैसे चलेगा?

(शैलूष, पृ0सं0– 219)

–आज आप अचानक अपरिचित कैसे हो गयी?

(वैश्वानर, पृ0सं0–322)

–कहो श्रीकान्त कैसे हो?

(गली आगे मुड़ती है, 178)

4.3.5.4. कहाँ

–गहने कहाँ थे उसके साथ?

(अलग–अलग वैतरणी, 61)

–चोट कहाँ लगी है?

(शैलूष, पृ0सं0– 163)

4.3.5.5. कब

–क्यों तिवारी जी, कब, आए।

(गली आगे मुड़ती है, 24)

–पिता जी कमरे में खाँसते– खाँसते कब, के निढ़ाल हो गये थे।

(अलग–अलग वैतरणी, 121

–बशीर, वह जल्लाद कब आया, रेवतीपुर?

(शैलूष, पृ0सं0– 68)

4.3.6. निषेधार्थक

हिन्दी में निषेधार्थक क्रिया विशेषण तीन हैं– न, नहीं, मत। लेकिन मत, का प्रयोग केवल निषेधार्थक आदेश के लिये होता है।

4.3.6.1. न

–मैं + उस वक्य. वहाँ न हुआ।

(निषेध तथा खेद
गली आगे मुड़ती है, 91)

–वह + न, होत।

(निषेधार्थक, वैश्वानर, 180)

–द्रोणी में जल तो है + न?

(प्रश्न में केवल जल होने
की जिज्ञासा, नीलाचाँद, 373

4.3.6.2. नहीं

–वेतवा तीर के नगर + नहीं, बचेंगे।

(सामान्य निषेध,
दिल्ली दूर है, 470)

–खेती बारी आप + करेंगे नहीं।

(निषेध के साथ न करने
पर बल, शैलूष, 97)

4.3.6.3. मत

–तू + मुझे मत, छू।

(गली आगे मुड़ती है, 159)

–मदालसा को + मत ले जाइये।

(वैश्वानर, पृ0सं0– 352)

4.3.7. उपवाक्य क्रम

4.3.7.1. मिश्र वाक्य

–मेघनाद जैसा तामसिक व्यक्ति भी स्वीकार करता है कि नारी हन्तव्या नहीं है।

(दिल्ली दूर है, 331)

–मेरे आश्रम के बटुक जानते हैं कि कल्मष इतना विस्तृत और इतना गहरा है।

(वैश्वानर, पृ0सं0– 415)

4.3.7.2. संयुक्त वाक्य

–लड़की को संस्कृत से एलर्जी है इसलिये संस्कृत पर ज्यादा ध्यान दो।

(गली आगे मुड़ती है, 45)

–चीरहरण में जब दौपदी ने बुलाया तो वे नहीं आये क्योंकि बैकुंठ बहुत दूर था।

(शैलूष, पृ0सं0– 175)

–देखिए न यह शंख दक्षिणावर्त है अथवा यह शुक्ति वज्रमणि हीरे की तरह चमक रही है।

(नीलाचाँद, 182,183)

4.3.8. विशेष– रूपकात्मक प्रयोग

रूपकात्मक प्रयोगों में विशेषण विशेष्य के बाद में आता है। वचन का प्रभाव हिन्दी की सामान्य प्रवृत्ति के अनुरूप अन्तिम सदस्य पर ही पड़ता है,

–उनकी आँखें खंजन पक्षी की तरह नहीं, लाल रंग में रंगे कोकन की पांखुरी हैं।

(नीलाचाँद, पृ0– 310)

–तुम्हारा यह गोल मुखड़ा तो सूर्यमुखी लगता है मयूरी।

(वैश्वानर, पृ0सं0–59)

–उसकी आँखों की पुतलियाँ निश्चेष्ट कपर्दिका (कौड़ी) की तरह जड़ हो गयीं।

(हनोज दिल्ली0, 115)

–मेरी इस वीरान जिन्दगी में पहली बार खुशी के फूल खिले हैं।

(दिल्ली दूर है, 134)

- एक बड़ी खूबसूरत खबर दिल्ली के ऊपर बाज की तरह मंडरा रही है।

(दिल्ली दूर है-134)

- मिट्टी के खिलौनों की दुकान पर 'बबुए' देखकर बबुए ठुनक जाते।

(अलग-अलग वैतरणी-1)

4.4. निकटस्थ अवयव

वाक्य में परस्पर सम्बद्ध पद निकटस्थ भी हो सकते हैं और दूरस्थ भी। भाषा के दोनों प्रकार के वाक्य, बीज वाक्य और अबीज वाक्य का प्रयोग डॉ. सिंह के उपन्यासों में हुआ है।

4.4.1. बीज वाक्य

बीज वाक्य विस्तार योजना के द्वारा दीर्घ बन जाते हैं तथा दीर्घ वाक्यों के विस्तार के निराकरण से बीज वाक्य के रूप में आ जाते हैं।

4.4.2. अबीज वाक्य

ये वाक्य विस्मय बोधक होते हैं। लोकोक्तियाँ या मुहावरे भी इसी प्रकार के वाक्य हैं। किन्तु इनसे कथन का प्रारम्भ नहीं होता।

दूसरे प्रकार के अबीज वाक्य अपूर्ण या लोप मूलक वाक्य हैं। इनका अर्थ प्रसंग से ही स्पष्ट हो पाता है। ये एकाकी रूप में प्रयुक्त होने पर निरर्थक सिद्ध होते हैं। यथा-

- हे भगवान! (विस्मय सूचक (खेद))

(अलग-अलग वैतरणी-149)

- नाक बचाना। (मुहावरा)

(दिल्ली दूर है-224)

- 'छट्ठी का दूध याद दिलाना।' (लोकोक्ति)

(नीला चांद-356)

4.4.3. वाक्य योजना में निकटस्थ अवयव तीन प्रकार के है-

1. एकाधिक निकटस्थ अवयव
2. विकीर्ण निकटस्थ अवयव
3. युगपत् निकटस्थ अवयव

4.4.3.1. एकाधिक निकटस्थ अवयव

ये अवयव शब्द भेद की दृष्टि से एक ही कोटि के होते हैं। इस प्रकार के अवयव भाषा में अपेक्षाकृत कम होते हैं।

- जहाँ नाच-गान में लोग मसरूफ रहते हैं।

(दिल्ली दूर है-118)

- इतने भाई-बन्धु, परिजन-पुरजन है।

(अलग-2 वैतरणी-206)

4.4.3.2. विकीर्ण निकटस्थ अवयव

यहाँ मुख्य-क्रिया और सहायक क्रियाएँ पूर्वापर क्रम में आती है।

- यह तो धौम्य बता ही चुके थे।

बता ☐ चुके थे।

(वैश्वानर-341)

- मैंने कभी सोचा भी नहीं था।

सोचा ☐ ☐ था।

(कोहरे में युद्ध-44)

- पर ऐसे समय में तुम्हारे सिवा मुझे कोई दूसरा दिखाई भी तो नहीं पड़ता।

दिखाई ☐ ☐ ☐ पड़ता।

(अलग-अलग वैतरणी-74)

4.4.3.3. युगपत् निकटस्थ अवयव

कतिपय निकटस्थ अवयव साथ-साथ दिखाई दते हैं लेकिन सुरक्रम या विराम-योजना के कारण वे अलग-अलग निकटस्थ अवयव मूलक रचनाओं की सृष्टि कर सकते हैं।

- ''यहाँ बात मत करो।

(वैश्वानर-292)

- ''तू मुझे मत छू, कलंकिनी !

(गली आगे मुड़ती है-159)

- ''तुम लोग चिंतित मत बनो।

(नीला चाँद-291)

- ''माफ करना वाशेक, रावल बाबा से मत कहना।

(दिल्ली दूर है-365)

- उनके परिवार के प्रौढ़ अथवा वृद्ध लोग ऐसा ही आचरण करने लगे है।

(सहयोगी निकटस्थ अवयव)

(नीला चाँद-380)

आज की वाक्य-रचना भावों और विचार की तीव्रता तथा उनकी सहजता को तदनुरुप अभिव्यक्ति देने की ओर प्रयत्नशीला है।

ऐसी स्थिति में मनसतत्त्व के स्वाभाविक रूप की रक्षा के लिये संकीर्ण व्याकरणिक-पद्धति का पालन संभव नहीं हो सकता।

कभी कर्म, कर्ता (उद्देश्य) अपनी-अपनी क्रियाओं अन्य अवयवों से बहुत दूर पड़ते हैं और क्रिया विशेषण क्रियाओं से निरन्तर हटते चले जाते हैं। इसके लिये डॉ. सिंह ने निकटस्थ

अवयव मूलक अध्ययन की दो प्रविधियाँ प्रयोग की है-

4.4.4. विधियाँ

4.4.4.1. प्रथम प्रविधि

पद-समूह को अवयवों में रखने का मुख्य आधार संयोग (Cohesion) है। संयोग से अभिप्राय है पद समूह के लिये अनुकल्प-रूप में (Substitute) एकांकी पद रखना।

इस अनुकल्पन-विधान में वाक्य-रचना पूर्ववत् अपरिवर्तित रहती है।

चण्डी | चन्द्रवाटिका के | रुद्रालय के पुजारी | बाबा रुद्रेश्वर

चण्डी बाबा रुद्रेश्वर यति के

यति के | पट्ट शिष्य थे

पट्ट शिष्य थे।

चण्डी | पट्ट शिष्य थे।

चण्डी चन्द्रवाटिका के	का अनुकल्पन	-	चण्डी
रुद्रालय के पुजारी	का अनुकल्प	-	पुजारी
बाबा रुद्रेश्वर यति के	का अनुकल्प	-	यति के
पट्ट शिष्य थे	का अनुकल्प	-	शिष्य थे।

- चण्डी चन्द्रवाटिका के रुद्रालय के पुजारी बाबा रुद्रेश्वर यति के पट्ट शिष्य थे।

1 2 3 4

चण्डी पुजारी यति के शिष्य थे। (कुहरे में युद्ध-241)

- कर्ण देव | सेनापति अन्तू सिंह | अपनी पत्नी चम्पक के साथ |

सेनापति | अपनी पत्नी के साथ

शिवपूजा के लिये सूर्योदय के | पहले ही पहुँच गये।

शिवपूजा के लिये पहुँच गये।

कर्ण देव के सेनापति अन्तू सिंह का अनुकल्प	-	सेनापति
अपनी पत्नी चम्पक के साथ का अनुकल्प	-	अपनी पत्नी के साथ
शिवपूजा के लिये सूर्योदय का अनुकल्प	-	शिवपूजा के लिये
पहले ही पहुँच गये का अनुकल्प	-	पहुँच गये।

(नीला चाँद-293)

इस अनुकल्पन विधान के द्वारा बड़े से बड़े वाक्य को लघु बीज-वाक्यों से घटाया जाता है।

4.4.4.2. द्वितीय प्राविधि

इस पद्धति में निकटस्थ अवयवों की सांसर्गिकता की दिशा का निर्देश किया जाता

है। अधीन, सहयोगी, बाह्यकेन्द्रिक तथा असम्बद्धता सूचित करने वाले चिन्ह इस प्रकार हैं -

अधीनता ; सहयोगिता ;

बाह्यकेन्द्रिकता ; असंबद्धता

मान-मर्यादा, झूठी शान, अपने को खतरे के सामने ढँके रहने की प्रवृत्ति- सभी ने मिलकर उसके गले को रूंध दिया।

(अलग-अलग वैतरणी--334)
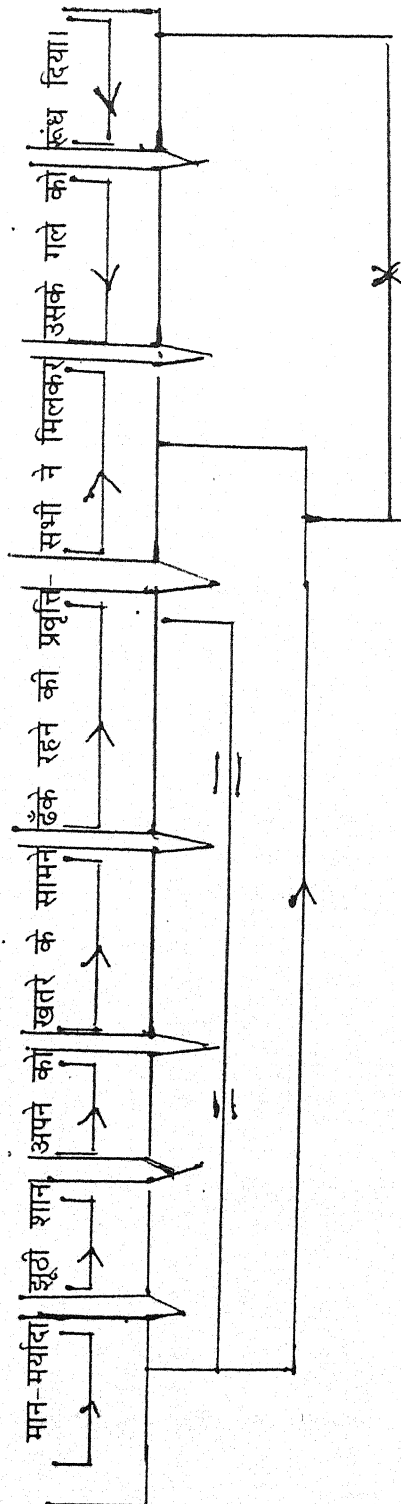
- मैंने इसी नगर को जलते देखा है।
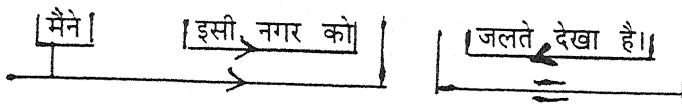
(नीला चाँद-288)
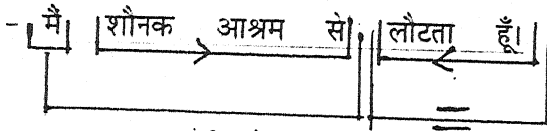
(वैश्वानर-166)

4.4.5. सीमाएँ

इसकी भी अपनी सीमाएँ हैं। कहीं-कहीं निकटस्थ अवयव मूलक वाक्य, विश्लेषणात्मक योजना से भी अर्थ स्पष्ट नहीं होता -

- कल शाम तक नजमा आ जायेगी।
  बाइज्जत बरी होकर आ जायेगी।

(दिल्ली दूर है-167)

प्रथम वाक्य में क्रिया विशेषण के साथ संज्ञा भी है।

- प्राण गंवाने का संकल्प लेकर आया लगता है।

इस वाक्य में संज्ञा लुप्त है।

(दिल्ली दूर है-120)

इन दोनों वाक्यों में बीज वाक्य संरचना की दृष्टि से समानता होने पर भी अन्त: व्यवस्था स्पष्ट नहीं हो पा रही है।

4.5 व्यवस्था

व्यवस्था से अभिप्राय यह है कि भाषान्तर्गत कुछ रूपान्तरणशील प्रयोग इस प्रकार के होते है जो संरचना के भीतर अपने विशिष्ट स्थान का संकेत करते हैं।

4.5.1 कारक-अविकारी

- रज्जो कहती है।

(कर्ता, एकवचन, गली आगे मुड़ती है-119)

- लड़के पढ़ते है।

(कर्ता, बहुवचन, अलग-अलग वैतरणी-56)

- मैं शौनक को खूब जानता हूँ।

(कर्म, एकवचन, वैश्वानर-82)

- अश्व धरती पर लेट गया।

(कर्ता, एकवचन, दिल्ली दूर है-370)

- बगुले तो छोटी-छोटी मछलियाँ खाकर ही जीते है।

(कर्ता, बहुवचन, दिल्ली दूर है-119)

4.5.2. कारक-विकारी

विकारी प्रयोग परसर्ग की अपेक्षा रखते हैं। सामान्यतया हिन्दी के परसर्ग नामपदों के एकदम बाद आते हैं। यह स्थिति थोड़ी सी तब बदल जाती है जब या तो नामपद पर विशेष बल देने के लिये किसी बलान्वितिमूलक प्रयोग की आवश्यकता होती है या नामपद के अर्थ को सीमित रखने के लिये किसी अव्यय का प्रयोग अनिवार्य होता है।

- मौसी चटाई पर बैठ गयीं।

(शैलूष-93)

- मयूख घोड़े से गिर पड़ा।

(कुहरे में युद्ध-249)

- शिवरात्रि बीते अभी घण्टा भर भी नहीं हुआ होगा।

(गली आगे मुड़ती है-142)

- आज गोपाल को भी ज्ञात हो गया।

(नीला चाँद-289)

4.5.3. -ने परसर्ग

हिन्दी के -ने परसर्ग योग से कर्मवाच्य तथा भाववाच्य मूलक वाक्य बनते हैं इसके साथ संज्ञाओं के विकारी रूप ही आते हैं। उत्तम और मध्यम पुरुष वाचक सर्वनामों के - मैं, हम, तू, तुम, आप आदि अविकारी रूपों तथा अन्य पुरुष विकारी रूपों के साथ ही ने का योग होता है। इन प्रयोगों की कर्ता मूलक स्थिति वाक्य के आदि में होती है जो डॉ. सिंह की उपन्यास-रचना में इस प्रकार है -

- मैंने बाँसुरी वाले का ध्यान किया।

(गली आगे मुड़ती है-175)

- तुमने भारत-विख्यात सम्राट विद्याधर देव का नाम तो सुना ही होगा।

(नीला चाँद-194)

- उन्होंने, एकलिंगदेव पर फूलों के साथ अपना कटा अंगूठा भी चढ़ा दिया।

(दिल्ली दूर है-505)

4.5.4. परसर्गवत् प्रयोग

परसर्गवत् प्रयुक्त अन्य प्रयोगों के पूर्व के अथवा रे अनिवार्यतः आते है -

- कहाँ के रहने वाले हो।

(दिल्ली दूर है-335)

- मेरे कानों में शब्द मंडराये।

(गली आगे मुड़ती है-59)

4.5.5. क्रियापद

4.5.5.1 संयोगमूलक क्रियायें

व्यवस्था का सम्बन्ध केवल नामपदों से ही नहीं है, आख्यात पद भी इससे शासित हैं। संयोग मूलक क्रियाओं में सहायक क्रिया निश्चय ही मुख्य क्रिया के बाद आती है।

- लड़के पढ़ते हैं।

(अलग-अलग वैतरणी-56)

- रज्जो कहती है।

(गली आगे मुड़ती है-119)

4.5.5.2. संयुक्त क्रियायें

संयुक्त क्रियाओं में भी मुख्य क्रिया सहायक क्रिया के पूर्व रहती है।

- माई शायद इन आँखों की भाषा पढ़ लेती थी।

(अलग-अलग वैतरणी-77)

- गाहड़वाल वंश का सूर्य आज अस्त होने जा रहा है।

(नीला चाँद-230)

- हम बेशिनाख्त रहकर इसकी मदद करना चाहते हैं।

(शैलूष-135)

4.5.6. विशेषण + संज्ञा

विशेषण विशेष्य के पूर्व आता है, पूरक और समानाधिरण बाद में।

- आप बड़े अफसर हैं।

(गली आगे मुड़ती है-67)

- आँख की काली पट्टिकायें खोल दी गयीं।

(वैश्वानर-103)

- सूरज सूखी लकड़ियाँ बटोरकर ले आया।

(नीला चाँद-147)

- वह बहुत विस्तृत गुफा थी।

(नीला चाँद-230)

4.5.7. संज्ञा + विशेषण + पूरक

- रामदेवी नारी रत्न थीं।

(कुहरे में युद्ध-24)

- कल्पू सभी का प्यारा था।

(अलग-अलग वैतरणी-141)

- झंडियाँ भी बैंगनी रंग की हैं।

(गली आगे मुड़ती है-57)

4.5.8. संज्ञा + समानाधिरण

- घोर आंगिरस, प्रज्वलित आर्य हैं।

(वैश्वानर-249)

4.5.9. क्रिया-विशेषण

- कौमुदी दौड़ी-दौड़ी बाहर आयी।

(नीला चाँद-181)

- बायस्कोप वाला अधीर होकर बोला।

(अलग-अलग वैतरणी-248)

4.5.10. कृदन्त

जब कृदन्त क्रिया का कार्य करते हैं तब वे वाक्य के अन्त में आते हैं। संज्ञा आदि के पूर्व आने पर ये विशेषण होते हैं और इनका स्थान विशेषण-विशेष्य क्रमानुसार निश्चित होता है।

- बना हुआ दुर्ग अविजेय माना जाता है।

(भूतकालिक कृदन्त, नीला चाँद-292)

- बिपिन चुपचाप कनिया के चेहरे की ओर देखता रहा।

(वर्तमानकालिक कृदन्त, अलग-अलग वैतरणी-65)

इस प्रकार यहाँ डॉ. शिवप्रसाद सिंह ने प्रथम वाक्य में संज्ञा के पूर्व भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग किया है और दूसरे वाक्य में वर्तमानकालिक कृदन्त को क्रिया के रूप में लाया गया है।

4.5.11. मिश्र वाक्य

मिश्र वाक्यों में प्रधान उपवाक्य अधीन् उपवाक्य के पूर्व आता हे और प्रधान तथा अधीन् उपवाक्य प्रायः कि अव्यय द्वारा जुड़ते है।

यह स्थिति तभी बदलती है जब प्रधान उपवाक्य या तो कथन होता है या किसी स्थिति विशेष का द्योतक।

- [कनिया जानती है] [कि बुझारथ की आँखों में इतना ताव नहीं] [कि वह उसकी ओर देख सके।]

(अलग-अलग वैतरणी-126)

– जिसे रामलला कुछ देना चाहते हैं। पहले उसका सब कुछ छीन लेते हैं।

(गली आगे मुड़ती है-166)

यह ध्यातव्य है कि व्यवस्था कोई ऐसी पद्धति नहीं है जिसको व्यापक रूप से प्रत्येक प्रकार की संरचना में लक्ष्य किया जा सके।

4.6. मैत्री

प्रत्येक व्यवस्था के लिये योजक-तत्त्वों में मैत्री की अपेक्षा होती है। हिन्दी में यह मैत्री जहाँ एक ओर विशेषणों और संज्ञाओं से बने हुये वाक्यांशों में देखी जाती है, वहीं दूसरी ओर उद्देश्य और विधेय में भी पायी जाती है।

4.6.1. उद्देश्य-विधेय मैत्री

वाक्यान्तर्गत उद्देश्य और विधेय की वचन-लिंग-पुरुषपरक मैत्री होती है।

4.6.1.1. वचन परक

एकवचन उद्देश्य – एकवचन क्रिया

– आपने। पूछा था।।

(नीला चाँद-237)

– कनिया। जानती हैं।।

(अलग-अलग वैतरणी-126)

– गोह। जब चिपक जाती है।।

(शैलूष-6)

बहुवचन उद्देश्य – बहुवचन क्रिया

– बाबा धन्वन्तरि, ऋषिवर शौनक, बाबा के लघु भ्राता ऋषिवर कक्षीवान् तथा समादरणीय भीमरथ। सभा में → प्रवेश कर रहे हैं।।

(वैश्वानर-211)

– हम दोनों → चलते हैं।

(कुहरे में युद्ध-138)

4.6.1.2. लिंगपरक

पुल्लिंग उद्देश्य – पुल्लिंग क्रिया

– यह विद्यार्थी नेता कह गया है।

(गली आगे मुड़ती है-93)

- बाबा → लिख गये है।

(गली आगे मुड़ती है-164)

- वाशेक हस्तिपरक हवेली में → पहुँचा।

(दिल्ली दूर है-308)

स्त्रीलिंग उद्देश्य - स्त्रीलिंग क्रिया

- मृत्यु की क्रीड़ा → बहुत आनन्द देती है।

(कुहरे में युद्ध-79)

- काशी प्रचंड चिता में → जल जायेगी।

(नीला चांद-156)

4.6.1.3. पुरुषपरक

एकवचन

- मैं शौनक को खूब जानता हूँ। - ऊ

(वैश्वानर-82)

- तू दुबला क्यों लगता है ? - ऐ

(शैलूष-11)

- वह पैरों को सिकोड़ लेता है। - ऐ

(अलग-अलग वैतरण-158)

- तू कैसे चलेगा। - ए

(नीला चांद-142)

- मैं आजन्म ब्रह्मचारी रहूँगा। - ऊँ

(वैश्वानर-399)

बहुवचन

- वे करते हैं। - ऐं

(दिल्ली दूर है, 181)

- हम तुम्हारा रुपया भर देंगे। - ऐं

(अलग-अलग वैतरणी-123)

- हम शरीफ आदमी हैं। - ऐं

(गली आगे मुड़ती है-39)

–तुम उनके परिवार को शान्ति दो। –ओ

(वैश्वानर, पृ0– 336)

–तुम किधर जाओगे। –ओ

(गली आगे मुड़ती है,69)

पुरूषवाची सर्वनामों के साथ जब समानाधिकरण प्रयुक्त होता है, तब क्रिया का लिंग अथवा वचन पुरूष के अनुरूप होता है।

4.6.2. विधेय पूरक

विधेय पूरक के लिंग और वचन उद्देश्य के लिंग और वचन के अनुरूप रहते हैं। क्रिया के लिंग और वचन भी तद्वत् होते हैं।

–गोधा की बातें बहुमूल्य हैं।

(वैश्वानर, पृ0सं0–261)

मैनवा हरिजन कन्या थी।

–होटल फिलाडेल्फिया सजी –सजाई दुल्हन की तरह लग रहा था।

(गली आगे मुड़ती है,149)

4.6.3. विशेषण विशेष्य मैत्री

–वचन लिंगगत

(अविकारी)

–सूखी लकड़ियाँ

(नीलाचाँद, पृ0– 146)

–काली पट्टिकाएं

(वैश्वानर, पृ0सं0– 103)

–अच्छी नौकरी

(दिल्ली दूर है0, 162)

–भारी गठरी

(दिल्ली दूर है, 238)

–हरा कपड़ा

(हनोज दिल्ली0, 164)

–छोटा सिपहसालार

(हनोज दिल्ली0, 175)

डरे हाथी

(हनोज दिल्ली0, 177)

वचन लिंगगत् विकारी

–चिलबिल्ले लड़के ने

(अलग–अलग वैतरणी, 22)

विशेष

विशेषण– विशेष्यगत् मैत्री तभी संभव होती हैं, जब एकवचन– विशेषण– विशेष्य में पुरूष विभक्ति "आ" तथा स्त्री विभक्ति –ई का योग हो।

4.6.4. संज्ञा क्रिया विशेषण मैत्री

–कौमुदी दौड़ी–दौड़ी बाहर आई।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–181)

–मैं चिट्ठी पढ़कर, हिचक हिचक कर रो पड़ा।

(गली आगे मुड़ती है, 240)

4.6.5. पद – मैत्री से रहित प्रयोग (प्रयोग)

उदा0– वह/ यह करते हैं।

हम जाता है।

ये नहीं है।

अतः वाक्य की सक्रिय इकाईयों की मैत्री अनिवार्य है। चाहे वे पद हों, चाहे वाक्यांश या उपवाक्य। मैत्री वाक्य–योजना की दृष्टि से निश्चय ही अनिवार्य है।

4.7. पद सक्रियता मूलक वाक्य रचना

भाषा में प्रयुक्त पद, वाक्यांश, उपवाक्य आदि निष्क्रिय एवं निष्प्राण तत्व नहीं है। इन सबमें अलग–अलग और एक साथ मिलकर एक सजीवता एवं सक्रियता रहती है।

4.7.1. सक्रियता

इस दृष्टि से वाक्य का आधार उसकी योजक– इकाइयाँ हैं, जिन्हें स्वतंत्र और परतन्त्र दो वर्गो में रखा जा सकता है–

4.7.1.1. स्वतन्त्र इकाइयाँ

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से स्वतन्त्र इकाइयाँ वे हैं, जो वाक्य में आदि मध्य या अन्त आदि अवस्थाओं में कहीं भी आ सकती हैं। इससे वाक्य के मौलिक अर्थ में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आता।

ये इकाइयाँ – आज, कल, सदैव, नित्य आदि हैं। इनका प्रयोग डा0 सिंह के सभी उपन्यासों में यथावसर हुआ है–

–जन्माष्टमी तो कल ही हो गयी।

(गली आगे मुड़ती है, 163)

–कल से एक ऐसा चक्र घूमने लगेगा।

(शैलूष, पृ0सं0– 175)

–आज मैं युगत सरकार को देख रही हूँ।

(शैलूष, पृ0सं0– 174)

–हम गाहड़वाल परम्परा के आरम्भ से आज तक केवल तुम्हारे वंश पर आश्रित रहे हैं।

(नीलाचाँद, पृ0– 219)

ऊपर लिखित सभी वाक्यों में "कल" और "आज" के स्थान्तरित होने पर भी अर्थ में कोई अन्तर नहीं आया है।

इनके अतिरिक्त अविकारी एवं विकारी पुरूष वाचक सर्वनाम भी स्वतंत्र इकाईयों के समान प्रयुक्त होते हैं।

–वह आज फिर रजिया की पुकार पर जा रहा है।

(दिल्ली दूर है0, 286)

–अब जो चाहो तुम।

(वैश्वानर, पृ0सं0– 123)

मुझसे अपराध हो गया।

(शैलूष, पृ0स0– 80)

–बाबू की बेबसी उससे देखी न गई।

(अलग–अलग वैतरणी, 105

4.7.1.2. परतन्त्र इकाइयाँ

परतन्त्र इकाइयाँ एकाकी प्रयुक्त नहीं हो सकतीं। इनके प्रयोग हेतु किसी न किसी सक्रिय इकाई की आवश्यकता पड़ती है।

–नगर में भूमि और ये नदियाँ तो थी।

(वैश्वानर, पृ0सं0–325)

उपर्युक्त वाक्य में नगर परतन्त्र इकाई है क्योंकि सक्रिय इकाई में के अभाव में इसके इस विशिष्ट प्रयोग की संभावना ही नहीं हो सकती। क्योंकि हम यह नहीं कह सकते कि–

–नगर भूमि और ये नदियाँ तो थी।

इस प्रकार सक्रिय इकाइयों के प्रयोग बिना पदसिद्धि नहीं हो सकती।

4.7.2. सक्रिय इकाइयाँ

हिन्दी वाक्य रचना में सक्रिय इकाइयाँ वे हैं जो परतन्त्र इकाइयों को प्रयोग के योग्य बनाती हैं।

हिन्दी के सभी परसर्ग सक्रिय इकाइयाँ हैं। ये जोडने वाली (सक्रिय इकाइयाँ है) कड़ियाँ हैं। –का–की–के, रा–री–रे, आ–ई–ए, आदि विशेषकों से अधिकार वादी विशेषणों का निर्माण होता है।

–कालंजर के सैन्यासी का राजेश्वर आदर करते हैं।

(हनोज दिल्ली0, 103)

–वह अमरकाशी की ज्योति हैं।

(वैश्वानर, पृ0सं0–213)

–तुम्हारा मन मृदुमेदुर नहीं है।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–374)

–पुष्पा अपनी जगह से नहीं उठी।

(अलग–अलग वैतरणी, 108

–करामिता और इस्माइलियों का गठजोड़ हो चुका है।

(दिल्ली दूर है, 216)

4.7.3. शून्य रूप तत्व

सक्रिय इकाइयाँ शून्य रूप तत्व की भाँति भी प्रयुक्त होती हैं।

–मैं जरा वह सरकारी कागज देखना चाहता हूँ।

(गली आगे मुड़ती है, 77)

–प्रशंसा का भागी राजवंश माना गया।

(हनोज दिल्ली0, 86)

इस प्रकार परतन्त्र और स्वतन्त्र इकाइयाँ सापेक्ष हैं, निरपेक्ष नहीं। अन्तर यही है कि कुछ सदैव स्वतन्त्र हैं और कुछ इकाइयों की कोटि का निर्णय संदर्भ से होता है।

4.8. रूपान्तरण

रूपान्तरण दो प्रकार से संभव है– संरचनात्मक और अर्थमूलक

संरचनात्मक रूपान्तरण में अभिप्रेत अपरिवर्तित रहता है, लेकिन अर्थमूलक में संरचनात्मक प्रकृति तो अपरिवर्तित रहती है, अभिप्रेत बदल जाता है।

4.8.1. संरचनात्मक (ऋजु– वक्रकथन)

मूलवक्ता के कथन को यथावत् प्रस्तुत कर देना ऋजुकथन कहलाता है। इस पद्धति पर किये गये कथन में सूचक और सूचित अंश रचना की दृष्टि से स्वतंत्र वाक्य रहते हैं।

4.8.1.1. ऋजु

(सामान्य आदेश)– (हरि ने हौसला से कहा)– "तुम ठाठ से घर जाओ।

(गली आगे मुड़ती है, 96)

(प्रश्न) – (मिस्सर जी ने दुलारी से पूछा)– "क्यों री दुष्टे, तू अब आ रही है?"

(नीलाचाँद, पृ0सं0–243)

(इच्छा) – (विपिन ने कनिया से कहा) – "भाभी, मुझे दो सौ रूपये चाहिए.. अभी।"

(अलग–अलग वैतरणी, 75)

(विस्मय)– (रजुल्ली मुझसे बोला)– "ई तो नन्दू महाराज, गजब हो गवा।"

(गली आगे मुड़ती है, 144)

(आदेश) – (पद्मरक्षिता ने वाशेक से कहा)– "चलो नाश्ता करो।"

(दिल्ली दूर है0, 246)

(निषेध) – (श्री माँ ने पारस से कहा)– "तुम लोग चिंतित मत बनो।"

(नीलाचाँद, पृ0सं0–291)

(सामान्य) – (वाशेक ने मुझसे ("दिलावर से") कहा)– "तुम तुरूष्क हो और मूर्ख भी।"

(दिल्ली दूर है, 231)

4.8.1.2. वक्र

(सामान्य कथन) – (कृष्ण मिश्र ने श्री माँ से कहा) मानता हूँ कि मैं मृत्यु की विभीषिका को आमने–सामने देखकर विजड़ित रह गया था।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–317)

(प्रश्न) – (भोजदेव ने "विरोचन से" पूछा)– कि क्या अलीमेहर ने घायलों वाले तुरूष्क स्कंधावर पर आक्रमण नहीं किया?

(हनोज दिल्ली0, 215)

(इच्छा)– "मैंने तुलसी से कह दिया था कि मुझे झगड़ालू चेटी नहीं, गंभीर मन वाली दासी चाहिए।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–243)

(विस्मय)– (जगजीत सिंह ने झिनक से कहा)–"हम क्या ईश्वर–दइब हैं कि पैदा कर दें।

(अलग–अलग0, 173)

(आदेश) – (लल्लू नट ने जुड़ावन से कहा)– "तुम ऐलान कर दो कि आज छोकरे –छोकरियों को रात भर नाचने–गाने और ठर्रा पीने की छूट दी जा रही है।

(शैलूष, पृ0सं0– 133)

(निषेध) – (रामभार्गव ने माधवी से कहा कि)– "मदालसा को मत ले जाइये, मातृतुल्य देवि।"

(वेश्वानर, पृ0सं0–352)

(निषेध) – (वाशेक ने दीप्ति से कहा) इतनी उदास मत होना कि वहाँ मेरा मन हुटकता रहे।

(दिल्ली दूर है0, 250)

4.8.1.3. सीमान्तिक विराम

ऋजुकथनों के दो स्वतंत्र वाक्यों के बीच सीमांतिक विराम होता है। इसे दो खंड़ी रेखाओं (।।) के द्वारा दिखाया जाता है। वक्र कथनों में विराम अपेक्षाकृत कम लम्बा होता है। इसे कि के पूर्व एक खड़ी रेखा (।) के द्वारा अंकित करते हैं।

ऋजु–

⌊ बैजू, जग्गन अपना घर संभाले[1] ⌋

⌊ उससे अच्छी बात क्या हो सकती है।[2] ⌋

= ⌊1⌋ || ⌊2⌋ # (अलग–अलग0, 207)

वक्र–

⌊ पहली चीज यह[1] ⌋ (कि) ⌊ तुम कुरसी खाली करो।[2] ⌋

= ⌊1⌋ | ⌊2⌋ # (गली आगे मुड़ती है, 140)

4.8.2. अर्थ मूलक रूपान्तरण

अर्थमूलक रूपान्तरण क्रिया विस्तार से सम्बद्ध है। इस प्रकार के विस्तार से कहीं मुख्य क्रिया निष्पन्न होती हैं, कहीं संयुक्त क्रिया और कहीं मुख्य अथवा संयुक्त क्रिया का क्रिया विशेषण मूलक विस्तार होता है।

4.8.2.1. पद्धति

हिन्दी में अर्थमूलक रूपान्तरण निम्नलिखित पद्धति पर होता है–

–सामान्य– अइय्या बेचैन बिस्तेरे पर लेटी जागती रहती हैं।

(अलग–अलग वैतरणी,79)

–सूचना– "बक्कड़ को सब मालूम रहता है।

(प्रसंग से ज्ञात,
गली आगे मुड़ती है,148)

–विधान– मैं एक भ्रांत मृग की तरह दौड़ रहा हूँ।

(गली आगे मुड़ती है,59)

–विस्मय– "तू अइसी किताब पढ़ता है।

(अलग–अलग0, 243)

–प्रश्न– "आप कान्याकुब्ज कब जा रहे हैं?"

(वैश्वानर पृ0सं0–405)

–निषेध– मैं इसे तोड़ नहीं पाऊँगी।

(नीलाचाँद, पृ0– 374)

–इच्छा– "मैं सिर्फ एक के सामने नाचना चाहती हूँ।

(गली आगे मुड़ती है, 59)

–आज्ञा– "तिवारी, रिसर्च जरूर करो।"

(गली आगे मुड़ती है, 43)

–सुझाव– आपको इस प्रपञ्च में नहीं पड़ना चाहिए।

(हनोज दिल्ली0, 104)

–संकेत– "भ्रातृ जाया की एक झलक भी मुझे मिली होती तो मैं आज कुछ का कुछ होता।

(वैश्वानर, पृ0सं0–181)

–चेतावनी या ध्यानाकर्षण– "ठीक है। आज तुझे छोड़ु रही हूँ।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–249)

4.9. रूपान्तरण, मूलक पद्धति

4.9.1. साधारण वाक्य

–कनिया के दरवाजे के पास आकर बाजू से सटकर खड़ी हो गयी।

वा0

संवाश क्रियांश

सं0
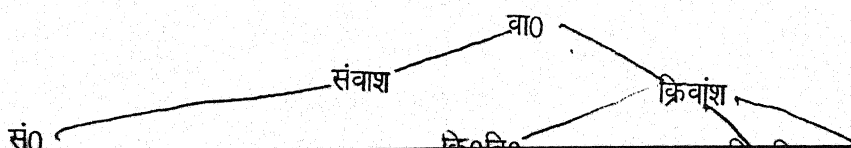
–कनिया दरवाजे के पास आकर बाजू से सटकर खड़ी हो गयीं।

1 2 3 4

(अलग–अलग0, 257)

–अनन्त ने चम्पक की ओर देखा।
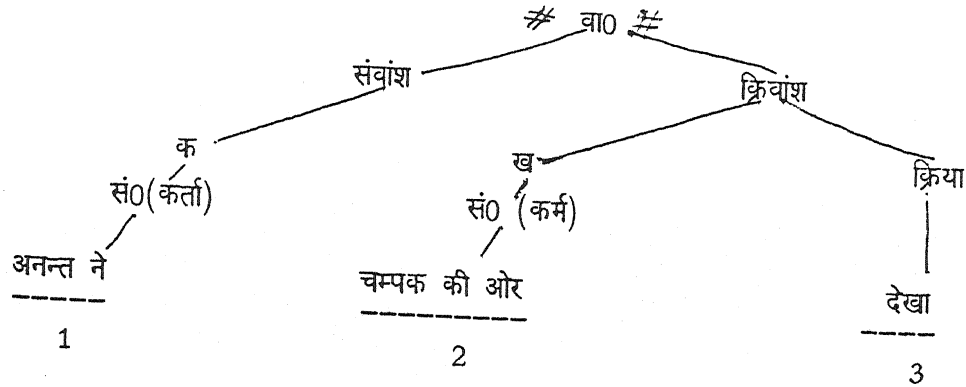
(नीलाचाँद0, 294)

4.9.2. मिश्र वाक्य

–नई दुलहिन को पहला तोहफा यक मिला कि उसका पति फेल हो गया।
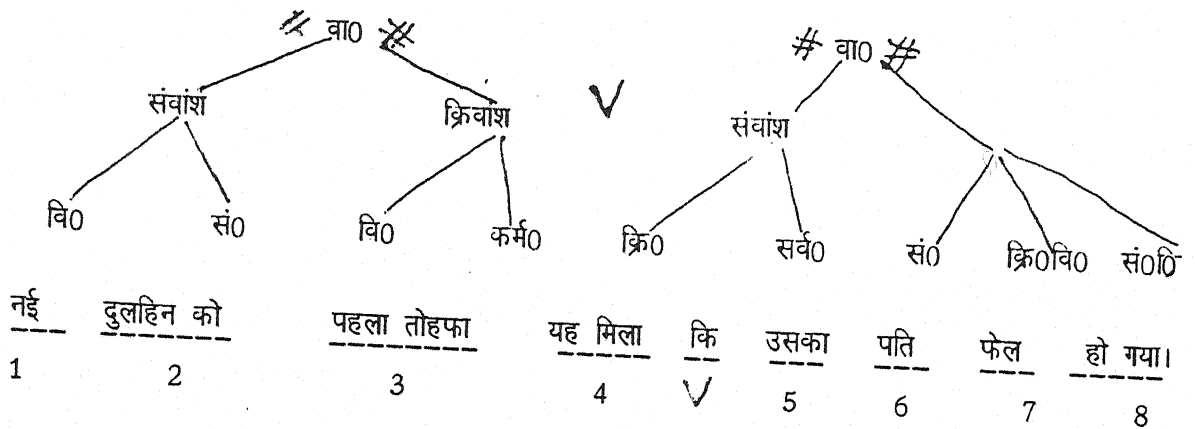
(अलग–अलग0, 146)

4.9.3. संयुक्त वाक्य

–वे हमारे लिये जीती– मरतीं रहीं और हम उनके सीने में कटारें उतारते रहे।
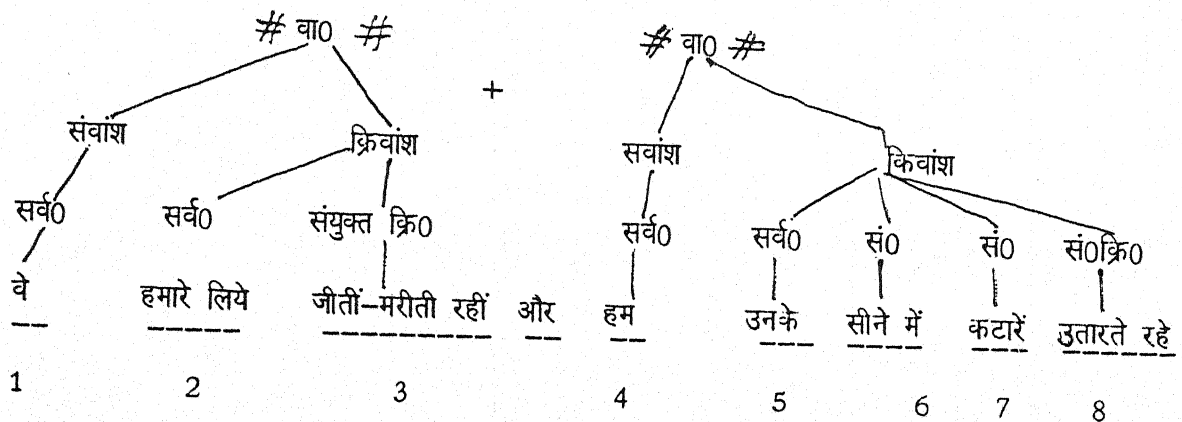
(अलग–अलग वैतरणी 49)

4.9.4. साधारण वाक्य→ मिश्र वाक्य

–"तुम बोलाबाजी करोगे तो ठोंक दिये जाओगे।"
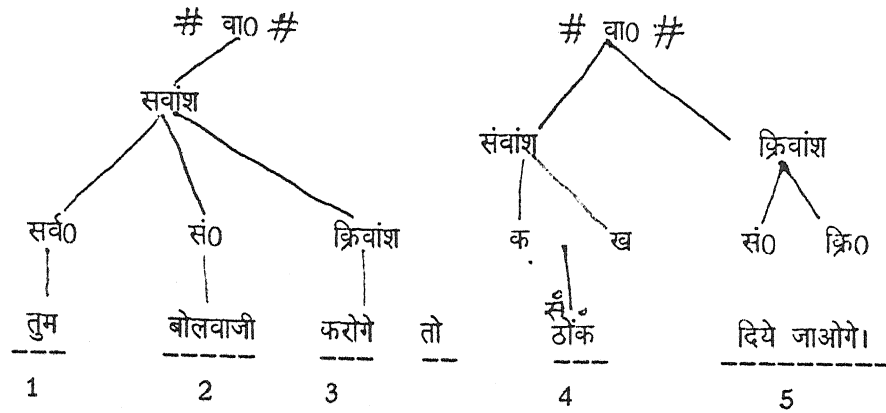
(अलग–अलग वैतरणी, 49)

4.9.5. साधारण वाक्य – संयुक्त वाक्य

–कालंजर के संन्यासी का राजेश्वर आदर करते हैं पर आदर का अर्थ उनके दुर्गुणों की अनुदेखी तो नहीं हो सकती।

(हनोज दिल्ली0, 103)

वा0

संवांश क्रिवांश

सं0 सं0 कर्म संज्ञा सं0 संयुक्त क्रि0

कालंजर के संन्यासी का राजेश्वर आदर करते हैं [पर]

1 2 3 4 5

+

वा0

संवांश क्रिवांश

सं0 सर्व0 वि0 सं0 → निषेधात्मक सं0क्रि0

आदर का अर्थ उनके दुर्गुणों की अनदेखी तो नहीं हो सकती।

6 7 8 9 10

—उन्होंने किसी भाषा में भृत्य से कुछ कहा और मंदिर की ओर चल पड़े।

(नीलाचाँद, पृ0सं0—344)
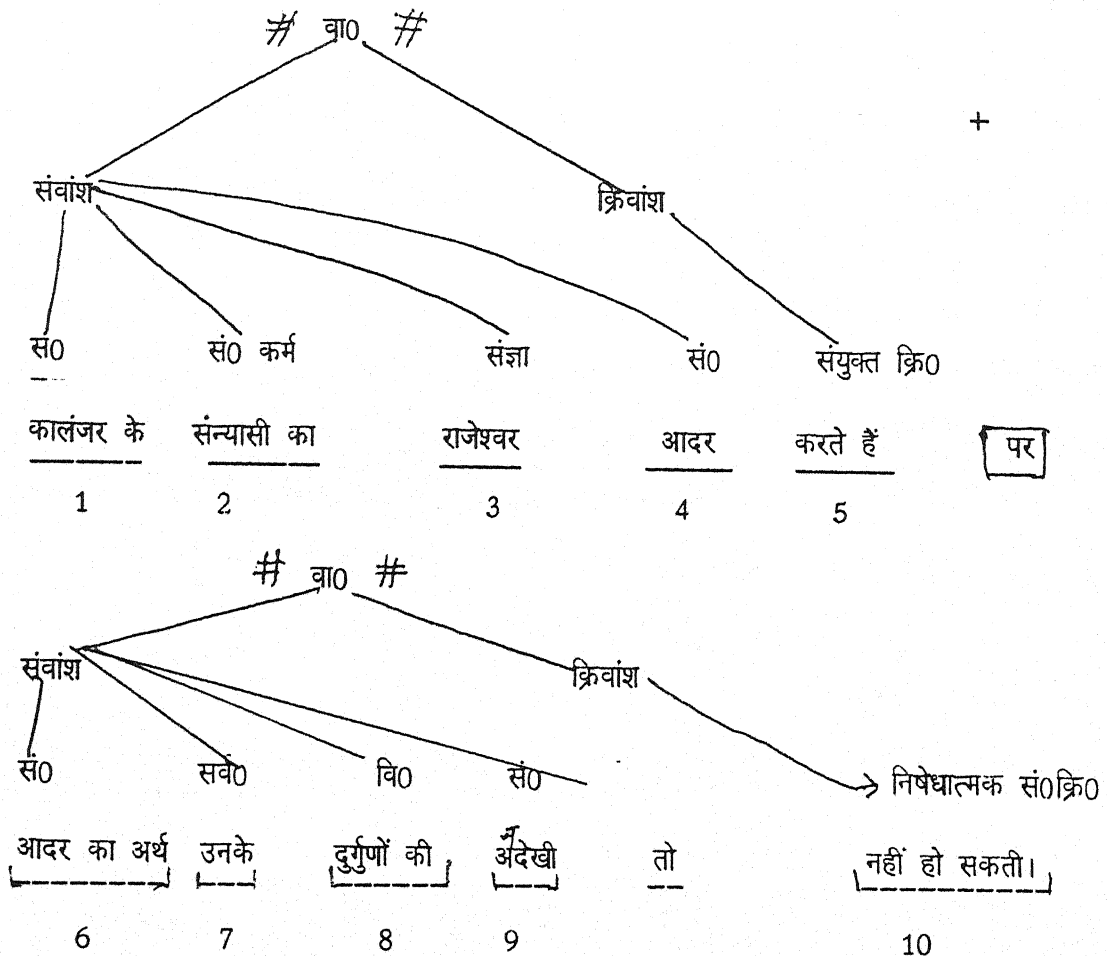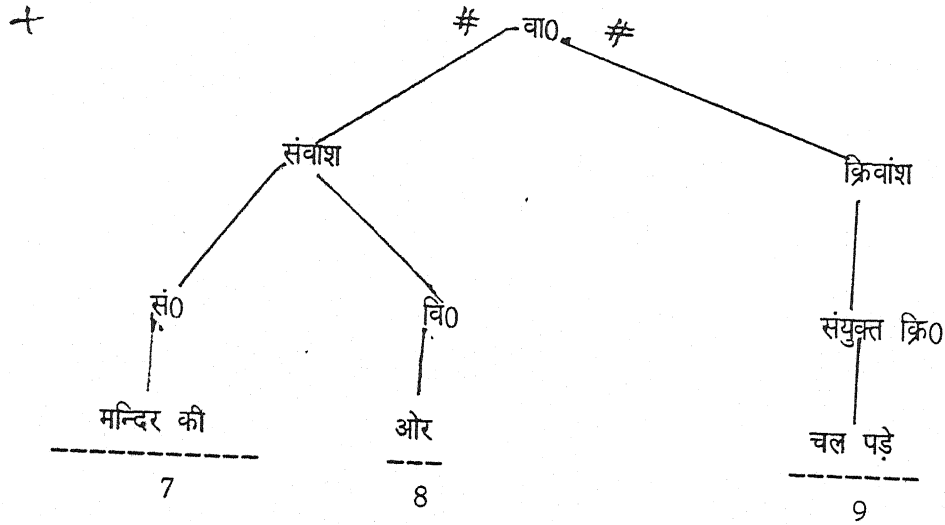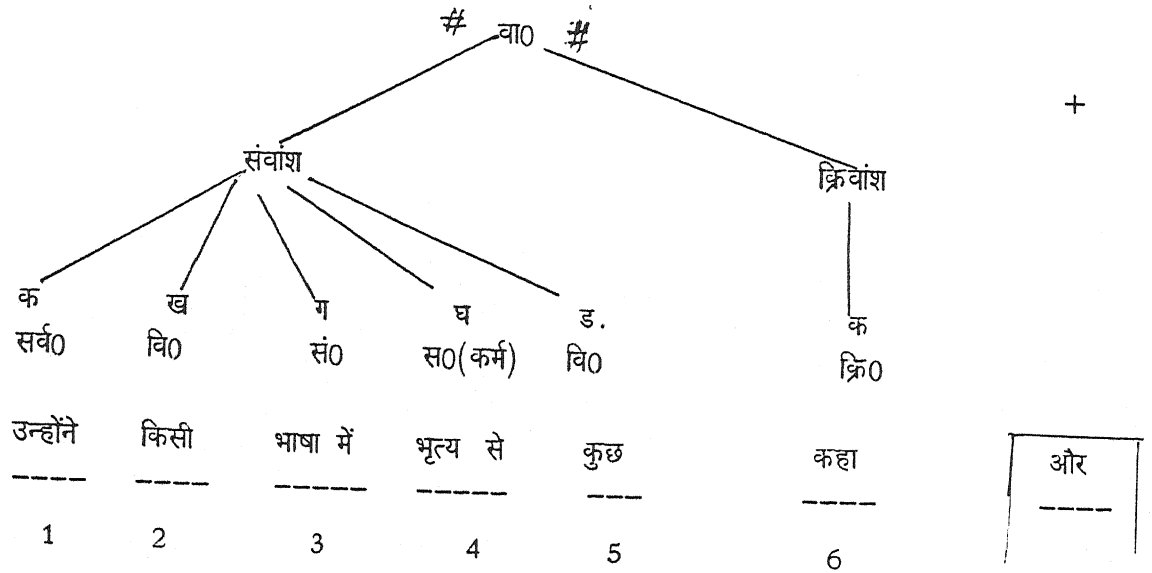
(नीलाचाँद, पृ0सं0—344)

4.9.6. <u>संयुक्त वाक्य</u> (एकाधिक साधारण और मिश्रवाक्य)

—मैं सोच रहीथी कि हमारे कबीलों ने लम्बे अनुभवों के बाद यह कड़ुवा घूंट पिया होगा कि श्रमला या तो वंचना करता है या तो किसी न किसी जुर्म में फँसा देता है।

(शैलूष, पृ0सं0— 175)
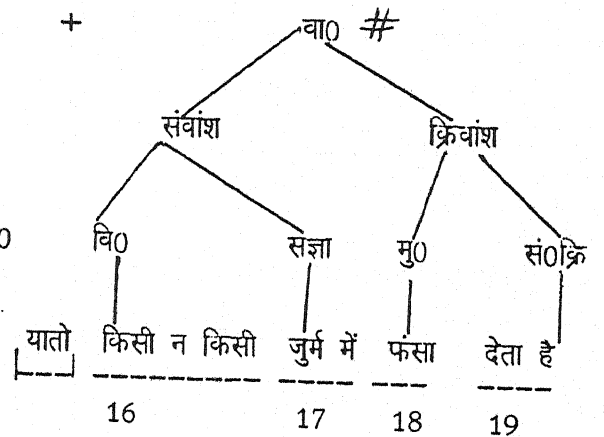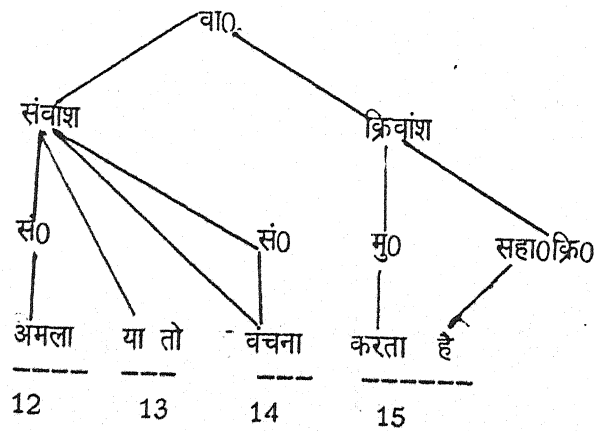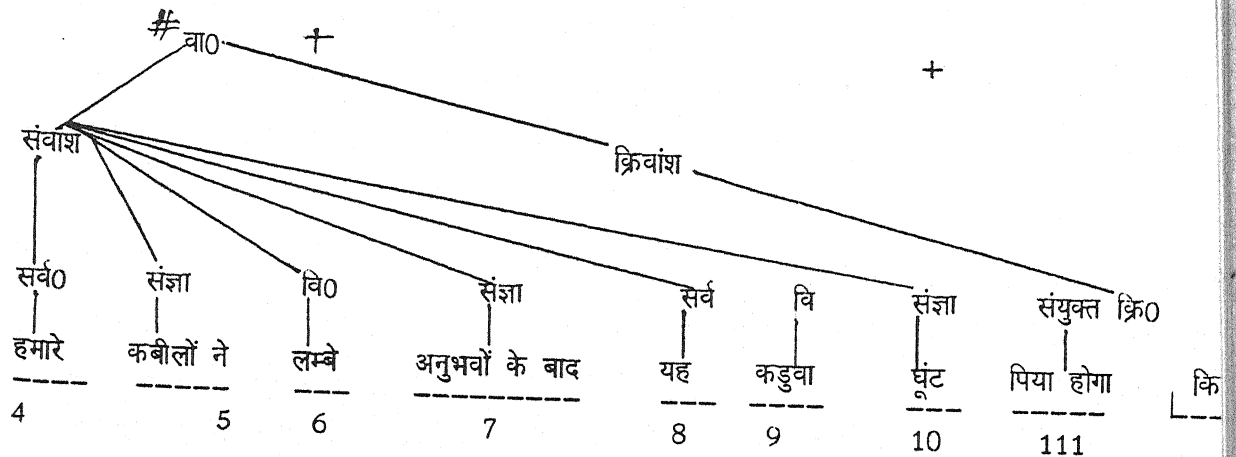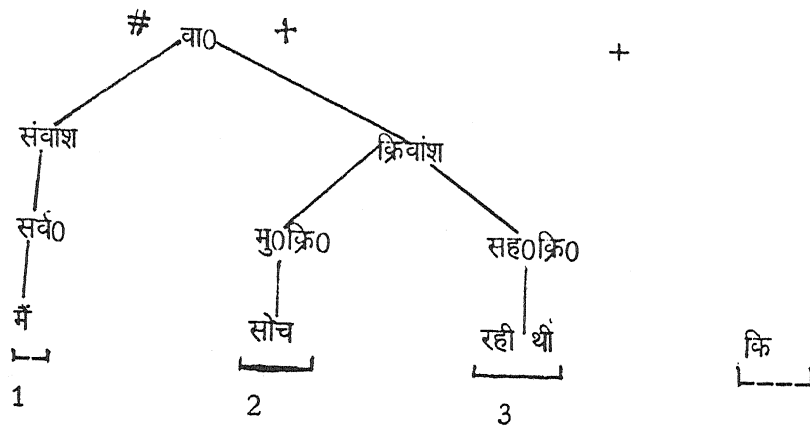
(शैलूष, पृसं0- 175)

इस प्रकार उपरोक्त उदाहरणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि यह रूपान्तरण पद्धति वाक्य संरचना में अत्यधिक सहायक हैं।

यह भाषा के सही प्रयोग के लिये साधारण वाक्यों की संरचना तथा अधिक प्रभावशाली सशक्त भाषागत् निपुणता के लिये मिश्र एवं सुयक्त वाक्यों की संरचना का ज्ञान कराने में अति महत्व पूर्ण है।

4.9.7. निष्कर्ष

विश्लेपणात्मक वाक्य-विन्यास में खंडीय तथा अति खंडीय तत्वों का जो विवेचन किया गया। उससे यह संकेतित होता है कि डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में वाक्य संरचनाओं के मूल में वाक्य संबंधी खंडीय तथा अति खंडीय तत्वों का प्रयोग हुआ है। इस विवेचन से इस निष्कर्ष पर पहुँचना सम्भव हुआ है कि बीज वाक्य तथा इनका विस्तार वाक्यांशों के द्वारा हुआ है। ये वाक्य-पदबंध कहीं कर्ता हो सकते हैं, कहीं क्रिया, कही उद्‌देश्य + पूरक + क्रिया (4.1.2.) और कही कर्ता + समानाधिकरण + क्रिया (4.1.3.) और कही कर्ता + कर्म + क्रिया (4.1.4. तथा 4.1.5.) और इनका विस्तार। वाक्य संरचना में इन खंडीय तत्वों के बिना वाक्यांश विस्तार सम्भव नहीं हैं। ये पद सर्वनाम, विशेषण-विशेष्य, क्रियाविशेषण और क्रिया पद हो सकते हैं। कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाव वाच्य में भी इन्हीं वाक्यांशीय अवयवों के सहारे वाक्य विस्तार सम्भव हुआ है। डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में वाक्य सम्बन्धी योजना और क्रम भी व्याकरणिक नियमों के अनुसार उपलब्ध होता है। हमारे उपर्युक्त विवेचन से यह भी स्पष्ट हो गया है। इस क्रम को सभी वाच्यों में खोजा गया है। वाक्य संरचनाओं में पद मैत्री, उपवाक्य मैत्री, अवयवों का निकटस्थ प्रयोग भी सटीक रूप में हुआ है। यहाँ पर पद-सक्रियता-मूलक, वाक्य-संरचनाओं का जो विवेचन किया गया उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वाक्य में सक्रिय और निष्क्रिय दोनों इकाइयों का प्रयोग हुआ है। सक्रिय इकाइयों के सहयोग से निष्क्रिय इकाईयाँ भी सक्रिय हो जाती हैं। सक्रिय इकाईयाँ कुछ स्वतंत्र होती हैं। और कुछ परतंत्र। परतंत्र इकाईयाँ ही निष्क्रिय हैं। डॉ. सिंह के उपन्यासों में यह दोनों इकाइयाँ उपलब्ध होती हैं। इस प्रकरण में वाक्य रूपान्तरण की जो विवेचना की गयी उससे यह निष्कर्ष निकला कि रूपान्तरण की प्रक्रिया ऋजु और वक्र दोनों रूपों में ही प्रयुक्त हुई है। अर्थ मूलक रूपान्तरण की पद्धति का जो विवेचन किया गया उससे यह निष्कर्ष निकला कि शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों की वाक्य-संरचना इसके प्रयोग से अत्यन्त प्रभावशाली हुई है।

उपर्युक्त विवेचन के बाद अगले प्रकरण में प्रतिपाद्य उपन्यासों में विश्लेपणात्मक वाक्य-विन्यास के अन्तर्गत अति खण्डीय तत्वों की खोजबीन की गयी है।

❑❑❑
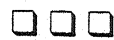
* प्रकरण – 5 *

विश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास– अतिखण्डीय तत्व

हिन्दी वाक्य और सुर

–सुर विधान

–सीमान्तिक रेखाएँ– योग मूलक विराम

–हिन्दी वाक्य और बलाघात

–वाक्यान्तर्गत बलाघात

–एक पदीय बलाघात

–वक्ता की मनः स्थिति और सुर क्रम

–एक पदीय वाक्य

–हिन्दी वाक्य और विराम

प्रकरण – 5

विश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास: अति खण्डीय तत्व

भाषा का मूलभूत उद्देश्य पारस्परिक सम्बुध्यता है। भाषा में निहित शक्ति तत्वों में एक विराम है। वाक्य के योजक तत्वों के बीच व्याकरणिक व्यवस्था के अतिरिक्त एक सूक्ष्य व्यवस्था भी रहती है। इसके अन्तर्गत सुर, सुरक्रम, बलाघात और विराम शीर्षक आते हैं।

5.1. हिन्दी वाक्य और सुर

भाषागत् बोध, मात्र शब्द –ज्ञान और व्याकरणिक व्यवस्था पर ही आधृत नहीं है। इसके लिये कतिपय सूक्ष्म औद्भूतियाँ भी अपेक्षित हैं।

सुर एक ऐसी ही औद्भूति है। भाषागत– सुर सापेक्ष होता है, निरपेक्ष नहीं।

5.1.1. सुर– विधान

हिन्दी का सुर– विधान स्वर– तन्त्रियों में पाई जाने वाली क्षिप्रता की दृष्टि से "1" से लेकर "4" तक अवस्थित रहता है। यदि स्तर की स्थिति को "2" के द्वारा व्यक्त किया जाय तो "3" और "4" को आरोह मूलक और "1" को अवरोह मूलक" कहना समीचीन होगा।

5.1.2. सीमान्तिक रेखाएं

सीमान्तिक रेखाएं सुर–योजना के अनुरूप निर्मित होती हैं। एक ही प्रकार की संरचना में प्रयोजन की दृष्टि से सुर–योजना भिन्न होने पर, भिन्न सुर– रेखाएं बनती हैं।

सूत्र मूलक दृष्टि से

प्रथम/2 – 2 = # (सामान्य)

द्वितीय/ 2 – 3 + # (प्रश्न)

तृतीय/ 3 – 2 + # (विस्मय)

चतुर्थ/ 2 – 3 + # (खेद)

2 2

–मैं चला। (सामान्य) #

(गली आगे मुड़ती है, 160)

2 2 3 2 4 1

–मेरा प्रतू ठीक तो हो जायेगा न?

(वैश्वानर पृ0– 199)

#

– आओ वत्से! (विस्मय)

+ #

(नीलाचाँद, पृ0सं0–35)

–नेहरू जी रो पड़े। (खेद)

+ #

(शैलूष, पृ0सं0– 31)

5.2. <u>हिन्दी वाक्य और बलाघात</u>

बलाघात भी एक अतिखंडीय औद्‌भूति है। हिन्दी में बलाघात के दो प्रकार हैं–

शब्दान्तर्गत अक्षर मूलक,

वाक्यान्तर्गत शब्द मूलक।

5.2.1. <u>सुर और बलाघात</u>

<u>सुर</u> और <u>बलाघात</u> में अन्तर अत्यन्त सूक्ष्म है। सुर में आरोह– अवरोह मूलक सम्बन्ध निर्वाह पर विशेष बल दिया जाता है, बलाघात में शब्द विशेष पर अधिक बल दिया जाता है।

–चम्पक श्री माँ की मुंहलगी लड़की रही है।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–306)

5.2.2. <u>वाक्यान्तर्गत बलाघात</u>

हिन्दी में <u>वाक्यान्तर्गत बलाघात</u> तीन प्रकार के पाए जाते हैं– प्राथमिक, द्वितीय, तृतीय।

यहाँ डॉ0 शिव प्रसाद सिंह ने प्राथमिक बलाघात को दो उपवाक्यों के संयोजक तत्वों में बताया है–

–नई दुलहिन को पहला तोहफा यह मिला

<u>कि</u> उसका पति फेल हो गया।

(अलग–अलग0, 146)

–तुम कहना चाहते हो <u>कि</u> वेशमणि के प्राण संकट में हैं।

(वैश्वानर, पृ0सं0–124)

5.2.3. एकपदीय बलाघात

<u>–"किरण"।</u>

(गली आगे मुड़ती है, 47)

–"हूँ"।

(गली आगे मुड़ती है, 47)

—"बिल्कुल"।

(हनोज दिल्ली०, 41)
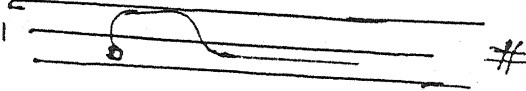
5.2.4. नाटकीय संवाद

नाटकीय संवादों का इनके उपन्यासों में प्रायः अभाव है।
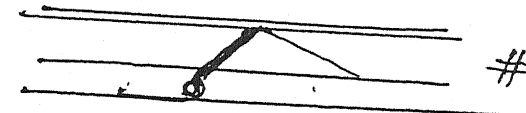
5.3. हिन्दी वाक्य और सुरक्रम

5.3.1. सुरक्रम के प्रकार
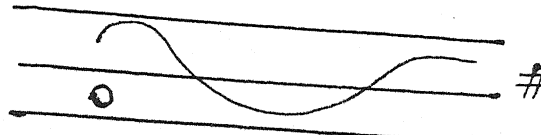
5.3.1.1. क्रमान्तर और सुरक्रम

—सुना आपने। #

(शैलूष, पृ0- 31)

—क्या करेंगें? #

(दिल्ली दूर है, 382)
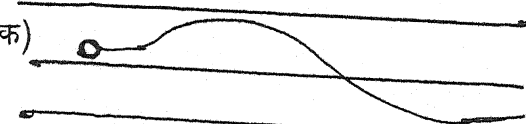
—चलूँगी तुम बाहर चलो। #

(वैश्वानर, पृ0सं0-220)

5.3.1.2. वक्ता की मनः स्थिति और सुरक्रम

—"आप लौट जाइये बाबा।"
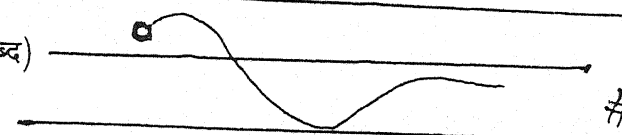
(प्रार्थना मूलक) #

(वैश्वानर पृ0सं0- 280)

—"उल्लू कहीं की।"
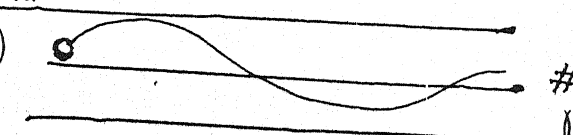
(अपशब्द) #

(दिल्ली दूर है, 172)

—बज्जर परे उस करम निखट्टू पर।
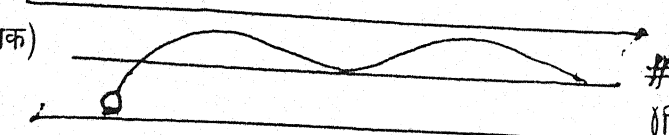
(अभिशाप मूलक) #

(अलग-अलग0, 158)

—रुक जाइये हिन्दूखान।

(आदेश मूलक) #

(दिल्ली दूर है, 331)

–"प्रभु उसे चिरायु करें।

(वरदान मूलक आर्शीवाद)
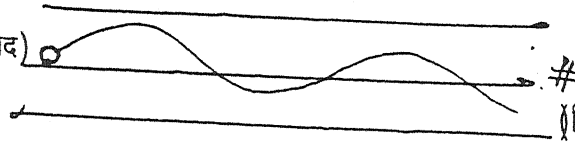
(दिल्ली दूर है, 396)

5.3.2. एक पदीय वाक्य

–अच्छा (सहज स्वीकृति)
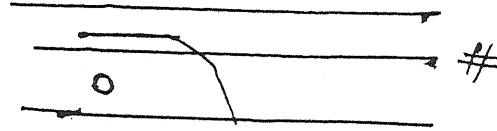
(गली आगे मुड़ती है,92)

–"मतलब? (प्रश्न)
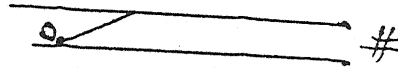
(दिल्ली दूर है, 377)

–"अयँ....(सन्देह)

(अलग–अलग0, 282)
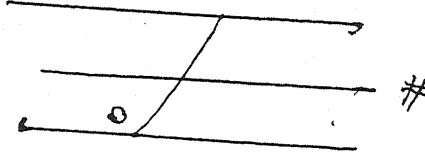
–"शीलू! (विस्मय)
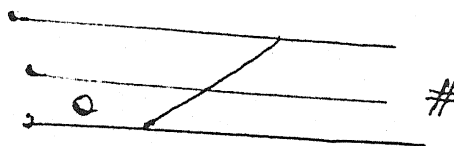
(अलग–अलग0, 352)

5.4. हिन्दी वाक्य और विराम

विराम दो प्रकार के होते हैं–

1. सीमान्तिक

2. योग मूलक

5.4.1. सीमान्तिक विराम के भी तीन प्रकार होते हैं–

1. स्तरीय (अपूर्ण कथन का बोध होता है।)

2. निम्नाभिमुख (प्रसंग के एकपूर्ण अंश की समाप्ति का बोध)

3. उच्चाभिमुख (निरन्तर तेज होती हुई ध्वनि से प्रसंग के एक अंश की परिसमाप्ति का बोध)

5.4.1.1. स्तरीय विराम के चार भेद हो सकते हैं–

लिखित भाषा में (,) के द्वारा दूसरा (:) के द्वारा, तीसरा (:) के द्वारा और चौथा (:– या –) के द्वारा व्यक्त किये जाते हैं। इन्हें इस प्रकार सूचित कर सकते हैं– (,)=।: (:)=।। (:)=।।।: (:–या–) = ।।।।: (...) =

स्तरीय विराम

–खूब धुली साफ बढ़िया धोती,[1] बहुत बेश कीमती सफेद ऊनी कुर्ता,[2] सफेद शाल[3] पैरों में चमचमाता पंप शू[4] :–

1।।2।3।4 #

(गली आगे मुड़ती है,148)

5.4.1.2. निम्नाभिमुख विराम

–मैंने कहीं बाधा खड़ी नहीं की।[1]

(निषेध मूलक 1 = #
वैश्वानर, पृ0सं0–319)

–प्रायः सभी लोग सो गये थे।[1]

(सामान्य कथन)
(1# अलग अलग0,76)

–मैं अकेले जाना चाहता हूँ।[1]

(इच्छा0)
1# (नीलाचाँद, पृ0–232)

–मेरा गमछा तो ले आ,[1] वहाँ प्रागंण के कोने में नागदंत पर लटका है।[2]

(आदेश)
1/2 # (नीलाचाँद,245)

ये विराम प्रश्नमूलक अथवा विस्मय मूलक वाक्यों को छोड़कर अन्य सब प्रकार के वाक्यों की परि समाप्ति पर पाया जाता है।

5.4.1.3. उच्चाभिमुख विराम

ये विराम प्रश्नमूलक एवं विस्मय मूलक वाक्यों में पाया जाता है। इस विराम की उपस्थिति पर अन्तिम ध्वनि उच्चतर होती हुई विली हो जाती है–

–तुम कितने झूठे हो गये हो।[1]

(विस्मय)
1# (नीलाचाँद, 374)

–"तुझे उर्दू आती है[1]?

(प्रश्न)
2# (शैलूष, 140)

5.4.2 योगमूलक विराम

ये वाक्यांश की सीमाओं के भीतर आते हैं, इस विराम के कारण पद विच्छिन्न होकर विकारी पद का अभिधान ग्रहण कर लेते हैं। इसका चिह्न + है।

पद	विकारी पद	
–धमकी	धम[1] + की[2] –	1+2/दिल्ली दूर0 256
–लूटती	लूट[1] + ती[2] –	(1+2/हनोज दिल्ली,180)

–धमकी ⌊धम[1]⌋ + ⌊की[2]⌋– (1+2/दिल्ली दूर0,192)

–काया ⌊का[1]⌋ + ⌊या[2]⌋– (1+2/अलग–अलग0,124)

–पालकी ⌊पाल[1]⌋ + ⌊की[2]⌋– (1+2/दिल्ली दूर0,121)

5.4.3. अनुच्छेद मूलक विराम

वाक्य पूर्ण की आंशिक पूर्ण इकाई है। ये विराम इस प्रकार अंकित कर सकते हैं–

अनुच्छेद मूलक स्तरीय ||

अनुच्छेद मूलक निम्नाभिमुख #

अनुच्छेद मूलक उच्चाभिमुख ##

5.4.3.1. अनुच्छेद मूलक स्तरीय विराम

–जिस व्यक्ति ने हेमवर्ण से बनवाये आभूषणों को क्रय करते हुए बेटी मदालसा के लिये मेरे दिये उपहार को लेना अस्वीकार दिया, जो अर्थ–शुचिता को अपना पवित्र कवच मानता है।[1]

–वही व्यक्ति आज असत्य बोल रहा है, इसे सही कैसे मान लें।[2]

(वैश्वानर, पृ0सं0–426)

5.4.3.2. अनुच्छेद मूलक उच्चाभिमुख

–"ई तो नन्दू महाराज, गजब हो गवा।"[1]

(गली आगे बढ़ती है,144)

–तुम मेरे बारे में जानते हो, फिर ऐसी हिचक क्यों?[2]
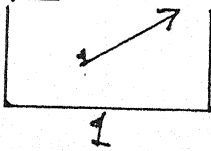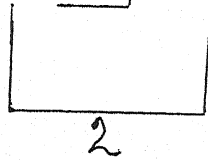
(गली आगे मुड़ती है,118)

5.4.3.3. अनुच्छेद मूलक निम्नाभिमुख

–उस दिन भी जब कनिया चारपाई पर से मुस्कराती हुई उठीं तो विपिन को लगा कि वे मायावी सरोवर में पूरी तरह उर चुकी हैं।[1]

–और उनके बालों की बिखरी लटों से रहस्मीय मुस्कराहट की अगनित बूँदे चू–चूकर विखर रहीं हैं[2]
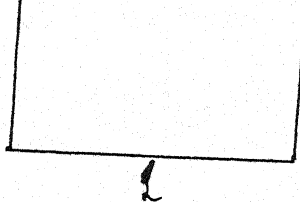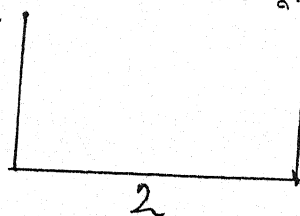
(अलग–अलग0, 125)

अतः विरामभाषा की एक महत्वपूर्ण औद्भूति है।

5.4.3.4. निष्कर्ष

उपर्युक्त प्रकरण में विश्लेपणात्मक, वाक्य विन्यास में समाविष्ट अति खण्डीय तत्वों में 'सुर', 'बालघात', वक्ता की मनः स्थिति और सुरक्रम तथा विराम भूला अभिव्यक्तियों की विवेचना की गयी उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रतिपाद्य उपन्यासों की वाक्य संरचना में इन अतिखंडीय तत्वों की उपस्थिति अत्यन्त सजीव और सक्रिय है।

❑❑❑

* प्रकरण – 6 *

हिन्दी संरचना में अर्थमूलक तत्व

–निजी और सार्वजनिक

–एकाकी पद

–प्रयोगान्तर्गत एकाकी व्याकरणिक प्रयोग

–संज्ञा विशेषण

–सर्वनाम संज्ञा

–सर्वनाम विशेषण

–विशेषण संज्ञा

–संज्ञा क्रिया विशेषण

–क्रियार्थक संज्ञा विशेषण

–समस्त पद

–वाक्यांश

–विशेष प्रयोग

प्रकरण – 6
हिन्दी संरचना में अर्थमूलक तत्व

6.1. निजी और सर्वाजनिक

–अरे उनकी खातिर–तवज्जह न होनी चाहिए बहूरानी

(सवि0)

–जमींदारी थी तो खातिर–तवज्जह भी थी। (निजी)

(अलग–अलग0, 257)

–विपिन का मन एक अजीब संशय में डूबा जा रहा था। (निजी)

(अलग–अलग0, 287)

–अपने मन का चोर बताता हूँ सरकार! (सार्व0)

(अलग–अलग0, 283)

6.2. एकाकी पद

–आज आपके पवित्र दर्शन से मैं भी कृतार्थ हुई। (निजी)

(नीलाचाँद, पृ0सं0–244)

–मैं आज पहली बार एक ऐसी नारी का दर्शन कर रहा हूँ, जिसने अपनी अन्तरात्मा में सारा ज्ञान छुपा लिया है। (सार्व0)

(नीलाचाँद, 311)

6.2.1. प्रयोगान्तर्गत एकाकी व्याकरणिक प्रयोग

6.2.1.1. संज्ञा– विशेषण

–देवा नम्बरी चोर और बदमाश है।

(अलग–अलग वैतरणी,59)

6.2.1.2. सर्वनाम – संज्ञा

–उसने तो वर्षो की साधना ही छीन ली।

(वैश्वानर, पृ0सं0–468)

6.2.1.3. सर्वनाम – विशेषण

–यह योजना सफल हो।

(वैश्वानर, पृ0सं0–428)

6.2.1.4. विशेषण – संज्ञा

– इस लंका में मुझे पहली बार लगा कि सब बहुरूपिये हैं।

(शैलूष, पृ0,सं0–265)

6.2.1.5. संज्ञा – क्रिया विशेषण

–महाराज पृथ्वीराज प्रवंचना से मारे गये।

(हनोज दिल्ली0, 180)

6.2.1.6. वर्तमान कालक कृदन्त – विशेषण

–मैंने लौटती सेना से भागकर काशी में शरण ले ली।

(नीलाचाँद, पृ0– 134)

6.2.1.7. वर्तमान कालिक कृदन्त– क्रि0 विशेषण

–आप अभी भी पितामह वैसे ही रस और कौतुकी बाना धारण करते आ रहे हैं।

(वैश्वानर, पृ0सं0–247)

6.2.1.8. भूत कालिक कृदन्त – क्रिया विशेषण

–तुम लाख कोशिश करतीं तो भी इस तरह की शादी नहीं करा सकती थीं।

(गली आगे मुड़ती है,159)

6.2.1.9. क्रियार्थक संज्ञा – संज्ञा

–यहाँ तो सब–कुछ बचाना ही विकट कर्म बन गया है।

(हनोज दिल्ली0, 79)

–खुदा का आना फरिश्तों को भी खुशियों से भर देता है।

(दिल्ली दूर है0, 119)

6.2.1.10. क्रियार्थक संज्ञा – विशेषण

–जाते वक्त बोला।

(अलग–अलग0, 238)

–एक कसकती– तीसती साँस उसके कलेजे से बाहर निकल गयी है।

(अलग–अलग0, 388)

6.3. समस्त पद

–आर्य पुत्र, हास–परिहास में त्वरा के कारण कभी–कभी ऐसे वाक्य निकल आते हैं।

(वैश्वानर, पृ0– 262)

–मामला रफा–दफा हो जायेगा।

(गली आगे मुड़ती है,36)

–यह चिड़िया कितनी अभिशप्त है वह खुद– चल उड जा रे पंछी – गुनगुनाती है।

(मंजुशिमा, पृ0– 83)

6.4. वाक्यांश

6.4.1. संज्ञा मूलक

–वह अपनी हथेली को उलटकर नहीं, हमेशा ऊपर रखकर देने वाला व्यक्ति है।

(मंजुशिमा, पृ0– 82)

–मनुष्य, मुनष्य के लिये वसुधैव– कुटुम्बकं का नारा लगाता है, खासकर हिन्दुस्तानी इस दिलफरेब नारे के बीच लोगों को लपटों में झोंक देता है।

(मंजुशिमा, पृ0– 83)

6.4.2. क्रिया मूलक

–भगवान ने चाहा तो पढ़–लिखकर कहीं "सेटल" कर जायेगा।

(अलग–अलग0, 146)

6.5. कालगत अर्थमूलक संरचनाएं

–अम्मा चारपाई पर गिरी सुबुक– सुबुक कर रोती रहीं।

(गली आगे मुड़ती है,161)

इस वाक्य में "रोती रहीं" में भूत से कार्य आरम्भ होकर वर्तमान तक चले आने का भाव निहित है।
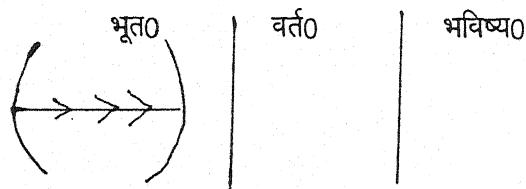
6.6. विशेष प्रयोग

जीवन में अभिशाप, वरदान, अपशब्द आदि प्रयोगों का अलग महत्व है। इनका संरचनात्मक अर्थ भिन्न होता है।

6.6.1. अभिशाप

–बज्जर परे उस करम निखट्टू पर। (अभिशाप मूलक)

(अलग–अलग0, 158)

6.6.2. अपशब्द

–उल्लू कहीं की।

(दिल्ली दूर है, 172)

6.6.3. <u>वरदान</u>

–"कल्याण हो, सौभाग्यवती हो, दूधो नहाओ पूतो फलो"

(गली आगे मुड़ती है,111)

–प्रभु उसे चिरायु करें।

(दिल्ली दूर है, 396)

6.8. <u>वाक्य में अर्थ रूपान्तर</u>

6.8.1. <u>निषेधात्मक – स्वीकारात्मक</u>

–"मणिभद्र के साथ कोई अल्ल भी तो होगा वत्स!"

(नीलाचाँद, पृ0सं0–108)

यह प्रयोग नकारात्मक है पर इसका अर्थ स्वीकारात्मक है।

6.8.2. <u>स्वीकारात्मक– निषेधात्मक</u>

–"तो क्या घोड़े पर सोना सीख लेते?"

(दिल्ली दूर है0, 272)

यहाँ भी नकारात्मक अर्थ प्रकट हो रहा है जबकि वाक्य स्वीकारात्मक है।

6.8.3. <u>केवल निषेधात्मक</u>

–"मैं झूठ क्यों कहूँगा सरकार।"

"क्या विपिन और उनके भइया में लड़ाई हुई थी?"

(अलग–अलग0, 284)

6.8.4. <u>साधारण वाक्य – मिश्र वाक्य</u>

–मैंने सिर्फ एक सत्य को साकार देखा है। (साधारण)

–मैंने सिर्फ एक सत्य को साकार देखा है, पुत्र कि राजा को श्रेय और यश प्रजा के शवों पर खड़ा होकर लेना पड़ा।

(हनोज दिल्ली, 86)

6.8.5. <u>संयुक्त वाक्य – मिश्रा वाक्य / साधारण वाक्य</u>

–ज्यों ही पुष्पी उनके सिरहाने खड़ी होकर आँखें मुलकाती, त्योंही माई कनिया को हाँक देकर बुलातीं।

(मिश्र वाक्य)

(अलग–अलग वैतरणी,77)

प्रहरियों ने उन्हें देखते ही रास्ता दे दिया।

(साधारण)

(वैश्वानर, पृ0सं0-122)

6.8.6. परस्पर सम्बन्ध विहीन व्यवस्था वाले वाक्य

–तुम क्या निर्णय करोगे– मैं नहीं जानती, पर उसकी व्यथा तो बढ़ेगी यह तै है।"

(दिल्ली दूर है0, 244)

6.8.7. निष्कर्ष

हिन्दी वाक्य संरचना में अर्थ मूलक तत्वों की जो विवेचना की गयी उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अर्थमूलक तत्वों संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रियाविशेषण आदि के प्रयोग अर्थद्योतन के लिये प्रभूत मात्रा में किये गये हैं। समस्त पदों और वाक्यांशों का प्रयोग भी इसमें सहायक हुआ है। इन अर्थमूलक तत्वों के विशेष प्रयोग अभिशाप, अपशब्द, वरदान आदि के रूप में भी किये गये हैं। इस विवेचन से यह भी निष्कर्ष निकला है कि वाक्य-संरचनाओं में अर्थरूपान्तरण की प्रक्रिया भी सक्रिय रही है। ऊपर से वाक्य देखने में निषेधात्मक लगता है पर उसका अर्थ विधानात्मक है और जो वाक्य ऊपर से स्वीकृति-सूचक लगता है वह पूरी तरह निषेधात्मक है।

❑❑❑

* प्रकरण - 7 *

विशेष रचनाएँ

–लोप

–स्वतः अनुमित

–प्रसंगानुमित

–सान्निध्य मूलक पद

–व्याकरणिक लोप

प्रकरण – 7

विशेष रचनाएं

7.1. लोप

7.1.1. लोप की प्रकृतियाँ दो हैं–

1. स्वतः अनुमित

2. प्रसंगानुमित

7.1.1. स्वतः अनुमित

–"चल।" (तू) (शैलूष, पृ0सं0– 157)

–"जाओ।" (तुम) (गली आगे मुड़ती है, 211)

–"चलो।" (तुम) (अलग–अलग0, 256)

–"छोड़ो।" (तुम) (वैश्वानर, पृ0सं0–307)

7.1.1.2. प्रसंगानुमित

–"सच?" (प्रश्न मूलक भाव) (शैलूष, पृ0सं0– 34)

–"हाँ।" (विधान) (शैलूष, पृ0सं0–150)

–"अच्छा.....!" (विस्मय) (गली आगे मुड़ती है, 137)

–"हाँ देवि" (स्वीकृति)माणिक ने कहा।) (नीलाचाँद, पृ0–341)

–शीलभद्रा ने माणिक को बुलाया है, माणिक उसके उत्तर में कहता है– हाँ देवि! अर्थात् इस वाक्य में "माणिक ने कहा" छिपा हुआ है। इसी तरह–

–"शीला" (विद्याधर) (नीलाचाँद, पृ0सं0–341)

इसमें विद्याधर छिपा हुआ है। और इसके उत्तर में

–"हूँ" यहाँ (शीलभद्रा ने उत्तर दिया) यह छिपा हुआ है।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–341)

–"कौन हे बाबा? इस वाक्य में श्री माँ ने पूछा– (द्वार पर कौन है?)

(नीलाचाँद, पृ0सं0–348)

–"अभी आई"

यहाँ (मैं) छिपा हुआ है।

–"तुम्हारा नाम क्या है माता?"

(सुहागिनी) इस दूसरे वाक्य में सुक्खू कैवर्त की पत्नी ने श्री माँ को उत्तर दिया यह छिपा हुआ है।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–349)

7.1.2. सान्निध्य मूलक पद

–"भैया एक कच्चोलक दूध दे और पानी"..।

इसमें पानी भी देना यह छिपा है।

(नीलाचाँद, पृ0सं0–310)

–"का चच्चा, कहाँ से?" (गाँव से आ रहा हूँ)

इस वाक्य में (मैं गाँव से आ रहा हूँ) यह लोप है।

(अलग–अलग वैतरणी, 44)

–"जरा पानी....."

इस वाक्य को पूरा करने के लिए –जरा पानी पिला दो पद का जोड़ना आवश्यक है।

(अलग–अलग0, 281)

–"फिर"? मकबूल ने पूछा।

यहाँ पर फिर याकूत को किसने मारा यह छिपा हुआ है।

(दिल्ली दूर है0, 356)

7.1.3. व्याकरिणक लोप (स्वतः अनुमित प्रसंगानुमित)

7.1.3.1. स्वतः अनुमित

पद लोप

–"अच्छा – जैसी (   ) मरजी। (तुम्हारी)

(गली आगे मुड़ती है, 144)

–सभी लोग (   ) तलाशने लगे।

(दिल्ली दूर है0, 235)

इस वाक्य में सभी लोग (अपनी बेशकीमती चीजों को) इतने अंश का लोप है।

–"(   ) अब चलता हूँ। (मैं)

यहाँ (मैं)पद का लोप है।

(वैश्वानर, पृ0स0–262)

–"(   ) हिन्दुखान को बाइज्जत लाया जाय।

यहाँ पर "रजिया ने हुक्म दिया" का लोप है।

(दिल्ली दूर है, 235)

–"(   ) यह आपकी जर्रानवाजी है सुल्ताना।"

यहाँ पर (हिन्दुखान ने कहा) यह अंश लुप्त है।

(दिल्ली दूर है, 236)

–"(   ) कथा सुनाते चलिये।"   (आप)

यहाँ (आप) का लोप है।

(वैश्वानर, पृ0सं0– 325)

–"बन्द करें वत्स (   ) हो गया।"

यहाँ पर (बहुत) का लोप है।

(हनोज दिल्ली0, 154)

परसर्ग लोप

–तुम बीस–पचीस ड्योढ़ीदार सिपाहियों को लिये जहाँ आरा समय (   ) धरेने चले गये।

इस वाक्य में (को) परसर्ग लुप्त है।

(दिल्ली दूर है, 205)

–आपके खेलों से मुझे बड़ा भय लगता है।(   ) रोज दंगे– फसाद। रोज हत्या वध, रोज थुक्का– फजीहत।

यहाँ पर (दिल्ली में) अंश लुप्त है। (में) अधिकरण परसर्ग ता चाहें तो इसमें (होते हैं) क्रिया अर्थात् व्याकरणिक लोप भी मान सकते हैं।

वाक्यांश लोप

–"मैं भाभी जू जैसा हृदय जो नहीं रखती, वे एक साथ वज्र और मृदु कुसुम दोनों हैं...(पर मा नहीं हूँ) का लोप है।

(दिल्ली दूर है, 230)

–"गरबा माने (   )?"

–गर्भदीप घट। फिर गर्भदीप, पुनः गरभा और अन्त में गरबा।"

(गली आगे मुड़ती है, 58)

7.1.3.2. प्रसंगानुमित

पद लोप

–(   ) सार में से गोबर निकालता। (धुरबिनवा)

यहाँ (धुरबिनवा) का लोप है।

(अलग–अलग0, 159)

–"किरण क्या मेरी (   )"   (हो सकेगी)

यहाँ (हो सकेगी) पद का लोप है।

(गली आगे मुड़ती है, 133)

–"नहीं बशीर, पहला हमला तुम्हारी आरे से (   )"

यहाँ (होना चाहिए) पद का लोप दर्शाया है।

(शैलूष, पृ0सं0– 148)

–"बोलो बाबा मखदूम (   )।"

यहाँ (की जय) का लोप है।

(शैलूष, पृ0सं0–149)

संवादान्तर्गत : पद लोप

–"आनन्द, तुम कुछ कह रहे थे, वत्स।" "हाँ" (   )

यहाँ (मैं कहा रहा था) पद का लोप है।

(हनोज दिल्ली0, 94)

–पवन किस दिशा में जा रहा था?

चित्रकूट की ओर (   )

इस वाक्य में (जा रहा था) पद का लोप है।

(दिल्ली दूर है0, 101)

–"क्या ऊपर सेनापति आनन्द काका नहीं थे?

(   ) थे तो।

(सेनापति आनन्द काका) पद का लोप है।

(हनोज दिल्ली0, 36)

वाक्यांश लोप

–"तो तुम लोग कसम खाते हो न?"

हाँ, (   )।

यहाँ पर (हम लोग कसम खाते हैं) वाक्यांश का लोप है।

(अलग–अलग0, 138)

उपवाक्य लोप

–रजिया सुल्ताना बनेगी मगर......।"

(यह कि अन्तिम दिनों में उसे सप्तमेश शनि घेरेगा) उपवाक्य का लोप है।

(हनोज दिल्ली0, 40)

वाक्य लोप

–तुमको सबसे योग्य लोचन ही लगता है?

"यस सर! (   )

यहाँ (मुझे सबसे योग्य लोचन लगता है) वाक्य का लोप है।

(अलग–अलग0, 104)

7.1.4. अवशिष्ट

–"किसने मारा तुझे?"

"इछूने।"

(अलग–अलग वैतरणी, 78)

–"झिनकू भाई तो ठीक हैं न रे?"

"हाँ चाचा।"

–"गाड़ी चाहिए कब?"

"परसों सुबह।"

(अलग–अलग0, 385)

प्रश्न का उत्तर देते हुए वाक्य का सबसे महत्वपूर्ण पद ही अवशिष्ट रह जाता है।

7.2. पूर्वग्रहण

सामान्यतया पूर्वोक्त वाक्य का उत्तरार्द्ध परोक्त वाक्य का पूर्वार्द्ध बन जाता है।

–लड़की को संस्कृत से एलर्जी है,

इसलिये सस्कृत पर ज्यादा ध्यान दो।

(गली आगे मुड़ती है, 45)

7.3. समानाधिकरण

इसका प्रयोग व्यक्ति वा0 संज्ञाओं तथा पुरूष वाचक सर्वनामों में पाई जाने वाली अस्पष्टता के निवारणार्थ होता है।

समानाधिकरण का प्रयोग विकारी अविकारी दोनों रूपों में होता है। शून्य रूप तत्व तथा कभी–कभी मुख्य पद एवं समानाधिकरण पद के बीच –तो–भी–ही आदि अव्यय भी आते हैं।

7.3.1. अविकारी प्रयोग (शून्य तत्व रूप)

–लोचन –चपरासी स्कूल की एक अनुपम हस्ती थे।

(अलग–अलग0, 103)

7.3.2. देवनाथ बचवा तो धन्वन्तरि हैं।

यहाँ बलात्मक (तो) अव्यय का प्रयोग है।

(अलग–अलग0, 306)

7.4. मीमांसना

मनुष्य आत्म स्वीकृति और आत्म निषेध की प्रवंचना के बीच से अपनी वैयक्तिक–चिन्तन– धारा को अग्रसारिक करने का प्रयास करता है।

उसके कथन में उसके चिन्तन की पूर्वावस्था और पश्चावस्था के बीच विद्यमान रहते हैं।

7.4.1. कथनों में सम्बन्ध

सामान्यतया कथनों में पारस्परिक संबध तीन प्रकार का होता है–

1. परस्पर विरोधी
2. क्रम मूलक
3. परस्पर मूलक

7.4.1.1. परस्पर विरोधी

मै कह रहा हूँ कि घण्टा पन्द्रह मिनट पहले क्यों बजाया तो कह रहा है अभी बजाता हूँ टिफिन की घण्टी।

इस वाक्य की अन्तः व्यवस्था पर ध्यान देने से यह तथ्य सामने आता है कि पहले वाक्य में निहित अर्थ का विरोध दूसरे वाक्य में निहित अर्थ से हो रहा है।

(अलग–2 वैतरणी–104)

–"दीनबन्धु मेरे पिता थे, पर पुत्रबन्धु बिल्कुल नहीं थे।

यहां भी पहले वाक्य में निहित अर्थ का विरोध दूसरे वाक्य में निहित अर्थ से हो रहा है।

(गली आगे0 – 167)

7.4.1.2. क्रम मूलक

–"मै कौन होता हु क्षमादान करने वाला। क्षमादान की शक्ति तो परब्रह्म ने मात्र विष्णु कलांश अवतारी भ्रातृवर धन्वन्तरि को दी है।

(वैश्वानर – 250)

उपर्युक्त प्रथम वाक्य से दूसरा वाक्य निकल रहा है। पहले वाक्य में ऐसे प्रेरक तत्व हैं, जिनके प्रभाव में पश्चकथन की संभावना रही है।

–अदिति मात्र अदित्यों की माता नहीं है। वह तो सर्वसुख, सर्वजीवन और सर्वविकास का प्रतीक है। वह कमल का ऐसा पुष्प है जो सहस्त्रों पंखुरियों में निरन्तर खिलता रहा है।

(वैश्वानर – 214)

उपरोक्त उदाहरण में पहला, दूसरा और तीसरा वाक्य एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। यहां अर्थ की एक ही दिशा है, जो पूर्व–कथन से व्यक्त होकर अपनी प्रवृत्ति के अनुसार एक ही दिशा में बढ़ती चली गयी है।

7.4.1.3. परस्पर – पूरक

परस्पर–पूरक कथनों में सजातीय शब्दावली का प्रयोग होता है। इनके मूल में यह भावना निहित होती है कि पूर्व कथन की पुष्टि उसी प्रकार के कथनों द्वारा की जाये।

–इस हेमन्त की दोपहरी में, जब सीढ़ियों पर चढ़ते–उतरते छाले पड़ जाते हैं, आपने मुझे शीतल जल दिया, दुग्ध दिया, और मैंने अपने अभिमान के कारण उसी सूत्र को काटने का अपराध कर दिया, जो हमें आप लोगों से जोड़ने का कार्य कर रहा है।

(नीलाचांद – 311)

अतः कुछ प्रसंग और परिस्थितियों में ये बिशेष–वाक्य रचनायें ही सार्थक होती हैं। सामान्य वाक्य अभिप्राय को व्यक्त करने में समर्थ नहीं होते।

7.4.1.4. निष्कर्ष

ऊपर वाक्य संरचना-सम्बन्धीं जिन विशेष रचनाओं पर विचार किया गया उससे यह सूचित होता है कि प्रतिपाद्य उपन्यासों में लोप की प्रवृत्ति सभी स्तरों पर मिलती है। व्याकरणिक लोप के साथ कई स्थानों पर परसर्गों के लोप की प्रवृत्ति भी सक्रिय है। कहीं-कहीं पूरे वाक्यांश के लोप की प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है। इसके साथ ही कई स्थानों पर पद लोप भी मिलता है। संवादों के अन्तर्गत भी पद, वाक्यांशों के लोप की प्रवृत्ति अत्यधिक लक्षित होती है। कई स्थानों पर किसी प्रश्न का उत्तर देते समय महत्वपूर्ण अंश ही छोड़ दिया गया है (7.1.4.)। कहीं-कहीं अर्थ की पूर्ति के लिए पूर्व ग्रहण करना पड़ता है।

निष्कर्ष यह कि हमारे विवेच्य उपन्यासों में वाक्य संरचना मूलक प्रयोग के स्तर पर सक्रिय और जीवंत है। यहीं संरचनाएँ उपन्यासों के उद्देश्य को पूरा करती हैं और लेखक के कथ्य को संप्रेपणीय बनाती है।

❑❑❑

* प्रकरण - 8 *

-उपसंहार

प्रकरण 8

उपसंहार

यहाँ तक डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों की वाक्य-संरचना का विविध कोणों से विवेचन किया गया। इस अनुशीलन से प्रयुक्ति के स्तर पर वाक्य-संरचना के कई स्तर सामने आये हैं। डॉ. शिव प्रसाद सिंह यों तो प्रमुख रूप से एक कथाकार और उपन्यास लेखक थे। जीवन के उत्तर पर्व में उनकी प्राथमिकतायें उपन्यास-रचना में ही समाविष्ट हो गयी थी। उनका अन्तिम और अधूरा उपन्यास 'अनहद गाजै' है जो कबीर पर था। उनका अन्तिम प्रकाशनाधीन उपन्यास 'कहाँ-कहाँ खोजूँ' है। उनके उपन्यासों की वाक्य संरचना के अनुशीलन से मैं इस परिणाम पर पहुँची हूँ कि उनके उपन्यासों का शिल्प और ढाँचा सर्वथा मौलिक है। उन्होंने किसी की बनाई हुई राह पर न चलकर अपनी राह स्वयं बनाई और उसी पर वे चले। यही नहीं स्वयं बनाइ गयी राह को भी वे छोड़ते गये और नयी राह का सदैव अन्वेषण करते गये। उन्होंने 'अलग-अलग वैतरणी' में उपन्यास का जो ढाँचा चुना उसे 'गली आगे मुड़ती है' में एकदम छोड़ दिया। और 'गली आगे मुड़ती है' का जो ढाँचा है उसे 'नीला चाँद' में छोड़ दिया। 'नीला चाँद' के ढाँचे को उन्होंने 'कुहरे में युद्ध' और 'दिल्ली दूर है' में नहीं अपनाया। 'मंजुशिमा' बिल्कुल भिन्न तेवर की रचना है और 'शैलूष' तो और भी भिन्न है। इससे भिन्न तो 'औरत' उपन्यास भी है और अन्तिम उनके समय में प्रकाशित उपन्यास 'वैश्वानर' तो एकदम भिन्न है। इन उपन्यासों की भिन्नता सिर्फ शिल्प या ढाँचे में ही नहीं है अपने भाषादर्श और वाक्य संरचना में भी है। उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा है :

''आपका कार्ड। अलग वैत. पढ़कर आपको संतोष हुआ, मुझे खुशी हुयी। आपका लम्बा पत्र मिल चुका था। उसी वक्त एक कार्ड भेजा था। आपको लगा कि मैं किसी भी रचना में अपनी शैली दुहराता नहीं, नतीजा बड़े कड़वे अनुभव। इसी का परिणाम है 'हंस' जून में एक सज्जन की 'शैलूष' और 'औरत' पर समीक्षायें। लगता है मै नया शिल्प और विषय खोजते-खोजते जब तक आँखें मूदूँगा तब तक मुदर्रिसनुमा आलोचक कुछ-न-कुछ सुई चुभाते चलेंगें।''(1)

इसी तरह उनके हर उपन्यास की वाक्य संरचना में भी अन्तर है। 'अलग-अलग वैतरणी' की जो वाक्य संरचना या भाषा है वह 'गली' अथवा 'शैलूष' की नहीं है, और भाषा और वाक्य गठन का जो 'पैटर्न' 'कुहरे' या 'नीला चाँद' में है वह 'वैश्वानर' में नहीं है। डॉ. शिव प्रसाद सिंह की इसी वाक्य संरचना का अनुशीलन आठ प्रकरणों में बाँटकर किया गया है। इस अनुशीलन की प्रकृति संश्लेषणात्मक तथा संकेन्द्रित है।

प्रकरण-1 में 'शिवप्रसाद सिंह : उपन्यास-सृष्टि और वाक्य-संरचना' पर विचार

---

1. दस्तावेज-81 में ''पत्रों के आकाश में नीलाचाँद'', पृष्ठ 20

किया गया है।

वाक्य भाषा की न्यूनतम सार्थक इकाई है। पूर्ण अर्थ द्योतक, अन्वय-युक्त पद समष्टि का नाम वाक्य है किसी भी भाषा में 'जिस उक्ति में सार्थकता है और विन्यास की दृष्टि से जो स्वतः पूर्ण है उसी कथन की इकाई को व्याकरण में वाक्य कहा जाता है। वाक्य में उद्देश्य पद के साथ-साथ उसका पूरक स्थानीय विधेय पद जरूर होता है। गठन के अनुसार वाक्य सरल, मिश्रित और संयुक्त वाक्यों में विभाजित किया जाता है। वाक्य के अन्तर्गत वाक्य रूपान्तरण, वाक्य विभाजन, वाक्य विश्लेषण, वाक्य प्रसारण तथा वाक्य संयोजन आ जाता है। वाक्य वाक्यांशों की समष्टि होता है। वाक्य के एक से अधिक पद युक्त अंश को वाक्यांश कहा जाता है। वाक्यांश के अन्तर्गत कर्ता, कर्म, पूरक, क्रिया विशेषण, क्रिया तथा विशेषण वाक्यांश आते हैं। बीज वाक्यों का विस्तार इन्हीं वाक्यों पर निर्भर रहता है।

वाक्य का महत्त्वपूर्ण अंश सुर या बलाघात होता है। इसका संबंध वक्ता वाक्य के विभिन्न पदों का उच्चारण कैसे करता है, इससे होता है। 'सुर' या 'बलाघात' के कारण वाक्य के अर्थ बदल जाते हैं। इसका संबंध वाक्य के 'आर्थिक' पक्ष से होता है। वक्ता वाक्य के किस 'पद' पर जोर दे रहा है इस आधार पर उसका अर्थ कुछ-का-कुछ हो जाता है।

वाक्य की जीवंतता वाग् धारा अथवा कहावत और मुहावरों पर निर्भर रहती है। इनमें लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ को प्रधानता दी जाती है।

वाक्य भाषा की एक अखण्ड इकाई है। पद की सत्ता उसकी अखण्डता में बाधक न होकर साधक होती है वाक्य में पदों का महत्त्व स्वतः सिद्ध है, फिर भी वे एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। इस दृष्टि से समवेत रूप में किसी वाक्य के लिये सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, सन्निधि, अन्वय और क्रम ये छह तत्व बहुत आवश्यक होते हैं। वाक्य के शब्द सार्थक हों, उनमें परस्पर संगति हो, वे पूरा अर्थ देने की अपेक्षा को पूरा करते हों, वे एक-दूसरे के निकट हों, लिंग, वचन, कारक आदि की दृष्टि से वे एक रूप हों, उनका क्रम भी व्याकरण के अनुसार हो।

वाक्यों का विभाजन उद्देश्य विधेय तथा उपवाक्यों में किया जाता है। इन्हीं सब बिन्दुओं के आधार पर मैंने अपने प्रतिपाद्य डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों की वाक्य संरचना का अनुशीलन किया है।

ऊपर विषय प्रवेश के मुख्य प्रतिपाद्य का विवेचन किया गया है। जिन बिन्दुओं के आधार पर शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों का अनुशीलन विधेय है उसे सुगम बनाने के लिये उनके उपन्यासों की मुख्य विषय वस्तु, उनका उपन्यास शिल्प भाषादर्श और वाक्य संरचना-सम्बन्धी लेखक के स्वयं के विचारों का विवेचन करना भी आवश्यक है। विषय प्रवेश में इन बिन्दुओं को भी उठाया गया है।

ग्रामीण परिवेश पर लिखित उनका पहला उपन्यास 'अलग-अलग वैतरणी' है, 1967-68 के भाषा आन्दोलन और युवा आक्रोश पर लिखित उनका दूसरा उपन्यास 'गली आगे मुड़ती है'। इसे डॉ. सिंह ने काशी पर केन्द्रित अपनी उपन्यास श्रृंखला की अन्तिम कड़ी भी कहा है। इसी श्रृंखला का दूसरा उपन्यास 'नीलाचाँद' है जो व्यक्ति की अमोध इच्छा शक्ति का निदर्शन है। प्रकाशन के क्रम में नटों की जिन्दगी पर आधारित उपन्यास 'शैलूष' है और अपनी पुत्री के जीवन पर आधारित 'मैंजुशिमा' है। उसके बाद मध्यकाल पर आधारित 'कुहरे में युद्ध' तथा 'दिल्ली दूर है' और इनके बाद 'औरत' तथा अन्तिम उपन्यास 'वैश्वानर' है। यह काशी श्रृंखला का सबसे बाद में प्रकाशित किन्तु कथ्य की दृष्टि से पहला उपन्यास है।

अपनी उपन्यास-रचना की प्रेरणा-भूमि की चर्चा करते हुये लेखक का यह कथन विचारणीय है : हिन्दी कथा साहित्य में मेरा प्रवेश शरत्, तोल्स्तोय, चेखब और तुर्गनेव के बीच से हुआ, प्रेमचन्द और जैनेन्द्र के भीतर से नहीं। मैंने आंचलिक सम्मोहन या नास्टेलजिया को तोड़ने के लिये 'अलग-अलग वैतरणी' लिखी। अपने उपन्यासों की रचना-प्रक्रिया की चर्चा के क्रम में लिखा भाषा-व्यक्तिकर सौन्दर्य को कई प्रसिद्ध आलोचकों ने सराहा है। .... सिर्फ सोचें कि अगर 'नरेशान' को 'डिस्टार्शन' में बदला गया तो एक क्या कोई नई सोच, या धारणा या अन्योक्ति कुछ भी झलकी या कि ये शब्द पाठक को बाधा पहुँचाने मात्र के लिये लिखे गये। आप यह तो सोचकर चलें ही कि वैदिक भाषा, संस्कृति, प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी काशिका का साथ-साथ निर्वहन किया गया है अब आपकों यह प्रयोग खींचता है कि धक्का मारता है---- अलग बात है।''[1]

इस दृष्टि से उनकी वाक्य संरचना में उनके व्यतिकरों विचलन-विपथन और वाग्धारा प्रयोग का सौन्दर्य दृष्टिगत होता है।

विषय प्रवेश में ही डॉ. शिव प्रसाद सिंह की उपन्यास-सृष्टि से चुने हुये वाक्य प्रसंगों का उल्लेख कर एक नजर में उनकी वाक्य संरचना के कुछ नमूनों को प्रत्यक्षीकृत किया गया है।

अनुशीलन के क्रम में वाक्य संरचना मूलक पतिपाद्य का पद स्तरीय विवेचन प्रकरण-2 के अन्तर्गत किया गया है। 'संश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास प्रतिपाद्य उपन्यासों का पद स्तरीय अनुशीलन' के क्रम में वाक्य संरचना का अपरिहार्य सिद्ध तत्व पद है। इसके अन्तर्गत (2.1.0) संज्ञा वाक्य विन्यास, कारकीय संरचनायें (2.1.1.) व्यक्तिवाचक (2.1.1.1.), जातिवाचक (2.1.1.2.), द्रव्य वाचक (2.1.1.3.), समूह वाचक (2.1.1.4.), विशिष्ट धर्मिता युक्त व्यक्तिवाचक, संज्ञायें-जातिवाचक संज्ञायें (2.1.1.5.) भाव वाचक संज्ञायें (2.1.1.6.) ली गयी हैं। फिर 2.1.1.5. के

---

1. दस्तावेज-81, ''पत्रों के आकाश में नीलाचाँद'' पृष्ठ 9

अन्तर्गत इन्हीं पद संरचनाओं पर लिंग की दृष्टि से विचार किया गया है। इसमें मुख्य संज्ञा पद ऊपर के ही लिये गये हैं।

लिंग की दृष्टि से शिव प्रसाद सिंह का रुझान अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त, इकारान्त शब्दों के प्रयोग की ओर अधिक है। प्रायः आकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंग माने जाते हैं किन्तु, प्रतिपाद्य उपन्यासों में इनके अपवाद स्वरूप 'आकारान्त' और 'इकारान्त' 'पुल्लिंग के रूप में प्रयुक्त हुये हैं जैसे, ओबरा, सिगरौली, अनपरा (विद्युत गृह)। इनका लिंग निर्धारण अगली संज्ञा के आधार पर हुआ है और उपर्युक्त संज्ञायें दर-असल स्थान वाची विशेषण हैं और विशेषण का लिंग निर्धारण विशेष्य के आधार पर होता है। डॉ. सिंह ने भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण-पन, - ता, - आहट (उकलाहट), - ई, आदि प्रयत्यों के आधार पर किया हैं इसी तरह समूह वाचक संज्ञा पदों का विस्तार युग्म से लेकर झुंड, दल, गुच्छ, गुट, टोली, गुच्छा, कुंज, पंक्ति, सेना, गुल्म तक फैला हुआ है।

इसी प्रकरण के अन्तर्गत सर्वनाम वाक्य विन्यास की सर्वनामिक पद-संरचना का अनुशीलन किया गया है। शिव प्रसाद सिंह ने आत्म कथात्मक शैली में लिखे उपन्यास 'गली आगे मुड़ती है' में उत्तम पुरुष वाची 'मैं' सर्वनाम के अविकारी और विकारी रूपों के सर्वाधिक प्रयोग किये हैं। उन्होंने 'हम' सर्वनाम के भी एक वचनान्त तथा बहुवचनान्त प्रयोग किये हैं।

उत्तम पुरुष सर्वनाम के साथ मध्यम पुरुष 'तुम सर्वनाम की भी अविकारी, विकारी पद संरचनाओं का मेरे प्रतिपाद्य उपन्यासों में भूरिशः प्रयोग उपलब्ध होता है। इसके 'तुम', 'तूं', आप, तुम लोग, तुमसे, तुम लोगों से, तुझको, तुमने, आपको, आपके लिये, तुम्हारे लिये, आपने, तुम्हें, तूने, तुम पर, तुम्हें, आदि रूपों का प्रयोग डॉ. सिंह के उपन्यासों में हुआ है।

'अन्य पुरुष' अविकारी तथा विकारी सार्वनामिक रूपों में 'वे', 'वह', 'ऊ', 'उसने', 'उनको', 'उन्हें', 'उसे', 'उन्हीं', 'उससे', 'उनके लिये', 'उनमें', 'उसी में', 'आप, आपका', 'आपके लिये', 'आपने', 'खुद, स्वयं', 'अपने को', स्वयं पर, खुद पर, के विविध धर्मी प्रयोग हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में मिलते हैं। 'निश्चय वाचक', सर्वनाम के 'यह', 'वह', 'सो' के विविध रूप भी इन उपन्यासों में मिलते हैं। इसका एक प्रयोग 'ई' भी उपलब्ध होता है। इस सर्वनाम के विकारी रूपों में 'इससे', 'इसने', 'इसे', 'इन लोगों ने', 'इसमें', इस (बात) को 'इन्हीं', 'सो' आदि रूपों का व्यवहार किया गया है। इसी प्रकार सम्बन्ध वाचक सर्वनामों में 'जो' (अविकारी) 'जिसे', 'जिसमें', 'जिनको', 'जिन्हें,' 'जिसको', 'जिनसे' आदि रूप उपलब्ध होते हैं। अनिश्चिय वाचक सर्वनामों में 'कोई', 'कुछ', तथा 'सब', 'हर', और 'दूसरा', दूसरे आदि शब्दों के साथ इनके कुछ विशिष्ट प्रयोग भी हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में मिलते है। इसके विकारी रूपों में 'किसी', 'किसी को', 'किसी में', 'किसी के', 'किससे' आदि रूपों का प्रयोग किया गया है। प्रश्नवाचक सर्वनामों के अविकारी तथा

विकारी रूपों में 'कौन', 'किसका', 'किससे', 'किसने', 'किसको' के प्रयोग किये गये हैं। कुछ प्रयोग 'क्या' सर्वनाम में 'किसकी-किसकी', 'किसी-न-किसी', 'सब कुछ', 'अपने आप', 'जो कुछ' के रूप मिले हैं।

कारक वाक्य विन्यास (2.3.) में विकारी तथा अविकारी कारकीय संरचनाओं का विवेचन किया गया है। विकारी कारकीय पद-संरचनाओं की विवेचना की गयी है। विकारी कारकीय संरचनाओं में कर्ता परसर्गयुक्त नाम पद (2.3.2.1.) करण परसर्ग युक्त नाम पद (2.3.2.2.), करण परसर्ग युक्त नाम पद (2.3.2.3.), अधिकरण परसर्गयुक्त नाम पद (2.3.2.4.) 'को' परसर्ग या 'ए' विभक्ति युक्त नाम पद (2.3.2.5.) के लिये परसर्ग युक्त नाम पद (2.3.2.6.), 'से' परसर्ग युक्त नाम पद (2.3.2.7.) प्रयुक्त हुये हैं। अन्य परसर्गीय रचनाओं में 'में', 'पर' परसर्ग युक्त नाम पद, विशिष्ट प्रयोग भी उपलब्ध होता है। अन्य परसर्गीय रचनाओं में 'करण परसर्ग युक्त नाम 'पद', 'कर्म', 'विशेषक', 'अधिकरण' 'अपादान' कारकीय परसर्ग पद संरचनाओं का हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में प्रयोग किया गया है।

विशेष कारकीय पद संरचनाओं में 'विशेषण वाक्य-विन्यास' के अन्तर्गत डॉ. शिवप्रसाद सिंह ने अपने उपन्यासों में सार्वनामित विशेषण - मूल और साधित, सम्बन्ध सूचक विशेषण, गुणवाचक विशेषण के अन्तर्गत क्रम और आवृत्ति, समुदाय सूचक, 'प्रत्येक' के विभिन्न प्रयोग किये हैं। अनिश्चिय संख्या वाचक विशेषण के अन्तर्गत 'एक', 'एक+अव्यय', संख्यावाचक विशेषण द्वित्व, संख्या वाचक विशेषण+संख्या वाचक विशेषण, अन्य सूचक 'और', 'अन्य', दूसरा+अन्य शब्द भेद, सर्वसूचक शब्द, आधिक्य और न्यूनता-सूचक शब्द, अनेकता सूचक शब्द, निश्चित गणना वाचक + अनिश्चित गणना वाचक विशेषण पद संरचनाओं के भी प्रतिपाद्य उपन्यासों में प्रयोग मिलते हैं।

परिणाम वाचक विशेषणों में अनिश्चित परिमाण वाचक, विशेषण, 'थोड़ा, 'सारे', 'घंटा भर और', 'और दीनारें', तथा निश्चित परिमाण वाचक विशेषणों में 'एक घटी', 'पावभर', 'एक टुकड़ा' एक सौ पाँच गज ऊँचा' जैसी पद संरचनायें हैं। डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में क्रिया-वाचक विशेषण पद-संरचनाओं के भी प्रयोग मिलते हैं। इसके अन्तर्गत संज्ञा और सर्वनाम के योग से बने विशिष्ट विशेषण पद संरचनायें - सो' के स्थान पर 'जैसा', 'सरीखा', 'का-सा' के योग से निर्मित कुछ पद संरचनाओं का भी विवेचन किया गया है। इसी के अन्तर्गत विशेषण 'द्वित्व' और विशेषण 'युग्मक' प्रयोग जैसे, 'जुदा-जुदा', 'बड़े-बड़े', 'डरा-डरा', 'खाली-खाली', 'हँसते-हँसते', बलद्योतक गुणवाची विशेषणों में 'सुरमई रोशनी' 'धन-दौलत', 'गुलाम और बन्धकी', 'लाड़-प्यार', 'कुटुम्ब-कबीले', 'साफ-सुथरी', और तुलनात्मक विशेषण पद- संरचनाओं में 'साँवले', 'वादामी' 'काली वस्त्र पट्टिका', 'अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा', 'सुनहले बालों', 'एकदम', 'पीली बर्र का

छत्ता', 'पीत सर्पप के दाने' के साथ 'साम्य', 'आधिक्य' तथा न्यूनता-सूचक' जैसे प्रयोग भी मिलते हैं। उत्तरावस्था सूचक विशेषण पद- संरचनाओं में डॉ. शिव प्रसाद सिंह ने 'सबसे शब्द- के साथ 'विशेषण' जोड़कर एक समुदाय में विशिष्टता सूचक पद संरचनाओं का निर्माण है।

क्रिया वाक्य विन्यास के अन्तर्गत प्रतिपाद्य उपन्यासों में मैंने 'अकर्मक' और 'सकर्मक' पद संरचनाओं की छानबीन की है। प्रेरणार्थक क्रियाओं में, 'अकर्मक व्यंजनान्त', 'अकर्मक स्वरान्त, 'सकर्मक व्यंजनान्त', सकर्मक स्वरान्त' तथा क्रिया रूपान्तर मूलक पद-संरचनाओं पर लिंग, वचन, पुरुष, काल, अर्थ और वाच्य के सक्रिय योग की विवेचना की गयी हैं। इन पद-संरचनाओं का प्रतिपाद्य उपन्यासों में अत्यधिक विस्तार उपलब्ध होता है इसलिये विविध कालों में ऐसी क्रिया-पद-संरचनाओं की सम्भावनाओं के कतिपय उदाहरणों से ही संतोष करना पड़ा है। विवेचन के क्रम में ऐसा आभासित हुआ है कि डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों की क्रिया-पद-संरचना की दृष्टि से विशेष खोजबीन करके शोध के नये आयामों का उद्घाटन किया जा सकता है।

कृर्त्तृ वाच्य (2.5.3.1.) के अन्तर्गत 'भूत विधानार्थी', 'भूत सम्भावनार्थी', 'भूत सन्देहार्थी', 'भूत संकेतार्थी', 'वर्तमान विधानार्थी', 'वर्तमान अनुमत्यार्थी', 'वर्तमान संकेतार्थी', 'वर्तमान आज्ञार्थी', 'वर्तमान अनुमत्यार्थी', 'भविष्य विधानार्थी', 'भविष्य संभावनार्थी', 'भविष्य आज्ञार्थी', 'भविष्य आदरार्थी', 'भूत विधानार्थी', 'भूत संदेहार्थी', 'वर्तमान विधानार्थी', क्रियापद संरचनाओं पर विचार किया गया है। फिर इन्हीं क्रिया-पद-संरचनाओं को कर्म वाच्य (कर्म कर्मणि प्रयोग- 2.5.3.4.) के अन्तर्गत खोजा गया है।

2.5.4. प्रकरण के अन्तर्गत संयुक्त क्रियाओं पर विचार किया गया है। ये पद संरचनाएँ हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में प्रायः मूल धातु से निष्पन्न क्रिया, क्रियार्थक संज्ञा, संज्ञा, विशेषण और कृदन्त मुख्य क्रिया के रूप में प्रयुक्त हुई हैं। इन्हीं सन्दर्भों में संयुक्त क्रिया-पद-संरचना की विवेचना की गयी है। 2.5.5. उप प्रकरण के अन्तर्गत संयुक्त क्रिया पद संरचनाओं के साथ सहायक क्रिया पदों की स्थिति की भी विवेचना की गयी है। हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में क्रिया-पद-संरचनाओं के विविध भेद और उनकी विविधमुखी प्रयोग गत स्थितियाँ उपलब्ध होती हैं।

2.5.6. उप प्रकरण में 'बलान्वित क्रिया मूलक' पद संरचनाओं के अन्तर्गत अपने प्रतिपाद्य उपन्यासों में मैंने 'ही', 'भी', 'भर', 'मात्र', 'तो', आदि अव्ययों के साथ मुख्य क्रिया के बाद तथा सहायक क्रिया के पहले की स्थितियों की विवेचना की है। इन अव्ययों के प्रयोग से वक्ता की क्रियामूलक दृढ़ता का पता चलता है।

उपशीर्षक कृदन्त वाक्य विन्यास (2.5.7.) के अन्तर्गत क्रियार्थक संज्ञा, कर्त्तृवाचक संज्ञा, संज्ञाओं की भाँति प्रयुक्त, विशेषणों की भाँति प्रयुक्त कृदन्तों की विविध प्रयोगिक स्थितियों को प्रतिपाद्य उपन्यासों में खोजा गया है। वर्तमान कालिक कृदन्तों की भी विविध प्रयोगिक स्थितियों

की मैंने अपने प्रतिपाद्य उपन्यासों में खोजबीन की है और इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि कृदन्तों की दृष्टि से भी डॉ. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास अत्यन्त समृद्ध हैं। क्रिया वाक्य विन्यास को मैंने कर्त्तृवाच्य के अतिरिक्त कर्मवाच्य, और भाव वाच्य के अन्तर्गत भी विवेचित किया है। इसी प्रकार के अन्तर्गत क्रिया विशेषण वाक्य विन्यास की विविध स्थितियों को खोजा गया है।

प्रतिपाद्य उपन्यासों में संश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास का अनुशीलन प्रकरण-3 के अन्तर्गत किया गया है। हिन्दी व्याकरण के अनुसार वाक्य, उपवाक्य और वाक्यांश के आधार पर वाक्य स्तरीय संरचनाओं का निर्माण होता है। वाक्यांश वाक्य के वे सक्रिय आधारभूत अवयव हैं, जिनकी व्यवस्थित योजना से वाक्य-संरचना सम्भव होती है। वाक्यांश परस्पर सम्बद्ध एक से अधिक पदबंधों का वह समूह होता है जिससे पूर्ण विचार का बोध तो नहीं होता किन्तु, किसी भी तथ्य का संश्लिष्ट बोध हो जाता है। इन्हीं वाक्यांशों की संयोजित समष्टि से वाक्य का निर्माण होता है।

संरचना की दृष्टि से हिन्दी में साधारण, मिश्रित और संयुक्त तीन प्रकार के वाक्य माने जाते हैं। साधारण वाक्य में उद्देश्य और विधेय की सत्ता रहती है। मिश्रित वाक्यों में मुख्य उपवाक्य के साथ उसके अधीन उपवाक्य या एक से अधिक उपवाक्यों की समष्टि रहती है। संयुक्त वाक्यों में समान उपवाक्य रहते हैं जो और, किन्तु, परन्तु, एवं, बल्कि जैसे योजक चिन्हों से जुड़े रहते हैं।

संश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास के अन्तर्गत अपने प्रतिपाद्य उपन्यासों की वाक्य मूला संरचना के अनुशीलन में साधारण वाक्य, मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्यों की प्रायोगिक स्थिति पर विचार किया गया है। साधारण वाक्य संरचना उद्देश्य-विधेय मूला होती है। मिश्रित उपवाक्यों में संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य रहते हैं और संयुक्त उपवाक्य में दो या दो से अधिक प्रमुख उपवाक्यों की समान उपस्थिति रहती है। हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में संश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास की उपर्युक्त तीनों संरचनाएँ प्रमुखता से मिलती हैं। किन्तु, वाक्य विन्यास का इस शोध प्रबंध के अन्तर्गत जो अनुशीलन किया गया उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि डॉ. शिव प्रसाद सिंह की प्रवृत्ति साधारण वाक्यों के प्रयोग की अधिक है। जटिल और मिश्रित वाक्यों का प्रयोग वहीं किया गया है जहाँ पात्रों की मन:स्थिति अन्तर्द्वन्द्व पूर्ण हो या संवेगों के दबाव के कारण वाक्य विन्यास में जटिलता आना लाजिमी हो।

मिश्रित उपवाक्यों के प्रयोग में भी डॉ. शिव प्रसाद सिंह की प्रवृत्ति संज्ञा वाक्यों की श्रृंखला के निर्माण की अधिक है।

संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य और क्रिया विशेषण उपवाक्यों की संरचना में हमारे प्रतिपाद्य के अन्तर्गत यह देखने में आया कि इन उपवाक्यों के संकेत सूचकों की उपस्थिति

प्रयोजन के अनुसार कहीं-कहीं लुप्त रहती है। संज्ञा उपवाक्यों में 'कि', विशेषण उपवाक्यों में 'जो' आदि तथा क्रियाविशेषण उपवाक्यों में 'अगर', 'यदि', संयोजक पद पद लुप्त रहते हैं। इसका कारण यह देखने में आया कि किसी संवेगात्मक दबाव में वक्ता की मुख्य इच्छा अपने भाव का संप्रेषण होता है व्याकरणिक नियम का पालन नहीं।

इसी प्रकरण के अन्तर्गत (3.3.4.) उपवाक्यों के क्रम का भी अध्ययन किया गया है। इस क्रम में उनकी प्रायोगिक स्थिति देखी गयी है। जिस प्रकार वाक्य के पद-क्रम में उलट-फेर सम्भव है उसी प्रकार उपवाक्यों के क्रम में भी परिवर्तन हो सकता है। पहले अधीन उपवाक्य आ सकता है, बाद में प्रधान उपवाक्य। यद्यपि प्रतिपाद्य उपन्यासों की वाक्य संरचना के क्रम का पीछे जो अनुशीलन किया गया है। उसमें यह स्थिति अपवाद रूप में ही मिलती है। आश्रित उपवाक्यों या मिश्र वाक्यों के संयोजक चिन्हों के लोप की प्रवृत्ति तो भूरिशः उपलब्ध होती है किन्तु, आश्रित उपवाक्य पहले आये हों और मुख्य उपवाक्य बाद में इस प्रकार की प्रवृत्ति अधिक नहीं मिलती है। जैसा कि पीछे संकेत किया जा चुका है प्रतिपाद्य उपन्यासों में बारंबारता की दृष्टि से संज्ञा उपवाक्यों के प्रयोग की प्रवृत्ति सर्वाधिक है।

संयुक्त वाक्य संरचनाएँ हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में भूरिशः उपलब्ध होती है। इनमें युगपत कालिक उपसंबंध, कारण अथवा परिणाम सूचक उप संबंध, अर्थ विस्तार उप संबंध, विरोध सूचक तुलनात्मक उप संबंध, मनः स्थिति अनुमान वाचक उप संबंध उपलब्ध होते हैं। विरोध प्रदर्शन उप संबंध में प्रतिकूलता वाचक उप सम्बन्ध, व्याप्ति मर्यादित विरोध प्रदर्शक उप सम्बन्ध, तुलनात्मक विरोध प्रदर्शक उप सम्बन्धों, की दृष्टि से प्रतिपाद्य उपन्यासों की वाक्य संरचना का अनुशीलन किया गया है।

प्रतिपाद्य उपन्यासों में संयुक्त वाक्य योजना कहीं-कहीं एकाधिक साधारण वाक्यों के संयोग से निर्मित हुई है, कहीं-कहीं एकाधिक मिश्र वाक्यों के संयोग से और कहीं-कहीं एक या एकाधिक साधारण और एक या एकाधिक मिश्र वाक्यों के योग से निर्मित की गयी है।

3.5. उपप्रकरण के अन्तर्गत प्रतिपाद्य उपन्यासों में उपलब्ध वाक्यांशीय पद संरचनाओं का विस्तार पूर्वक विवेचन किया गया है।

इसी प्रकरण के अन्तर्गत वाक् पद्धतियों अथवा मुहावरों का अनुशीलन किया गया है। डॉ. शिव प्रसाद सिंह ने अपने उपन्यासों की वाक्य संरचना जीवंत और चटक-दार बनाने के लिये कहावतों, मुहावरों, लोकोक्तियों और वाग्धाराओं का भूरिशः उपयोग किया है। इनके पद-पद पर उदाहरण 'अलग-अलग वैतरणी' में सर्वाधिक मिलते हैं। प्रतिपाद्य उपन्यासों में ये वाक् पद्धतियाँ मानव शरीर, तत्कालीन वातावरण, चेतन जगत, अमूर्त पदार्थ, स्वभाव, रीति-रिवाज, अन्ध विश्वास, इतिहास, धर्म और परम्परा पर आधारित है।

वाक्यांशों का उद्देश्य-विधेय के अन्तर्गत विवेचन किया गया है। इस दृष्टि से प्रतिपाद्य उपन्यासों में कर्त्तवाच्य, कर्मवाच्य, कर्त्तृकर्मवाच्य तथा उद्देश्य द्वय के अन्तर्गत कर्तृवाच्य, कर्म वाच्य स्तरीय वाक्यांश मूलक रचनाओं का विवेचन किया गया है।

प्रतिपाद्य उपन्यासों में विश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास के अन्तर्गत खंडीय तत्वों (4.1.) में बीज वाक्यों तथा वाक्यों की पदमूला संरचनाओं का अपेक्षित अनुशीलन किया गया है। बीज वाक्य और इसके पदों का विस्तारगत अनुशीलन अत्यन्त रोचक है। इससे वक्ता की इच्छा का ही विस्तार संकेतित होता है। इसमें कर्ता, कर्म, पूरक, विशेषण, क्रिया विशेषण क्रिया पदों का विस्तार सम्मिलित है।

खंडीय तत्वों वाले इस प्रकरण के अन्तर्गत वाक्य संरचना के क्रम का भी अध्ययन किया गया है। डॉ. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में क्या, कब, कैसे, क्यों, कहाँ आदि के प्रयोग द्वारा प्रश्न मूलक वाक्यों की संरचना की गयी है। हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में निषेधार्थक क्रिया विशेषण न, नहीं और मत के आधार पर वाक्यों का गठन किया गया है। इन वाक्यों में 'मत' द्वारा बना वाक्य आदेशात्मक हो जाता है।

उपवाक्य क्रम के अन्तर्गत प्रतिपाद्य उपन्यासों में मिश्र वाक्यों में प्रायः मुख्य उपवाक्य के बाद आश्रित उपवाक्य के क्रम का पालन किया गया हैं यही अवस्था संयुक्त वाक्यों के क्रम में लक्षित होती है। विशेष रूपकात्मक वाक्य स्तरीय प्रयोगों में विशेषण विशेष्य के बाद में आता है। वचन का प्रभाव ऐसी संरचनाओं में हिन्दी की सामान्य प्रवृत्ति के अनुरूप अन्तिम सदस्य पर ही पड़ता है।

निकटस्थ अवयवों की व्यवस्था वाक्य में निकट भी हो सकती है और दूर भी। हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में भाषा के दोनों प्रकार के वाक्यों - बीज और अबीज - का प्रयोग किया गया है। बीज वाक्य विस्तार योजना के द्वारा दीर्घ बन जाते हैं। और दीर्घ वाक्यों के विस्तार के निराकरण से बीज वाक्य के रूप में आ जाते हैं। डॉ. सिंह के उपन्यासों में अबीज वाक्य भी मिलते हैं। ये वाक्य विस्मय बोधक, लोकोक्तियाँ और मुहावरे होते हैं। दूसरे प्रकार के अबीज वाक्य लोप मूलक वाक्य होते हैं। इनके अर्थ का द्योतन प्रसंग से ही स्पष्ट होता है।

वाक्य संरचनाओं में विशेषण विशेष्यगत मैत्री तभी सम्भव होती है जब एक वचन विशेषण-विशेष्य में पुरुष विभक्ति 'आ' तथा स्त्री विभक्ति 'ई' का योग हों। अपने विवेचन के क्रम में मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि वाक्य योजना के विभिन्न अवयवों में मैत्री अनिवार्य है। भाषा में प्रयुक्त पद, वाक्यांश, उपवाक्य आदि इकाइयाँ निष्क्रिय अथवा निष्प्राण तत्व नहीं हैं। इन सबमें अलग-अलग और एक साथ मिलकर सजीवता एवं सक्रियता रहती है। इस दृष्टि से डॉ. सिंह के उपन्यासों में आज, कल, सदैव, नित्य आदि इकाइयाँ स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त हुई है। वाक्य में इनके स्थानान्तरण से अर्थ में कोई अन्तर नहीं पड़ता है। इसके अतिरिक्त प्रतिपाद्य उपन्यासों में

अविकारी और विकारी पुरुषवाची सर्वनाम भी स्वतंत्र इकाईयों के रूप में प्रयुक्त हुये हैं। प्रतिपाद्य उपन्यासों की वाक्य संरचना में ऐसी परतंत्र इकाईयों का भूरिशः प्रयोग हुआ है जो सक्रिय इकाईयों के बिना वाक्य में प्रयुक्त ही नहीं हो सकती हैं। तभी सभी परसर्ग सक्रिय इकाईयाँ कहलाते हैं। कहीं-कहीं हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में सक्रिय इकाईयाँ शून्य रूप तत्व की तरह भी प्रयुक्त हुई हैं। ये दोनों ही इकाईयाँ सापेक्ष हैं निरपेक्ष नहीं।

वाक्य संरचना में रूपान्तरण भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में इसके दोनों रूप- संरचनात्मक और अर्थमूलक भूरिशः प्रयुक्त हुए हैं। संरचनात्मक रूपान्तरण के ऋजु और वक्र दोनों कथन हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में मिलते हैं। ऋजु कथन में वक्ता की बात को ज्यों का त्यों उद्घृत किया जाता है। और सक्र कथन में बदलकर। डॉ. सिंह के उपन्यासों में ये दोनों ही कथन मिलते हैं। अर्थ मूलक रूपान्तरण का भी हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में प्रयोग हुआ है। कथन को प्रभावशाली बनाने के लिये इस प्रकार की वाक्य योजना अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। विश्लेषणात्मक वाक्य विन्यास के अति खण्डीय तत्वों में सुर, सुरक्रम, बलाघात और विराम आते हैं। प्रतिपाद्य उपन्यासों में इनका खूब प्रयोग हुआ है। विभिन्न पात्रों के संवादों में 'सुर', 'बलाघात' के प्रयोग से सजीवता आ जाती है। डॉ. शिव प्रसाद सिंह ने 'अलग-अलग वैतरणी', 'गली आगे मुड़ती है', 'नीलाचाँद', 'कुहरे में युद्ध', 'शैलूष' आदि उपन्यासों में इनका प्रयोग किया है। विरामों के भी प्रायः सभी उदाहरण हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में मिलते हैं।

प्रकरण-6 में प्रतिपाद्य उपन्यासों की हिन्दी संरचना की वाक्य मूला अर्थमूलक तत्वों पर विचार किया गया है। शब्दों की इन इकाइयों का प्रयोग निजी और सार्वजनिक दोनों अभिव्यक्तियों के रूप में डॉ. सिंह ने किया है। वाक्यों में विभिन्न व्याकरणिक कोटियों का एकाकी प्रयोग किया है। कृदन्तों के साथ भी इन पदों का प्रयोग किया गया है। इस प्रकरण में वाक्यांश और कुछ शब्दों के विशिष्ट प्रयोग का भी प्रतिपाद्य के अन्तर्गत विवेचन किया गया है। डॉ. सिंह के उपन्यासों में वाक्यों के कुछ ऐसे प्रयोग भी मिलते हैं जो ऊपर से देखने में विधानार्थी हैं किन्तु उनका प्रसंग और प्रयोग के कारण अर्थगत रूपान्तरण हो जाता है। साधारण, मिश्र और संयुक्त वाक्यों के भी विशिष्ट प्रयोग मिलते हैं।

प्रकरण-7 के अन्तर्गत प्रतिपाद्य उपन्यासों में उपलब्ध विशिष्ट वाक्य संरचनाओं को लिया गया है। इनमें महत्वपूर्ण है वाक्यान्तर्गत लोप की प्रवृत्ति। ये प्रवृत्तियाँ दो प्रकार की मिलती हैं, एक स्वतः अनुमित, दूसरी प्रसंगानुमित। जैस, 'चल' अर्थात (तू) 'चल' (शैलूष, पृष्ठ 150), 'जाओ' अर्थात (तुम) 'जाओ' (गली आगे मुड़ती है, पृष्ठ-211) ये स्वतः अनुमित के उदाहरण हैं और 'सच ?' (प्रश्न मूलक भाव),- हाँ (विधान मूलक), इनका अर्थ होगा (क्या यह) सच है ?', इसका उत्तर है, 'हाँ' (यह सच है, शैलूष, पृष्ठ- 34 तथा पृष्ठ 150)।' लोप की यह प्रवृत्ति

सान्निध्य मूलक पदों के साथ व्याकरणिक अपेक्षा मूलक पदों में भी रहती हैं। 'परिसर्ग' और 'वाक्यांशें' के लोप की प्रवृत्ति भी हमारे प्रतिपाद्य उपन्यासों में मिलती है। संवादों, उपवाक्यों, वाक्यों में भी यह प्रवृत्ति मिलती है। डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में 'पूर्वग्रहण' 'समानाधिकरण' 'शून्य तत्व रूपी अविकारी पदों की प्रयुक्ति की प्रवृत्ति मिलती है।

वाक्य संरचना में कथनगत सम्बन्ध तीन प्रकार का होता है। परस्पर विरोधी, क्रम मूलक और परस्पर (पूरक)। डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों की वाक्य संरचना में इन तीनों संबंधों की इसी प्रकरण में छानबीन की गई है।

डॉ. शिव प्रसाद सिंह की वाक्य संरचना का उनके जिन उपन्यासों के आधार पर अनुशीलन किया गया है उससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि वाक्य संरचना की दृष्टि से डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों की शोधगत संभावनाएँ बहुत हैं। उनके उपन्यासों को लेकर सिर्फ बीज वाक्यों की दृष्टि से गहन शोध हो सकता है। उनकी वाक्य संरचना की अर्थ और मनोवेगों की भाषिक अभिव्यंजना की दृष्टि से भी शोध की अनेकशः संम्भावनाएँ परिलक्षित हुई हैं। शैली विज्ञान का महत्वपूर्ण तत्व विचलन और विपथन का प्रयोग है। डॉ. सिंह के उपन्यासों की वाक्य संरचना विचलन, विपथन वाची शब्दों से भरी पड़ी है। डॉ. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों का एक वैशिष्ट्य उनमें अन्तर-पाठीय योजना है। इसके सभी रूप, उनके उपन्यासों में मिलते हैं। इसके प्रभूत उदाहरण 'गली आगे मुड़ती है'। इस उपन्यास में बाङ्ला, गुजराती, संस्कृत के उदाहरणों का प्रसंगानुकूल प्रयोग किया गया है। 'शैलूष' तथा 'वैश्वानर' में इसका बहुत प्रयोग है। ऐसे उद्धरणों का प्रयोग 'नीलाचाँद', 'कुहरे में युद्ध' और 'दिल्ली दूर है' में भी हुआ है।

डॉ. शिव प्रसाद सिंह द्वारा प्रयुक्त शब्दावली का एक सांस्कृतिक और सामाजिक पक्ष भी है। व्याकरणिक संरचना की दृष्टि को अगर छोड़ दिया जाय तो भाषा के सांस्कृतिक और सामाजिक पक्ष को लेकर उनके उपन्यासों पर अनुसन्धान कार्य किया जा सकता है।

ऊपर वाक्य संरचना की दृष्टि से डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों की जो छानबीन की गई उससे उनके प्रदेय का उद्‌घाटन सहज ही हो जाता है। उनकी वाक्य संरचना कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से जीवन्त और सहज है। उनके वाक्यों में पदगत, अर्थगत, अक्षरगत, बलाघात और 'सुरक्रम' प्रत्यक्ष रूप से लक्षित होता है। जहाँ कहीं संवेगात्मक जटिलता आई है वहाँ उनकी वाक्य संरचना अपने आप जटिल और मिश्रित वाक्य योजना का मार्ग ग्रहण कर लेती है।

मेरे शोध के यही निष्कर्ष हैं।

❑❑❑

परिशिष्ट

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

डॉ. शिव प्रसाद सिंह के उपन्यास

1. अलग-अलग वैतरणी, लोक भारती, इलाहाबाद 1988
2. गली आगे मुड़ती है, चतुर्थ सं. राधाकृष्ण, अंसारी मार्ग, नई दिल्ली. 1991
3. नीलाचाँद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987
4. शैलूष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1989
5. कुहरे में युद्ध, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली
6. दिल्ली दूर है, राजपाल, दिल्ली, 1993
7. औरत, राजपाल, दिल्ली, 1993
8. मंजुशिमा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1990
9. वैश्वानर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996

व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ

10 हिन्दी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरु, नगरी प्रचारिणी सभा, सं. 2049

11. हिन्दी शब्दानुशासन, आचार्य किशोरी दास वाजपेयी, नगरी प्रचारिणी, सं. 2045

12. हिन्दी व्याकरण, डॉ. जाल्मन दीमशित्स, रादुगा प्रकाशन, मास्की, 1983

13. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, पटना, 1990 ई.

15. भाषा विज्ञान कोश, डॉ. भोलानाथ तिवारी, ज्ञान मण्डल, वाराणसी, 2020 सं.

16. परिष्कृत हिन्दी व्याकरण, डॉ. बदरीनाथ कपूर, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ,

17. हिन्दी शब्द रचना, माई दयाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1966

18. हिन्दी भाषा स्वरूप और विकास, डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया, चतुर्वेदी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1989

19. मानक हिन्दी का स्वरूप, डॉ. भोलानाथ तिबारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 1986

20. सर्वनाम अव्यय और कारक चिन्ह, डॉ. सीता किशोर खरे, आराधना, ब्रदर्स, कानपुर, 1989

21. अच्छी हिन्दी, रामचन्द्र वर्मा, लोकभारती, इलाहाबाद, 1966,

22. अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन, डॉ. कपिल देव द्विवेदी, ज्ञानपुर, वाराणसी।

23. शब्दों का जीवन, डॉ. भोलानाथ तिवारी, राजकमल, दिल्ली

24. हिन्दी निरुक्त, किशोरी दास बाजपेयी

25क. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण, डॉ. सूरज भान सिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली, 1985

25ख. हिन्दी वाक्य रचना, डॉ. ब्रजवासी लाल श्रीवास्तव, आगरा वि.वि. की डी.लिट. उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबंध (अप्रकाशित) 1964

25ग. हिन्दी उद्‌भव और विकास, डॉ. हरदेव बाहरी, किताब महल, इलाहाबाद, 1972

26. हिन्दी रूपान्तरण व्याकरण के कुछ पहलू, यमुना काचरु, 1973, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।

27. हिन्दी वाक्य-विन्यास, डॉ. सुधा कालरा, लोकभारती, इलाहाबाद, 1971

28. भाषा का हिन्दी भाषा विज्ञान अंक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली।

29. हिन्दी का भाषा वैज्ञानिक व्याकरण, न.वी. राजगोपालन, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा,1973

30. आचार्य किशोरी दास बाजपेयी और हिन्दी शब्द शास्त्र, आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र तथा डॉ. विष्णुदत्त राकेश, पाणिनि प्रकाशन, कनखल, 1978

31. भाषा शब्द और उसकी संस्कृति, डॉ. अम्बा प्रसाद 'सुमन', कुसुम प्रकाशन, मुजफ्फरनगर, 1989

32. मुहावरा मीसाँसा, डॉ. ओम प्रकाश गुप्त, बिहार राष्ट्रभाषा पटना, 1960

33. भारतीय कहावत संग्रह, तीन खण्ड, डॉ. विश्वनाथ दिनकर नरवणे, त्रिवेणी संगम भाषा विभाग, पुणे, जनवरी 1978

लेखक के अन्य आधारभूत ग्रन्थ

34. विद्यापति, डॉ. शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद, 1992

35. कीर्तिलता और अवहट्ट भाषा, डॉ. शिव प्रसाद सिंह वाणी, दिल्ली

36. उत्तर योगी, डॉ. शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद

37. अन्धकूप (सम्पूर्ण कहानियाँ भाग 1) वाणी, दिल्ली।

38. एक यात्रा सतह के नीचे (सम्पूर्ण कहानियाँ भाग 2) वही

39. अमृता (सम्पूर्ण कहानियाँ भाग 3) वाणी, दिल्ली

40. शिव प्रसाद सिंह : स्रष्टा और मृष्टि, सम्पादक, डॉ. पांडेय शशिभूषण 'शीतांशु,', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।

41. आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद, डॉ. शिवप्रसाद सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 1989

42. रूपक कार वत्सराज, डॉ. लक्ष्मण नारायण शुक्ल, सम्मेलन, प्रयाग

43. हिन्दी पर्यायों का भाषागत अध्ययन, डॉ. बदरीनाथ कपूर, सम्मेलन

44. लोकोक्ति एवं मुहावरा कोश, डॉ. राजकुमार सिंह, आराधना, कानपुर 1994

45. शब्द ब्रम्हा की ज्योति, डॉ. अम्बा प्रसाद सुमन, वसन्ती प्रकाशन, सहारनपुर

46. शब्द शिल्पी डॉ. अम्बा प्रसाद सुमन, सं. डॉ. कृष्ण चन्द्र गुप्त, नवेन्दु सदन, मुजफ्फरनगर, 1998

47. हिन्दी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय, प्रकाशन, वाराणसी, 1992

48. संसद व्याकरण अभिधान (बंगला) अशोक मुखोपाध्याय, साहित्य संसद, कलकत्ता, 1995

49. समान्तर कोश, 1,2, अरविन्द कुमार, कुसुम कुमार, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली।

50. हिन्दी साहित्य कोश, भाग 1 तथा 2 ज्ञान मण्डल वाराणसी।

51. मानक हिन्दी शब्द कोश, रामचन्द्र वर्मा, सम्मेलन, प्रयाग

52. राजपाल हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल, दिल्ली

53. अँग्रेजी हिन्दी कोश, फादर कापिल बुल्के, रांची, 1968

54. ऑक्सफोर्ड एडवान्स्ड लर्नर्स डिक्शनरी, ए.एस. होर्नवी, 1996

55. संसद समार्थ शब्द कोश, अशोक मुखोपाध्याय, साहित्य संसद, कलकत्ता 1996

56. दस्तावेज-53, गोरखपुर, सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, 1991

57. दस्तावेज-81 सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, गोरखपुर, 1998

58. दैनिक हिन्दुस्तान, लखनऊ, शिव प्रसाद सिंह स्मृति अंक 29 सित. 98

59. अमर उजाला, कानपुर, शिवप्रसाद सिंह श्रद्धांज्जलि अंक 29 सित. 98

60. संकल्प (त्रै.), लखनऊ, लघु उद्योग बैंक की पत्रिका।

61. अक्षरा-28, जुलाई-सितम्बर' 94

अंग्रेजी के ग्रन्थ

62. आर्चिवोल्ड ए. हिल., इण्ट्रोडक्शन टू लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर,

63. डॉ. बाहरी हरदेव, हिन्दी सिमेंटिक्स

64. डी.एन. वसु, "द पार्टस ऑफ स्पीच"

65. जोन बीम्स, ए कम्परेटिव ग्रामर ऑफ मोडर्न इण्डियन लेंग्वेंजज ऑफ इंडिया।

66. सुनीति कुमार चटर्जी, ओरीजिन एण्ड डिवलपमेंट ऑफ बंगाली लेंग्वेज

67. नोर्म चोम्सकी, सिन्टेटिव स्ट्रक्चर

68. ओटो जेस्पर्सन, लेंग्वेज, इट्स मेटर, डिवेलपमेंट एण्ड स्ट्रक्चर